साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2018-2019

अध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार

उपाध्यक्ष : श्री माधव कौशिक

सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय 4

परियोजनाएँ एवं योजनाएँ 8

2018-2019 की प्रमुख गतिविधियाँ 12

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 15
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2018 19
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2018 23
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2018 27

कार्यक्रम

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह 32

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2017 अर्पण समारोह 54

युवा पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह 58

बाल साहित्य पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह 63

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि 68

वर्ष 2018-2019 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची 166

वर्ष 2018-2019 में आयोजित शासकीय निकाय, क्षेत्रीय मंडलों तथा
भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें 197

पुस्तक प्रदर्शनियाँ/पुस्तक मेले 200

प्रकाशित पुस्तकें 207

वार्षिक लेखा 235

साहित्य अकादेमी

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 हज़ार से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें—कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व-आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलग्न है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक(कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/कलाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यता प्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक/सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि-अनुवादक (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंतः अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर

चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करता है), युवा साहिती (इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा इंफ़ाल में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, एनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' (ILA) नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होनेवाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित

हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। सामान्य परिषद् को 2018-2022 के कार्यकाल के लिए पुनर्गठित किया गया तथा 2018 में डॉ. चंद्रशेखर कंबार अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यताप्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाइस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय ग्यारह भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल.खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िया में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलतः स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज

परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळूरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिळ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नै-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है। अकादेमी ने अपनी पुस्तकों का विक्रय अमेज़न (www.amazon.in) तथा साहित्य अकादेमी वेबसाइट पर भी प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फ़ुटेज़, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों और भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं, जिन्होंने उनके जीवन को बदल दिया, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का बीज होगा, जो आम पाठकों के लिए आनंद का विषय होगा और साहित्यिक अनुसंधान-कर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी के द्वारा अब तक 124 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध हैं।

अकादेमी से किए जानेवाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लैमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिज़िटाइज़ेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2013 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक और महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो/वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिज़िटाइज़ेशन के लिए एक क़रार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

अनुवाद केंद्र

चूँकि अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है, अकादेमी ने बेंगळूरु में अनुवाद केंद्र तथा कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, सन् 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटनेवाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िया, बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादन मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादन मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी की एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवाकर, कर रही

है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन चुकी है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु विश्वसनीय शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत; शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश प्रकाशित हो चुका है तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश इसी वर्ष प्रकाशित होने की संभावना है। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िया, मैथिली-ओड़िया तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॉकबरक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिज़िटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न प्रदर्शिनियों में भी भाग लेता है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 15,439 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2018-2019 में पुस्तकालय के 378 (289+89) नए सदस्य बने हैं तथा 2214 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 1,74,954 से भी अधिक है तथा अकादेमी के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर 2.5 लाख (लगभग) के करीब कुल पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूज़र फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पुस्तकालय ने ''सामग्री आधारितपूर्ण पाठ खोज प्रणाली'' की एक नई सेवा भी शुरू की है जो संदर्भ उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़िटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi-gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ-सूची उपलब्ध करा सकता है। ''हूज़'हू ऑफ़ इंडियन राईटर्स'' जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi-gov.in/sahitya-akadmi/SA Search system/sauses पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी पत्रिका पर आधारित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की ख़रीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकंवर्जन/कंप्यूटरीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की समिति

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामलों को देखने के लिए गठित समिति की बैठक प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में हुई। संबंधित समिति की रिपोर्ट के अनुसार, इस संदर्भ में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। अकादेमी के कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न का अब तक कोई मामला नहीं है।

2018-2019 की प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी पुरस्कार 2018 प्रदत्त।
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2017 प्रदत्त।
- अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2018 प्रदत्त।
- अकादेमी युवा पुरस्कार 2018 प्रदत्त।
- भाषा सम्मान 2017 तथा 2018 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त।
- आनंद कुमार स्वामी महत्तर सदस्यता प्रदत्त।
- प्रेमचंद फ़ेलोशिप प्रदत्त।
- देशभर में कुल 687 कार्यक्रमों का आयोजन
  - ❖ 48 संगोष्ठियों, 87 परिसंवादों तथा 2 भाषा सम्मेलनों का आयोजन।
  - ❖ 170 साहित्य मंच कार्यक्रमों का आयोजन।
  - ❖ 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 9, मुलाक़ात शृंखला के अंतर्गत 11, 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 10, 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 17, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 18, 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 14, 'बहुभाषी सम्मिलन' के अंतर्गत 9, 38 लेखक सम्मिलन, 17 जनजातीय और वाचिक साहित्य कार्यक्रम, 12 पूर्वोत्तर एवं क्षेत्रीय सम्मिलन, 20 नारी चेतना, 17 मेरे झरोखे से, 14 लेखक से भेंट, 7 व्यक्ति और कृति, 10 अनुवाद कार्यशालाओं तथा 3 सृजनात्मक लेखन कार्यशालाओं के अलावा 156 से अधिक विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का समस्त भारत में आयोजन किया गया।
- 487 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2018-19 में 182 पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों का आयोजन एवं सहभागिता।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 2214 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 9 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 145 हो गई।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 4 अंकों का प्रकाशन।
- वर्ष 2018-2019 के दौरान अकादेमी ने कुल 6.41 करोड़ रुपए की बिक्री की।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2018**

05 दिसंबर 2018 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2018 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2012 से 31 दिसंबर 2016 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2018** से सम्मानित लेखक

असमिया : सनन्त तांति, ***काइलैर दिनटो आमार हब*** (कविता-संग्रह)

बाङ्ला : संजीव चट्टोपाध्याय, ***श्रीकृष्णेर शेष कटा दिन*** (उपन्यास)

बोडो : रितुराज बसुमतारी, ***दोंसे लामा*** (कहानी-संग्रह)

डोगरी : इन्दरजीत केसर, ***भागीरथ*** (उपन्यास)

अंग्रेज़ी : अनीस सलीम, ***द ब्लाइंड लेडी'ज़ डिसेंडेंट्स*** (उपन्यास)

गुजराती : शरीफा विजलीवाला, ***विभाजननी व्यथा*** (आलोचनात्मक निबंध)

हिंदी : चित्रा मुद्गल, ***पोस्ट बॉक्स नं. 203–नाला सोपारा*** (उपन्यास)

कन्नड : के.जी. नागराजप्प, ***अनुश्रेणी-यजमानिके*** (निबंध-संग्रह)

कश्मीरी : मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़, ***आख*** (कहानी-संग्रह)

कोंकणी : परेश नरेंद्र कामत, ***चित्रलिपी*** (कविता-संग्रह)

मैथिली : वीणा ठाकुर, ***परिणीता*** (कहानी-संग्रह)

मलयाळम् : एस. रमेशन नायर, ***गुरुपौर्णमि*** (कहानी-संग्रह)

मणिपुरी : बुधिचंद्र हैस्नांबा, ***डम्खैगी वाङमदा*** (कहानी-संग्रह)

मराठी : मधुकर सुदाम पाटील, ***सर्जनप्रेरणा आणि कवित्वशोध*** (साहित्यिक समालोचना)

नेपाली : लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं, ***किन रोयौ उपमा?*** (कहानी-संग्रह)

ओड़िया : दाशरथी दास, ***प्रसंग पुरुणा भावना नूआ*** (साहित्यिक समालोचना)

पंजाबी : मोहनजीत सिंह, ***कोने दा सूरज*** (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : राजेश कुमार व्यास, ***कविता देवै दीठ*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : रमाकांत शुक्ल, ***मम जननी*** (कविता-संग्रह)

संताली : श्याम बेसरा 'जिवीराड़ेच्', ***माड़ोम*** (उपन्यास)

सिंधी : खीमन यू. मूलाणी, ***जीअ में टांडा*** (कविता-संग्रह)

तमिळ : एस. रामकृष्णन, ***संचारम*** (उपन्यास)

तेलुगु : कोलकलूरि इनाक्, ***विमर्शिनि*** (निबंध-संग्रह)

उर्दू : रहमान अब्बास, ***रोहज़ीन*** (उपन्यास)

सनन्त तांति

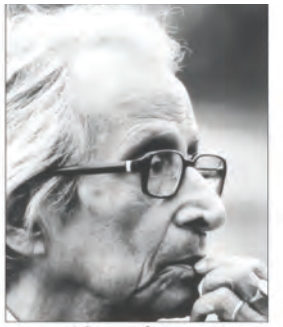
संजीव चट्टोपाध्याय

रितुराज बसुमतारी

इन्दरजीत केसर

अनीस सलीम

शरीफा विजलीवाला

चित्रा मुद्गल

के.जी. नागराजाप्प

मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़

परेश नरेंद्र कामत

वीणा ठाकुर

एस. रमेशन नायर

बुधिचंद्र हैस्नांबा

मधुकर सुदाम पाटील

लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं

दाशरथी दास

मोहनजीत सिंह

राजेश कुमार व्यास

रमाकांत शुक्ल

श्याम बेसरा 'जिवीराड़ेच्'

खीमन यू. मूलाणी

एस. रामकृष्णन

कोलकलूरि इनाक्

रहमान अब्बास

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2018** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. श्री अतनु भट्टाचार्य
2. प्रो. दीप्ति फुकन पटगीरी
3. डॉ. परमानंद राजबोंगशी

बाङ्ला
1. प्रो. नवनीता देव सेन
2. श्री समरेश मजूमदार
3. श्री तपन बंद्योपाध्याय

बोडो
1. श्री अरबिंदो उजीर
2. डॉ. भूपेन नाज़ारी
3. डॉ. मंगलसिंह हाजोवरी

डोगरी
1. श्री शिव मेहता
2. श्री मोहन सिंह
3. श्री शिव देव सिंह सुशील

अंग्रेज़ी
1. श्री विक्रम के. दास
2. प्रो. जैंसी जैम्स
3. श्री किरण नागरकर

गुजराती
1. डॉ. रघुवीर चौधरी
2. श्री उत्पल भयानी
3. श्री यशवंत मेहता

हिंदी
1. डॉ. चंद्र त्रिखा
2. श्री गोविंद मिश्र
3. श्रीमती उषाकिरण खान

कन्नड
1. डॉ. तरीनी शुभादायीनी
2. प्रो. बसवराज पी. डोनर
3. श्री चिदानंदा सेली

कश्मीरी
1. श्री अवतार कृष्ण रहबर
2. सुश्री रुख़्शाना ज़बीन
3. प्रो. शाद रमजान

कोंकणी
1. श्री दत्ता दामोदर नायक
2. श्री एन. शिवदास
3. श्री एस.एम. कृष्णा राव

मैथिली
1. डॉ. शेफालिका वर्मा
2. डॉ. ताराकांत झा
3. श्री विवेकानंद ठाकुर

मलयाळम्
1. श्री सी. राधाकृष्णन
2. श्री एम. मुकुंदन
3. डॉ. एम.एम. बशीर

मणिपुरी
1. श्री दिलीप मायेङ्बम
2. प्रो. एलांगबम दीनामणि सिंह
3. श्री एल. उपेंद्रो शर्मा

मराठी
1. श्री मधुकर वकोडे
2. श्री एन. डी. महानोर
3. प्रो. रमेश वारखेडे

नेपाली
1. डॉ. बीना हेंखीम
2. श्री दुर्गा खातीवोदे
3. श्री मनप्रसाद सुब्बा

ओड़िया
1. डॉ. अदीकांदा साहू
2. प्रो. मनोरंजन प्रधान
3. डॉ. प्रमोद कुमार मोहंती

पंजाबी
1. प्रो. अवतार सिंह
2. श्री मोहन भंडारी
3. श्री नछत्तर

राजस्थानी
1. श्री बुलाकी शर्मा
2. श्री माधव नागदा
3. डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास

संस्कृत
1. प्रो. सत्यव्रत शास्त्री
2. प्रो. श्रीनिवास वारखेडी
3. डॉ. वेनीमाधव शास्त्री

संताली
1. श्री बादल हेम्ब्रम
2. श्री दशरथी सोरेन
3. श्री रघुनाथ हेम्ब्रम

सिंधी
1. प्रो. अर्जुन चावला
2. श्री लखमी खिलाणी
3. श्री नंदलाल एच. जावेरी

तमिळ
1. डॉ. ई. सुंदरमूर्ति
2. सुश्री जी. तिलकावती
3. श्री तोप्पिल मोहम्मद मीरान

तेलुगु
1. श्री टी. देवीप्रिया
2. डॉ. नलीमा भास्कर
3. डॉ. पापिनेनी शिवशंकर

उर्दू
1. प्रो. बेग एहसास
2. श्री जयंत परमार
3. श्री नुसरत ज़हीर अहमद

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार **2018**

28 जनवरी 2018 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2018 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2012 से 31 दिसंबर 2016 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

अनुवाद पुरस्कार **2018** से सम्मानित अनुवादक

असमिया : पार्थ प्रतिम हाज़रिका, ***रामायण : गंगार परा ब्रह्मपुत्रलई*** (*रामायण : फ्रॉम गंगा टू ब्रह्मपुत्र*—अंग्रेज़ी, तुलनात्मक अध्ययन-निबंध), इंदिरा गोस्वामी

बाङ्ला : मबिनुल हक़, ***लेप ओ अन्यान्य गल्प*** (*लिहाफ़*—उर्दू, कहानी-संग्रह), इस्मत चुग़ताई

बोडो : नबीन ब्रह्म, ***बिनदिनी*** (*चोखेर बाली*—बाङ्ला, उपन्यास), रवींद्रनाथ ठाकुर

डोगरी : नरसिंह देव जम्वाल, ***पखेरू*** (*पखेरू*—उर्दू, कहानी-संग्रह), रामलाल

अंग्रेज़ी : सुबाश्री कृष्णास्वामी, ***द तमिळ स्टोरी : थ्रू द टाइम्स, थ्रू द टाइड्स*** (*दिलीप कुमार द्वारा संपादित 88 कहानियों का संकलन*—तमिळ, कहानी-संकलन), विभिन्न लेखक

गुजराती : वीनेश अंताणी, ***मायादर्पण*** (हिंदी, कहानी-संग्रह), निर्मल वर्मा

हिंदी : प्रभात त्रिपाठी, ***वंश*** (बंश—ओड़िया, कविता-संग्रह), हरप्रसाद दास

कन्नड : (स्व.) गिरड्डि गोविंदराज, ***जय : महाभारत सचित्र मरुकथन*** (*जय : ऐन इलस्ट्रेटेड रि—टेलिंग ऑफ़ द महाभारत*—अंग्रेज़ी, महाकाव्य), देवदत्त पट्टनायक

कश्मीरी : मो. ज़मां आज़ुर्दा, ***साख़ियात पस साख़ियात ते मशरिकी शेरियात*** (*साख़ियात पस साख़ियात और मशरिकी शेरियात*—उर्दू, साहित्यिक समालोचना), गोपीचंद नारंग

कोंकणी : नारायण भास्कर देसाय, ***राजवाडे लेखसंग्रह*** (*राजवाडे लेखसंग्रह*—मराठी, निबंध), विश्वनाथ के. राजवाडे

मैथिली : सदरे आलम 'गौहर', ***हेराएल जकाँ किछु*** (*खोया हुआ-सा कुछ*—उर्दू, कविता-संग्रह), निदा फ़ाज़ली

मलयाळम् : एम. लीलावती, ***श्रीमद् वाल्मीकिरामायणम्*** (*श्रीमद् वाल्मीकिरामायणम्*—संस्कृत, महाकाव्य), वाल्मीकि

मणिपुरी : राजकुमार मोबी सिंह, ***मपुङ फादबा*** (*आधे अधूरे*—हिंदी, नाटक), मोहन राकेश

मराठी : प्रफुल्ल शिलेदार, ***संशयात्मा*** (*संशयात्मा*—हिंदी, कविता-संग्रह), ज्ञानेंद्रपति

नेपाली : मणिका मुखिया, ***यो प्राचीन वीणा*** (*दिस एंशियंट लियर*—मलयाळम्, कविता-संग्रह), ओ.एन.वी. कुरुप

ओड़िया : श्रद्धांजलि कानूनगो, ***श्रीमयी माँ*** (*श्रीमयी माँ*—बाङ्ला, उपन्यास), नब कुमार बसु

पंजाबी : के.एल. गर्ग, ***गोपाल प्रसाद व्यास दा चोनवां हास-व्यंग*** (*गोपाल प्रसाद व्यास का चुनिंदा हास्य-व्यंग्य*—हिंदी, व्यंग्य-कार्य), गोपाल प्रसाद व्यास

राजस्थानी : मनोज कुमार स्वामी, ***नाव अर जाळ*** (*चेम्मीन*—मलयाळम्, उपन्यास), तकषी शिवशंकर पिल्लै

संस्कृत : दीपक कुमार शर्मा, ***असमा वाङ्मञ्जरी,*** (*असमा वाङ्मञ्जरी*—असमिया, कविता-संकलन), विभिन्न लेखक

संताली : रूपचाँद हांसदा, ***सेन दाड़ेया : आन मेनखान चेदाः*** (*जेते पारी किंतु केनो जाबो*—बाङ्ला, कविता-संग्रह), शक्ति चट्टोपाध्याय

सिंधी : जगदीश लछाणी, ***मनजोगी*** (*मनजोगी*—हिंदी, उपन्यास), प्रबोध कुमार गोविल

तमिळ : कुलच्चल यूसुफ़, ***तिरुडन मनियन पिळ्ळै*** (*तस्करन मनियन पिळ्ळैयुडे आत्मकथा*—मलयाळम्, आत्मकथा), जी.आर. इंदुगोपन

तेलुगु : ए. कृष्णाराव (कृष्णूडु), ***गुप्पेडु सूर्युडु मरि कोन्नि कवितलु*** (*ए हैंडफुल ऑफ़ सन एंड अदर पोएम्स*—डोगरी कविता-संग्रह), पद्मा सचदेव

उर्दू : ज़किया मशहदी, ***आख़री सलाम*** (*शेष नमस्कार*—बाङ्ला, उपन्यास), संतोष कुमार घोष

पार्थ प्रतिम हाज़रिका

मबिनुल हक़

नबीन ब्रह्म

नरसिंह देव जम्वाल

सुबाश्री कृष्णास्वामी

वीनेश अंताणी

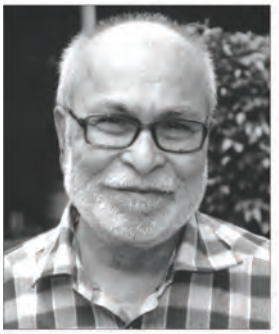
प्रभात त्रिपाठी

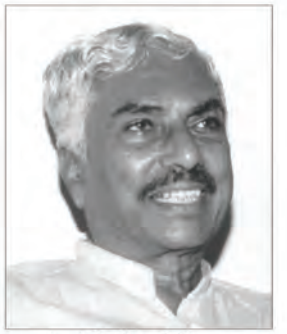
(स्व.) गिरड्डि गोविंदराज

मो. ज़मां आज़ुर्दा

नारायण भास्कर देसाय

सदरे आलम 'गौहर'

एम. लीलावती

राजकुमार मोबी सिंह

प्रफुल्ल शिलेदार

मणिका मुखिया

श्रद्धांजलि कानूनगो

के.एल. गर्ग

मनोज कुमार स्वामी

दीपक कुमार शर्मा

रूपचाँद हांसदा

जगदीश लछाणी

कुलच्चल यूसुफ़

ए. कृष्णाराव (कृष्णूडु)

ज़किया मशहदी

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार **2018** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. डॉ. आनंदा बोरमुदोई
2. डॉ. अरुपा पतंगिया कलिता
3. प्रो. ज्योत्स्ना राउत

बाङ्ला

1. डॉ. चिन्मय गुहा
2. प्रो. पबित्र सरकार
3. श्री समीक बंद्योपाध्याय

बोडो

1. श्री गोपीनाथ बरगायरी
2. डॉ. अंजलि प्रभा देइमारी
3. श्री तेरेन बर'

डोगरी

1. श्री ध्यान सिंह
2. श्री शिव देव सिंह मन्हास
3. श्री विजय वर्मा

अंग्रेज़ी

1. प्रो. जी.जे.वी. प्रसाद
2. प्रो. मोहम्मद असदुद्दीन
3. डॉ. तुतुन मुखर्जी

गुजराती

1. प्रो. हर्ष ब्रह्मभट्ट
2. डॉ. प्रफुल्ल रावल
3. श्री उदयन ठक्कर

हिंदी

1. प्रो. ए. अरविंदाक्षन
2. श्री प्रयाग शुक्ल
3. प्रो. रामजी तिवारी

कन्नड

1. प्रो. के.जी. नागराजप्प
2. प्रो. के.वी. नारायण
3. डॉ. बसवराज नायकर

कश्मीरी

1. श्री अब्दुल अहद हाजिनी
2. श्री गुलाम नबी ख़याल
3. प्रो. मरगूब बानिहाली

कोंकणी

1. श्रीमती हेमा पुंडलीक नायक
2. श्री लोलायेकर प्रसाद
3. श्रीमती शीला कोलम्बकर

मैथिली

1. श्री भैरव लाल दास
2. श्री रामनारायण सिंह
3. श्री शिवकांत पाठक

मलयाळम्

1. श्री के. जयकुमार
2. डॉ. के. मुथुलक्ष्मी
3. श्री के.एस. वेंकटाचलम

मणिपुरी

1. श्री बी.एस. राजकुमार
2. श्री क्ष. प्रेमचंद्र सिंह
3. प्रो. राजेन तोइजाम्बा

मराठी

1. श्री अनंत भावे
2. सुश्री प्रभा गनोरकर
3. डॉ. विलास खोले

नेपाली

1. श्री डंबरमणि प्रधान
2. श्री के.एन. शर्मा
3. श्री संतोष अल्लय

ओड़िया

1. श्रीमती गायत्री सराफ
2. प्रो. कालिदास मिश्र
3. डॉ. संग्राम जेना

पंजाबी

1. श्रीमती भूपिंदर कौर प्रीत
2. प्रो. हरभजन सिंह भाटिया
3. डॉ. मोहनजीत

राजस्थानी

1. श्री आशीष पुरोहित
2. डॉ. भगवती लाल व्यास
3. श्री हरीश आचार्य

संस्कृत

1. डॉ. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी
2. प्रो. रानी सदाशिव मूर्ति
3. प्रो. पी.के. पंडा

संताली

1. श्री अर्जुन हेम्ब्रम
2. श्री चंद्रमोहन सोरेन
3. श्री द्विजपद हांसदा

सिंधी

1. श्री हीरो ठाकुर
2. श्री जयराम रूपाणी
3. श्री तहलराम वी. माखिजाणी

तमिळ

1. श्री पुवियारसु
2. डॉ. एस. भक्तवत्सला भारती
3. श्री जी. कुप्पुस्वामी

तेलुगु

1. प्रो. शेख़ मस्तान
2. श्रीमती वोल्गा
3. श्री वाई. लक्ष्मीप्रसाद

उर्दू

1. प्रो. अनीस अशफाक़
2. प्रो. अतीक़ुल्लाह
3. श्री शमोएल अहमद

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार **2018**

22 जून 2018 को गुवाहाटी में डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2018 के लिए 22 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुतियों के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

युवा पुरस्कार **2018** से सम्मानित लेखक

असमिया : बिपाशा बोरा, ***मौ-माखि साम्राज्य*** (कहानी-संग्रह)
बाङ्ला : सम्राज्ञी बंद्योपाध्याय, ***खेलनाबातिर दिन शेष*** (कविता-संग्रह)
बोडो : पुरन' ब्रह्म, ***अन्नायनि गुबुन मोनसे महर*** (कहानी-संग्रह)
गुजराती : एषा दादावाला, ***जन्मारो*** (कविता-संग्रह)
हिंदी : आस्तीक वाजपेयी, ***थरथराहट*** (कविता-संग्रह)
कन्नड : पद्मनाभ भट्ट, ***केपीना डब्बी*** (कहानी-संग्रह)
कश्मीरी : दीबा नाज़िर, ***ज़ारीन जख़्म*** (कहानी-संग्रह)
कोंकणी : विल्मा लवीना डिसूज़ा, ***मुखडीं*** (कविता-संग्रह)
मैथिली : उमेश पासवान, ***वर्णित रस*** (कविता-संग्रह)
मलयाळम् : अमल एम., ***व्यसन समुच्चयम*** (उपन्यास)
मणिपुरी : थोंङब्रम अमरजीत सिंह, ***लौबूक्की मनम*** (कविता-संग्रह)
मराठी : नवनाथ सोपान गोरे, ***फेसाटी*** (उपन्यास)
नेपाली : छुदेन काविमो, ***1986*** (कहानी-संग्रह)
ओड़िया : जयद्रथ सुना, ***शोष*** (कविता-संग्रह)
पंजाबी : गुरप्रीत सहजी, ***बलोरा*** (उपन्यास)
राजस्थानी : दुष्यंत जोशी, ***अेकर आज्या रै चाँद*** (कविता-संग्रह)
संस्कृत : मुनि राजसुंदर विजय, ***चित्रकाव्यदर्शनम्*** (कविता-संग्रह)
संताली : रानी मुर्मू, ***हॉपन मयंक कुक्मू*** (कहानी-संग्रह)
सिंधी : चंपा डी. चेतनाणी, ***सबला नारी*** (नाटक)
तमिळ : रा. सुनिल कृष्णन, ***अंबु पड्डक्कई*** (कहानी-संग्रह)
तेलुगु : बालसुधाकर मौलि शंभान, ***आकु कदलनि चोट*** (कविता-संग्रह)
उर्दू : शहनाज़ ख़ातून (शहनाज रहमान), ***नैरंज-ए-जुनून*** (कहानी-संग्रह)

* डोगरी तथा अंग्रेज़ी में कोई पुरस्कार नहीं।

बिपाशा बोरा

सम्राज्ञी बंद्योपाध्याय

पुरन' ब्रह्म

एषा दादावाला

आस्तीक वाजपेयी

पद्मनाभ भट्ट

दीबा नाज़िर

विल्मा लवीना डिसूज़ा

उमेश पासवान

अमल एम.

थोंडब्रम अमरजीत सिंह

नवनाथ सोपान गोरे

छुदेन काविमो

जयद्रथ सुना

गुरप्रीत सहजी

दुष्यंत जोशी

रानी मुर्मू

चंपा डी. चेतनाणी

मुनि राजसुंदर विजय

रा. सुनिल कृष्णन

बालसुधाकर मौलि शंभान

शहनाज़ ख़ातून (शहनाज़ रहमान)

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार **2018** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. सुश्री अनुराधा शर्मा पुजारी
2. श्री रवींद्र कुमार दास
3. डॉ. उपेन राभा हकाचम

बाङ्ला

1. सुश्री अनुराधा रॉय
2. श्री प्रणब कुमार मुखोपाध्याय
3. श्री सुधीर चक्रवर्ती

बोडो

1. श्री इस्माइल हुसैन
2. श्री रवींद्र नाज़ारी
3. श्री उमेश बर'

अंग्रेज़ी

1. प्रो. आलोक भल्ला
2. सुश्री अरुंधती सुब्रह्मण्यम
3. सुश्री रक्षंदा जलील

गुजराती

1. सुश्री बिन्दु भट्ट
2. श्री धीरेंद्र मेहता
3. श्री हरद्वार गोस्वामी

हिंदी

1. प्रो. अष्टभुजा शुक्ल
2. डॉ. सुधाकर अदीब
3. श्रीमती सूर्यबाला

कन्नड

1. श्री पी.वी. नारायण
2. श्री पद्मराज दंडावती
3. श्री टी.पी. अशोक

कश्मीरी

1. डॉ. रूप कृष्ण भट्ट
2. श्री मोहम्मद यूसुफ़ टैंग
3. श्री रंजूर तिलगामी

कोंकणी

1. श्री अनंत अग्नि
2. प्रो. अरुण साखरदांडे
3. श्री बस्ती वामन शेनॉय

मैथिली

1. डॉ. भोला झा
2. डॉ. देवकांत झा
3. डॉ. विद्यानाथ झा

मलयाळम्

1. डॉ. एम.डी. राधिका
2. प्रो. के.जी. शंकर पिल्लै
3. प्रो. लक्ष्मी शंकर

मणिपुरी

1. प्रो. एच. ननीकुमार सिंह
2. श्री केशम प्रियकुमार सिंह
3. श्री रघु लैशांगथेम

मराठी

1. श्री आर.आर. बोरडे
2. श्री सतीश आलेकर
3. श्री वसंत अबाजी डहाके

नेपाली

1. श्री आनंद खरखा
2. श्री केदार गुरुंग
3. श्री योगवीर शाक्य

ओड़िया

1. सुश्री मोनालिसा जेना
2. श्री परेश कुमार पटनायक
3. श्रीमती शकुंतला बलियार सिंह

पंजाबी

1. डॉ. अमरजीत कौंके
2. डॉ. हरदिलजीत सिंह गोस्सल
3. डॉ. महल सिंह

राजस्थानी

1. श्री देवकिशन राजपुरोहित
2. डॉ. मदन सैनी
3. श्री नंद भारद्वाज

संस्कृत

1. प्रो. अशोक कुमार कालिया
2. प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति
3. डॉ. प्रकाश पांडेय

संताली

1. श्री दिलीप मांडी
2. श्री रामबाय हेम्ब्रम
3. श्री सूर्य सिंह बेसरा

सिंधी

1. श्री बलदेव मतलानी
2. श्री मोहन गेहानी
3. श्री गोवर्धन शर्मा घायल

तमिळ

1. श्री नांजिल नादां
2. डॉ. रमा गुरुनाथन
3. श्री रवि सुब्रह्मण्यन

तेलुगु

1. श्री अमरेंद्र
2. प्रो. एम. नरेंद्र
3. श्री निखिलेश्वर

उर्दू

1. डॉ. अज़ीज़ परिहार
2. श्री के.एस. नारंग साक़ी
3. श्री इमाम आज़म

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार **2018**

22 जून 2018 को गुवाहाटी में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2018 के लिए 19 पुस्तकों तथा समग्र योगदान के लिए 4 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2012 से 31 दिसंबर 2016 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। लेकिन आरंभिक 10 वर्षों, जो 2010-2019 है, के लिए पुरस्कार बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखक के समग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं, यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार **2018** से सम्मानित लेखक

असमिया : जुगल लोचन दास, ***सोनबालि बागिचार भूत*** (उपन्यास)
बाङ्ला : शीर्षेंदु मुखोपाध्याय, ***बाल साहित्य*** में समग्र योगदान हेतु
बोडो : सिताराम बसुमतारी, ***गथ' ग'थाइनि सल'बाथा*** (कहानी-संग्रह)
अंग्रेज़ी : ईसतेरिन कीरे, ***सन ऑफ़ द थंडरक्लाउड*** (उपन्यास)
गुजराती : चंद्रकांत त्रिकमलाल शेठ, ***बाल साहित्य*** में समग्र योगदान हेतु
हिंदी : दिविक रमेश, ***मेरे मन की बाल कहानियाँ*** (कहानी-संग्रह)
कन्नड : कंच्याणी शरणप्पा शिवसंगप्पा, ***बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु***
कश्मीरी : ज़रीफ़ अहमद ज़रीफ़, ***छुंछि पूत*** (गद्य-पद्य संकलन)
कोंकणी : कुमूद भिकू नायक, ***मॉनिटर*** (कहानी-संग्रह)
मैथिली : वैद्यनाथ झा, ***खिस्सा सुनू बाउ*** (कहानी-संग्रह)
मलयाळम् : पी.के. गोपी, ***ओलच्चूट्टिटन्डे वेलिच्चम*** (कहानी-संग्रह)
मणिपुरी : खाङेमबम शामुङौ, ***महौशा लाइरेम्बीगी मशाइगोन्दा, थिरुशि लाओ येंलुशी लाओ*** (कविता-संग्रह)
मराठी : रत्नाकर मतकरी, ***बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु***
नेपाली : भीम प्रधान, ***बाल कोसेली*** (कहानी-संग्रह)
ओड़िया : बीरेंद्र महांति, ***रुम्कू झूमा*** (कविता-संग्रह)
पंजाबी : तरसेम, ***टाहली वाली गली*** (उपन्यास)
राजस्थानी : छीतरलाल साँखला, ***चड़ा-चड़ी की खेती*** (कहानी-संग्रह)
संस्कृत : संपदानंद मिश्र, ***शनैः शनैः*** (कविता-संग्रह)
संताली : लक्ष्मी नारायण हांसदा, ***बुड़ी गोग गाम तायलंग*** (कहानी-संग्रह)
सिंधी : कल्पना अशोक चेलाणी, ***सुहिणी दायण*** (कहानी-संग्रह)
तमिळ : किरुंगई सेतुपति, ***सिरयु मुलइथ यानइ*** (कविता-संग्रह)
तेलुगु : नारमशेट्टि उमामहेश्वरराव, ***आनंदलोकम्*** (उपन्यास)
उर्दू : रईस सिद्दीक़ी, ***बातूनी लड़की*** (कहानी-संग्रह)

* डोगरी में कोई पुरस्कार नहीं।

जुगल लोचन दास

शीर्षेंदु मुखोपाध्याय

सिताराम बसुमतारी

ईसतेरिन कीरे

चंद्रकांत त्रिकमलाल शेठ

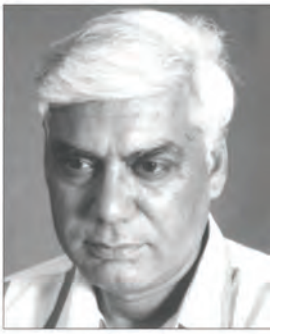
दिविक रमेश

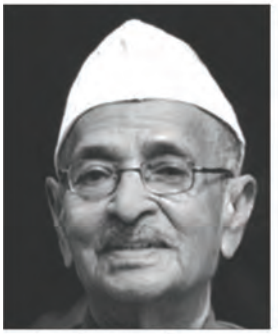
कंच्याणी शरणप्पा शिवसंगप्पा

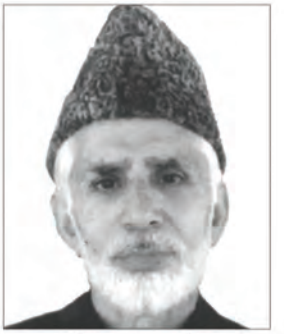
ज़रीफ़ अहमद ज़रीफ़

कुमुद भिकू नायक

वैद्यनाथ झा

पी.के. गोपी

खाङेमबम शामुङौ

रत्नाकर मतकरी

भीम प्रधान

बीरेंद्र महांति

तरसेम

छीतरलाल साँखला

संपदानंद मिश्र

लक्ष्मी नारायण हांसदा

कल्पना अशोक चेलाणी

किरुंगई सेतुपति

नारमशेट्टि उमामहेश्वरराव

रईस सिद्दीक़ी

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार **2018** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री अनुभव तुलसी
2. श्री रणजीत कुमार देव गोस्वामी
3. श्री उत्पल दत्ता

बाङ्ला

1. श्री देवीप्रसाद बंद्योपाध्याय
2. श्री रणजीत दास
3. श्री सुभाष भट्टाचार्य

बोडो

1. श्री गोविंदा नार्ज़ारी
2. श्री ऋतुराज बसुमतारी
3. श्री उथरिसार खुंगार बसुमतारी

अंग्रेज़ी

1. श्री अरुणाव सिन्हा
2. श्रीमती दीपा अग्रवाल
3. प्रो. सुप्रिया चौधरी

गुजराती

1. डॉ. भद्रायु वच्छराजनी
2. डॉ. नलिनी मडगांवकर
3. श्री कांजी पटेल

हिंदी

1. डॉ. अनामिका
2. डॉ. गंगा प्रसाद विमल
3. श्री शिवमूर्ति

कन्नड

1. प्रो. ए.वी. नावदा
2. श्री देवू पत्तर
3. श्री राजशेखर हत्तुंडी

कश्मीरी

1. सुश्री मेहफूज़ा जान
2. श्री रतन लाल तलाशी
3. श्री बशर बशीर

कोंकणी

1. श्री आर.एस. भास्कर
2. सुश्री रूपा चारी
3. श्री कमलाकर दत्ताराम म्हाल्शी

मैथिली

1. डॉ. महेंद्र झा
2. डॉ. उमा रमन झा
3. सुश्री उषा किरण खान

मलयाळम्

1. श्री आलमकोड लीलाकृष्णन
2. प्रो. ई.वी. रामकृष्णन
3. श्री सिप्पी पललीपुरम

मणिपुरी

1. प्रो. आई.एस. कांगजम (काङ्जम इबोहल सिंह)
2. डॉ. थोकचोम इबोहनबी सिंह
3. श्री फुराइलपटम इबोयाइमा शर्मा

मराठी

1. डॉ. अनिल टी. अवचट
2. श्री बाबा भांड
3. डॉ. वसंत पाटनकर

नेपाली

1. श्री गोपीचंद्र प्रधान
2. श्री कमल रेग्मी
3. डॉ. शांति छेत्री

ओड़िया

1. श्री प्रभात महापात्र
2. प्रो. सरत चंद्र प्रधान
3. श्री सतकड़ी होता

पंजाबी

1. डॉ. जसपाल कौर
2. डॉ. करणजीत सिंह
3. श्री खालिद हुसैन

राजस्थानी

1. डॉ. चेतन स्वामी
2. डॉ. ज्योति पुंज (जयप्रकाश पंड्या)
3. श्री मोहन आलोक

संस्कृत

1. डॉ. इच्छाराम द्विवेदी
2. डॉ. नारायण दाश
3. प्रो. एस.सुदर्शन शर्मा

संताली

1. श्री गोराचंद मुर्मू
2. श्री रामू हेम्ब्रम
3. डॉ. नाकू हांसदा

सिंधी

1. सुश्री इंद्रा पूनावाला
2. डॉ. जेठो लालवाणी
3. सुश्री सरिता शर्मा

तमिळ

1. श्री मगुदेश्वरन
2. डॉ. महालिंगम
3. प्रो. आर. कोदंडरामन

तेलुगु

1. डॉ. नंदिनी सिद्ध रेड्डी
2. श्रीमती शारदा अशोकवर्धन
3. श्री जे.एस. मूर्ति (विहारी)

उर्दू

1. डॉ. अब्दुस समद
2. डॉ. नुसरत मेहदी
3. श्री वकील नजीब

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2019

28 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी का वार्षिक साहित्योत्सव वर्ष 2019 नई दिल्ली में 28 जनवरी 2019 को रवींद्र भवन लॉन्स में साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी के भव्य उद्घाटन समारोह के साथ आरंभ हुआ। प्रदर्शनी को इस तरह से बनाया गया था कि कोई भी दर्शक एक ही बार में अकादेमी के उद्देश्यों, कार्यों और गतिविधियों तथा अन्य संबंधित जानकारी की सटीक और व्यापक सूचना ले सकता है। महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक विशेष कॉर्नर बनाया गया तथा जिसमें गाँधी द्वारा लिखित तथा उन पर लिखी गई लगभग 700 पुस्तकें प्रदर्शित की गईं जो इस साल की प्रदर्शनी का एक मुख्य आकर्षण थीं।

उद्घाटन समारोह का आरंभ नई दिल्ली के मुनीरका से सरावानं एवं उनकी मंडली द्वारा नादस्वरम संगीत के वंदना गीत से हुआ। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में वर्ष 2018 में अकादेमी की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों, उपलब्धियों तथा विशिष्ठ कार्यों पर प्रकाश डाला।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने साहित्य अकादेमी की विभिन्न पहलों के बारे में बात की, जो इसके द्वारा मान्यता प्राप्त सभी 24 भारतीय भाषाओं में साहित्य को बढ़ावा देने के लिए है। उन्होंने उपस्थित

मृणाल मिरी, निरुपमा कोत्रू तथा चंद्रशेखर कंबार अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ

सभी लोगों से आग्रह किया कि वे प्रदर्शनी को घूमकर देखें और न केवल भारत बल्कि दुनिया भर की महानतम साहित्यिक संस्थाओं में से एक के साहित्यिक इतिहास का हिस्सा बनें।

प्रख्यात भारतीय दार्शनिक, शिक्षाविद् और पद्म भूषण पुरस्कार प्राप्त मृणाल मिरी ने अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और अपने भाषण में देश को महान साहित्यिक सेवा प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह

29 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह में मनोज दास, सांतन अय्यातुरै तथा पुरस्कृत लेखकों के साथ अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं अतिथिगण

साहित्योत्सव के दौरान साहित्य अकादेमी द्वारा 29 जनवरी 2019 को सायं 5.30 बजे कमानी सभागार में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह आयोजित किया गया।

प्रख्यात ओड़िया लेखक और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रख्यात श्रीलंकाई लेखक और साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फ़ेलोशिप से सम्मानित सांतन अय्यातुरै समारोह के विशिष्ट अतिथि थे।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। समारोह के अंत में प्रख्यात नृत्यांगना सोनल मानसिंह द्वारा नाट्यकथा 'कृष्णा' की प्रस्तुति हुई। पुरस्कृत लेखकों में सनन्त तांति (असमिया), संजीव चट्टोपाध्याय (बाङ्ला), रितुराज बसुमतारी (बोडो), इंदरजीत केसर (डोगरी), शरीफा विजलीवाला (गुजराती), चित्रा मुद्गल (हिंदी), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), वीणा ठाकुर (मैथिली), एम. रमेशन नायर (मलयाळम्), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), राजेश कुमार व्यास (राजस्थानी), रमाकांत शुक्ल (संस्कृत), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिऴ), कोलकलूरि इनाक् (तेलुगु) एवं रहमान अब्बास (उर्दू) शामिल थे। पुरस्कार के रूप में ताम्रफलक और एक लाख रुपये की राशि का चेक भेंट किया गया। अंग्रेज़ी एवं ओड़िया के लेखक अस्वस्थता के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि साहित्य अकादेमी पुरस्कारों ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है वह हमारी परंपराओं के प्रति वह निष्ठा है जो हमने वर्षों के परिश्रम से हासिल की है। भारत की सांस्कृतिक विविधता ही वह प्रेरक तत्त्व है जो हमें एक-दूसरे के प्रति संवाद स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है।

समारोह के मुख्य अतिथि मनोज दास ने कहा कि साहित्य अकादेमी हमारा गौरव है। अकादेमी पुरस्कार कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक का सम्मान है और यह हमारी पूरी सांस्कृतिक परंपरा का सम्मान है, जो *रामायण, महाभारत, पंचतंत्र* से लेकर, *राजतरंगिणी* और कालिदास तक की विरासत की वाहक है।

विशिष्ट अतिथि श्रीलंकाई लेखक सांतन अय्यातुरै ने कहा कि श्रीलंका का साहित्य भारतीय साहित्य परंपरा से प्रभाव और प्रेरणा ग्रहण करता है तथा इस समारोह में उपस्थित होना मेरे लिए गौरव की बात है।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि पुरस्कृत सभी लेखकों की यह महत्त्वपूर्ण विशिष्टता है कि वे अपनी रचनाओं के माध्यम से आम जनता की आवाज़ को मुखर करते हैं।

कार्यक्रम के आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए भारतीय साहित्य की व्यापकता और विविधता को रेखांकित किया। उन्होंने पुरस्कृत लेखकों की प्रशस्ति का पाठ भी किया।

पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत

29 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने साहित्योत्सव 2019 के दौरान 29 जनवरी 2019 को रवींद्र भवन परिसर में 'अकादेमी पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत' कार्यक्रम का आयोजन किया। पुरस्कार विजेताओं ने रचना-प्रक्रिया को लेकर मीडिया और श्रोताओं के सवालों के जवाब दिए। हिंदी के लिए पुरस्कृत लेखिका चित्रा मुद्गल ने कहा कि मेरी पुरस्कृत कृति *पोस्ट बॉक्स नं. 203, नाला सोपारा* एक अपराधबोध से उपजी है। यह रचना ट्रांसजेंडर लोगों की पहचान से जुड़ी हुई है। लेकिन यह उपन्यास लिख लेने के बाद भी मैं उस अपराधबोध से मुक्त नहीं हो पाई हूँ, जिससे मुक्ति की कामना ने मुझसे यह उपन्यास लिखवाया। अंग्रेज़ी, संताली, पंजाबी और ओड़िया भाषा के लेखक इस कार्यक्रम में उपस्थित नहीं थे। कार्यक्रम का संयोजन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी, क्षेत्रीय सचिव (बेंगळूरु) एस. पी. महालिंगेश्वर एवं क्षेत्रीय सचिव (मुंबई) कृष्णा किम्बाहुने ने किया।

पुरस्कृत लेखकों के साथ संवाद

भाषा सम्मान अर्पण समारोह 2018

28 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान अर्पण समारोह 28 जनवरी 2019 को अपराह्न 2.00 बजे रवींद्र भवन परिसर में आयोजित हुआ। साहित्य अकादेमी द्वारा भाषा सम्मान कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य एवं क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन में उल्लेखनीय योगदान करने वाले विद्वानों/लेखकों को प्रदान किए जाते हैं। इस वर्ष कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य के लिए भाषा सम्मान से पुरस्कृत लेखक हैं– योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण' (उत्तरी क्षेत्र), गगनेंद्र नाथ दाश (पूर्वी क्षेत्र), शैलजा शंकर बापट (पश्चिमी क्षेत्र) तथा कोशली-संबलपुरी के लिए प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी एवं हलधर नाग, पाइते भाषा के लिए एच. नेंगसाङ और हरियाणवी के लिए हरिकृष्ण द्विवेदी एवं शमीम शर्मा। भाषा सम्मान साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भाषाओं को लेकर हमारी स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण भी है और भाग्यशाली भी, क्योंकि एक तरफ़ जहाँ हमारे देश में सैकड़ों भाषाएँ एवं बोलियाँ हैं वहीं कुछ दिनों के अंतराल में कुछ भाषाएँ हमारे बीच से ग़ायब होती जा रही हैं। कार्यक्रम का समाहार वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया। उन्होंने कहा कि देश की भाषा-विविधता हमारे लिए एक काल-पात्र की तरह है, जिसमें ज्ञान के हज़ारों पन्ने सुरक्षित हैं। यह वह ज्ञान है जो हमारे पूर्वजों ने सदियों से अपने अनुभवों के आधार पर तैयार किया है।

अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अकादेमी के लिए हर भाषा महान है और उसको बचाना उसका कार्य। साहित्य अकादेमी इन पुरस्कारों के ज़रिये अलिखित और वाचिक भाषाओं को बचाने का प्रयास कर रही है। भाषा सम्मान प्राप्त करने के बाद पुरस्कृत रचनाकारों ने पाठकों के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी का मानना था कि नई पीढ़ी को अधिक सजगता से उनका साथ देकर इन भाषाओं को बचाना होगा।

भाषा सम्मान से पुरस्कृत विद्वान

योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण' (1941, हरिद्वार) हिंदी कवि, निबंधकार, समालोचक, कथाकार और पत्रकार हैं। आपकी कुल 40 प्रकाशित पुस्तकों में *दादी माँ ने हाँ कह दी, अभिनंदन, बहती नदी हो जाइए, गीत त्रिवेणी, जीवन अमृत, अक्षर चिंतन, पुष्पदंत, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' रचना-संचयन* और *अपभ्रंश* प्रमुख हैं। आपको स्वयंभू सम्मान (दो बार), विदुषी विद्योत्तमा सम्मान, शैलीकार सम्मान, कवि नीरज सम्मान और उद्भव शिखर सम्मान आदि पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं।

गगनेंद्र नाथ दाश (1940, कादेई, ओड़िशा) ओड़िया के प्रतिष्ठित विद्वान हैं। आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियों में *जनश्रुति काँची-कावेरी, डिस्क्रिप्टिव मॉर्फ़ोलॉजी ऑफ़ ओड़िया, निर्वाचित प्रबंध संकलन, लिंग्विस्टिक ग्लोज़री, इमेजिंग ओड़िशा* और *अजाना पथ जे डाके* शामिल हैं। आपको भाषारत्न सम्मान, गोकर्णिका सम्मान, गोपीनाथ नंदा पुरस्कार, जगन्नाथ सम्मान, भारत चंद्र नायक स्मृति सम्मान और स्वतंत्र जगन्नाथ सम्मान से अलंकृत किया गया है।

शैलजा एस. बापट (1949, पुणे, महाराष्ट्र) प्रतिष्ठित विदुषी हैं। *ए क्रिटिकल एडीशन ऑफ़ द ब्रह्मसूत्राज़* (3 खंड), *महानुभाव वाङ्मयाच्या व्याख्यान पद्धति* (दो खंड), *द रोल ऑफ़ अवग्रह साइन इन द बादरायणा'ज़ ब्रह्मसूत्राज़ मैन्युस्क्रिप्ट्स, सिग्निफ़िकेंट मीनिंग ऑफ़ द गायत्री इन द वेदांत फ़िलॉसफ़ी* और द लैंग्वेज ऑफ़ डिस्कोर्स (कथा), *इन न्याय सिस्टम* आदि आपके प्रमुख ग्रंथ हैं। आपको वेदांत विभूषण पुरस्कार और एमेरिटस फ़ेलोशिप प्राप्त हैं।

हलधर नाग (1950, बारगढ़, ओड़िशा) संबलपुरी-कोशली के कवि और लेखक हैं। आप ओड़िशा में 'लोककवि रत्न' के रूप में समादृत हैं।

आपकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं—*भाव, सूरत, अछिया, बछर, महासती उर्मिला, संत कवि भीमाभोई, प्रेम पहचान, कविता संकलन, वीर सुरेंद्र सई और सतिया बिहा* आदि। आपको पद्म श्री, ओड़िया साहित्य अकादमी सम्मान सहित लगभग 800 संस्थानों से सम्मानित किया गया है।

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी (1945, देश भाटली, जनपद बारगढ़, ओड़िशा) प्रतिष्ठित कवि और कथाकार हैं। स्मार्ट फोन में ओड़िया एवं संबलपुरी-कोशली के उपयोग में वर्तनी परीक्षण तथा भावी शब्दकोश निर्माण आपके महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। *संबलपुरी-कोशली भाषा : एक परिचय, जन मन चालिसा, लुकलुकानी, ओड़िया शब्दकोश* और *संबलपुरी-कोशली व्याकरण* आदि आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। आपको विशुव मिलन, सेतु, ओड़िशा साहित्य अकादमी पुरस्कार, फकीर मोहन साहित्य परिषद् पुरस्कार, ईशना, उत्कल साहित्य समाज पुरस्कार, पुनर्नवा सम्मान, स्मृति सम्मान और अभिमन्यु साहित्य संसद सम्मान आदि प्राप्त हुए हैं।

एच. नेंगसाङ (1935, काइह्लाम, मणिपुर) पाइते, मणिपुरी और अंग्रेज़ी भाषा के कवि और विद्वान हैं। आपकी 14 से अधिक कृतियों में *हांगज़ोउ फुंग थु, कन्वेंशन उपा ऑर्डेन्ते तानचिन, कन्वेंशन पास्तोर-ते तानचिन, कन्वेंशन वर्कर-ते तानचिन, ग्रेस बाइबिल कॉलेज एत्किकना, पाइते मि खेनखात-ते तानचिन* और *कांस्टीट्यूशन ऑफ़ एम/एस स्ड्यूल्ड ट्राइब्स वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ़ मणिपुर* आदि प्रमुख हैं।

हरिकृष्ण द्विवेदी (1944, कैथल, हरियाणा) हरियाणवी के प्रतिष्ठित लेखक हैं। आपकी प्रमुख पुस्तकों में *बोल बखत के, अमरतबाणी 'मसाल', पनघट, जगबाणी, धूपछाम, जगबित्ती, झूठा सच, प्रायश्चित्त* और *स्वाभिमान* शामिल हैं। आपको जनकवि मेहरसिंह सम्मान और श्रेष्ठ कृति पुरस्कार (दो बार) सहित अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।

शमीम शर्मा (1959, ग्राम झुंबा, जनपद मुक्तसर, पंजाब) प्रतिष्ठित हरियाणवी लेखिका हैं। आपकी प्रमुख कृतियों में *हस्ताक्षर, कुरुशंख, चौपाल के मखौल, पंचनाद, चौपाल के चाले, दो नंबर वाली लक्ष्मी, थैंक यू अल्ट्रासाउंड, जादूभरा साथ, एक है शमीम, रोशनी हैं हम और मार्बलेस टू मारवेल्स* शामिल हैं। आपको साहित्य-सेवा सम्मान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मदर टेरेसा द्वारा स्वर्ण पदक तथा 2001 जनगणना के लिए रजत पदक आदि प्राप्त हुए हैं।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन

28-29 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 28-29 जनवरी 2019 को रवींद्र भवन परिसर में अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन आयोजित किया गया, जिसकी विशिष्ट अतिथि प्रख्यात बाङ्ला लेखिका अनीता अग्निहोत्री थीं। स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि आदिवासी साहित्य सबसे प्राचीन साहित्य है और इसको सुरक्षित रखना हम सबकी ज़िम्मेदारी है। अकादेमी अपने साहित्योत्सव मे इस तरह का आयोजन पहली बार कर रही है और आगे भी उन्हें समय-समय पर मंच प्रदान करती रहेगी। इस कार्यक्रम में 36 भाषाओं की 43 आदिवासी लेखिकाओं को आमंत्रित किया गया है। अनीता अग्निहोत्री ने अपने उद्घाटन भाषण में आदिवासी इलाक़ों में अपने प्रवास के अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि अपनी रचनाओं में उन्होंने भी महाश्वेता देवी

सम्मिलन के प्रतिभागी

की भाँति ही पिरोने का प्रयास किया है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि आदिवासी समाज को मुख्य धारा में लाने के लिए हम उन्हें आधुनिक शिक्षा देना चाहते हैं और ऐसा करते ही लोकसाहित्य और स्मृतियाँ मरने लगती हैं, इन्हें बचाना ज़रूरी है। समाहार वक्तव्य में माधव कौशिक ने कहा कि आदिवासी साहित्य और संस्कृति हमारी सभ्यता रूपी इमारत की नींव की, जिन पर हम नई नई मंज़िलें डालते जा रहे हैं। सम्मिलन में सिंधु सी. (बेट्टाक्कुरुम), सीना थानचांगड (बेट्टाक्कुरुम), कविता कुसुगल (बेड़ा), वंदना टेटे (खड़िया), उषा एस. (मालवेट्टुवन), धन्या के. (माविलन), हेसेल सारू (मुंडारी), फ्रंसिस्का कुजूर (उराँव), रश्मि एम. (पानियाँ), सोनल राठवा (राठी) तथा कुमुदा बी. (वागड़ी) ने अपनी गद्य-पद्य रचनाओं का पाठ किया। कुछ लेखिकाओं ने अपने आदिवासी समुदायों से संबंधित आधारभूत जानकारियाँ भी दीं तथा मूल भाषा में अपनी रचनाओं के साथ-साथ हिंदी अथवा अंग्रेज़ी में उनके अनुवाद प्रस्तुत किए। प्रस्तुत रचनाएँ आदिवासी जीवन के संघर्षों के साथ-साथ आधुनिक समय-समाज के सरोकारों से जुड़ी थीं, जिन्हें काफ़ी पसंद किया गया।

सम्मिलन के दूसरे दिन विचार-विमर्श के दो सत्र तथा कविता-पाठ के एक सत्र का आयोजन किया गया। 'आदिवासी साहित्य की विशिष्टता' विषयक सत्र तोडा लेखिका के. वासमल्ली की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में भीली लेखिका मंगला गरवाल, चौधरी लेखिका सुधा चौहान और बंजारा लेखिका बी. टी. ललिता नायक ने अपने समुदाय तथा आसपास की अन्य आदिवासी भाषाओं के संदर्भ में अपने विचार रखे। 'आदिवासी साहित्य : चुनौतियाँ और समाधान' विषयक सत्र की अध्यक्षता शोभा लिंबू योलमो ने की, जिसमें शकुंतला तरार और नीतिशा ख़लख़ो ने अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं ने वाचिक परंपरा से प्राप्त आदिवासी साहित्य में आदिवासी संस्कृति और सभ्यता के रेखांकन को आदिवासी साहित्य की विशिष्टता बताते हुए कहा कि वर्तमान आदिवासी साहित्य आदिवासी जीवन के सामाजिक सरोकारों और संघर्षों को चित्रित करने का कार्य भी कर रहा है। आदिवासी अस्तित्व को बचाए बनाए रखने की चुनौतियाँ इसके साहित्य की भी चुनौतियाँ हैं। इस सत्र में कॉकबरॉक भाषा के लेखक चंद्रकांत मुरासिंह ने भी अपने विचार रखे।

कविता-पाठ का सत्र भाषा वैज्ञानिक सतरूपा दत्त मजुमदार साहा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें रश्मि चौधुरी (बोडो), के. अंजली बेलागल (वागड़ी), अनुराधा मुंडू (हो), अर्चना दास टी. (कुरिच्या), अन्ना माधुरी तिर्की, प्रिस्का कुजूर, विश्वासी एक्का (कुड़ुख़), इंदुमती लमाणी (लमाणी), अवि माया थापा मनगर (मनगर), क्रैरी

व्याख्यान देती हुईं के. वासमल्ली

मोग चौधुरी (मोग), हीरा मीणा (मीणा), शकुंतला बेसरा (संताली) तथा नागरेखा गाँवकर (तुलु) ने अपनी कविताओं का पाठ हिंदी, अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ किया। अथिरा आर. सी. (कणिक्कर) ने अपने आदिवासी समुदाय की साहित्य-संस्कृति का परिचय प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सतरूपा दत्त मजुमदार साहा ने पठित रचनाओं की सराहना करते हुए आदिवासी जीवन एवं साहित्य से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया।

लेखक सम्मिलन

30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव के तीसरे दिन 30 जनवरी 2019 को 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 से पुरस्कृत 21 भाषाओं के लेखकों ने पाठकों के साथ अपने लेखन के रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। बाङ्ला, अंग्रेज़ी, ओड़िया और मलयाळम् के लेखक किन्हीं कारणों से कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए लेखक सम्मिलन की विशिष्टता को उजागर किया।

डोगरी लेखक इंदरजीत केसर ने कहा कि मेरे हर उपन्यास में आतंकवाद से होनेवाले विनाश तथा अनुभवों का उल्लेख है, लेकिन सामान्यतया मेरे अधिकतर उपन्यास नारी प्रधान हैं, जिनमें नारी के मनोविज्ञान और मनोस्थिति के बारे में लिखा जाता है।

गुजराती लेखिका शरीफा विजलीवाला ने कहा कि मेरे पिताजी अख़बार बेचते थे, इसलिए तरह-तरह की पत्रिकाएँ और किताबें आती थीं। वहीं से पढ़ने की आदत हुई। भारत विभाजन संबंधी साहित्य के नज़दीक आने के बाद मैंने विभाजन से संबंधित सारा साहित्य पढ़ा और इनको पढ़कर ऐसा लगा कि इसके केंद्र में वह आम आदमी है जिसे हिंदुस्तान-पाकिस्तान, गुलामी-आज़ादी से कुछ लेना-देना नहीं था। फिर भी वही घर से बेघर हुआ, वतन से बेवतन हुआ और अपनी जड़ों से उखड़ गया। इसी आदमी की पीड़ा ने मुझे समझाया कि इतिहासकार जहाँ मूक रहा है, वहाँ लेखक मुखर हुआ है।

हिंदी के लिए पुरस्कृत चित्रा मुद्गल ने अपने वक्तव्य में कहा कि कुछ लेखकों की कुछ कृतियाँ उसके अपराध बोध की संतानें होती हैं। दरअसल ऐसी कृतियों के जन्म का स्रोत सृजनकार की अंतश्चेतना में अनायास, अनामंत्रित, सदियों-सदियों से किया जा रहा वह अपराध होता है जो उसके वंशजों द्वारा किया गया होता है और उसी अपराध की विरासत को ढोता हुआ वह नहीं जानता कि समाज के कलंक को ढोने वाला, स्वयं के माथे पर उस कलंक को चिपकाए हुए जी रहा है।

मैथिली लेखिका वीणा ठाकुर ने कहा कि मेरा पुरस्कृत कहानी-संग्रह *परिणीता* समकालीन समाज, संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों का ऐसा दस्तावेज़ है, जिसके अधिकांश पात्र मध्यमवर्गीय हैं तथा वर्तमान विषमताओं से उत्पन्न आक्रोश आर्थिक दुश्चिंता एवं सामाजिक नैतिकता से संबंधित समस्याओं के शिकार हैं।

राजस्थानी लेखक राजेश कुमार व्यास ने कहा कि कविता हमेशा एक नई दृष्टि देती है। यात्राएँ केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि अंतर्मन की भी होती है। बचपन के संस्कारों से मुझे पद-रचना को प्रेरित किया और आगे चलकर यही मेरी अभिव्यक्ति का साधन बने।

संस्कृत लेखक रमाकांत शुक्ल ने बताया कि उनकी पुरस्कृत काव्य कृति की पहली कविता उनकी माँ के बारे में तथा अन्य 25 कविताएँ सुनामी की भयंकरता के कारण भारत की विडंबनात्मक स्थिति आदि को प्रस्तुत करती हैं।

उर्दू लेखक रहमान अब्बास ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि उनका उपन्यास मानवीय भावनाओं, विशेषकर प्यार, लालसा एवं कामुकता जैसी विशिष्ट अभिव्यक्तियों के विविध पहलुओं को उजागर करता है।

अन्य पुरस्कृत लेखकों—सनन्त तांति, (असमिया), रितुराज बसुमतारी (बोडो), के.जी. नागराजप्प (कन्नड), मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ (कश्मीरी), परेश नरेंद्र कामत (कोंकणी), बुधिचंद्र हैस्नांबा (मणिपुरी), मधुकर सुदाम पाटील (मराठी), लोकनाथ उपाध्याय चापागाईं (नेपाली), मोहनजीत सिंह (पंजाबी), श्याम बेसरा (संताली), खीमन यू. मूलाणी (सिंधी), एस. रामकृष्णन (तमिळ) और कोलकलूरि इनाक् (तेलुगु) ने भी अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन

30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर-पूर्व और उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन का आयोजन रवींद्र भवन परिसर में 30 जनवरी 2019 को किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात हिंदी कवि-आलोचक एवं साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि आज का समय व्यापक हिंसा का समय है और मेरा यह विश्वास है कि अगर साहित्य को जनता तक पहुँचा दिया जाए तो यह हिंसा निश्चित रूप से कम होगी। वास्तव में साहित्य परिवर्तन का अहिंसक माध्यम है। उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया की कोई भाषा न किसी से बड़ी होती है, न किसी से छोटी। जिस परिवेश की भाषा होती है, उस परिवेश का सबसे उपयुक्त चित्रण वही भाषा कर सकती है और उसका हू-ब-हू अनुवाद होना संभव नहीं है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि असमिया लेखक ध्रुव ज्योति बोरा ने कहा कि यह समय झूठी ख़बरों का है और सत्य एक सत्य नहीं रहा है। हर किसी का सत्य उसके लिए अलग-अलग है और इस कारण प्रेस और लेखकों आदि की स्वतंत्रता बाधित हुई है। लेखकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे एक सच्ची दुनिया को तैयार करे। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की और स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने दिया। दोनों ने ही भारतीय भाषाओं के साहित्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए साहित्य अकादेमी की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

सम्मिलन के अंतर्गत कहानी-पाठ के प्रथम सत्र की अध्यक्षता अंग्रेज़ी लेखिका मालाश्री लाल ने की। इस सत्र में गोविंद बसुमतारी (बोडो), शाइनी एंटनी (अंग्रेज़ी) और मनीषा कुलश्रेष्ठ (हिंदी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। बोडो कथाकार ने अपनी कहानी का पाठ अंग्रेज़ी में किया। 'मेरी रचना, मेरा संसार' विषयक परिचर्चा अंग्रेज़ी लेखिका सुकृता पॉल कुमार के संयोजन में संपन्न हुआ, जिसमें अदाराम बसुमतारी (बोडो), कृष्णमोहन झा (हिंदी), संगीता मल्ल (अंग्रेज़ी) और राजेंद्र जोशी (राजस्थानी) ने अपनी रचना-प्रक्रिया, प्रेरणाओं

व्याख्यान देती हुईं शाइनी एंटनी

और रचना-संसार पर अपने विचार व्यक्त किए। तृतीय सत्र कविता-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता प्रतिष्ठित हिंदी कवि अरुण कमल ने की। इस सत्र में अर्चना पुजारी (असमिया), खोकन साहा (बाङ्ला), अरविंद उज़िर (बोडो), खजूर सिंह (डोगरी), नीतू (अंग्रेज़ी), वंदना यादव (हिंदी), फ़याज़ तिलगामी (कश्मीरी), जितेन नराह (मिसिंग), केनेबो राजकुमार (मणिपुरी), टी.बी. सुब्बा (नेपाली), मोहन त्यागी (पंजाबी), आलोक कुमार मिश्र (संस्कृत), रामपद किस्कू (संताली) एवं मोनिका सिंह (उर्दू) ने अपनी कविताओं के पाठ हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किए।

अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान विषयक परिचर्चा

30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत 30 जनवरी 2019 को रवींद्र भवन परिसर में 'भाषांतर : अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान' शीर्षक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के अनुवादकों मिनी कृष्णन, आलोक गुप्त, पूरनचंद टंडन, गौरीशंकर रैणा, ओ.पी. झा, प्रकाश भातंब्रेकर, सुभाष नीरव, युमा वासुकि, जानकी प्रसाद शर्मा ने अपनी-अपनी भाषा की चुनौतियों और उनके समाधानों पर बातचीत की। परिचर्चा का संयोजन महेंद्र कुमार मिश्र द्वारा किया गया। अनुवादकों ने सांस्कृतिक, भौगोलिक, धार्मिक आदि विविधता के कारण आने वाली अनुवाद संबंधी समस्याओं पर उदाहरण सहित व्यापक चर्चा की। उन्होंने अनुवादकों से दोयम दर्जे का व्यवहार, समुचित मानदेय न दिया जाना, प्रकाशकों का अभाव, समुचित समीक्षा न किया जाना आदि मुद्दे भी उठाए। अनुवादकों ने पद्यानुवाद की समस्याओं पर भी चर्चा की। अनुवाद की सकारात्मकता पर विचार करते हुए सबने एकमत से यह विचार प्रकट किया कि अनुवाद अपने आप में एक मौलिक पुनर्सृजन है।

वक्तव्य देते हुए महेंद्र कुमार मिश्र

उद्घाटन सत्र में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत एक बहुभाषी समाज है और बहुसंख्य भाषाओं की उपस्थिति के नाते भारतीय परिवेश में अनुवाद की गतिविधियाँ व्यापक स्तर पर उपस्थित हैं। कार्यक्रम में बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रतिष्ठित विदुषी आशा देवी ने किसी भक्त कवि की यह उक्ति उद्धृत की : 'हे भगवान, मुझे तुम्हारे शब्दों को मौन में परिवर्तित करने और उसे हरेक व्यक्ति तक पहुँचाने की प्रतिभा और शक्ति प्रदान करो।' उन्होंने कहा कि अनुवाद कला की चुनौतियाँ बहुआयामी और बहुस्तरीय हैं। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा की गई तथा समाहार वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया। उन्होंने कहा कि चुनौतियों और समस्याओं के बावजूद यह तय है कि आनेवाला समय अनुवादकों का है। कार्यक्रम का संयोजन संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी द्वारा किया गया।

श्रीलंकाई लेखक सांतन अय्यातुरै को प्रेमचंद फ़ेलोशिप

29 जनवरी 2019, नई दिल्ली

सांतन अय्यातुरै को प्रेमचंद फ़ेलोशिप 2017 प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार

अध्यक्षीय वक्तव्य के पश्चात् साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने श्रीलंका के प्रख्यात लेखक सांतन अय्यातुरै को प्रेमचंद फ़ेलोशिप 2017 से सम्मानित किया। के.एस. राव सचिव, साहित्य अकादेमी ने फ़ेलोशिप का प्रशस्ति-पाठ किया। सांतन अय्यातुरै ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में कहा कि वे एक साहित्यिक प्रतिभा प्रेमचंद के नाम से सम्मानित प्रतिष्ठित फ़ेलोशिप प्राप्त करके अभिभूत हैं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने स्वयं को लोगों के लेखक के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने आम लोगों के बारे में लिखा। वे न केवल भारतीय साहित्य में बल्कि विश्व साहित्य में भी यथार्थवाद के अग्रदूतों में से एक हैं। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने प्रेमचंद फ़ेलोशिप से सम्मानित होने पर सांतन अय्यातुरै को बधाई दी।

संवत्सर व्याख्यान

30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

व्याख्यान देते हुए गोपीचंद नारंग

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव के तीसरे दिन 30 जनवरी 2019 को साहित्य अकादेमी की प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यान माला के अंतर्गत प्रख्यात उर्दू समालोचक एवं अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष गोपीचंद नारंग ने 'फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ : तसव्वुरे इश्क़, मानी आफ़रीनी और जमालियाती एहसास' विषयक व्याख्यान दिया। आरंभ में अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने प्रोफ़ेसर नारंग का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने संवत्सर व्याख्यान की गौरवमयी शृंखला से श्रोताओं का परिचय कराते हुए पूर्व वक्ताओं को याद किया।

प्रो. नारंग ने अपने व्याख्यान में कहा कि फ़ैज़ की शायरी में कुछ ऐसी नर्मी, दिल में उतरने की कशिश है, कुछ ऐसा मज़ा और कुछ ऐसा दर्द भरा है, जो उनके समकालीनों में नहीं है। यह हक़ीक़त है कि फ़ैज़ ने उर्दू शायरी में नए शब्दों को नहीं जोड़ा, लेकिन उन्होंने अभिव्यक्ति का ऐसा नया अंदाज़ अपनाया, जो उनकी इस कमी को पूरा करता है। उन्होंने शेर कहने की प्रतिष्ठित परंपरा का पूरा लाभ उठाते हुए उनकी ऊँचाई को छुआ। उनकी शब्दावली उस परंपरा की है जो किसी को भी कालजयी बनाने के लिए काफ़ी है। फ़ैज़ की चिंता तो क्रांतिकारी है लेकिन उनका अंदाज़े-बयां क्रांतिकारी नहीं। उनका दिल दर्दे मुहब्बत से चूर है। उनके शेरों में एक ऐसी आग है जो मानो धीरे-धीरे सुलग रही है। उन्होंने अपने जमालियाती एहसास को क्रांतिकारी चिंता पर क़ुर्बान नहीं किया। फ़ैज़ की शायरी का असर लोगों के दिलों में आज भी गहरा है। उन्होंने अमीर ख़ुसरो, ग़ालिब, फ़ैज़ की शायरी के उदाहरण देते हुए अपने विचारों को पुष्ट किया।

आमने-सामने

31 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत चौथे दिन 31 जनवरी 2019 को 'आमने-सामने' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018 से सम्मानित छह लेखकों के साक्षात्कार का कार्यक्रम आयोजित हुआ। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम की विशिष्टता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव (कोलकाता) देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया।

हिंदी की प्रतिष्ठित कथा लेखिका चित्रा मुद्गल का साक्षात्कार सुपरिचित हिंदी विदुषी के. वनजा ने लिया। श्रीमती मुद्गल ने कहा कि साहित्यकार जनसामान्य का प्रतिनिधि होता है। सत्ताश्रयी लेखक सच्चा साहित्यकार

नहीं है क्योंकि सत्ता ने सदैव साहित्य की आवाज़ को दबाया है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी के संदेश मेरे लिए श्रीमद्भगवद्गीता के समान हैं।

पंजाबी के प्रतिष्ठित कवि मोहनजीत का साक्षात्कार चर्चित पंजाबी लेखक रवेल सिंह ने लिया। मोहनजीत ने कहा कि उनके विचार में कविता इलहाम है, लेकिन उसको सँवारना भी पड़ता है। उन्होंने बताया कि मैं प्रगतिशील दृष्टि और सोच तथा सकारात्मकता का पक्षधर हूँ। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि लेखक स्वानुभूत सत्य के साथ-साथ दूसरों की अनुभूतियों को भी अपने लेखन में व्यक्त करने में सक्षम है।

तमिळ के प्रख्यात लेखक, पटकथाकार एस. रामकृष्णन का साक्षात्कार सुपरिचित तमिळ साहित्यकार ए. आर. वेंकटचलपति ने लिया। अपने साक्षात्कार में श्री रामकृष्णन ने कहा कि लेखक जो कहानियाँ अथवा उपन्यास लिखते हैं, वह काल्पनिक नहीं होता बल्कि सत्य होता है।

तेलुगु के प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं शिक्षाविद् के. इनाक् का साक्षात्कार प्रख्यात तेलुगु लेखक जे. एस. मूर्ति 'विहारी' द्वारा लिया गया। अपनी पुरस्कृत एवं अन्य कृतियों को संदर्भित करते हुए इनाक् ने कहा कि मेरे लेखन का सरोकार दलित, पिछड़े, दबे-कुचले, शोषित लोग और समाज हैं। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने शैक्षिक पाठ्यक्रम के क्षेत्र में उठाए गए अपने क़दमों के बारे में बताया।

कन्नड के प्रसिद्ध लेखक के. जी. नागराजप्प का साक्षात्कार चर्चित विदुषी आशा देवी द्वारा लिया गया। नागराजप्प ने कहा कि वर्तमान समय प्रचार और प्रोपेगेंडा का है, हम इसके गुलाम हो गए हैं। विचार और आचार बहुत पीछे छूट गए हैं। यह चिंता का विषय है। एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि पितृसत्ता भारत की मूल परंपरा नहीं है, बल्कि यहाँ मातृसत्ता रही है।

असमिया के प्रतिष्ठित कवि सनन्त तांति का साक्षात्कार चर्चित हिंदी कवि-अनुवादक दिनकर कुमार द्वारा लिया गया। श्री तांति ने अपनी रचना-यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि उनकी मातृभाषा ओड़िया है, बाङ्ला में उन्होंने लेखन की शुरुआत की, लेकिन बाद में असमिया में लिखने लगे। कैंसर जैसी बीमारी से जूझ रहे इस कवि ने कहा कि कविता उन्हें संजीवनी देती है।

युवा साहिती : नई फ़सल : युवा लेखक सम्मिलन

31 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 'युवा साहिती' कार्यक्रम के अंतर्गत अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन 31 जनवरी 2019 को रवींद्र भवन परिसर में किया गया। सम्मिलन का उद्घाटन मलयाळम् के प्रतिष्ठित कवि के. सच्चिदानंदन द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि युवाओं को ख़ुद से, समाज से और प्रकृति से अवश्य संवाद करना चाहिए। उन्होंने युवाओं को परंपराओं में विश्वास करने तथा अपनी सोच को करुणा के और नज़दीक ले जाने का आह्वान किया। उन्होंने युवाओं को अनुवाद पढ़ने और अनुवाद करने की भी सलाह दी, जिससे कि उनकी शब्दों की पकड़ और व्यापक हो सके। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए युवा लेखकों को लेकर अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि समाज की सभी संस्थाओं का यह दायित्व है कि वे युवा लेखन को प्रोत्साहित करें। सत्रांत में समाहार वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक द्वारा दिया गया। सम्मिलन के सत्रों का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी द्वारा किया गया।

व्याख्यान देते हुए निर्मलकांति भट्टाचार्जी

सम्मिलन के अंतर्गत कविता-पाठ के दो सत्र टी. देवीप्रिया तथा पंकज राग की अध्यक्षता में संपन्न हुए, जबकि कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता गौरहरि दास ने की। 'साहित्य आज' विषयक परिचर्चा सत्र निर्मलकांति भट्टाचार्जी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इस सत्र में देब भूषण बोरा (असमिया), संगीता सान्याल (अंग्रेज़ी), जगदीश गिरि (राजस्थानी) और एम. नारायण शर्मा (तेलुगु) ने अपनी-अपनी भाषाओं में साहित्य और युवा लेखन की वर्तमान स्थितियों पर अपने विचार रखे। ब्रह्म दत्त मगोत्रा (डोगरी), नेहा बंसल (अंग्रेज़ी), अनंत राठोड़ (गुजराती), घनश्याम देवांश (हिंदी), परवेज़ गुलशन (कश्मीरी), श्रीजित पेरूम्थचन (मलयाळम्), अमृत तेलंग (मराठी), अली राजपुरा (पंजाबी), अभिषेक शुक्ल (उर्दू), जयश्री बर' (बोडो), सूफ़िया ख़ातून (अंग्रेज़ी), नारायण झा (मैथिली), मनोज चावला (सिंधी), संजय कुमार चौबे (संस्कृत), श्याम सी. टुडु (संताली) एवं आर. बूबालन (तमिळ) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। जबकि मौमिता (बाङ्ला), श्रीकांत दुबे (हिंदी), श्रीधर वनवासी (कन्नड), जयेश राउत (कोंकणी) और रविनारायण दाश (ओड़िया) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय साहित्य में गाँधी

31 जनवरी-2 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के चौथे दिन का मुख्य आकर्षण था 'भारतीय साहित्य में गाँधी' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी। 31 जनवरी 2019 को संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए लब्धप्रतिष्ठ अंग्रेज़ी कवि एवं लेखक जयंत महापात्र ने कहा कि मैं महात्मा गाँधी के बारे में बोलते हुए अपने को बहुत छोटा पाता हूँ। उन्होंने कहा कि गाँधी साहित्य, चित्र, नाटक, नृत्य आदि कलाओं का विषय हो गए हैं। मैंने ख़ुद भी उन पर एक लंबी कविता लिखी थी। विशिष्ट अतिथि मॉरीशस सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री तथा यूनेस्को के पूर्व निदेशक अरमूगम परसुरामन ने कहा कि गाँधी व्यापक दृष्टि वाली शख़्सियत थे। उनकी दृष्टि में उच्च तकनीक से युक्त औद्योगीकृत भारत नहीं था, बल्कि ग्रामीण भारत था, जिसके लिए वे रामराज्य की परिकल्पना करते थे। अपने बीज भाषण में प्रख्यात इतिहासकार एवं लेखक सुधीर चंद्रा ने गाँधी जी द्वारा कहे उन शब्दों के पीछे की परिस्थितियों को समझने के लिए आग्रह किया जिनमें वे अपने अंतिम दिनों में लगातार दुनिया से जाने की बात कर रहे हैं। यह स्थिति 30 जून 1947 के बाद के भाषणों में देखी जा सकती है। इससे पहले वे सामान्यतया 125 वर्ष तक जीने की बात करते हैं लेकिन फिर

'ऑल मेन आर ब्रदर्स' पुस्तक का विमोचन करते हुए संगोष्ठी में उपस्थित प्रख्यात विद्वान

अचानक अपने अभी तक ज़िंदा रहने पर भी सवाल उठाने लगते हैं? आगे उन्होंने कहा कि गाँधी जी की मृत्यु पर भी उस समय राजनीतिक हलकों में जो प्रतिक्रिया हुई वह भी परेशान करनेवाली थी। इन सब परिस्थितियों के लिए कौन ज़िम्मेदार था? इस पर चर्चा अवश्य करनी चाहिए। चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कोई यह तर्क कर सकता है कि गाँधी की विचारधारा और जीवनचर्या को वास्तविक जीवन में उतारना असंभव है, लेकिन हम उन्हें इतनी आसानी से खारिज नहीं कर सकते। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए भारतीय साहित्य पर गाँधी के प्रभावों को संदर्भित करते हुए संगोष्ठी की महत्ता को उजागर किया। समाहार वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया।

इस अवसर पर आदि शंकराचार्य द्वारा लिखित *प्रश्नोत्तरमालिका* को मूल संस्कृत पाठ के साथ 23 भाषाओं में किए गए अनुवाद एक ही जिल्द में ग्रंथ का विमोचन किया गया, जिसका प्रकाशन साहित्य अकादेमी द्वारा किया गया है। साथ ही गाँधी की रचनाओं एवं व्याख्यानों के संचयन *ऑल मेन आर ब्रदर्स* (संपादक : कृष्ण कृपलानी) के दस भाषाओं में अकादेमी द्वारा प्रकाशित अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'इक्कीसवीं सदी में गाँधी के प्रासंगिकता' पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात आलोचक एवं कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि गाँधी के चिंतन का आरंभ बिंदु शोषितों के प्रति करुणा से शुरू होता है, जबकि इसी समय दूसरे महान विचारक कार्लमार्क्स शोषकों के प्रति आक्रोश से भरे रहे। इस तरह हम गाँधी जी की पूरी सोच में कोमलता और करुणा को पाते हैं। आगे उन्होंने कहा कि गाँधी का मॉडल सभ्यता के लिए अलग और विकास के लिए अलग था। उनके इस मॉडल में स्थानीय परिवेश की भागीदारी सर्वप्रथम थी। आज इक्कीसवीं सदी में हम गाँधी के विचारों के साथ ही अपनी सभ्यता को बचा पाएँगे। इसी सत्र में नंदकिशोर आचार्य ने गाँधी के अर्थशास्त्र को नैतिक अर्थशास्त्र बताते हुए कहा कि आनेवाले समय में ऐसे ही अर्थशास्त्र के सहारे विकास की कल्पना की जा सकती है। अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि हम आज भी गाँधी के विचारों को अपने जीवन में समाहित कर 21 वीं सदी की बहुत-सी मुश्किलों से निजात पा सकते हैं। नीरा चंदोक ने कहा कि भूमंडलीकृत विश्व में स्वराज के तहत सत्य और अहिंसा के द्वारा ही गाँधी को सही मायने में समझा जा सकता है। मिनी प्रसाद ने 'गाँधी की पारिस्थतिकी संबंधी अवधारणा' विषय पर अपनी बात रखी। गाँधी और दलित आंदोलन पर नरेंद्र जाधव की अध्यक्षता में, गोपाल गुरु ने 'गाँधी तथा हरिजन की अवधारणा पर', श्यौराज सिंह बेचैन ने 'दलित आंदोलनों तथा साहित्य पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर अपने विचार रखे। नरेंद्र जाधव ने

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए जयंत महापात्र

गाँधी एवं अम्बेडकर के संबंधों पर चर्चा करते हुए कहा कि उन दोनों ने साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता को समझ लिया था।

'भारतीय साहित्य में गाँधी' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन 1 फ़रवरी 2019 को आयोजित तृतीय सत्र 'गाँधी और भारतीय कथा साहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता करते हुए कन्नड के प्रतिष्ठित कथाकार एस.एल. भैरप्पा ने गाँधी जी की मातृभाषा में शिक्षा संबंधी अवधारणा पर बात की। उन्होंने गाँधी और टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों की तुलना की तथा नए सिरे से गाँधी को स्वीकारने की बात कही।

इस सत्र में श्रीभगवान सिंह ने 'उत्तर भारतीय कथासाहित्य में गाँधी' विषयक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि गाँधी ने समाज को सक्रिय करने, उनके प्रति सम्मान एवं अपनत्व का भावबोध उत्पन्न करने के प्रयास पर बल दिया। मालन वी. नारायण ने 'दक्षिण भारतीय कथा साहित्य में गाँधी' विषयक आलेख में मलयाळम्, कन्नड, तेलुगु, तमिळ भाषाओं के कथासाहित्य को संदर्भित करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रबोध पारिख ने 'पश्चिमी भारत के कथासाहित्य में गाँधी' विषयक आलेख प्रस्तुत करते हुए गाँधी की शिक्षा, भोजन, अर्थशास्त्र, सामुदायिक जीवन के प्रयोग आदि विषयों का उल्लेख किया। जयवंती डिमरी ने सतीनाथ भादुड़ी, वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों को केंद्र में रखकर उनमें चित्रित गाँधी की विचारधारा को संदर्भित किया।

'विश्व-दृष्टि में गाँधी' पर केंद्रित संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गुजराती साहित्यकार सितांशु यशश्चंद्र ने की, जिसमें चिन्मय गुहा, सीमा शर्मा, जैंसी जेम्स, सी.एन. श्रीनाथ ने अपने आलेख पढ़े। सितांशु यशश्चंद्र ने तत्कालीन समय में समय के साथ चलते हुए ज्वलंत समस्याओं के निराकरण की बात कही।

चिन्मय गुहा ने रोमां रोलां की निर्भयता, समानता, राष्ट्रवाद के सिद्धांतों की बात कही। सीमा शर्मा ने यूरोपीय और अमेरिकी लेखकों की रचनाओं को संदर्भित करते हुए उन पर गाँधी के प्रभावों को रेखांकित किया। जैंसी जेम्स ने एशियाई साहित्य में गाँधी के वैचारिक संदर्भों पर बात की। सी.एन. श्रीनाथ ने अंग्रेज़ी कथा साहित्य में गाँधी को संदर्भित करते हुए कहा कि गाँधी जी स्वयं भी बहुत ही अच्छे गद्यकार थे।

पंचम सत्र 'आत्मकथाओं में गाँधी' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कथाकार गिरिराज किशोर ने की। इस सत्र में उदयनारायण सिंह, बद्रीनारायण, जतिंद्र कुमार नायक तथा मधु सिंह ने अपने आलेख पढ़े। गिरिराज किशोर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गाँधी का जीवन ही उनका संदेश है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देश को समर्पित किया। उनके सिद्धांत हमेशा प्रासंगिक रहेंगे।

बद्रीनारायण ने 'उत्तर भारतीय आत्मकथाओं में गाँधी' विषयक आलेख में उनके अनेक समकालीनों के रोचक प्रसंग सुनाए। जतिंद्र नायक ने 'ओड़िया आत्मकथाओं में गाँधी' विषयक आलेख में बताया कि गाँधी जी विभिन्न स्थानों और व्यक्तियों से संपर्क साधने में सचेत थे। मधु सिंह ने मैडेलिन स्लेड की आत्मकथा के विभिन्न संदर्भों को उद्धृत करते हुए अपनी बात रखी। उदयनारायण सिंह ने रवींद्रनाथ ठाकुर की जीवनियों में गाँधी के संदर्भों पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के षष्ठ सत्र 'गाँधी और भक्ति साहित्य' की अध्यक्षता हरीश त्रिवेदी ने की, जिसमें एस.आर. भट्ट तथा मोहम्मद आज़म ने अपने आलेख पढ़े। एस. आर. भट्ट ने *श्रीमद्भगवद्गीता* के संदर्भ में गाँधी के विचारों को उद्धृत करते हुए अपनी बात रखी। मोहम्मद आज़म ने 'गाँधी और बीसवीं सदी में भक्ति साहित्य का पुनरुत्थान' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। हरीश त्रिवेदी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गाँधी को संस्कृत सहित भारतीय भाषाओं के भक्ति साहित्य का गहरा ज्ञान था। उनकी आस्था का विस्तार उपनिषद्, गीता, राम-कृष्ण और इस्लाम एवं ईसाई धर्मों तक था।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन 2 फ़रवरी 2019 को आयोजित सप्तम सत्र 'भारतीय काव्य, नाटकों तथा प्रस्तुतियों में गाँधी' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता अनीसुर रहमान ने की। इस सत्र में के.एस. राजेंद्रन ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के गाँधी केंद्रित नाटकों को संदर्भित करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया। रत्नोत्तमा सेनगुप्ता ने 'फ़िल्मों में गाँधी' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अनीसुर रहमान ने जयंत महापात्र, के. सच्चिदानंदन और मीना कंदास्वामी की गाँधी केंद्रित कविताओं के उद्धरण देते हुए भारतीय कविता में गाँधी की उपस्थिति को रेखांकित किया।

संगोष्ठी का अष्टम सत्र सुकांत चौधुरी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'गाँधी पर प्रभाव' विषय पर केंद्रित था। रामदास भटकल ने कहा कि गाँधी और गोखले का संबंध एक गुरु शिष्य का था और गोखले उनके राजनीतिक गुरु भी थे। प्रणव खुल्लर ने कहा कि लुई फिशर ने लिंकन की तरह गाँधी को कलात्मक मनुष्य के रूप में देखा और उनकी असाधारण जीवनी को सजीव किया। सुकांत चौधुरी ने अपने अध्यक्षीय व्यक्तव्य में गाँधी और टैगोर को असाधारण प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व कहते हुए उन्हें एक दूसरे का पूरक बताया।

संगोष्ठी के नवम सत्र की अध्यक्षता कमल किशोर गोयनका ने की और 'गाँधी की पत्रकारिता' पर विस्तार से अपने विचार रखते हुए कहा कि उन्होंने पत्रकारिता का भारतीय मॉडल पेश किया। भैरव लाल दास ने कुछेक उदाहरणों के माध्यम से लोक में गाँधी की उपस्थिति को रेखांकित किया। मधुकर उपाध्याय ने कहा कि बाङ्ला, मराठी, मलयाळम् और गुजराती को छोड़कर गाँधी केंद्रित बाल साहित्य दुर्लभ है। उन्होंने कहा कि गाँधी का व्यक्तित्व जादूगर जैसा है। बचपन में बापू को घुट्टी के रूप में पिलाना होगा।

संगोष्ठी का दशम एवं अंतिम सत्र इंद्रनाथ चौधुरी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'गाँधी पर समकालीन साहित्यिक विमर्श' पर केंद्रित था। उन्होंने कहा कि गाँधी कभी भी विस्मृत नहीं किए जा सकते हैं। शाहिद जमाल ने अपने आलेख में कहा कि गाँधी मॉडल और सच्चे लोकतंत्र के द्वारा ही गिरते राजनीतिक स्तर को उठाया जा सकता है। वर्षा दास ने कहा कि 'गाँधी और सशक्तीकरण' दोनों गाँधी और स्वराज आंदोलन की तरह था। उन्होंने राजा और रंक सभी को बराबर माना। उनका सशक्तीकरण 'गाँधी युग' में तब्दील हो सकता है।

संगोष्ठी के अंत में जीवंत खुली चर्चा भी हुई जिसमें गिरिराज किशोर, प्रियदर्शिनी, सच्चिदानंद झा, भैरवलाल दास, रामनाथ भटकल आदि विद्वान और सुधी श्रोता उपस्थित थे।

परिचर्चा : नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य

1 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत 1 फ़रवरी 2019 को 'नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य' विषयक परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात रंग-व्यक्तित्व रामगोपाल बजाज द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि जो भी कलाएँ हमें बृहत्तर नहीं बनातीं, वे व्यर्थ हैं। नाटक अपने में कई विधाओं को समेटे हुए है तथा उसका लेखन

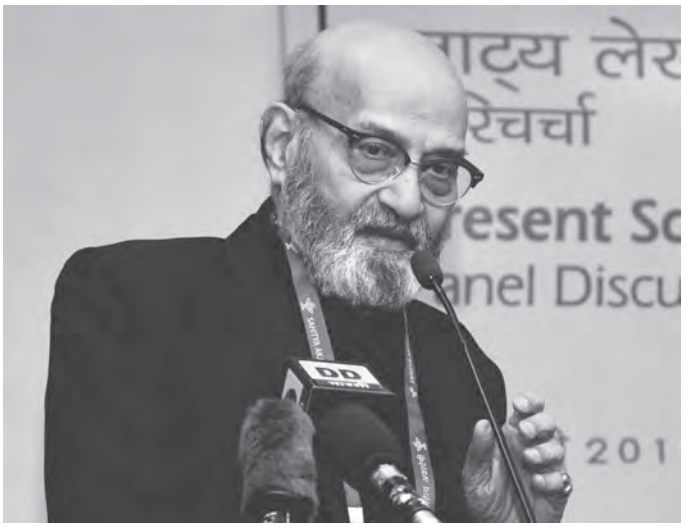

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए रामगोपाल बजाज

दलगत राजनीतिक आदि से ऊपर उठकर होना चाहिए, अन्यथा वह स्थायी नहीं रहेगा और जल्द ही परिदृश्य से ग़ायब हो जाएगा। उन्होंने नाटक को सरकारी नीतियों में शामिल करने के लिए आह्वान करते हुए कहा कि हम अपनी श्रेष्ठ नाट्य परंपरा तभी बचा पाएँगे।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के वर्तमान कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने कहा कि नाटककार हमेशा वर्तमान को लेकर बातचीत करता है, लेकिन उसमें अतीत या भविष्य के ऐसे संकेत ज़रूर होते हैं, जिन्हें कोई भी निर्देशक पकड़ सकता है। उन्होंने कहा कि नाट्य निर्देशकों को भी साहित्य को एक शास्त्र के रूप में पढ़ना और समझना होगा, तभी वे उसके रूपांतरण और निर्देशन करते समय उसके साथ न्याय कर पाएँगे। केवल यह कहकर पल्ला नहीं झाड़ा जा सकता कि हिंदी में अच्छे नाटक नहीं हैं।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने युवा निर्देशकों द्वारा उपन्यास या कहानी का निर्देशन स्वयं करने पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह बहुत ग़लत प्रक्रिया है और इसे रोका जाना चाहिए क्योंकि ऐसा करके वे अपनी प्रस्तुतियों को 'विज़्वली' तो प्रभावी बना लेते हैं लेकिन उसमें संवाद या नाट्य तथ्य ग़ायब हो जाते हैं। उन्होंने थियेटर को पीपुल के लिए तथा ड्रामा को राइटर से जोड़कर देखने की अपील की।

कार्यक्रम के संवाद सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात रंग आलोचक प्रयाग शुक्ल ने की, जिसमें आतमजीत, अजित राय, बलवंत ठाकुर, धर्मकीर्ति यशवंत सुमन तथा एन. एहन्जाव मेतेई ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। एन. एहन्जाव मेतेई ने मणिपुरी भाषा में वर्तमान नाट्य लेखन के परिदृश्य का आकलन प्रस्तुत करते हुए संक्षेप में नाट्येतिहास की भी चर्चा की। धर्मकीर्ति यशवंत सुमन ने सिनेमा और नाटक की तुलना करते हुए अपनी बात रखी। बलवंत ठाकुर ने नाटक और नाट्यकार की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि रंगमंच केवल लेखक या रंगकर्मी या निर्देशक की विधा नहीं है, इसे संपूर्णता में देखने-परखने की ज़रूरत है।

अजित राय ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी पारंपरिक नाटकों को पसंद नहीं करती। नए नाटकों के अभाव पर बात करते हुए यह सवाल उठाया कि क्या नाट्यकार की मौत हो चुकी है। आतमजीत ने कहा कि यह कहना उचित नहीं है, क्योंकि नए नाटक बड़ी संख्या में लिखे जा रहे हैं, यह अलग बात है कि निर्देशकों द्वारा उनकी रंगमंचीय प्रस्तुति नहीं की जा रही। प्रयाग शुक्ल ने यह सूचना दी कि 'रंग प्रसंग' के प्रत्येक अंक में उन्होंने नाटक को स्थान दिया था, जिनकी कुल संख्या 36 है। परिचर्चा के अंत में प्रबुद्ध श्रोताओं ने वक्ताओं से सवाल भी पूछे और अपनी टिप्पणियाँ भी कीं।

परिचर्चा : मीडिया और साहित्य

1 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत 'मीडिया और साहित्य' विषयक परिचर्चा का आयोजन 1 फ़रवरी 2019 को रवींद्र भवन परिसर में किया गया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि मीडिया में साहित्य की जगह लगातार कम होती जा रही है, जो हमारी चिंता का विषय है।

परिचर्चा के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने साहित्य और मीडिया के विभिन्न माध्यमों के साथ अपने कार्यानुभवों को साझा करते हुए कहा कि हमारी चेतना बनावटी है तथा तात्कालिक एवं उपभोक्तावादी छवियों से प्रभावित है, जो मीडिया द्वारा अभिव्यक्त हो रही है।

संवाद सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिळ लेखिका एवं पत्रकार वासंती ने की और ए. कृष्णाराव, अनंत विजय, अवनिजेश अवस्थी, मधुसूदन आनंद, रवींद्र त्रिपाठी एवं संजय कुंदन ने अपने विचार व्यक्त किए। रवींद्र त्रिपाठी ने कहा कि अगर मैं लेखक या पत्रकार में से यह चुनाव करूँ कि किसको अभिव्यक्ति की ज़्यादा स्वतंत्रता है तो मेरा उत्तर लेखक होगा। क्योंकि पत्रकारों को विभिन्न अंकुशों के बीच काम करना होता है। आगे उन्होंने कहा कि प्रिंट पत्रकारिता में ज़रूर साहित्य का स्थान कम हुआ है, लेकिन उसके स्थान पर सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों में हम साहित्य को विभिन्न रूपों में देख सकते हैं।

ए. कृष्णाराव ने तेलुगु मीडिया और साहित्य को संदर्भित करते हुए मीडिया पर साहित्य के प्रभाव पर बात की। उन्होंने कहा कि मीडिया अब कॉरपोरेट के हाथों का खिलौना बन गया है। वर्तमान समय में पत्रकारिता साहित्य से कोई प्रेरणा या प्रभाव नहीं ग्रहण कर रही। वरिष्ठ पत्रकार मधुसूदन आनंद ने कहा कि हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का जो शुरुआती इतिहास है, उसमें पत्रकारिता और साहित्य के बीच कोई अलगाव नहीं था।

अवनिजेश अवस्थी ने कहा कि मीडिया बाज़ार के दबाव में है और उसे साहित्य और संस्कृति विषयों में बहुत ज़्यादा रुचि नहीं है। आगे उन्होंने कहा कि एक समय साहित्य समाज के आगे चलता था, लेकिन अब वह उसके पीछे चल रहा है। ये परिस्थितियाँ बदलनी होंगी, तभी साहित्य मशाल का काम कर पाएगा और उसे तभी अन्य माध्यमों में अपेक्षित स्थान मिल पाएगा।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए चंद्रशेखर कंबार

अनंत विजय ने आज के साहित्य पर ही सवाल उठाते हुए कहा कि आजकल जो कहानियाँ और कविताएँ लिखी जा रही हैं क्या वो सच में साहित्य के दायरे में आती हैं। उन्होंने कहा कि जब घटिया साहित्य लिखा जाएगा तो उसे छापेगा कौन? उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अब छपने के लिए ही नहीं बल्कि सिनेमा और टेलीविज़न के द्वारा भी लिखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमें यह विलाप बंद करके कि साहित्य छापा नहीं जा रहा, के स्थान पर अच्छा लेखन कर उसे प्रकाशन के लिए विवश करना होगा। अंतिम वक्ता संजय कुंदन ने कहा कि आजकल हर अख़बार ब्रांडिंग के दबाव में या कहें बाज़ार के दबाव में अपना 'कंटेंट' चुन रहा है और वह यह भी जान रहा है कि साहित्य में भी ब्रांड बनने का माद्दा है। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता बाज़ार के साथ हो सकती है, लेकिन साहित्य बाज़ार का हमेशा विरोध करेगा।

संवाद सत्र की अध्यक्षता कर रहीं वासंती ने कहा कि मीडिया और साहित्य का रिश्ता एक-दूसरे के लिए पूरक का काम कर सकता है, अतः हमें दोनों के बीच कुछ ज़रूरी और समाज को संदेश देनेवाले तथ्यों में एकरूपता लानी होगी।

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन : अभिव्यक्ति की अपनी पीड़ा

2 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत 2 फ़रवरी 2019 को ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन का आयोजन किया गया। साहित्योत्सव के अंतर्गत दिल्ली में पहली बार इस तरह का सम्मिलन आयोजित हुआ, जिसका प्रबुद्ध साहित्य समाज में व्यापक स्वागत हुआ।

सम्मिलन का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया, जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। वे काफ़ी लंबे समय से ट्रांसजेंडर समाज को एक सम्मानित आवाज़ देने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने ट्रांसजेंडर कवियों को मंच प्रदान करने के लिए अकादेमी की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अवसर हम सबके लिए स्मरणीय है और इससे हम सबके लिए सम्मान के नए रास्ते खुलेंगे।

इस अवसर पर 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अपनी कविताएँ प्रस्तुत करनेवाली ट्रांसजेंडर कवयित्रियाँ थीं – रानी मजुमदार, शिवानी आचार्य, रेशमा प्रसाद, देवदत्त बिश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता डे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा एवं अरुणाभ नाथ। प्रस्तुत कविताओं के हिंदी अनुवाद पार्थसारथी भट्टाचार्जी द्वारा प्रस्तुत किए गए। ये ट्रांसजेंडर कवि पश्चिम बंगाल, बिहार एवं छत्तीसगढ़ से आए हुए थे। इनमें से कुछ प्रोफ़ेसर, अध्यापक, सिविल इंजीनियर आदि कार्यों से जुड़े हैं। सम्मिलन की अध्यक्षता देबज्योति भट्टाचार्जी द्वारा की गई। सभी ट्रांसजेंडर कवियों की कविताओं में एक ही मुख्य

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन का दृश्य

दर्द था और वो था अपनी अस्मिता और पहचान को लेकर। सभी ने कहा कि वे पैदा तो मर्द के रूप में होते हैं, लेकिन उनका मन स्त्री का होता है। सभी के मन में उनके घरवालों द्वारा उनकी उपेक्षा करना तथा समाज द्वारा उन्हें स्वीकार न करने का दर्द था। सभी ने कहा कि सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं लेकिन मन को कोई नहीं। रेशमा जो बिहार से आई थीं, ने कहा कि अब जो थोड़ा-बहुत सम्मान उन्हें मिल रहा है, वह क़ानून की वजह से है, न कि समाज द्वारा दिया जा रहा है।

सम्मिलन के आरंभ में औपचारिक स्वागत तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन हम देश के अन्य भागों में भी करेंगे तथा ट्रांसजेंडर कवियों को अन्य कवियों के साथ मंच साझा करने के लिए भी आमंत्रित करेंगे।

परिचर्चा : भारत में प्रकाशन की स्थिति

2 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत 2 फ़रवरी 2019 को रवींद्र भवन परिसर में 'भारत में प्रकाशन की स्थिति' विषयक परिचर्चा का आयोजन किया गया। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि यह तीसरा अवसर है जब हम साहित्योत्सव के दौरान पुस्तक प्रकाशन की स्थिति पर चर्चा के लिए उपस्थित हुए हैं, लेकिन इस कार्यक्रम में भारतीय प्रकाशकों की अरुचि निराश करती है।

कार्यक्रम का बीज वक्तव्य ग्लोबल एकेडेमिक पब्लिशिंग, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के निदेशक सुगता घोष ने दिया। उन्होंने कहा कि पिछले तीन वर्षों से प्रकाशन उद्योग यथास्थिति में है, जबकि कुछ समय पहले तक यह घोषणा की जा रही थी कि डिजिटल पुस्तकों के आने से मुद्रित पुस्तकों का अंत हो जाएगा। तथाकथित लघु प्रकाशक भी पाठकों की रुचि के अनुसार किताबें छापकर यथासंभव लाभ उठा रहे हैं।

संवाद सत्र की अध्यक्षता करते हुए रमेश कुमार मित्तल ने कहा कि प्रकाशन रोज़गार और राजस्व दोनों उपलब्ध कराता है। इस समय यह उद्योग बहुत ही विविधतापूर्ण और गतिशील है तथा इसमें केवल व्यावसायिक प्रकाशक ही नहीं, बल्कि संस्थान, विश्वविद्यालय और सरकारी प्रकाशनगृह भी सफल हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का प्रकाशन विश्व में छठे स्थान पर है, जबकि अंग्रेज़ी प्रकाशन दूसरे स्थान पर है।

अन्य वक्ताओं में अशोक माहेश्वरी, बालेंदु शर्मा दाधीच, भास्कर दत्ता बरुआ, रामकुमार मुखोपाध्याय शामिल थे। सभी का कहना था कि प्रकाशन की स्थिति क्षेत्रीय भाषाओं में चिंताजनक है, लेकिन उसे परस्पर अनुवादों की संख्या बढ़ाकर नियंत्रित किया जा सकता है।

परिचर्चा में उपस्थित अतिथिगण

सभी ने क्षेत्रीय भाषाओं के स्तरीय साहित्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें केवल क्षेत्रीय कहकर प्रकाशित न किया जाना इन भाषाओं के समृद्ध साहित्य से पाठकों को वंचित करना है।

श्री दाधीच ने कहा कि तकनीक से हमें डरने की ज़रूरत नहीं, बल्कि उसका लाभ उठाना चाहिए।

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ

2 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

कार्यक्रम के दौरान संवाद करती वीरता पुरस्कार विजेता

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों के नाम रहा। 'आओ कहानी बुनें' शीर्षक के अंतर्गत बच्चों के लिए 2 फ़रवरी 2019 को विभिन्न बाल गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत कविता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने की कार्यशाला, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियाँ सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए।

बच्चों के लिए कहानी और कविता प्रतियोगिता जूनियर और सीनियर वर्गों में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से आए 300 से ज़्यादा बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में कुछ दिव्यांग बच्चे भी शामिल थे। कार्यक्रम में डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, पाथवे स्कूल, भारतीय विद्या भवन, मॉडर्न स्कूल, इंडियन स्कूल, केंद्रीय विद्यालय, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सर्वोदय बाल विद्यालय और डी.ए.वी. स्कूल के बच्चों ने भागीदारी की। कार्टून बनाने की कार्यशाला में प्रख्यात कार्टूनिस्ट उदय शंकर ने बच्चों को कार्टून बनाने की कला सिखलाई। प्रख्यात बाल साहित्यकार दिविक रमेश और रजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की। ज़ैबुन्निसा 'हया' ने बाल कहानी सुनाई। बच्चों ने सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कुछ बच्चों ने गाँधी पर अपनी विचार व्यक्त किए और स्वरचित कविताएँ भी सुनाईं।

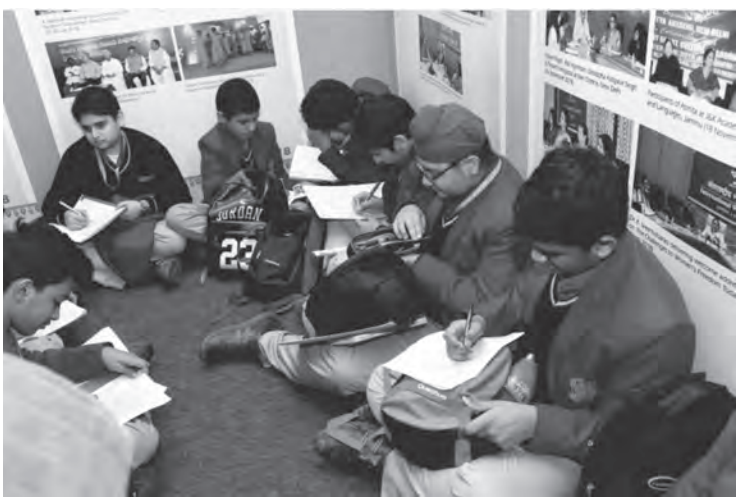

लेखन प्रतियोगिता में सहभागिता करते बच्चे

सांस्कृतिक कार्यक्रम : नाट्य-कथा : कृष्ण

29 जनवरी 2019, नई दिल्ली

कमानी सभागार में सोनल मानसिंह द्वारा नृत्य प्रस्तुति

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह के पश्चात् सोनल मानसिंह और उनकी मंडली ने कृष्ण के जीवन के कुछ लोकप्रिय और प्रिय प्रसंगों की संगीत, नृत्य, कथन, स्पष्टीकरण और व्याख्याओं के माध्यम से नृत्य-कथा की अनूठी शैली प्रस्तुत की, जिसमें समस्त कृष्ण-चेतना की विशालता विद्यमान थी। यद्यपि कहानी-कथा विश्व के प्रत्येक भाग में सुनाई जानेवाली प्राचीन कला है, किंतु भारत में इसका महत्त्व तब और अधिक बढ़ जाता है जब सोनल मानसिंह कथा-कहानियों, दर्शनशास्त्र के साथ मिथकों और आख्यानों, सामाजिक मुद्दों, इतिहास तथा अन्य लोकप्रिय आयामों को एक साथ जोड़कर प्रस्तुत करती हैं। सोनल मानसिंह एक भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना, गुरु, नृत्य-निर्देशक, विद्वान तथा भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं की लेखिका हैं। उन्हें कई अन्य प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ-साथ पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया है।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2017

पुरस्कार अर्पण समारोह

22-23 जून 2018, गुवाहाटी

पुरस्कार विजेताओं के साथ के. श्रीनिवासराव, लीलाधर जगूड़ी, चंद्रशेखर कंबार तथा माधव कौशिक (बाएँ से दाएँ)

साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार 2017 अर्पण समारोह 22-23 जून 2018 को असम के गुवाहाटी में पान बाज़ार स्थित ज़िला पुस्तकालय सभागार में आयोजित किया गया।

समारोह में सरस्वती वंदना के पश्चात्, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने गणमान्यों, पुरस्कृत अनुवादकों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की। सुप्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार लीलाधर जगूड़ी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने पुरस्कार अर्पण के पश्चात् अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक के समापन वक्तव्य के पश्चात् एक सांस्कृतिक नाटक 'यशोधरा-नृत्य रूपक' प्रस्तुत किया गया। यह रूपक मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'यशोधरा' पर आधारित था जिसका निर्देशन और प्रणयन गुरु जितेंद्र महाराज द्वारा और प्रस्तुतीकरण कथक-युगल नलिनी, कमलिनी और कलाकारों के समूह द्वारा किया गया।

23 जून 2018 को असम के गुवाहाटी स्थित 'संस्कृति' के विवेकानंद केंद्र संस्थान में अनुवादक सम्मिलन आयोजित किया गया, जिसमें पुरस्कृत अनुवादकों ने अपने अनुवाद के अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माधव कौशिक ने की। साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार के विजेता हैं—असमिया में (स्व.) बाबुल तामुलि, बाङ्ला में उत्पल कुमार बसु, बोडो में गबिंद बसुमतारी, डोगरी में यश रैणा, अंग्रेज़ी में रंजिता बिश्वास,

गुजराती में हरीश मीनाश्रु, हिंदी में प्रतिभा अग्रवाल, कन्नड में एच. एस. श्रीमति, कश्मीरी में इक़बाल नाज़की, कोंकणी में प्रशांति तळपणकार, मैथिली में इंद्रकांत झा, मलयाळम् में के. एस. वेंकटचलम, मणिपुरी में नाओरेम बिद्यासागर सिंह, मराठी में सुजाता लक्ष्मीकांत देशमुख, नेपाली में चंद्रमणि उपाध्याय, ओड़िया में सूर्यमणि खंटिया, पंजाबी में जिंदर, राजस्थानी में कृष्णा जाखड़, संस्कृत में प्रवीण पण्ड्या, संताली में सूर्य सिंह बेसरा, सिंधी में अर्जुन चावला, तमिळ में युमा वासुकि, तेलुगु में वेन्ना वल्लभराव और उर्दू में महमूद अहमद सहर। कार्यक्रम में स्थानीय साहित्यप्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अभिव्यक्ति

23-24 जून 2018, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन गुवाहाटी स्थित 'संस्कृति' के विवेकानंद केंद्र संस्थान में 23-24 जून 2018 को किया गया। कार्यक्रम में भारतीय साहित्य से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए लेखकों, विद्वानों और अनुवादकों को साझा मंच प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में असम की समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपरा के बारे में बात करते हुए शंकरदेव की भूमि पर ऐसी संगोष्ठी के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय साहित्य के अभियान को, एक ऐसे देश में जो अपनी चामत्कारिक विविधता के लिए जाना जाता है, मज़बूत करने और आगे बढ़ाने में साहित्य अकादेमी के प्रयासों को भी रेखांकित किया। ऐसा कहकर उन्होंने बाक़ी सत्रों के लिए एक तरह से मार्ग प्रशस्त कर दिया।

लब्धप्रतिष्ठ असमिया लेखक एवं विद्वान नगेन शइकीया ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि असम पूर्वोत्तर का प्रवेश-द्वार है। उन्होंने असमिया साहित्य में योगदान के लिए तमाम साहित्यकारों और विद्वानों में से शंकरदेव, जिन्होंने शेष भारत को असम के नज़दीक और असम को भारत के नज़दीक ला दिया, माधव कंडली और लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ का गुणगान किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने यह बात भी सामने रखी कि इतनी विविधताओं के बावजूद भारतीयता का कुछ ऐसा सारतत्त्व है जो हमें आपस में जोड़ता है और यही वह भारतीयता है जिसने पश्चिम के प्रभावों को सफलतापूर्वक झेल लिया। उन्होंने यह आशा और अपेक्षा करते हुए अपने वक्तव्य का समापन किया कि अभिव्यक्ति बहुत से नए और युवा लेखकों व रचनाकारों को साहित्यिक विमर्श के केंद्र में लाएगी। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार भी सत्र में उपस्थित थे लेकिन अस्वस्थता के कारण वे अपना वक्तव्य नहीं दे सके।

अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने चंद्रशेखर कंबार और नगेन शइकीया जैसे दो महान लेखकों की मंच पर एक साथ उपस्थिति को रेखांकित करते हुए बताया कि यह बहुत सम्मान और सौभाग्य की बात है। उन्होंने भी एकीकरण वाली भारतीय जीवन-शैली और भारतीय मानस के बारे में बताया कि भारत के लिए विविधता में एकता की अवधारणा को आत्मसात करना जितना स्वाभाविक और मूलभूत रहा पश्चिमी दुनिया के लिए उतना ही कठिन। उन्होंने अकादेमी की भी प्रशंसा की, जिसने पिछले सत्तर सालों से इतना कठिन परिश्रम किया कि अब वह ऐसी स्थिति में है कि भारतीय लेखकों की पाँच पीढ़ियों को बड़ी आसानी से एक साथ मंच पर ला सकती है।

इसके पश्चात् 'कविता-पाठ' का आयोजन किया गया। इसमें तेरह भारतीय भाषाओं के तेरह कवियों ने अपनी प्रतिनिधि कविताएँ प्रस्तुत कीं। रॉबिन नांगोम सिंह ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रदीप आचार्य

कविताओं के रचनाकारों और क्षेत्रीय भाषाओं में कविताएँ लिखने वाले रचनाकारों के अंतर पर बात की और कहा कि जो कविताएँ तात्कालिक यथार्थ और संघर्षों से संबंधित होंगी केवल वही प्रासंगिक रह जाएँगी।

हर्षद त्रिवेदी ने गुजराती में अपनी कविताओं के पाठ के साथ-साथ हिंदी में उसके अनुवाद का भी पाठ किया। उनकी कविताओं में 'मीरा वचन', 'वस्त्र' और 'तुम्हारी आवाज़' प्रमुख थे। नरसिंह देव जम्वाल ने अपनी डोगरी कविता और उसके अंग्रेज़ी अनुवाद का पाठ किया। इसके पश्चात् रश्मि चौधुरी ने कविता-पाठ किया जो बोडो में कविताएँ लिखती हैं। उन्होंने एक कविता बोडो में पढ़ी और कुछ कविताओं का हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद भी पढ़ा। बिनायक बंद्योपाध्याय ने अपनी एक कविता 'मिलिए नाओ' बाङ्ला में पढ़ी और तीन अन्य कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ा। नीलिम कुमार ने अपनी असमिया कविता 'भाड़ाघर' का पाठ किया।

अब्दुल ख़ालिक नज़र 'शम्स' ने अपनी लंबी कश्मीरी कविताओं में से एक का पाठ किया और फिर उसके अंग्रेज़ी अनुवाद 'इफ़ इट रेंस' का पाठ किया। संगोष्ठी में ओड़िया भाषा का प्रतिनिधित्व कर रहे बिमल जेना ने अपनी कविता का ओड़िया में (द्रौपदी) और फिर उसका हिंदी अनुवाद (मानवी) प्रस्तुत किया। पॉल कौर ने अपनी मूल पंजाबी कविता 'उड़ान' से शुरुआत की और फिर अपनी कविताओं का हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ा। संस्कृत का प्रतिनिधित्व प्रभुनाथ द्विवेदी ने किया जिन्होंने हास्य रस से ओत-प्रोत अपनी कविताओं का पाठ किया और उसके पश्चात् उनके हिंदी अनुवाद का। इसके बाद प्रेम सोरेन ने अपनी संताली कविता और उसके हिंदी अनुवाद (दहेज़) का पाठ किया।

एम. मुरुगेश ने अपनी कविताओं में से एक का अंग्रेज़ी अनुवाद ('हारमनी' शीर्षक से) प्रस्तुत किया और अपनी कविताओं को मूल तमिळ में भी पढ़ा। के.वी. मूर्ति ने अपनी तेलुगु कविताओं का पाठ किया और फिर अपनी कुछ कविताओं के अंग्रेज़ी (केमिस्ट्री ऑफ़ टीयर्स, शी मेट मी व्हेन शी वॉज़ 19) में अनुवाद भी प्रस्तुत किए। राशिद अनवर 'राशिद' ने अपनी लिखी हुई एक नज़्म और दो ग़ज़लें सुनाकर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। सत्र का समापन, सत्र की अध्यक्षता कर रहे रॉबिन नांगोम सिंह के मणिपुरी में अपनी मूल कविताओं और तत्पश्चात् उनके अंग्रेज़ी अनुवाद के पाठ से हुआ। दूसरे दिन का पहला सत्र भारतीय साहित्य के अनुवाद पर केंद्रित था। सत्र के दौरान निर्धारित विषय 'अनुवाद : मौलिकता के तत्त्व को बचाए रखने की चुनौतियाँ' पर कई पत्र प्रस्तुत किए गए। सयंतन दासगुप्ता ने अपने आलेख से इस सत्र का आरंभ किया। अपने लेख में दासगुप्ता ने भारतीय भाषाओं से अंग्रेज़ी में अनुवाद पर बात रखी। उन्होंने अनुवाद के समय मौलिक रचना के सारतत्त्व को ग्रहण करने में अनुवादकों द्वारा सामना किए जाने वाले चार मुख्य और व्यापक समस्याओं को रेखांकित किया। उन्होंने अनुवाद

के अत्यधिक अंग्रेज़ीकरण के ख़तरों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया जिससे मौलिक रचना में समाहित संस्कृति-विशिष्ट प्रतीक ही ग़ायब हो जाते हैं। इसके पश्चात् लक्ष्मी चंद्रशेखर ने अपनी बात रखी। उन्होंने पहले 'मौलिक' की धारणा को व्याख्यायित किया और फिर एक ही कन्नड कविता के कई अंग्रेज़ी अनुवादों की आलोचनात्मक तुलना प्रस्तुत की। इसके पश्चात् आर. के. मोबिसिंह ने अनुवाद के समक्ष सामान्य चुनौतियों पर अपनी बात रखी और फिर हिंदी से मणिपुरी अनुवाद में आने वाली विशिष्ट चुनौतियों के बारे में भी बताया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रदीप आचार्य द्वारा की गई, जिन्होंने सत्र के अंत में प्रमुख तर्कों का सार प्रस्तुत करते हुए अपनी बात रखी।

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

इसके बाद आयोजित 'कहानी-पाठ' का सत्र 'अभिव्यक्ति' का आख़िरी सत्र था। इस सत्र में छः अलग-अलग भारतीय भाषाओं के कहानीकारों ने श्रोताओं के सम्मुख अपनी-अपनी कहानियों का पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता असमिया की लब्धप्रतिष्ठ लेखिका अरुपा पतंगिया कलिता ने की।

इस सत्र में सबसे पहले कमल रांगा ने राजस्थानी में लिखी अपनी एक कहानी का पाठ किया जिसमें पितृसत्ताक समाज में स्त्री की स्थिति को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया था। बलराम ने हिंदी में अपनी कहानी पढ़ी। इसी तरह कोंकणी के कहानीकार अजय बुआ ने एक मर्मस्पर्शी कहानी पढ़ी जिसमें अपनी नवजात बच्ची के अंगों को वैज्ञानिक शोध हेतु दान करने में पिता के संघर्षों को उकेरा गया था।

मिथिलेश कुमार झा ने भी अपनी कहानी से श्रोताओं को प्रभावित किया। जो मूलतः मैथिली में लिखी गई थी।

प्रकाश हाङ्खिम ने एक नेपाली कहानी पढ़ी और भारतीय नेपाली पहचान के बारे में भी संक्षेप में अपनी बात रखी।

कोमल दयलानी ने भ्रष्टाचार और ड्रग्स के ख़तरों से संबंधित कहानी पढ़ी जिसे उन्होंने मूलतः सिंधी भाषा में लिखा था। सभी के प्रति धन्यवाद देते हुए सत्र और संगोष्ठी का समापन हुआ।

युवा पुरस्कार 2018

पुरस्कार अर्पण समारोह

26 अक्तूबर 2018, इंफाल

साहित्य अकादेमी ने 26 अक्तूबर 2018 को ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट, चिंगमोइराङ, इंफाल, मणिपुर में युवा पुरस्कार अर्पण समारोह 2018 का आयोजन किया। कार्यक्रम का आरंभ मनीच जवाहरलाल नेहरू मणिपुरी डांस एकेडेमी द्वारा मणिपुरी पारंपरिक गीत 'वेन्ना' की प्रस्तुति के साथ हुआ। के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने पुरस्कार विजेताओं, अतिथियों, लेखकों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने पूर्व बाल साहित्य के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने लेखकों, जो समाज के उथल-पुथल, संघर्ष और बेचैनी पर लेखन करते हैं उनके आविर्भाव पर भी ज़ोर दिया। उन्होंने आगे याद दिलाया कि साहित्य अकादेमी उनके योगदान के माध्यम से भारत की 24 भाषाओं को विविध रूप से बढ़ावा दे रही है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने युवा लेखकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका योगदान सराहनीय है, क्योंकि वे अपने लेखन के माध्यम से मौजूदा सामाजिक मुद्दों और महत्त्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि युवा लेखक वास्तव में भारत के वर्तमान संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हैं और उन्हें बदलाव लाने में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए तथा अन्याय, उत्पीड़न तथा समाज की सभी बुराइयों से लड़ना चाहिए। युवा पुरस्कार से विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कृत युवा लेखकों के साथ साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव, उपाध्यक्ष माधव कौशिक तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एस्थर डेविड ***(बाएँ से दाएँ)***

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2018 से सम्मानित कृतियाँ एवं उनके रचनाकार इस प्रकार हैं—असमिया—*मौमाखि साम्राज्य* (कहानी)-बिपाशा बोरा, बाङ्ला—*खेलनाबातिर दिन शेष* (कविता)-सम्राज्ञी बंद्योपाध्याय, बोडो—*अन्नायनि गुबुन मोनसे महर* (कहानी)-पुरन' ब्रह्म, गुजराती—*जन्मारो* (कविता)-एषा दादावाला, हिंदी—*थरथराहट* (कविता)-आस्तीक वाजपेयी, कन्नड—*केपीना डब्बी* (कविता)-पद्मनाभ भट्ट, शेवकर, कश्मीरी—*ज़ारीन ज़ख़म* (कविता)-दीबा नाजिर, कोंकणी—*मुखडीं* (कविता)-विल्मा लवीना डिसूज़ा, मैथिली—*वर्णित रस* (कविता)-उमेश पासवान, मलयाळम्—*व्यसनसमुच्चयम्* (उपन्यास)-*अमल एम.,* मणिपुरी—*लौबुक्की मनम* (कविता)-थोङब्रम अमरजीत सिंह, मराठी—*फेसाटी* (उपन्यास)-नवनाथ सोपान गोरे, नेपाली—*1986* (कहानी)-छुदेन काविमो, ओड़िया—*शोष* (कविता)-जयद्रथ सुना, पंजाबी—*बलोरा* (उपन्यास)-गुरप्रीत सहजी, राजस्थानी—*अेकर आज्या रै चाँद* (कविता)-दुष्यंत जोशी, संस्कृत—*चित्रकाव्यदर्शनम्* (कविता)-मुनि राजसुंदर विजय, संताली—*हॉपोन मयंक कुक्मू* (कहानी)-रानी मुर्मू, सिंधी—*सबला नारी* (नाटक)-चंपा डी. चेतनाणी, तमिळ—*अंबु पडुक्कई* (कहानी)-सुनील कृष्णन, तेलुगु—*आकु कदलनि चोट* (कविता)-बालसुधाकर मौलि तथा उर्दू में शहनाज़ रहमान को *नैरंग-ए-जुनून* (कहानी) के लिए पुरस्कृत किया गया।

अंग्रेज़ी के प्रख्यात लेखक एस्थर डेविड मुख्य अतिथि थे। साहित्य अकादेमी द्वारा मणिपुर राज्य का पुरस्कार अर्पण समारोह के लिए चयन किए जाने पर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की क्योंकि मणिपुर साहित्य, परंपरा, संस्कृति और शिल्पकला के क्षेत्र में अत्यंत समृद्ध है। उन्होंने साहित्य के बारे में भी बात की तथा अनुवाद के महत्त्व को बताते हुए कहा कि अनुवाद एक क्षेत्र की परंपरा और संस्कृति को भाषाओं की विविधता के बावजूद सभी क्षेत्रों तक पहुँचाने के लिए अच्छा माध्यम है। वे देश की क्षेत्रीय भाषाओं के प्रसार के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा किए गए प्रयास के लिए अभिभूत हैं। उन्होंने लोकथाओं और वाचिक साहित्य में अपनी रुचि के बारे में बताया उन्होंने युवा लेखकों को समाज में गहरी चेतना और उनके द्वारा स्थापित किए जा रहे सामाजिक बदलाव के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने उनकी यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया और उन्हें सावधान रहने के लिए आगाह किया। पुरस्कार समारोह का समापन जवाहर लाल नेहरू डांस एकेडेमी के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत शास्त्रीय नृत्य 'वसंत रास' के साथ हुआ। कार्यक्रम के अंत में के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने कलाकारों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए अंगवस्त्रम् प्रदान किया।

लेखक सम्मिलन

27 अक्तूबर 2018, मणिपुर, इंफाल

साहित्य अकादेमी द्वारा युवा पुरस्कार समारोह के दूसरे दिन 27 अक्तूबर 2018 को ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट, इंफाल के सभागार में पुरस्कार विजेताओं के सम्मिलन का आयोजन किया गया। सम्मिलन की अध्यक्षता माधव कौशिक, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने की। युवा पुरस्कार से पुरस्कृत लेखकों ने सम्मिलन में अपने विचार एवं अनुभव साझा किए।

असमिया लेखिका बिपाशा बोरा ने लोककथाओं और लोक जीवन के लिए प्रेम जगाने और उन्हें पुनः तलाशने की इच्छा ज़ाहिर की। युवा बाङ्ला कवयित्री सम्राज्ञी बंद्योपाध्याय ने अपने बचपन के अनुभव साझा किए कि कैसे वह कोलकाता शहर के मध्यवर्गीय परिवार में बड़ी हुईं। उन्होंने बताया कि वे घर में सबसे बातूनी लड़की थीं, सामाजिक रूप से अकेली भी। एक संवेदनशील बच्ची होने के नाते उन्होंने कहा कि उन्होंने अपनी माँ और

व्याख्यान देते हुए तोंगब्रह्म अमरजीत सिंह

सामाजिक पूर्वाग्रहों में अपने परिवार और पिता के प्रति लिंग विभेद देखे। युवा बोडो लेखक पूर्ण ब्रह्म ने कहा कि उन्होंने स्कूली जीवन से ही लेखन प्रारंभ कर दिया था। उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के लिए अपनी रचनाएँ भेजीं। फिर भी प्रारंभिक वर्षों में वे अपनी रचनाएँ प्रकाशित नहीं करा पाए। उनका एक कहानी-संग्रह एवं तीन पुस्तकें प्रकाशित हैं। वे उन सभी को अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जिन्होंने उन्हें लेखन के लिए प्रेरित किया। इस संबंध में उन्होंने गोपीनाथ ब्रह्म और सुनील फूकन बसुमतारी के साथ ही कई अन्य लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। कश्मीरी की युवा लेखिका दीबा नाज़िर ने कहा कि वह जिस माहौल में पली-बढ़ी उसी से लेखन के लिए प्रेरित हुईं। बहुत पहले उन्होंने तीन पुस्तकों का कश्मीरी से उर्दू अनुवाद किया था। युवा उर्दू लेखिका शहनाज़ ने भी बतौर लेखक अपना अनुभव साझा किया। उसने बताया कि उन्होंने उर्दू को ही लेखन के माध्यम के रूप में क्यों चुना जबकि सभी को इस पर संदेह था कि रोज़गार के क्षेत्र में इससे अवसर प्राप्त नहीं हो सकता। लेकिन वह पूरी तरह से भाषा के लिए समर्पित थीं।

तेलुगु लेखक बाल सुधाकर मौलि ने कहा कि उन्हें ग्रामीण जीवन ने बहुत प्रभावित किया। श्रीश्री और गुरजाडा से प्रेरित होकर उनका झुकाव कविता-लेखन की ओर हुआ। कन्नड लेखक पद्मनाभ भट्ट ने कहा कि उनमें रचनात्मक प्रवृत्ति बहुत कम उम्र में ही उत्पन्न हुई जब वे कक्षा 8 में थे। वे *मंगला* पत्रिका के द्वारा कहानी-लेखन के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने सस्पेंस थ्रिलर लिखा, जिस पर वे किसी दिन एक फिल्म बनाने का स्वप्न देखते हैं। तमिळ लेखक आर. सुनील कृष्णन एक एंग्री-राइटर हैं जो सामाजिक बुराइयों के ख़िलाफ़ विद्रोह करते हैं। उन्होंने अपने जीवन के दो महत्त्वपूर्ण लोगों को याद किया जिन्होंने वास्तव में उनकी रचनात्मकता को पहचाना – एक उनकी पत्नी और दूसरा बेटा। मलयाळम् लेखक अमाल एम. ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्रारंभ में उनका लेखन कैरियर के अंतर्द्वंद्व में उदासी, मानसिक संघर्ष और डर से भरा हुआ था। इन बाधाओं से बचे रहने के लिए उन्होंने संघर्ष किया। मणिपुरी कवि तोंगब्रह्म अमरजीत ने पुरस्कार मिलने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि वे जिस माहौल में बड़े हुए वहाँ के परिदृश्य, संस्कृति तथा झील के आसपास के क्षेत्रों ने उनकी काव्यात्मकता को प्रभावित किया। वे राज्य के प्रख्यात लेखकों से मिले। इस क्षेत्र के प्रख्यात लेखक शरतचंद थियाम ने उन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। ओड़िया लेखक जयद्रथ सुना एक छोटे-से गाँव, जिसे बंजीपदर कहा जाता है, जहाँ वे बड़े हुए, से कविता-लेखन के लिए प्रेरित हुए।

इस अवसर पर माधव कौशिक ने समापन वक्तव्य देते हुए युवा लेखकों को सभी बाधाओं को पार करते हुए अपनी यात्रा में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

अखिल भारतीय युवा लेखक महोत्सव

27-28 अक्तूबर 2018, इंफाल

युवा पुरस्कार समारोह के दूसरे दिन, साहित्य अकादेमी ने आदिवासी अनुसंधान संस्थान के सम्मेलन कक्ष, चिंगमेरंग, इंफाल, मणिपुर में 'आविष्कार-अखिल भारतीय युवा लेखक महोत्सव' का भी आयोजन किया। गणमान्य व्यक्तियों

और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने राष्ट्र के युवा लेखकों के योगदान की प्रशंसा की, जिन्हें उन्होंने सामाजिक परिवर्तन लाने वाला बताया।

समापन व्याख्यान देते हुए माधव कौशिक

उन्होंने कहा कि साक्षरता, ज्ञान, विकास और सभी वर्गों के प्रगति पृथ्वी पर प्रगतिशील और विकसित समाजों के महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं। प्रत्येक आयु वर्ग न केवल राष्ट्रों के विकास में बल्कि संतुलन में भी योगदान देता है। लेकिन यह युवा लोग हैं, जिनकी गतिशीलता, साहस और तीखेपन से विकास की तीव्र गति में अधिक योगदान होता है। उन्होंने आगे कहा कि युवा लोग ऐसे बीज हैं जिनमें से भविष्य के पेड़ पैदा होते हैं, वे अक्सर नए विचारों के जनक होते हैं और पहले से मौजूद ज्ञान के तालाब में ऊर्जा के नए आयाम देने वाले होते हैं। अपने उद्घाटन भाषण में ओड़िया के प्रख्यात लेखक गौरहरि दास ने जानकी, मैथ्यू अर्नाल्ड और राजा सुलेमान की कहानियों का ज़िक्र करते हुए समाज में साहित्य के महत्त्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य की भूमिका किसी के विवेक को आह्वान करने की है। उन्होंने अपने अतीत को याद करते हुए बताया कि एक युवा लेखक के रूप में उन्होंने कितना संघर्ष किया था और अपने भाषण के अंत में उन्होंने युवा लेखकों को याद दिलाया कि उनके लेखन की अपनी प्राकृतिक शैली में होनी चाहिए जो एक बहुत ही आवश्यक पहलू है, जैसा कि विभिन्न लेखकों की अपनी शैली और प्रतिभा होती है तथा उन्हें दूसरों की शैली की नकल नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह केवल विनाशकारी परिणाम ही लाएगा। इस अवसर पर मणिपुरी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार ने स्पष्ट रूप से कहा कि ''कोई भी भाषा और उसका साहित्य भारतीय साहित्य का पर्याय नहीं हो सकता।'' उन्होंने कहा कि युवा लेखकों को सभी सीमाओं को पार करके एक दूसरे के साथ संवाद करना चाहिए एवं एक लेखक होने की मुक्त भावना के साथ तथा एक सार्थक समृद्ध भारत के लिए एकसाथ काम करना चाहिए। उन्होंने देश के युवा लेखकों को एक मंच पर एक साथ लाने के इस मिशन के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति अपने गर्मजोशी व्यक्त की। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने समापन भाषण देते हुए कहा कि युवा लेखकों की रचनाएँ अपनी संस्कृति, परंपरा, लोकगीत आदि की खोज करने का माध्यम हैं। विविध भाषाओं में भारतीय साहित्य की महानता को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह गर्व की बात है कि कोई भी देश भारतीय साहित्य से बड़ा नहीं हो सकता क्योंकि लेखक अपनी विविध भाषाओं के माध्यम से अपनी साहित्यिक संस्थाओं को उजागर कर रहे हैं। उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान छह युवा कवियों–लिपि ओझा, (गुजराती), अभिनव मिश्र (हिंदी), हेम राय (नेपाली), विक्रम हाथवार (कन्नड), लाईशराम अमरजीत (मणिपुरी), डी. वीना वानी (तेलगु) और चिंगगाईलून (पाईते) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। इस सत्र का समापन भाषण के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया, उन्होंने समारोह में उपस्थित सभी युवा कवियों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने प्रिंट और दृश्य मीडिया को भी धन्यवाद दिया।

28 अक्तूबर 2018 को ऑल इंडिया यंग राइटर्स फेस्टिवल के दूसरे दिन तीन सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कश्मीरी लेखक और कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक अज़ीज़ हाजिनी ने की। बाङ्ला लेखिका कौशिक दासगुप्ता ने प्रथम आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि लेखन का उद्देश्य पाठकों और लोगों के साथ संवाद करना है। उत्तर उपनिवेशवादी साहित्य में विशेषज्ञता प्राप्त, उन्होंने महिलाओं और समाज के हाशिए के वर्ग के लिए दृढ़ता से आवाज़ उठाई। इसके अलावा, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि कविता लिखना एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। महेश दत्तात्रेय लोंधे ने कहा कि लेखन आत्म और आंतरिक मन की पहचान बताने के लिए है। उन्होंने कहा कि लेखन स्वयं की खोज है और अच्छे लेखन के लिए ईमानदारी की आवश्यकता होती है। तमिलनाडु के दक्षिणी भाग के रहने वाले एक युवा तमिळ लेखक कार्तिक पुगाझेंधी ने कहा कि उनकी जड़ें उनकी पहचान है और उनके अनुसार एक लेखक को अपने समाज के लिए सच्चाई का पता लगाने की ज़रूरत है। सत्र के अंत में, अज़ीज़ हाजिनी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में संबंधित वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारोत्तेजक और व्यावहारिक रचनात्मक व्याख्यानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि लेखक बिना किसी बाधा, जाति, पंथ या रंगभेद के लिखते हैं। वे सामान्य कारण के लिए सभी संभव सीमाओं के पार करने के लिए तैयार रहते हैं। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि प्रेम समस्त लेखनी का विषय है, इसलिए कवियों और लेखकों को सार्वभौमिक होने चाहिए, उन्हें किसी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहना चाहिए।

द्वितीय सत्र कहानी-पाठ था। इस सत्र की अध्यक्षता विख्यात विद्वान, लेखक और अनुवादक युम्लेम्बम इबोमचा ने की। बोडो लेखिका रूपाली स्वर्गियारी ने हिंदी में अपनी कहानी प्रस्तुत की। तत्पश्चात् कोंकणी का प्रतिनिधित्व करने वाले सर्वेश एकनाथ नायक ने अपनी कहानी प्रस्तुत की। इसके बाद मलयाळम् लेखक शाइन शौक्काथाली ने 'कॉर्पोरेट' सी नामक कहानी अंग्रेज़ी में तथा बाद में अपनी भाषा में भी प्रस्तुत की। इसके बाद संताली के एक लेखक सलगे हांसदा ने 'इअना' नामक कहानी प्रस्तुत की। युवा मिज़ो लेखक एफ. लल्ज़ुइथङ ने अंग्रेज़ी में अपनी कहानी प्रस्तुत की। सत्र का समापन युम्लेम्बस इबोमचा के भाषण के साथ हुआ। उन्होंने साहित्य अकादेमी का इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन करने तथा उन्हें आमंत्रित कर इसका हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होने युवा लेखकों की भी उनके कार्यों के माध्यम से अपनी सशक्त आवाज़ बुलंद करने की सराहना की।

तृतीय सत्र 'कविता-पाठ' था। इस सत्र की अध्यक्षता विख्यात विद्वान एन. तोम्बी सिंह ने की। एन. किरणकुमार द्वारा उन्हें शॉल भेंट की गई। इस कार्यक्रम में मंच पर दस युवा कवि आसीन थे। उनमें से एक असमिया कवि प्रीतम बरुआ ने अपनी कविता 'टाइम' अंग्रेज़ी तथा हिंदी में प्रस्तुत की। इसके बाद डोगरी कवि राजिंदर रंजा, युवा कश्मीरी कवि ताहिर अहमद बगाथ, मैथिली कवि प्रशांत कुमार झा, ओड़िया कवि, कथाकार, नाटककार एवं गीतकार नर्मदा साहू, पंजाबी कवि गगन दीप सिंह संधू, संस्कृत कवि अरविंद कुमार तिवारी, नागपुर से सिंधी कवयित्री ममता परवानी, तिवा कवयित्री बरनाली मंता तथा उर्दू कवि अज़र इक़बाल ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सत्र के अंत में, अध्यक्ष एन. तोम्बी ने साहित्य अकादेमी को उन्हें आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद किया और इस प्रकार के विशाल समारोह के आयोजन पर अपनी ख़ुशी भी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि साहित्य सबसे अधिक श्रेष्ठ है। अंत में, उन्होंने युवा लेखकों को अपनी प्रतिभाशाली प्रतिभा के साथ अपने मिशन को शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। एन. किरणकुमार ने अपने संक्षिप्त भाषण में देश के विभिन्न भागों से आने वाले सभी युवा लेखकों की सराहना की। कार्यक्रम का समापन साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी किशोर कुमार त्रिपाठी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

बाल साहित्य पुरस्कार 2018

पुरस्कार अर्पण समारोह

14 नवंबर 2018, गांतोक, सिक्किम

पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव, उपाध्यक्ष माधव कौशिक एवं मुख्य अतिथि नगेन शइकीया

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह 14 नवंबर 2018 को नर बहादुर डिग्री कॉलेज, तांदोंग, गांतोक, सिक्किम में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत किया और बाल साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डाला और कहा कि हर संस्कृति और समाज में बाल साहित्य हमेशा से उपलब्ध रहा है। कहीं यह कहानियों के रूप में है तो कहीं कविताओं के रूप में। यह साहित्य बच्चों का केवल मनोरंजन ही नहीं बल्कि उनको शिक्षित भी करता है। इससे बच्चों में नैतिकता का विकास होता है। उन्होंने बाल साहित्य लिखने में आने वाली कठिनाइयों का भी ज़िक्र किया।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात असमिया लेखक नगेन शइकीया थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि बाल साहित्य के ज़रिये ही बच्चों में पढ़ने की आदत बनती है। उन्होंने इस बात का भी ज़िक्र किया कि काफ़ी लंबे समय तक बाल साहित्य को साहित्य का दर्जा नहीं दिया गया। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि उनके लेखन के कारण ही आज के बच्चे टी.वी. और मोबाइल के दुष्परिणामों से बच सकेंगे। वक्तव्य के बाद पुरस्कार वितरण किया गया।

इस बार के पुरस्कार विजेता थे—जुगल लोचन दास (असमिया), शीर्षेंदु मुखोपाध्याय (बाङ्ला), सिताराम बसुमतारी (बोडो), ईसतेरिन कीरे (अंग्रेज़ी), चंद्रकांत त्रिकमलाल शेठ (गुजराती), दिविक रमेश (हिंदी), कंच्याणी शरणप्पा शिवसंगप्पा (कन्नड), ज़रीफ़ अहमद ज़रीफ़ (कश्मीरी), कुमुद भिकू नायक (कोंकणी), वैद्यनाथ झा (मैथिली),

पी.के. गोपी (मलयाळम्), खाङेमबम शामुङौ (मणिपुरी), रत्नाकर मतकरी (मराठी), भीम प्रधान (नेपाली), वीरेंद्र महांति (ओड़िया), तरसेम (पंजाबी), छीतरलाल साँखला (राजस्थानी), संपदानंद मिश्र (संस्कृत), लक्ष्मी नारायण हांसदा (संताली), कल्पना अशोक चेलाणी (सिंधी), किरुंगई सेतुपति (तमिळ), नारमशेट्टि उमामहेश्वरराव (तेलुगु) और रईस सिद्दीक़ी (उर्दू)।

प्रत्येक लेखक को पुरस्कार स्वरूप एक ताम्रफलक और रु. 50,000 रुपए की राशि का चेक भेंट किया गया। पुरस्कार वितरण के बाद समारोह के मुख्य अतिथि नगेन शइकीया ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि बाल साहित्य लिखना एक मुश्किल काम है। आगे उन्होंने कहा कि इसके लिए बाल लेखकों को बच्चों की नज़र से दुनिया देखनी होगी। बच्चों की कल्पना-शक्ति को दुनिया की सरहदें नहीं रोक सकतीं, अतः लेखकों को बच्चों के वैश्विक नज़रिये को प्रस्तुत कर पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। उन्होंने जनसंचार के बढ़ते माध्यमों की चर्चा करते हुए कहा कि इस कारण बाल साहित्य का स्वरूप वैश्विक होता जा रहा है और उसकी प्रस्तुति में व्यापक परिवर्तन हुए हैं।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2018, गांतोक, सिक्किम

बाल साहित्य पुरस्कार कार्यक्रम के दूसरे दिन 15 नवंबर 2018 को जनता भवन, गांतोक, सिक्किम में लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं ने लेखक सम्मिलन कार्यक्रम में अपने विचार और अनुभव साझा किए। असमिया पुरस्कार विजेता जुगल लोचन दास ने कहा कि यदि कोई बच्चों की सरल एवं रंगीन दुनिया का पता नहीं लगा सका, तो बच्चों के लिए शुद्ध और प्राकृतिक लिखना सँभव नहीं होगा पाएगा। एक बाल-लेखक को बच्चों पर कुछ लिखने में सक्षम होना चाहिए, उसका मन बच्चों के मन जैसा होना चाहिए तथा उसका व्यवहार भी उन्हीं की भाँति होना चाहिए। बच्चे के मन और व्यवहार को समझने तथा शब्दों में उन्हें व्यक्त करने में सक्षम होने के पश्चात् ही एक बेहतर और स्पष्ट उपन्यास तैयार होता है। अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता प्राप्त ईसतेरिन कीरे ने कहा कि हमारी कहानी कहने की संस्कृति है। बड़े होने तक हमने स्वयं को सदा ही बुज़ुर्ग रिश्तेदारों से घिरा पाया जो हमेशा हमारे मनोरंजन के लिए कहानी सुनाया करते थे, हम ऐसे समय में बड़े हुए जब प्रौद्योगिकी से हम लगभग अनभिज्ञ थे, ऐसे आशीर्वाद के लिए उन्होंने आभार प्रकट किया। कन्नड पुरस्कार विजेता कंच्याणी शरणप्पा ने ज़ोर देकर कहा कि किसी भी देश का भविष्य उसके बच्चों द्वारा निर्धारित किया जाता है। हमें बच्चों में परिष्कृत गुणों को पैदा करने की

व्याख्यान देते हुए माधव कौशिक

आवश्यकता है ताकि राष्ट्र का स्वस्थ भविष्य बनाया जा सके। मलयाळम् कवि पी.के. गोपी ने कहा कि तुम्हारे भीतर का बच्चा सबसे जिज्ञासु प्राणी है। वह अतीत में रहता है। वह भविष्य को सँजोता है। वह वर्तमान के तनाव में नहीं रह रहा है। मणिपुरी पुरस्कार विजेता खाडेमबम शामुडौ ने कहा कि आज के बच्चों को जंगली पौधों और जानवरों के नाम के बारे में बहुत कम जानकारी है। इसलिए, पुस्तकों द्वारा हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे अंग्रेज़ी और वैज्ञानिक नामों के अलावा पक्षियों के स्थानीय नामों को भी जानें। सिंधी पुरस्कार विजेता कल्पना अशोक चेलाणी ने कहा कि बच्चे जादू के प्रति संवेदनशील, नए विचारों के प्रति संवदेनशील और असंभव को शांत करने के प्रति संवेदनशील होते हैं। यह एक प्रकार का विशाल मंच है, ख़ालीपन का एक ऐसा व्यापक कैनवास, कि कोई भी लंबे समय के लिए किसी भी तरह का चित्र तैयार करके उसमें रंग भर सकता है। तमिळ पुरस्कार विजेता किरुंगई सेतुपति ने कहा कि बाल साहित्य बच्चों के लिए लिखी जाने वाली शैली है। यदि इसे बच्चों द्वारा स्वयं लिखा जाता तो यह और भी अधिक बेहतर होता। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैंने अपने छात्र दिनों में लिखना प्रारंभ कर दिया था। मेरे परिवेश ने भाषा के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जो एक बच्चे के हृदय के काफ़ी निकट थी। तेलुगु पुरस्कार विजेता नारमशेट्टी उमामहेश्वरराव ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति का बचपन एक विलक्षण और यादगार अनुभव होता है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व इस बात पर आधारित होता है कि उसने बचपन में क्या सीखा और उसका विश्वास कितना पक्का था। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने बाल साहित्य पर समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

परिसंवाद : बाल साहित्य का क्रमिक विकास

15 नवंबर 2018, गांतोक, सिक्किम

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह के दूसरे दिन, साहित्य अकादेमी ने 15 नवंबर 2018 को जनता भवन, गांतोक, सिक्किम में 'बाल साहित्य का क्रमिक विकास' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि 'साहित्य भी एक लंबा सफर तय कर रहा है और लगातार समय की ज़रूरतों के अनुरूप ढल रहा है। भारत में, बच्चों के लिए दो क़िस्से हज़ारों वर्षों से प्रचलित हैं, *हितोपदेश* और *पंचतंत्र*; तथा भारतीय भाषाओं में कई कहानियों की संख्या इस यात्रा के प्रमाण हैं। उन्होंने आगे ज़ोर देकर कहा कि जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी विकसित हुई, हमारे पास बच्चों के लिए पर्याप्त क़िस्से, गीत, कविताएँ, नाटक, कॉमिक्स और एनीमेशन आते गए हैं। प्रख्यात नेपाली लेखिका और कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि शांति छेत्री ने बाल साहित्य के प्रति उनके प्रेम और बाल समुदाय के साथ उनके जुड़ाव के बारे में भी बताया। उन्होंने नेपाली साहित्य के बाबत भी संक्षेप में बात की। उन्होंने अपने भाषण के अंत में सभी को समाज के लिए कुछ अच्छा करने को कहा। उन्होंने कहा कि जो जीवन में महत्त्वपूर्ण है वह जीवन ही है और इसलिए हर किसी को अपने जीवन से प्यार करना चाहिए और इसे पूरी तरह से जीना चाहिए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने सामान्य रूप से भाषा के महत्त्व तथा उसके बाल साहित्य की विशेषता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भाषा संस्कृति की वाहक है तथा इसलिए बाल साहित्य लिखने वाली भाषा का एक कमरा होना चाहिए जहाँ संस्कृति के रंग शामिल हों। भाषा मनुष्य का एक सुंदर आविष्कार है और इसकी वजह से किसी भी शैली में साहित्य संभव हो पाया है। उन्होंने बाल साहित्यकारों को स्वयं को बदलते समय के अनुकूल बनने की बात कहकर अपना भाषण समाप्त किया।

यह विचार गोष्ठी प्रख्यात विद्वान लेखकों द्वारा बाल साहित्य के विकास के बारे में चर्चा करने के लिए आयोजित की गई थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता बाल साहित्य के प्रख्यात लेखक ध्रुव ज्योति बोरा ने की। जिन वक्ताओं ने बाल

परिसंवाद में व्याख्यान देती हुईं शांति छेत्री

साहित्य लेखन और युगों से उसके क्रमिक विकास के दौरान आने वाली चुनौतियों से संबंधित अपने आलेख प्रस्तुत किए, वे थे—रश्मि नार्ज़ारी (अंग्रेज़ी), रादेश तलपाड़ी (कन्नड), राधिका सी. नायर (मलयाळम्), विशाल तायडे (मराठी) और मनोरमा बिस्वाल महापात्र (ओड़िया)। सत्र के अध्यक्ष ध्रुव ज्योति बोरा ने इस अवसर पर उपस्थित प्रतिष्ठित वक्ताओं और उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए सत्र की शुरुआत की। उन्होंने बाल साहित्य के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया और उसके सदियों से चले आ रहे क्रमिक विकास पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य वाचिक परंपराओं से उत्पन्न हुआ तथा बाद में पाठ के रूप में लाया गया। प्रत्येक समुदाय की अपनी कहानियाँ वाचिक रूप से प्रेषित की गईं। पारंपरिक कहानियों का पहला लिखित रूप *महाभारत, पंचतंत्र* तथा कई अन्य कहाकाव्यों के उद्भव के साथ शुरू हुआ। उनका मानना है कि बाल साहित्य का आधुनिक संस्करण दो उद्देश्यों के लिए लिखा गया है। एक शिक्षण और मनोरंजन के उद्देश्य के लिए है, जबकि अन्य आने वाली पीढ़ियों के लिए। अंत में, ध्रुव ज्योति बोरा ने बताया कि बाल साहित्य में किस प्रकार मान्यता से परे बदलाव आया। इस युग में किशोर बच्चों की तुलना में बच्चों के साहित्यिक ग्रंथों को अधिक पढ़ते हैं। उन्होंने कहा कि नौ वर्ष की आयु से बच्चों में ज्वलंत और व्यापक कल्पना विकसित होती है और वे कल्पना की अपनी दुनिया में रहते हैं। इसके पश्चात् उन्होंने सत्र के वक्ताओं को एक के बाद एक बाल साहित्य के क्रमिक विकास पर अपनी बात रखने के लिए आमंत्रित किया।

प्रख्यात अंग्रेज़ी बाल साहित्य लेखिका रश्मि नार्ज़ारी ने इस तथ्य को माना कि बाल साहित्य में वाचिक लोक परंपरा सन्निहित है। किंतु उन्होंने इस तथ्य पर भी ज़ोर दिया कि कहानी कहने की कला आदिकाल में तब आरंभ हुई जब गुफा में स्त्री के चित्रों के सामने बने छोटे चित्र में बैठे लोगों का कहानी कहने की कला का चित्रण किया गया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार से इस युग के बाल साहित्य ने बालिकाओं के प्रति भेदभाव की क्रमिक गिरावट को दर्शाया। जहाँ एक ओर सिंड्रेला और रपंज़ुएल की कहानियाँ थीं जिनमें पुरुष जोड़े द्वारा उनको दुखदायी जीवन से बचाया जाना था, तो दूसरी ओर 1856 में *एलिस इन वंडरलैंड* पुस्तक का विमोचन महिला सशक्तीकरण की एक नई लहर लेकर आया जिसमें उसका बहादुर और साहसी रूप चित्रित किया गया, और औरत, जिसने स्वयं अपनी लड़ाई लड़ी, उसे किसी भी पुरुष नायक द्वारा नहीं बचाया गया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि बाल साहित्य की एक नई शैली उभरी है जो युवा वयस्क साहित्य है, जिसे थोड़ा बड़े बच्चों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है।

कन्नड बाल साहित्य के प्रख्यात लेखक राधेश्याम तलपड़े ने कन्नड साहित्य के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया जिसमें इस तथ्य को बताया गया कि कन्नड में साहित्य की 180 वर्षों की एक लंबी गाथा है। उन्होंने कन्नड बाल साहित्य के कुछ लेखकों के उदाहरण भी दिए जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में स्वयं को स्थापित किया है। बाल साहित्य

लिखते समय आने वाली चुनौतियों की बात करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे लेखकों को हमेशा एक बच्चे की भावनाओं, उसकी मानसिक दुविधा, उसके ग़ुस्से और उसके मनोविज्ञान को ध्यान में रखना चाहिए। इस तकनीकी रूप से संचालित दुनिया में एक लेखक को नए युग के बच्चे की मानसिकता और उसकी सोच को ध्यान में रखते हुए लिखना चाहिए। उन्होंने उल्लेख किया कि विज्ञान ने किस प्रकार से माता-पिता को एक असहाय बना दिया है और वे कैसे अपने बच्चों पर से अपना नियंत्रण खोते जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि किस प्रकार से इस युग में बचपन अब सिमट कर रह गया है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति के कारण बच्चे भी अब जल्द ही परिपक्व हो रहे हैं। इस प्रकार बाल साहित्य के लेखकों को साहित्यिक पाठ लिखते समय इन सभी सूक्ष्म बातों को ध्यान में रखना होगा। पर प्रख्यात मलयाळम् बाल साहित्य लेखिका राधिका सी. नायर ने मलयाळम् बाल साहित्य तथा वर्षों से इसके क्रमिक विकास पर विस्तार से चर्चा की। मलयाळम् में बाल साहित्य लगभग एक सौ वर्ष पुराना है और इस क्षेत्र में प्रयास अंग्रेज़ी शिक्षा की लोकप्रियता के साथ शुरू हुए। उन्होंने मलयाळम् बाल साहित्य की कुछ रचनाओं की चर्चा की जैसे—*चेरुपथैगलकु उपकारथम इंग्लिशील निन्नू परिभाषापेदुथिया कथाकल* (छोटे बच्चों के लिए अंग्रेज़ी से अनूदित कहानियाँ)। उन्होंने इस तथ्य पर बल देते हुए अपने भाषण का समापन किया कि मलयाळम् बाल साहित्य 1970 के बाद कई गुना बढ़ गया है। मलयाळम् में विभिन्न विषयों और विवेचनाओं पर आधारित विभिन्न पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं।

मराठी बाल साहित्य के क्षेत्र के प्रख्यात लेखक विशाल तायड़े ने बाल साहित्य के इतिहास के बारे में बताया। उन्होंने उल्लेख किया कि किस प्रकार से पहले बच्चों के साहित्य को ध्यान में नहीं रखा जाता था और जॉन लॉके के सिद्धांत को मानव समझ के बारे में संदर्भित किया गया, जहाँ उन्होंने ताबुला रस शब्द का उपयोग किया है जिसका अर्थ है कि बाहर का मन एक ख़ाली स्लेट है और हम अपने मन को किसी भी तरह से तैयार कर सकते हैं। उन्होंने पूर्वकाल की बात करते हुए कहा कि पहले बच्चों के लिए कहानियाँ इंग्लैंड से आयात की जाती थीं और भारत में उनका अनुवाद किया जाता था। वास्तव में प्रथम मराठी साहित्य बाङ्ला बाल साहित्य से अनूदित था। उन्होंने वर्तमान समय में बाल साहित्य के लेखकों द्वारा चुनौतियों का सामना किए जाने का उल्लेख किया। उन्होंने उल्लेख किया कि किस प्रकार से टेलीविज़न, सेलुलर उपकरणों, सामाजिक नेटवर्किंग साइटों ने बच्चों की रुचि को पुस्तकों के प्रति कम किया है और यद्यपि मराठी में कई पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं किंतु अधिकतर बच्चों ने उन्हें नहीं पढ़ा। अंत में, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि इन सभी कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए एक बाल साहित्य लेखक को अपने लेखन में अभिनव होना चाहिए और उन बच्चों की आकांक्षाओं और अनुभवों को ध्यान में रखना चाहिए जिनके लिए वे लिख रहे हैं। ओड़िया बाल साहित्य की प्रख्यात लेखिका मनोरमा बिस्वाल महापात्र ने अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि पहले के वक्ता बाल साहित्य के इतिहास और लेखकों द्वारा चुनौतियों का सामना किए जाने का उल्लेख कर चुके हैं। उन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य के स्तर में सुधार करने के लिए किए गए प्रयोगों की बात की। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए लिखते हुए एक लेखक को ध्यान में रखना चाहिए कि बच्चा किसी विचारधारा को नहीं जानता और कल्पना की दुनिया में रहता है। उन्होंने अपने भाषण के अंत में कहा कि बाल साहित्य लिखते समय बच्चे के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि बच्चों का क्रमिक विकास कैसे हुआ है और उनके विचार पहले के बच्चों से किस प्रकार भिन्न हैं।

इसके साथ ही बाल साहित्य के क्रमिक विकास पर आयोजित परिसंवाद कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसके पश्चात् उपस्थित गणमान्य विद्वानों एवं उपस्थित श्रोताओं ने अपने प्रश्नों और विचारों को वक्ताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य शंकर देव ढकाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने सिक्किम को बाल साहित्य पुरस्कार 2018 कार्यक्रम के आयोजन स्थल के रूप में चुनने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि

परिसंवाद : हाशिये के स्वर : भारतीय दलित साहित्य

14 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

लक्ष्मण गायकवाड, अनुपम तिवारी, मूलचंद गौतम, उर्मिला पवार, छाया कोरेगाँवकर, कर्मशील भारती, बजरंग बिहारी तिवारी (बाएँ से दाएँ)

बी.आर. अम्बेडकर की 127वीं जन्मशती के अवसर पर 14 अप्रैल 2018 को एक परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रख्यात मराठी लेखक लक्ष्मण गायकवाड ने उद्घाटन सत्र में कहा कि सद्भाव प्रत्येक समाज की आवश्यकता है। यदि दलितों का वन, पृथ्वी और जल पर कोई अधिकार नहीं है तो उनके लिए स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है। प्रख्यात विद्वान सुभाष गाताडे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि अम्बेडकर के दर्शन को महत्त्व देने की आवश्यकता है। अपने बीज-भाषण में प्रख्यात समालोचक बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि दलित साहित्य में शिल्प की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है, वरन् इसके लिए कथ्य अधिक महत्त्वपूर्ण है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि दलित चर्चा पूर्णतः स्वदेशी चर्चा है। प्रथम सत्र का विषय था—'वर्चस्व का मुकाबला : दलित परिप्रेक्ष्य'। इस सत्र की अध्यक्षता जी. लक्ष्मी नरसैया ने की तथा हेमलता महिश्वर, सरबजीत सिंह तथा के. अनिल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'अम्बेडकर की दूरदर्शिता और दलित साहित्य के उद्भव' को समर्पित था। उर्मिला पवार ने सत्र की अध्यक्षता की तथा मूलचंद गौतम, छाया कोरेगाँवकर तथा कर्मशील भारती ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : पुस्तकें, जिन्होंने बदला मेरा जीवन

23 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

परिसंवाद में व्याख्यान देते हुए राजेंद्र नाथ

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने अपने सभागार में 'पुस्तकें, जिन्होंने बदला मेरा जीवन' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया—जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की आठ प्रख्यात हस्तियों ने पुस्तकों से संबंधित अपने अनुभवों को साझा किया। के. श्रीनिवासराव ने समस्त वक्ताओं को अंग-वस्त्रम तथा पुस्तकें भेंट कर उन्हें सम्मानित किया तथा अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र हैं तथा वह जीवन को समझने तथा उसे सही तरह से जीने का पाठ पढ़ाती हैं।

इस अवसर पर वक्ताओं में प्रख्यात चिकित्सक देश दीपक, प्रख्यात चित्रकार एवं मूर्तिकार जतिन दास, पूर्व अपर महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल मनोहर बाथम, प्रख्यात कार्टूनिस्ट राजेंद्र धोरपकर, प्रख्यात रंगमंच कलाकार राजेंद्र नाथ, प्रख्यात समाचार वाचक सईद अंसारी, प्रख्यात शास्त्रीय नृत्यांगना सोनल मानसिंह तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार में अपर सचिव सुजाता प्रसाद शामिल थे। अधिकांश वक्ताओं ने जिन पुस्तकों और पत्रिकाओं को उन्होंने पढ़ा तथा जिन पुस्तकों ने उन्हें बचपन में प्रेरित किया था, पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। ऐसी पुस्तकों में महाभारत, महात्मा गाँधी की आत्मकथा, प्रेमचंद की कहानियाँ और इसी तरह की पुस्तकें शामिल थीं।

ओड़िया गीतों पर परिसंवाद

29 अप्रैल 2018, कटक

ओड़िया गीतिकबि समाज के सहयोग से ओड़िया गीतों पर 29 अप्रैल 2018 को शताब्दी भवन, कटक में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। प्रख्यात कवि तथा साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य अमरेश पट्टनायक ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। निशितप्रवा पाधी ने आरंभ में एक गीत प्रस्तुत किया। आरंभिक व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने गीति काव्य के महत्त्व पर बल दिया। गीति काव्य के प्रख्यात विद्वान कीर्तन नारायण पाधी ने बीज-वक्तव्य दिया तथा गीति काव्य के उद्भव और विकास की संक्षेप में चर्चा की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि देबाशीष पाणिग्रही, आई.पी.एस. ने अपने व्याख्यान में कहा कि गीति काव्य जितना देखने में सरल लगता है उतना है नहीं। अमरेश पट्टनायक ने कहा कि गीति काव्य को अलग से वर्गीकृत करना उचित नहीं है। सत्र के अंत में ओड़िया गीतिकबि समाज के सचिव मनोज पट्टनायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में गीतकार गौर पट्टनायक ने अपना आलेख गीति काव्य पर प्रस्तुत किया तथा उन्होंने ओड़िया

व्याख्यान देते हुए अमरेश पट्टनायक

गीति काव्य के जन्म और विकास का भी संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। गोबिंदचंद्र चाँद ने समकालीन गीति कवियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मालविका राय ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि सर्वश्रेष्ठ गीति कविता मानव हृदय को स्पर्श करती है तथा मानव स्मृति में हमेशा के लिए अंकित हो जाती है।

द्वितीय एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गीतकार गौरहरि दलाई ने की। मीनाक्षी देवी ने महान गीतकार बिनोदिनी देवी का उल्लेख करते हुए गीति काव्य पर चर्चा आरंभ की। श्रीचरण महांति ने सबुजा गीति कविता तथा समकालीन गीतकारों पर उसके प्रभाव की चर्चा की। सत्र का समापन संध्या मित्र के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

क़िस्सा-ओ-क़लम

21-25 मई 2018, नई दिल्ली

कार्यशाला का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी ने 21-25 मई 2018 को नई दिल्ली में 'क़िस्सा-ओ-क़लम' कार्यक्रम का दूसरी बार आयोजन किया। हमारी युवा पीढ़ी को भाषाओं और साहित्य के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए अकादेमी की यह अपनी तरह की पहल है, यह बच्चों, नवोदित लेखकों तथा कल के विचारकों को पुस्तकों की दुनिया का आनंद लेने तथा पढ़ने और लिखने के रचनात्मक क्षेत्रों की दिशा में प्रोत्साहित करने की ओर एक अनूठा क़दम है। नई दिल्ली में आयोजित इस 5 दिवसीय सत्र के आयोजन की योजना इस बात को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए बनाई गई थी कि जिससे बच्चों को पढ़ने और लिखने में आनंद आए तथा वे भाषा को खेल-खेल में समझ सकें तथा पुस्तकों के निर्माण की दिशा में रचनात्मक रूप से अपना पहला क़दम उठा सकें। इस कार्यशाला में कुल 50 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन

8-9 जून 2018, इंफाल

साहित्य अकादेमी तथा साहित्य सेवा समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में काकचिंग, मणिपुर में 8-9 जून 2018 को दो दिवसीय युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया, जिसमें भारत की उभरते हुए प्रतिभाओं ने हिस्सा लेते हुए अपने साहित्यिक कार्य प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराय ने सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया तथा युवाओं में साहित्य के विकास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि साहित्य अकादेमी युवा रचनाशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सुसंस्कृत युवा ही समर्थ राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला होते हैं।

प्रसिद्ध रंगकर्मी अरुण तिवारी ने उद्घाटन वक्तव्य देते हुए उन दिनों को याद किया जब वह साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार के साथ कर्नाटक के छोटे से गाँव शिमोगा में काम करते थे। उन्होंने बताया कि काकचिंग उन्हें शिमोगा की याद दिलाता है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि युवा, हिमालय की उस पहाड़ी की तरह हैं जिनका अभी भी उदय हो रहा है और भारत के युवाओं को साहित्य एवं कला के माध्यम से देश को बदलना चाहिए।

साहित्य सेवा समिति, काकचिंग के अध्यक्ष येंडखोम केङवा सिंह इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने इस बात को बहुत ही प्रभावी ढंग से रखा कि युवाओं की कलम और बंदूक दोनों देश की रक्षा करते हैं, लेकिन कलम बिना रक्त बहा अपना काम करती है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने इस अवसर पर अतुल तिवारी के उपस्थित होने पर ख़ुशी प्रकट करते हुए भरोसा जताया कि श्री तिवारी का उद्बोधन सम्मिलन में उपस्थित युवाओं को प्रेरणा देगा। उन्होंने कहा कि संपूर्ण राष्ट्र के नागरिकों की संवेदनशीलता और भावुकता एक है, भले वे अन्य भाषाओं में सोचें और बोलें। अंत में, उन्होंने कहा कि वर्तमान दौर में प्रेम और विद्रोह युवा साहित्य के दो रूप हैं। यह सुनिश्चित करना बहुत कठिन है कि प्रेम का अंत कब होता है और विद्रोह कब उसका स्थान ग्रहण कर लेता है। उन्होंने सभी युवा रचनाकारों की प्रशंसा की और उन्हें सफलता के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

के. श्रीनिवासराव तथा सत्राध्यक्षों के साथ सम्मिलन के सम्मानित प्रतिभागीगण

साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार सिंह ने कहा कि युवाओं को साहित्य के सिद्धांत पर एक साथ आकर देश को एकजुट करना चाहिए और इस तरह के महोत्सव युवा मस्तिष्क को प्रोत्साहित करने के मंच हैं।

8 जून को उद्घाटन सत्र में देतसुंग स्वर्गियरी (बोडो), मोहम्मद सरफ़राज़ पर्रे (कश्मीरी), मेमे मयाङलांबम (मणिपुरी), नरेश कटुवाल (नेपाली), अमरिंदर सिंह सोहल (पंजाबी), आशीष पुरोहित (राजस्थानी), मकानमी रमरोर (तंगखुल), एषा दादावाला (गुजराती) और स्वप्निल (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

9 जून को प्रथम सत्र का प्रारंभ एल. जयचंद्र के कहानी-पाठ से किया गया। संजीव पॉल डेका (असमिया), अच्युत दास (बाङ्ला), कौशिक सेन (अंग्रेज़), अनारक्कली एम. (मलयाळम्) और ताङ्खेलाबम देबचंद (मणिपुरी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता टी. देवीप्रिया ने की और रितु कुमार शर्मा (डोगरी), थिङ्नाम परशुराम (मणिपुरी), कल्याण सौरभ दास (ओड़िया), गणेश मरांडी (संताली), और उमयावन (तमिळ) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित छेत्री बिरा सिंह ने की और शिवेंद्र (हिंदी), नवनाथ स्वप्न गोरे (मराठी), वाल्टे गिंखेपाऊ (पाईते) और मोहिता कौंडिनिया (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

चतुर्थ और अंतिम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार ने की और रघुनंदन (कन्नड), हेमंत अय्या (कोंकणी), अनुराग मिश्र (मैथिली), येंङ्खोम सुनोलता देवी (मणिपुरी) और कोमल चंदनाणी (सिंधी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

परिसंवाद : समकालीन मैथिली कहानी की प्रवृत्तियाँ

30 जून 2018, सरायकेला, झारखंड

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रेम मोहन मिश्र एवं अन्य सम्मानित प्रतिभागीगण

साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् सरायकेला-खरसावां के संयुक्त तत्त्वावधान में 30 जून 2018 को श्रीनाथ कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन सभागार, आदित्यपुर, ज़िला सरायकेला-खरसावां, झारखंड में 'समकालीन मैथिली कहानी की प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम मोहन मिश्र ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मैथिली साहित्य का वर्णन छठी एवं सातवीं शताब्दी से मिलता है। मैथिली भाषा अब पूरी तरह से परिपक्व हो चुकी है। परिसंवाद में आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य अशोक अविचल ने दिया। उन्होंने समकालीन शब्द को लेखक की समकालीन रचना से संयुक्त किया और कहा कि प्रत्येक रचना जो व्यक्ति के बोध की स्थिति में आने के बाद संज्ञान में आती है, वह समकालीन है, हालाँकि अधिकांश लेखक किस समकालीन मुद्दों को उठाते हैं और अपने लेखन के विषय को चर्चा का विषय बनाते हैं यह प्रवृत्ति को तय करता है। बीज भाषण में पटना से आए प्रतिष्ठित मैथिली कथाकार अशोक ने समकालीन शब्द के साहित्यिक अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए समकालीन रचना और समकालीन प्रवृत्ति को अलग-अलग बताया और विस्तार से मैथिली कथा साहित्य के तीस साल के लेखन को ध्यान मे रखते हुए विमर्श की आधारशिला रखी। विशिष्ट अतिथि ए.के. राय, कार्यक्रम अधिशासी, आकाशवाणी केंद्र, जमशेदपुर और उद्घाटनकर्ता रामकृष्ण फोर्जिंग इंडस्ट्री के उपाध्यक्ष विजय कुमार मिश्र ने अपने संबोधन में मैथिली साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए सभी मिथिलावासियों से साहित्य पढ़ने और रचनात्मक सोच विकसित करने की अपील की। आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया।

विचार सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित कथाकार और समालोचक शिवशंकर श्रीनिवास ने की। इस सत्र में तीन महत्त्वपूर्ण आलेख पढ़े गए। इंदिरा झा ने 'मैथिली साहित्य में दलित और महिला लेखन' पर केंद्रित अपने आलेख को समकालीन प्रवृत्ति से संयुक्त कर प्रस्तुत किया। धीरेंद्रनाथ मिश्र ने 'समकालीन मैथिली साहित्य में सामाजिक बोध एवं मूल्य' को स्पष्ट करते हुए इसे समकालीन ही नहीं साहित्य की सर्वकालीन प्रवृत्ति घोषित किया। उन्होंने विस्तारपूर्वक मैथिली कथा साहित्य के प्रारंभ से अद्यतन प्रवृत्ति को स्पष्ट किया। जाने-माने समालोचक नारायण ने 'समकालीन मैथिली कथा साहित्य में भूमंडलीकरण के प्रभाव' पर केंद्रित अपना शोधपरक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने 1990 के बाद के वैश्विक परिवर्तन को समवेद साहित्य एवं मैथिली साहित्य पर प्रभाव को विशेष रूप से स्पष्ट किया। कार्यक्रम का समापन अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद्, सरायकेला-खरसावां के ज़िला संयोजक राजीव रंजन के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

परिसंवाद : प्राचीन मणिपुरी पांडुलिपियों (पूयस) में संस्कृति के प्रतिबिंब

16 जुलाई 2018, इंफाल, मणिपुर

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुसंधान केंद्र के सहयोग से 'प्राचीन मणिपुरी पांडुलिपियों (पूयस) में 'संस्कृति के प्रतिबिंब' विषय पर 16 जुलाई 2018 को मणिपुर हिंदी परिषद् हॉल, ओल्ड असेंबली रोड, इंफाल में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। प्रारंभ में, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुसंधान केंद्र के अध्यक्ष नौरोइबम इंद्रमणि तथा साहित्य अकादेमी की मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार ने दीप प्रज्वलित कर परिसंवाद के उद्घाटन सत्र का शुभारंभ किया। एन. किरणकुमार ने उल्लेख किया कि यद्यपि वैज्ञानिक युग में परिवर्तन की तेज़ हवाएँ आई हैं, फिर भी लोगों को मणिपुर की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने के साथ-साथ उसे पर्याप्त बढ़ावा भी देना होगा। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में नौरोइबम इंद्रमणि ने प्राचीन मणिपुरी लिपियों में संस्कृति के प्रतिबिंबों के अध्ययन के लिए इस प्रकार के परिसंवादों के आयोजन करने के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इंद्रजीत सेराम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता एन. बीरचंद्र ने की। प्रथम वक्ता थे एम.टी. अचाउ तथा उनके आलेख का विषय था—'प्राचीन पांडुलिपि नुमित काप्पा में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक तत्त्व।' अगले वक्ता राजकेतन चिरोम थे तथा उनके आलेख का विषय था—'प्राचीन पांडुलिपि थावनथाबा हिरण में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक तत्त्व।' प्रातःकालीन सत्र के अंतिम वक्ता वाइखोइम रोमेश के आलेख का विषय था—'प्राचीन पांडुलिपि नाओथिंगखोंग फामबल काबा में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक तत्त्व।' द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पोलेम नबचंद्र सिंह ने की। प्रथम आलेख लइशराम तेजबती देवी ने 'प्राचीन पांडुलिपि खोंगजोमनुबी नोंगारोल में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक तत्त्व' विषय पर प्रस्तुत किया। एम. रंजना ने 'प्राचीन पांडुलिपि पनथोइबी खोनगुल में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र के अंत में थ. रूहिचंद ने 'प्राचीन पांडुलिपि हिजिंग हिराओ में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एन.ई.सी.ओ.एल. कार्यालय द्वारा एक पुस्तक प्रदर्शनी-सह-बिक्री का आयोजन भी किया गया।

संगोष्ठी : कालिंदीचरण पाणिग्रही

21 जुलाई 2018, भुवनेश्वर

उत्कल विश्वविद्यालय के ओड़िया पी.जी. विभाग, भुवनेश्वर के सहयोग से 21 जुलाई 2018 को उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में कालिंदीचरण पाणिग्रही पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उत्कल विश्वविद्यालय के ओड़िया पी.जी. विभाग के अध्यक्ष बिष्णुप्रिया ओटा ने की। प्रथम सत्र कालिंदी चरण के साहित्य और भाषा पर सामान्य चर्चा को समर्पित था। उत्कल विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफ़ेसर नित्यानंद सतपथी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह के दौरान बिजयानंद सिंह ने इस साहित्यिक कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए उत्कल विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया। डॉ. सिंह ने कालिंदी चरण के जीवन के इतिहास पर प्रकाश डाला तथा बताया कि किस प्रकार से वे ओड़िया समाज में एक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक क्रांति लाना चाहते थे।

उत्कल विश्वविद्यालय के कुलसचिव दयानिधि नायक कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम के मुख्य

बीज भाषण देते हुए विष्णुप्रिया ओटा

अतिथि नित्यानंद सतपथी तथा कार्यक्रम के मुख्य वक्ता बौरीबंधु कर थे। प्रो. सतपथी ने बीज-भाषण दिया। बौरीबंधु कर ने कालिंदी चरण के गद्य पर अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र कालिंदी चरण के आलेखों तथा साहित्यिक समालोचना को समर्पित था। ओटा ने अपने भाषण में फकीर मोहन सेनापति के हास्य के प्रभाव और कालिंदीचरण के साहित्य में शैली के प्रतिबिंब का वर्णन किया। संतोष कुमार त्रिपाठी ने अपनी प्रस्तुति में कालिंदीचरण के साहित्य के विचार पर बने दो मतों पर स्पष्ट रूप से अपने विचार व्यक्त किए। प्रख्यात साहित्यकार मनिंद्र कुमार मेहर ने अपने भाषण में कालिंदीचरण की साहित्यिक रचनात्मकता की तुलना रवींद्रनाथ ठाकुर से की। इस अवसर पर संघमित्रा मिश्र, सुप्रभा राय, जगतबंधु आचार्य, क्षीरोदचंद्र बेहेरा, संदीप महापात्र और विभिन्न विद्वान, प्रोफ़ेसर, विशेषज्ञ, छात्र और विश्वविद्यालय के कर्मचारी-सदस्य उपस्थित थे। समापन सत्र के अंत में रमेश चंद्र मलिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन

21-22 जुलाई 2018, पटना, बिहार

साहित्य अकादेमी और श्री अरविंद महिला कॉलेज, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में अरविंद महिला कॉलेज, पटना में 21-22 जुलाई 2018 को दो दिवसीय 'उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया।

अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि सभी क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण अकादेमी का उद्देश्य है। हम 24 भाषाओं में साहित्य प्रकाशित करते हैं। जिस तरह भारत विविध संस्कृतियों का एक समुच्चय है उसी तरह अकादेमी उन सब की विविधतापूर्ण संस्कृति से एक-दूसरे को अवगत कराने के प्रयत्नों में लगी हुई है। हम उनके बीच सेतु का काम करते रहे हैं, उत्प्रेरक का काम करते रहे हैं। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य अमरनाथ सिन्हा ने कहा कि कुछ ही कोस की दूरी पर भाषाएँ बदल जाती हैं। सारी भाषाएँ मूलतः ध्वनियाँ हैं, क्षेत्र के वातावरण, परिस्थितियों में रहनेवाले लोग एक ख़ास साउंड पैटर्न में भाषा का रूप लेते हैं। अकादेमी द्वारा विभिन्न भाषाओं के लेखकों का सम्मिलन उनकी बुनियादी एकसूत्रता की तलाश है।

उद्घाटन भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

अपने उद्घाटन भाषण में साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं हिंदी आलोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भाषा और लिपि का सवाल बहुत पुराना और महत्त्वपूर्ण सवाल है। देवनागरी में कुछ भाषाएँ लिखी जाएँ तो उसे समझने में बहुत कठिनाई नहीं आएगी। मान्यताप्राप्त भाषाएँ और जो मान्यताप्राप्त नहीं हैं अगर वे आपस में मिलें, सुनें, जानें कि कैसी प्रवृत्तियाँ किस भाषा में हो रही हैं तो इससे भी इनमें एक विनिमय स्थापित होगी।

इस सत्र में पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति गुलाबचंद राम जायसवाल और नेपाली लेखक सानू लामा ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अकादेमी की यह कोशिश भारतीय भाषाओं की एकता स्थापित करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। इस सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने किया और श्री अरविंद महिला कॉलेज की प्रभारी प्राचार्य पूनम चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में कवि-गीतकार सत्यनारायण की अध्यक्षता में काव्य-पाठ संपन्न हुआ जिसमें उत्तमा केशरी (हिंदी), बाबूलाल मधुकर (मगही), राजेश कुमार व्यास (राजस्थानी), आलम ख़ुर्शीद (उर्दू), मैशनम भगत सिंह (मणिपुरी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कवि सत्यनारायण ने कविता पर केंद्रित संक्षिप्त वक्तव्य में कवि कुँवर नारायण की एक कविता का पाठ किया तत्पश्चात् अपनी कविता 'बच्चे' और 'अहिल्या' का पाठ किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में रामवचन राय की अध्यक्षता में मैथिली से तारानंद वियोगी ने 'हमर सीता राम' और उर्दू से अब्दुस्समद ने 'सोने का चावल' कहानी का पाठ किया। पढ़ी गई कहानियों पर रामवचन राय ने टिप्पणी की।

तीसरे सत्र में अरुण कमल की अध्यक्षता में अंगिका से भगवान प्रलय, मिसिङ भाषा से घनकांत दलै, कश्मीरी से इज़हार मुबश्शिर, नेपाली से दीपा राई और हिंदी से राजकिशोर राजन ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अरुण कमल ने पठित कविताओं पर टिप्पणी करते हुए अपनी दो कविताओं—'धार' और 'घोषणा' का पाठ किया।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र में 'समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर विमर्श से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। मणिपुरी लेखक एम. प्रियव्रत सिंह की अध्यक्षता में इस कार्यक्रम में हिंदी से रेवती रमण, उर्दू से अबरार मुजीब और मैथिली से वीणा ठाकुर ने अपनी-अपनी भाषाओं में समकालीन साहित्य की प्रवृत्तियों के संबंधित अपने अनुभव साझा किए। हिंदी की समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों में नाटक विधा की चर्चा करते हुए रेवती रमण ने कहा कि हिंदी में नाटक का परिदृश्य सर्वाधिक निराशापूर्ण है। आज सबसे अच्छा लेखन हिंदी में संस्मरण विधा में हो रहा है। गद्य साहित्य की लघु विधाएँ जीवनी, पत्र साहित्य और आत्मकथा में आज अन्य विधाओं की बनिस्बत ज़्यादा बढ़िया लिखा जा रहा है। मशहूर अफ़सानानिगार व नक्काद अबरार मुजीब ने उर्दू साहित्य की

परंपरा की विस्तार से चर्चा की और समकालीनता की कसौटी पर उर्दू की सभी विधाओं में लिखे जा रहे साहित्य से संबंधित अपनी बातें कहीं। मैथिली लेखिका वीणा ठाकुर ने अपने वक्तव्य में समकालीनता को लेकर एक गहरा और सूक्ष्म विश्लेषण पेश किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में मणिपुरी लेखक एम. प्रियव्रत सिंह ने मणिपुरी साहित्य की इतिहास-यात्रा के बारे में संक्षिप्त किंतु सारगर्भित वक्तव्य दिया। उन्होंने माना कि मणिपुरी का साहित्य वहाँ के जन-जीवन की धड़कनों को उसकी समग्रता में अभिव्यक्त कर रही है।

समारोह का द्वितीय सत्र कविता-पाठ का था, लेकिन जितेन शर्मा ने अपनी कहानी का पाठ किया, तत्पश्चात् ध्रुव गुप्त की अध्यक्षता में डोगरी से रतन दोषी, अंग्रेज़ी से सी.एल.खत्री, बोडो से कंफु खुंगुर ब्रह्म, संताली से धुरू मुर्मु और हिंदी से ध्रुव गुप्त ने अपनी शायरी का पाठ किया। डोगरी कवि रतन दोषी ने 'आओ कीचड़ उछालें' और 'शब्द' आदि कविताएँ पढ़ीं। अंग्रेज़ी कवि सी.एल. खत्री ने पटना के लोकेल से प्रभावित अपनी कविताएँ सुनाईं। संताली कवि धुरू मुर्मू ने 'पूर्वजों के अमरवान' आदि कई ऐसी कविताँ पढ़ीं जो आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व करनेवाली कविताएँ थीं। पंजाबी कवयित्री भूपिंदर कौर प्रीत ने 'पुरखां दी कविता', 'बौनी हवा', 'मर्द और औरतें' आदि कविता का बहुत ही सधे एवं प्रभावी रूप से पाठ प्रस्तुत किया। हिंदी शायर ध्रुव गुप्त ने इस मौक़े पर अपना शेर सुनाया—*कुछ दहशत हर बार ख़रीदा। जब हमने अख़बार ख़रीदा।*

समारोह के तृतीय सत्र का विषय 'मेरा लेखन, मेरी दुनिया' था जो बेहद दिलचस्प रहा। इसमें हिंदी से मिथिलेश्वर, उर्दू से शमोएल अहमद और मैथिली से उषा किरण खान ने अपने लेखकीय अनुभव से जुड़े ढेर सारे प्रसंगों को पाठकों के साथ साझा किया। इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे नेपाली लेखक सानु लामा ने भी नेपाली साहित्य से जुड़े अपने अनुभव साझा किए।

समारोह का चतुर्थ और अंतिम सत्र भी कविता-पाठ पर केंद्रित रहा। इसमें शीन काफ़ निज़ाम की अध्यक्षता में बाङ्ला से सुमिता धर बसु ठाकुर, चिरू से अंगाम जाटुड़ चिरू, मैथिली से कामिनी, संस्कृत से महेश झा और हिंदी से मुसाफिर बैठा ने अपनी कविताएँ सुनाईं। अंत में इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे शीन काफ़ निज़ाम ने अपनी रचनाओं से बेहद रोमांचित किया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने किया और धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक शिव नारायण ने किया।

संगोष्ठी : प्रकृति और साहित्य

31 जुलाई - 1 अगस्त 2018, कोलकाता

कोलकाता के अकादेमी सभागार में 31 जुलाई और 1 अगस्त 2018 को 'प्रकृति और साहित्य' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने प्राचीन और मध्ययुगीन साहित्यिक कृतियों के व्यापक संदर्भों के साथ भारतीय शास्त्रीय साहित्य की गहरी देहाती पृष्ठभूमि पर बात की। स्वप्न कुमार चक्रवर्ती ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री चक्रवर्ती ने पर्यावरण आलोचना के सिद्धांत पर बल दिया तथा पुरातत्व द्वारा अनुशासित परिदृश्य और साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए। सरकार ने प्राकृतिक पृष्ठभूमि पर निर्भर विभिन्न प्रकार के लेखन को विभिन्न विधियों से किए जाने की बात की। मिहिर कुमार साहू ने उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम दिन आयोजित दो सत्रों की अध्यक्षता बोडो परामर्श मंडल के संयोजक अनिल कुमार बर' और सुबोध सरकार ने क्रमशः की। अनिल कुमार बर' ने बोडो कविता में प्रकृति के तत्त्वों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।

मिहिर कुमार साहु, के. श्रीनिवासराव,
स्वप्न कुमार चक्रवर्ती तथा सुबोध सरकार (बाएँ से दाएँ)

इन दो सत्रों में अदाराम बसुमतारी, देवदास मायरेम्बम, थीरू प्रसाद नेपाल और रमाकांत सिंह ने क्रमशः चार भाषाओं बोडो, मणिपुरी, नेपाली और ओड़िया के साहित्य पर प्रकृति के प्रभाव पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन दो सत्रों के बाद राकेश श्रीवास्तव द्वारा निर्देशित 'पूर्वोत्तर की कविता' पर साहित्य अकादेमी का वृत्तचित्र प्रदर्शित किया गया। दूसरे दिन, छह वक्ताओं—आलोक चक्रवर्ती, अंजली नार्ज़ारी, कुमार मनीष अरविंद, राजदीप राय, विकास कुमार झा और बिजॉय कुमार शर्मा ने चार भाषाओं—बाङ्ला, बोडो, मैथिली और मणिपुरी के साहित्य पर प्रकृति के प्रभाव पर क्रमशः चर्चा की। ब्रजमोहन मिश्र और रणजीत दास ने क्रमशः दो सत्रों की अध्यक्षता की।

परिसंवाद : आधुनिक तमिळ और मलयाळम् की कहानियों की तुलना

13 अगस्त 2018, माहे

श्री नारायण कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, माहे के सहयोग से 13 अगस्त 2018 को कॉलेज परिसर में 'आधुनिक तमिळ और मलयाळम् की कहानियों की तुलना' पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य सुंदरा मुरुगन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी की तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य पुदुवई युगभारती ने आरंभिक व्याख्यान दिया। कॉलेज के प्राचार्य ए. उन्नीकृष्णन ने सबका स्वागत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुब्रभारतीमण्यन ने की, जिन्होंने 1980 तक तमिळ और मलयाळम् में मध्ययुगीन कहानियों की तुलना पर एक रोचक आलेख प्रस्तुत किया। पी. थिरुनावुक्कारासु ने 1980 से 2000 तक तमिळ और मलयाळम् में मध्ययुगीन कहानियों पर आलेख प्रस्तुत किया। पी. जयप्रकाशम ने 2000 से 2018 के मध्य समकालीन तमिळ और मलयाळम् कहानियों पर आलेख प्रस्तुत किया। विजया राजेश्वरी ने मलयाळम् कहानियों में तमिळ संस्कृति के चित्रण पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता एस. शंमुगासुंदरम ने की। पा. रविकुमार ने तमिळ और मलयाळम् कहानियों में

व्याख्यान देते हुए एस. शंमुगासुंदरम

नारीवादी विचारों पर आलेख प्रस्तुत किया। ए. हुसैन ने एम.टी. वासुदेवन नायर और जयकांतन की कहानियों की तुलना की। अव्वाई निर्मला ने वैक्कं मोहम्मद बशीर और तोप्पिल मोहम्मद मीरान की कहानियों की तुलना पर आलेख प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्रों और कॉलेज के शिक्षकों ने भाग लिया।

परिसंवाद : स्वतंत्रता की सीमाएँ

15 अगस्त 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने स्वतंत्रता दिवस के विशेष अवसर पर 'स्वतंत्रता की सीमाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित विद्वान, आलोचक एवं अनुवादक हरीश त्रिवेदी ने विभिन्न लेखकों के उद्धरणों के माध्यम से कहा कि स्वतंत्रता की परिकल्पना सभी ने अलग-अलग तरह से की है। कहीं यह परिकल्पना बहुत व्यापक महसूस होती है तो कहीं बहुत सीमित। उन्होंने ग़ालिब और रवींद्रनाथ टैगोर को याद करते हुए कहा कि उनसे हमें व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है। हरीश त्रिवेदी ने सभी की स्वतंत्रता का सम्मान करने और उसके लिए जागरूक रहने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमारी स्वतंत्रता वहीं समाप्त होती है जहाँ से दूसरे की स्वतंत्रता शुरू होती है।

पुलिस सेवा से संबद्ध ए.पी. माहेश्वरी ने कहा कि दूसरों के अस्तित्व के ऊपर किसी भी तरह की स्वतंत्रता की इमारत खड़ी नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि दूसरों के विचारों से सहमति और असहमति हो सकती है और यह स्थिति ही विकास में सहायक होती है, इसलिए हमें स्वतंत्रता के प्रति जागरूक और ज़िम्मेदार बनना पड़ेगा। हर किसी को उसकी क्षमता और श्रम के अनुसार स्थान मिलना ही वास्तविक स्वतंत्रता है, इसीलिए स्वतंत्रता को समग्र दृष्टि से देखना आवश्यक है।

हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार और विद्वान अब्दुल बिस्मिल्लाह ने प्रेमचंद की पुस्तक *सोज़े वतन* का ज़िक्र करते हुए कहा कि हमें अपनी स्वतंत्रता की ख़ुशी ज़रूर मनानी चाहिए लेकिन विभाजन से जो हमें पीड़ा पहुँची थी, हमने अपनों को खोया था, उस भीषण दुख-दर्द को भी भूलना नहीं चाहिए। इस द्वंद्व के बीच में ही हम अपनी स्वतंत्रता का सही उत्तरदायित्व के साथ अर्थ पहचान सकते हैं।

हिंदी के चर्चित लेखक, वरिष्ठ पत्रकार और संपादक आलोक मेहता ने कहा कि हम अपनी स्वतंत्रता का आनंद लें यह तो ठीक है लेकिन किसी अन्य की स्वतंत्रता का हनन करने का हमें अधिकार नहीं है, इसलिए हमें अपने लिए आचार-संहिता भी निर्धारित करनी चाहिए। उन्होंने पत्रकारिता की उस परंपरा का उल्लेख किया जिसमें गणेश शंकर विद्यार्थी ने उच्च जीवन मूल्यों के साथ-साथ पत्रकारिता का उत्तरदायित्व और गंभीरता को पूरी निष्ठा से निभाया था। उन्होंने मीडिया की भाषा पर प्रश्नचिह्न खड़े किए।

चर्चित पत्रकार और समाजसेवी अंतरा देवसेन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अक्सर यही देखा जाता रहा है कि अधिक शक्तिशाली लोगों को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है और कम शक्ति वाले व्यक्ति को कम स्वतंत्रता मिली हुई है, जबकि हम संविधान और लोकतंत्र के अंतर्गत जीवन जीते हैं, यह स्थिति क्यों है और इसे किसने बनाया है, इस पर हमें गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। अन्यों की स्वतंत्रता की रक्षा और सम्मान का भाव ही हमारी अपनी स्वतंत्रता को सही स्वरूप प्रदान करता है।

भारत में मैला ढोने की प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रभावशाली मुहिम चलाने वाले प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता बेज़वाडा विल्सन ने नागरिक की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों की बात उठाते हुए कहा कि अब भी हाथ से मैला ढोने वाले लोगों की हमारे देश में स्थिति गंभीर बनी हुई है, उसके बारे में हमें चिंतित होना चाहिए और इसे

दूर करने के लिए हमें प्रयास करने चाहिए। तभी देश में सभी का विकास और सबको सम्मान प्राप्त हो सकेगा। उन्होंने कहा कि जब तक देश के नागरिक को संविधान सम्मत अधिकार प्राप्त नहीं होते हैं तब तक उन नागरिकों के लिए आज़ादी अधूरी है।

प्रख्यात विदुषी मधु किश्वर ने कहा कि पुलिस और क़ानून के बजाय हमें अपनी सामाजिक जागरूकता से अपनी स्वतंत्रता की सीमाएँ तय करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे पारिवारिक और सामाजिक संस्कार ही वह अनुशासन बनाते थे जिनसे हम दूसरों की स्वतंत्रता में बाधक नहीं होते थे और उनकी भावनाओं का सम्मान भी कर पाते थे।

प्रतिष्ठित लेखक, संपादक एवं वरिष्ठ पत्रकार ओंकारेश्वर पांडेय ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही सभी तरह की स्वतंत्रताओं का मूल है। उन्होंने कहा कि किसी भी घटना या विचार की प्रस्तुति करते समय मीडिया को ख़ुद ही स्व-नियंत्रण करना होगा। मीडिया को अपनी सीमाओं का बोध होना चाहिए जिससे कि ग़लत और भ्रम की स्थिति उत्पन्न न हो और सामाजिक सौहार्द का वातावरण बना रहे।

प्रख्यात स्तंभकार और प्रशासक प्रणव खुल्लर ने कहा कि हमें वेदांत के सूत्रों से सीख लेने की आवश्यकता है जिसमें व्यक्ति, समाज और देश की स्वतंत्रता का वृहद स्वरूप मिलता है। उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन ग्रंथों में सार्वभौम स्वतंत्रता के खुले गवाक्ष हमें वैचारिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर ले जाते हैं, जिनमें सभी के मंगल की कामना की गई है।

प्रतिष्ठित लेखिका, आलोचक तथा साहित्येतिहासकार रख़्शंदा जलील ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में विचारों की स्वतंत्रता की वकालत की और कहा कि हमें स्वयं सोचना चाहिए कि किसी बात से किसी अन्य को कष्ट तो नहीं हो रहा, इसका ख़याल भी बहुत ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि व्यंग्य और हास्य की भी एक सीमा होनी चाहिए जिससे कि कोई भी समुदाय या धर्मावलंबी आहत न हो।

हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार और दलित चिंतक श्योराज सिंह बेचैन ने बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर के तीन सिद्धांतों – शिक्षित बनो, संघर्ष करो और संगठित बनो – का मर्म समझाते हुए इस बात पर चिंता भी प्रकट की कि प्राथमिक शिक्षा में भारी गिरावट आई है। कमज़ोर तबके के बच्चे और उच्च आयवर्ग के बच्चों की शिक्षा में जो असंतुलन और असमानता है वह आगे चल कर बड़े दुराव और अलगाव का कारण बनती है। इस ओर हमें गंभीर होना चाहिए तभी हम प्रत्येक के लिए स्वतंत्रता को सही रूप में निर्धारित कर सकेंगे।

अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित लेखक सुदीप सेन ने कई विद्वानों की रचनाओं के माध्यम से कहा कि हमें सही के पक्ष में बोलने की स्वतंत्रता होनी चाहिए और इसमें हमें ज़िम्मेदारी का बोध भी होना चाहिए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का अंगवस्त्रम् प्रदान कर स्वागत करते हुए कार्यक्रम का विषय प्रवर्तन किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता की सीमाएँ अलग-अलग अनुशासनों में अलग-अलग होती हैं लेकिन लोकतांत्रिक मूल्यों को सर्वोपरि रखते हुए हमें इन सीमाओं को तय करना चाहिए।

परिसंवाद : बोडो कविताएँ : पाठकों और आलोचकों के मत

20 अगस्त 2018, कोकराझार, असम

साहित्य अकादेमी और बोडो विभाग, बोडोलैंड विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बोडो कविताएँ : पाठकों और आलोचकों के मत' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 20 अगस्त 2018 को बोडो विभाग, बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार, असम में किया गया।

परिसंवाद का दृश्य

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के पूर्वोत्तर क्षेत्र के कार्यकारी अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कार्यक्रम के विषय की महत्ता के बारे में संक्षेप में बताते हुए साहित्य अकादेमी के विभिन्न तरह के कार्यक्रमों के उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में भी बात की। बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग में सहायक प्रोफ़ेसर बी.सी. बर' ने आरंभिक भाषण दिया और बोडो परामर्श मंडल की सदस्य इंदिरा बर' ने अध्यक्षता की। बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग के फुकन बसुमतारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में भौमिक चौ. बर' की अध्यक्षता में जी.बी काचरी, बिंदू बसुमतारी, लयश्री महिलारी और आर. हाज़ोवरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में इंदिरा बर' की अध्यक्षता में चंपा खाकलैरी, गणेश बर', केनेरी बसुमतारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : नेपाली साहित्य पर प्रयोगात्मक लेख

24 अगस्त 2018, कुर्सियांग, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी और गोरखा जन पुस्तकालय, कुर्सियांग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली साहित्य पर प्रयोगात्मक लेख' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन 24 अगस्त 2018 को कुर्सियांग, पश्चिम बंगाल में किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के पूर्वोत्तर क्षेत्र के कार्यकारी अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कार्यक्रम के महत्त्व के बारे में बताते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में भी बात की।

कार्यक्रम में आरंभिक वक्तव्य नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक जीवन नामदुंग ने दिया और मुख्य अतिथि नेपाली परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक प्रेम प्रधान थे। रॉबिन कुमार प्रधान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता कृष्णराज घटानी ने की। नरेशचंद्र खाति, मन प्रसाद सुब्बा तथा अर्जुन प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में राजकुमार क्षेत्री और प्रख्यात नेपाली कवि जस योञ्जन 'प्यासी' के साथ जयकुमार गुरुंग ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : धर्म और साहित्य

28 अगस्त 2018, तिरुनेलवेली

सदाकतुल्लाह अप्पा कॉलेज, तिरुनेलवेली के सहयोग से 28 अगस्त 2018 को कॉलेज परिसर में 'धर्म और साहित्य' पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने स्वागत व्याख्यान दिया और कहा कि यह संगोष्ठी तमिळ भाषा और साहित्य में विभिन्न धर्मों के योगदान को आत्मसात करने का एक महान प्रयास है। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य मालन ने आरंभिक व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने तमिळ साहित्य में बौद्ध धर्म के योगदान की संक्षेप में बात की। उन्होंने बौद्ध कवि सीतालई साथानार द्वारा लिखित महान तमिळ महाकाव्य 'सिलप्पाथीकारम' की अगली कड़ी 'मणिमेगालई' के बारे में बात की। उन्होंने वीरासोझियम, कुंडलाकेसी जैसे अन्य तमिळ बौद्ध कार्यों का भी उल्लेख किया और तमिळ साहित्य में बौद्ध योगदान से संबंधित ऐतिहासिक साक्ष्यों का हवाला दिया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता तोप्पिल मोहम्मद मीरान ने सत्र की अध्यक्षता की और तमिळ भाषा में इस्लाम के योगदान पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने मुस्लिम विद्वान और सुधारक इमामुल अरूस, जिन्हें मप्पिल्लई लेब्बाई आलिम के नाम से भी जाना जाता है, द्वारा लिखे गए उपन्यास *मदीनातुन तुहास* का उल्लेख किया। उन्होंने एक महान शोधकर्ता याक़ूब सिद्धार के उत्कृष्ट योगदान का भी वर्णन किया, जिन्होंने सिद्ध चिकित्सा में असाधारण अवधारणाओं को सरल भाषा में समझाया। सिद्ध चिकित्सा पर उनकी महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ आज भी अत्यधिक विशिष्ट और अभिनव हैं। अगले वक्ता ए.एम. सोनल ने तमिळ साहित्य को ईसाई धर्म के योगदान पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने हेनरिक, एक रोमन कैथोलिक, जिन्होंने तमिळ सीखी और तमिळ में कई भजन और प्रार्थना-गीतों की रचना की। उनका प्रमुख कार्य *थमबिरण वनक्कम* भारतीय भाषा में पहला मुद्रित कार्य माना जाता है। उन्होंने अन्य तमिळ ईसाई विद्वानों जैसे जी.यू. पोप, रॉबर्ट कैडलवेल, एच.ए. कृष्णपिल्लई और कॉन्स्टेंज़ो बेसची (विरमामुनिवर) के योगदानों की भी प्रशंसा की। एस. महादेवन ने तमिळ साहित्य में जैन धर्म के योगदानों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि *नीलाकेसी*, *सीवाका सिंतामणि*, *यशोधरा काविय*म तथा *वालैयापति* जैसे महाकाव्यों को जैन विद्वानों ने लिखा था जिन्होंने तमिळ भाषा की भव्यता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। सदाकतुल्लाहा अप्पा कॉलेज के सहायक प्रोफ़ेसर शेख ज़िंदा ने तमिळ साहित्य में हिंदू धर्म के योगदान पर माराबिन मेनधन मुथैया (जो संगोष्ठी में भाग नहीं ले सके) का आलेख पढ़ा। इस आलेख में हिंदू धर्म के बुनियादी सिद्धांतों तथा तमिळ भाषा पर उसके व्यापक योगदानों पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्रों और कॉलेजों के शिक्षकों ने भाग लिया।

संगोष्ठी : माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्ति और अभिव्यक्ति

1-2 सितंबर 2018, उदयपुर

''वैष्णव चेतना किसी भी विद्रोही चेतना से बड़ी है क्योंकि उसका मूल है पराई पीर को जानना। माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन और कृतित्व भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभावी साहित्यिक स्वर है। इस स्वर की मुख्य चेतना वैष्णव है और माखनलाल चतुर्वेदी के प्रेरक प्रतीक कृष्ण हैं। कृष्ण जो विरोधाभासी व्यक्तित्वों का समुच्चय हैं और इस तरह एक व्यापक चरित्र हैं।'' ये विचार साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के

संयुक्त तत्त्वावधान में राजस्थान साहित्य अकादमी के एकात्म सभागार में आयोजित 'माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्ति और अभिव्यक्ति' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि प्रख्यात कवि, आलोचक एवं संपादक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी की गीतात्मक चेतना और उनके गीत ऐसे हैं कि छायावाद के अन्य रचनाकारों के पास भी ऐसे गीत नहीं मिलते। उनकी अमर कविता 'पुष्प की अभिलाषा' तो आज तक लोगों की ज़ुबान पर चढ़ी हुई है। भक्ति चेतना वाले कवि ने विद्रोह की कविता लिखकर सबका दुलार पाया। बहुत कम लोग जानते हैं कि गाँधी पर पहली कविता उन्होंने तब लिखी थी जब गाँधी जी विदेश से भारत नहीं लौटे थे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्य आकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं ने भारतीय समाज को राष्ट्रीय चेतना से न सिर्फ़ जोड़ने का काम किया बल्कि आदर्श जीवन-मूल्यों और भारतीय संस्कृति के तत्त्वों से भी जोड़ दिया। बीज वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी कुशल कवि, श्रेष्ठ गद्यकार, बेबाक संपादक, समर्पित क्रांतिकारी, अद्‌भुत वक्ता और कुल मिलाकर एक संपूर्ण भारतीय आत्मा थे। उनका विराट व्यक्तित्व और विशद् कृतित्व भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है, जिसका बार-बार मूल्यांकन करने से हमें विभिन्न जीवन स्थितियों और चुनौतियों का सामना करने की दृष्टि प्राप्त हो सकती है।

उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए इंदुशेखर तत्पुरुष ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी जैसी विभूतियाँ ही किसी देश के साहित्य को अमरता प्रदान करने में सहायता करती हैं। माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन और कृतित्व भारतीय वाङ्मय का उज्ज्वल अध्याय है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों तथा बड़ी संख्या में मौजूद साहित्यकारों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का विषय प्रवर्तन किया और माखनलाल चतुर्वेदी के बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न स्वरूपों को संक्षेप में रेखांकित किया।

'कवि माखनलाल चतुर्वेदी : एक भारतीय आत्मा' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए देवेंद्र दीपक ने कहा कि सच्चे अर्थों में उनके लेखन में भारतीयता झलकती है। विशिष्ट वक्ता चमनलाल गुप्त ने माखनलाल जी की रचनाओं का मौलिक पाठ करते हुए कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में एक पूरी पीढ़ी का विकास उन्हीं की रचनाओं से हुआ। आलेख-पाठ करुणाशंकर उपाध्याय व अवनिजेश अवस्थी ने किया।

द्वितीय सत्र में 'गद्यकार माखनलाल चतुर्वेदी : पुनर्मूल्यांकन की परंपरा' विषय पर चर्चा करते हुए सत्र के अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह ने कहा कि उनका गद्य ब्रिटिश शासन बनाम भारत की आज़ादी था। वे ओज, ऊर्जा और शौर्य के कवि थे। उनके साहित्य का पुनः अवलोकन हो, नाटक खेले जाएँ व आधुनिक उपयोगिता के संदर्भों को खोजा जाए। विशिष्ट वक्ता श्रीराम परिहार ने कहा कि वर्तमान में माखनलाल चतुर्वेदी के लेखन का उतना ही महत्त्व है जितना कि आज़ादी के आंदोलन से लेकर सत्तर के दशक में उनके अवसान तक था। आवश्यकता है कि उनके समग्र लेखन को पुनः प्रतिष्ठापित किया जाए। इस सत्र में नीरजा माधव तथा ओम निश्चल ने आलेख-पाठ किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए उमेश कुमार सिंह ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी गाँधी जी के अतिप्रिय होने पर भी वैचारिक दृष्टि से लोकमान्य तिलक के अधिक नज़दीक थे। प्रेमशंकर त्रिपाठी ने कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी में आपादमस्तक भारतीयता झलकती है, इष्टदेव सांकृत्यायन ने कहा कि पुष्प की अभिलाषा सांस्कृतिक निष्ठा की याद दिलाती है। हिंदी भाषा को लेकर वे सदा लड़े, आज़ादी से पहले भी, बाद भी। शिक्षा को लेकर हम आज कहते हैं कि बच्चों को पीटा नहीं जाना चाहिए। यह सब 1923 में उन्होंने शिक्षक सम्मेलन में कह दिया था।

चतुर्थ सत्र में ख्यातनाम साहित्यकार अरुण कुमार भगत ने आलेख-पाठ करते हुए कहा कि माखनलाल चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय चेतना के शंखनाद के साथ ही पत्रकारिता के माध्यम से रचनाकारों की बहुत बड़ी शृंखला भी खड़ी की। आलेख-पाठ शिक्षाविद् लेखिका क्रांति कनाटे तथा कुमुद शर्मा ने किया।

अध्यक्षता करते हुए विष्णु पंड्या ने कहा कि चतुर्वेदी ने देश की पीड़ा को समझा और हमेशा अपनी पीड़ा को परे रखकर देश की पीड़ा को कालजयी शब्दों से आवाज़ दी। संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए विख्यात रचनाकार-चिंतक नंदकिशोर आचार्य ने माखनलाल चतुर्वेदी के रचनाकर्म की प्रासंगिकता को समकालीन लेखकों से उनके परस्पर संबंधों के आलोक में रखकर पुनःरेखांकित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

सत्र-अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए विख्यात विद्वान सूर्यप्रसाद दीक्षित ने माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व के अनछुए, अनजाने, अलक्षित पक्ष की ओर ध्यान दिलाते हुए इस तथ्य पर विशेष ज़ोर दिया कि किसी भी रचनाकार के रचनाकर्म का मूल्यांकन करते समय लेखक के व्यक्तित्व को ही केंद्र में रखना चाहिए। साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने इस संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी : मनमोहन झा जन्मशतवार्षिकी

1-2 सितंबर 2018, मधुबनी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं साहित्यिकी, मधुबनी के संयुक्त तत्त्वावधान में मैथिली साहित्य के अमर कथा-शिल्पी एवं साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत मनमोहन झा की जन्मशती पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन उनकी जन्मस्थली मधुबनी ज़िला के सरिसब पाही गाँव में 1-2 सितंबर 2018 को किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन मनमोहन झा की पुत्री प्रतिमा मिश्रा एवं पुत्रवधू ने किया।

अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों एवं विद्वानों का स्वागत करते हुए कहा कि अकादेमी विभिन्न भाषाओं के बीच साहित्य के माध्यम से समन्वय बनाने और समाज की उज्ज्वल छवि के निर्माण की भावना के साथ काम करती रही है। उन्होंने अकादेमी की अन्य साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि पिछले साल लगभग 650 से ज़्यादा कार्यक्रमों का आयोजन अकादेमी ने किया है। वहीं तक़रीबन 550 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। इस मौक़े पर साहित्य अकादेमी में मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक प्रेममोहन मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि आज इस बात का आकलन करने की भी ज़रूरत है कि पूर्व में हुए लेखन की वर्तमान में क्या उपादेयता है?

उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य देते हुए मैथिली के चर्चित साहित्यकार व समीक्षक यशोदानाथ झा ने कहा कि मनमोहन झा का रचना-परिवेश परिवार व समाज के साथ ही संस्कृति से संबद्ध रहा है। उन्होंने समाज से कारुणिक परिस्थिति व चरित्रों को चुनकर उसे कथा-जीवन का रूप दिया। मनमोहन ने जिस नारी-मनोविज्ञान को गहराई से महसूस किया उसकी धड़कन उनकी कथाओं में सुनने को मिलती है। इस अवसर पर मनमोहन झा के सुपुत्र नेत्रनाथ झा ने अपने पिता से जुड़े कई संस्मरण सुनाए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिष्ठित साहित्यकार सदन मिश्र ने बताया कि महज सात दिनों के अंदर खो गई कृति *कृष्णसर्प* का पुनर्लेखन तथा कथा-संग्रह *गंगा-पुत्र* की पांडुलिपि उन्होंने तैयार कर दी थी जो उनके साहित्य के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

उद्घाटन सत्र के बाद हुए विचार-सत्रों में मनमोहन झा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विशद चर्चा हुई। प्रथम सत्र में मनमोहन झा के व्यक्तित्व पर बोलते हुए अजय मिश्र ने कहा कि गुणग्राही मनमोहन झा मैथिली के

भवभूति थे जिन्होंने अपनी रचनाओं में करुणा की धारा बहाई। इस सत्र में मनमोहन झा के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए विजय मिश्र ने जानकारी दी कि उनका अप्रकाशित नाटक और कहानी की पांडुलिपि मिली है जिसका प्रकाशन कराया जाएगा। उन्होंने मनमोहन झा की कहानियों 'मीनाक्षी', 'रूना' आदि की चर्चा करते हुए अंग्रेज़ी साहित्य के लेखकों की कृतियों के साथ कई रचनाओं की तुलना करते हुए कहा कि वे उत्कृष्ट लेखक थे। वहीं भैरवेश्वर झा ने 'मनमोहन झा की पात्र-सृष्टि' विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि वे समाज से तो पात्र लेते ही थे, निर्जीव वस्तु में भी जान डालकर उसे अपना पात्र बना लेते थे। सत्राध्यक्ष जगदीश मिश्र ने बताया कि मनमोहन झा साहित्यकार पिता के पुत्र थे। स्पष्टवादिता उनका प्रधान गुण था। चारित्रिक विश्लेषण में दक्ष मनमोहन की सुखांत कहानियों के मूल में भी करुणा रही।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता विश्वेश्वर मिश्र ने की। उन्होंने मनमोहन झा की रचनाओं की हुई समालोचना, उस पर लेखक के विचार तथा अपने मंतव्य को रखा। इस सत्र में शांतिनाथ सिंह ठाकुर ने आलेख-पाठ करते हुए बताया कि मनमोहन झा ने सामाजिक संदर्भों को आत्मसात करते हुए अपनी रचनाओं में सामाजिक सरोकार को अभिव्यक्ति दी। वहीं सत्येंद्र कुमार झा ने 'मनमोहन झा के साहित्य में आधुनिक दृष्टिबोध' विषय पर आलेख-पाठ किया। उनकी रचनाओं में कथ्य के साथ ही शिल्प का भी नव प्रयोग मिलता है। अरुण कुमार ठाकुर ने भाषा-शिल्प पर विचार रखे।

दूसरे दिन आयोजित तीसरे सत्र में अशोक कुमार मेहता ने 'मनमोहन झा के साहित्य में नारी-विमर्श' पर कहा कि उनकी कृतियों में नारी पात्रों का भावनात्मक संघर्ष वर्णित है जो उद्वेलित करता है। नारी की करुणा, उसकी मनोव्यथा, ईर्ष्या आदि नैसर्गिक स्वभाव के साथ ही कर्तव्यबोध की कहानी भी उन्होंने कही है। इस सत्र में अरुण कुमार सिंह ने मनमोहन के साहित्य में पौराणिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ की तहक़ीक़ात की तो सुरेश पासवान ने मनमोहन झा के व्यक्तित्व और कृतित्व का आकलन किया। अध्यक्षता करते हुए रमानंद झा रमण ने 1977 में अपने द्वारा मनमोहन झा से लिए गए साक्षात्कार के अंशों को रखा। साथ ही कहा कि वे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चेतना के कथाकार हैं। अद्‌भुत बिंब और प्रतीकों का प्रयोग उनकी रचनाओं में मिलता है।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता दमन कुमार झा ने की। उन्होंने कहा कि मनमोहन झा की रचनाओं से लगता है कि उनकी कलम में स्याही के बदले आँसू भरे हुए थे। इस सत्र में अरविंद कुमार सिंह झा ने 'मैथिली गद्यक परंपरा में मिथिलाक निशापुरमे'क स्थान' विषय पर कहा कि मनमोहन झा के गद्य में भी अनेक स्थलों पर गद्यमयी कविता का बोध होता है। भाव पक्ष एवं कला पक्ष का दर्शन भी इसमें होता है। अजीत मिश्र ने *कृष्णसर्प* उपन्यास का मूल्यांकन करते हुए कहा कि यह कृति सुधार एवं परिवर्तन के स्वर को भी मुखर करती है। अमृता चौधरी ने 'मिथिलाक निशापुरमे बिंब विधान' विषय पर प्रकाश डाला। इस सत्र का समापन देवेंद्र कुमार देवेश के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

संगोष्ठी : सर रमणभाई नीलकंठ जन्मशती

1-2 सितंबर 2018, अहमदाबाद

गुजरात विद्यासभा के सहयोग से 1-2 सितंबर 2018 को अहमदाबाद के एच.के. आर्ट्स कॉलेज में सर रमणभाई नीलकंठ जन्मशती संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने श्रोताओं का स्वागत किया। गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक विनोद जोशी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रख्यात गुजराती लेखक रतिलाल बोदिसागर ने

रघुवीर चौधरी तथा विनोद जोशी (बाएँ-दाएँ)

संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता गुजराती लेखक रघुवीर चौधरी ने की।

गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य कुमारपाल देसाई ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। शिरीन मेहता और विष्णु पंड्या ने क्रमशः 'रमणभाई नीलकंठ : तत्कालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य' और 'रमणभाई नीलकंठ : तत्कालीन राजकीय परिप्रेक्ष्य' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता दीपक मेहता ने की। अजय रावल और किशोर व्यास ने क्रमशः संपादक 'रमणभाई नीलकंठ' और 'पत्रलेखक रमणभाई नीलकंठ' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता चंद्रकांत सेठ ने की। दर्शन ढोलकिया और हरिकृष्ण पाठक ने क्रमशः 'कवि रमणभाई नीलकंठ' और 'हास्यलेखक रमणभाई नीलकंठ' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पहले दिन के अंतिम सत्र में रमणभाई नीलकंठ के प्रसिद्ध नाटक *भ्रदमभद्र* को अर्चन त्रिवेदी और किरण जोशी ने प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता विजय शास्त्री ने की। हसित मेहता ने 'हास्यविवेचक रमणभाई नीलकंठ' और जयेश भोगायता ने 'काव्यविवेचक रमणभाई नीलकंठ' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। शिरीष पांचाल ने अंतिम सत्र की अध्यक्षता तथा सतीश व्यास और उर्वीश कोठारी ने क्रमशः 'रेनो पर्वत के रमणभाई नीलकंठ' और 'भद्रमभद्र के लेखक रमणभाई नीलकंठ' पर अपने पत्र प्रस्तुत किए। गुजरात विद्यासभा के अध्यक्ष कुमारपाल देसाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद : संगम से समकालीन युग तक लेखिकाओं के स्वर

7 सितंबर 2018, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा अन्नाई वेइलनकन्नी महिला कॉलेज के सहयोग से 'संगम से समकालीन युग तक लेखिकाओं के स्वर' विषय पर 7 सितंबर 2018 को कॉलेज परिसर में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी न केवल साहित्य और भाषा के लिए बल्कि समाज के लिए भी योगदान देती है। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। उन्होंने तमिळ साहित्य में महिला लेखिकाओं की अहमियत पर अपने विचार व्यक्त किए तथा उन्होंने तमिळ कवयित्रियों के योगदानों की चर्चा भी की जिनके गीतों ने तमिळ साहित्य को गौरवान्वित किया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य मालन ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने महिला साहित्यकारों की रचनाओं के विशेष संदर्भ के साथ तमिळ साहित्य के

गौरवशाली इतिहास पर अपने विचार व्यक्त किए। उनके विचार केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं थे अपितु समाज पर पड़ने वाले ऐतिहासिक प्रभाव पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य वाइगई सेल्वी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। कॉलेज के विभागाध्यक्ष एस. देवराज ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुविख्यात तमिळ लेखिका थिलागबामा ने की तथा महिलाओं के लेखन प्रेम पर अपने विचार व्यक्त किए। प्राचीन युग में महिलाओं की स्वतंत्रता, अपने जीवन साथी को चुनने की स्वतंत्रता तथा संगम युग के प्रेम जीवन पर चर्चा की गई। शैलपति ने 'महिला लेखन में समाज का चित्रण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। पी.टी. रानी प्रकाश ने 'महिला लेखन में परिवार' विषय पर अपना विचार व्यक्त किया। ज्योति निर्मलासामी ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा महिला साहित्य लेखन के साथ पर्यावरण के संबंध में चर्चा की कॉलेज के प्रधानाचार्य अनीता राजेंद्रन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम

परिसंवाद : उत्कल गौरव मधुसूदन दास

8 सितंबर 2018, कटक

साहित्य अकादेमी द्वारा शैलबाबा महिला स्वायत्त महाविद्यालय के ओड़िया पीजी विभाग के सहयोग से कटक में 8 सितंबर 2018 को 'उत्कल गौरव मधुसूदन दास' पर शैलबाला महिला महाविद्यालय के सभागार में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में मिहिर कुमार साहू ने मधुसूदन दास, जिन्हें 'मधु बाबू' के नाम से जाना जाता है, के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह प्रथम ओड़िया स्नातक, प्रथम अधिवक्ता, एक कवि और संपादक थे जिन्होंने ओड़िया भाषा और सामान्य तौर पर ओड़िशा के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। साहित्य अकादेमी की ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने सम्मानित अतिथियों का परिचय दिया। पद्मजा मिश्र इस प्रमुख संस्थान द्वारा आमंत्रित किए जाने तथा विशेष रूप से उत्कल गौरव मधुसूदन दास पर बात करने के लिए स्वयं को गर्वित महसूस किया। प्रख्यात लेखक अध्यापक बिश्वरंजन ने कहा कि मधु बाबू का मानना था कि 'जीवन एक जाति की तरह है, जहाँ जन्म प्रारंभिक बिंदु है तथा मृत्यु अंतिम बिंदु है।' शैलबाला महिला स्वायत्त महाविद्यालय, कटक की प्रधानाचार्य चिन्मय महापात्र के शब्दों में 'मधु बाबू' को 'उत्कल गौरव' की उपाधि से सम्मानित किया गया जिसका अर्थ है ओड़िशा का अभिमान। अंत में सत्र का समापन नर्मदा कुमारी परिड़ा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्रथम सत्र में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के प्रोफ़ेसर प्रीतिश आचार्य ने कहा कि 'मधु बाबू' और 'ओड़िशा' ने हमेशा सबका ध्यान आकर्षित किया है। जानेमाने लेखक सिद्धार्थ कानूनगो ने उद्योगों के क्षेत्र में मधुसूदन दास के योगदान पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। एक विपुल लेखक और शोधकर्ता सुनामणि राउत ने मधु बाबू के

परिसंवाद का दृश्य

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण पर बल दिया। प्रसिद्ध कथाकार और बाल लेखक दास बेनहूर ने कहा कि मधु बाबू के दृढ़ संकल्प ने उन्हें अपने लिए 'निचे' बनाने में सक्षम बना दिया। सत्र का समापन संघमित्र आचार्य के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

द्वितीय सत्र में प्रतिष्ठित शोधकर्ता चित्तरंजन पंडा ने कहा कि एक पत्रकार के रूप में मधु बाबू का योगदान हालाँकि एक छोटी अवधि के लिए रहा किंतु वह अत्यंत सराहनीय और उल्लेखनीय रहा।

प्रतिष्ठित शोधकर्ता और लेखिका संजीता मिश्र ने बताया कि कैसे मधुसुदन दास एक वाक्पटु भाषण देने वाले थे। सत्र की अध्यक्षता कर रहे विजय सतपथी ने अंत में इस तथ्य को रेखांकित किया कि मधु बाबू ओड़िया भाषा और संस्कृति के दिग्गज थे। सत्र का समापन सुज्ञानी कुमारी साहू के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

परिसंवाद : तेलुगु में यात्रा साहित्य

9 सितंबर 2018, काकीनाडा

साहित्य अकादेमी द्वारा क्रिया सोयायटी, काकीनाडा के सहयोग से काकीनाडा के जेएनटीयू एलुम्नी सभागार में 9 सितंबर 2018 को 'तेलुगु में यात्रा साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक तथा प्रतिष्ठित कवि के. शिवा रेड्डी ने की।

इसके बाद मुख्य अतिथि एम. आदिनारायण ने इस तथ्य पर बल दिया कि 1838 में एनुगुला वीरस्वामी द्वारा तेलुगु में लिखित *काशी यात्रा चरित्र* पहली और पूर्ण रूप से यात्रा-वृत्तांत है। मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात कवि, साहित्यकार और यात्रा लेखक वाद्रेवु चाइना वीरभद्रुडु ने *रामायण* के प्राचीन साहित्य से लेकर तेलुगु के कालजयी साहित्य तक विस्तार से चर्चा की। अगले सत्र की अध्यक्षता जाने-माने संपादक, साहित्यकार वी. नवीन ने की, जिन्होंने उल्लेख किया कि जब लेखक यात्रा-वृत्तांत लिखना शुरू करते हैं तब सौंदर्य विस्तार के साथ यात्रा का एक प्रामाणिक रिकॉर्ड होता है।

सा. वेम. रमेश ने तेलुगु भाषी लोगों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जो दुनिया के विभिन्न कोनों में चले गए और वहाँ बस गए। एनटीवी पत्रकार रेहाना ने जम्मू और कश्मीर, त्रिपुरा, राजस्थान आदि में भारतीय सीमाओं की यात्रा के अपने अनुभवों को साझा किया।

अगले वक्ता देवुलापल्ली कृष्णमूर्ति ने उल्लेख किया कि उन्होंने 70 वर्ष की आयु में यात्रा-वृत्तांत लिखना प्रारंभ किया। दोपहर के भोजन के बाद के सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक सी. मृणालिनी ने की। लोकप्रिय यात्रा लेखक दसारी अमरेंद्र, जिन्होंने पाँच यात्रा-वृत्तांत लिखे हैं, ने 1838 में प्रकाशित यात्रा-वृत्तांतों पर आलेख प्रस्तुत किया। के. सोमशंकर ने वर్ष 2000 से आज तक तेलुगु में प्रकाशित यात्रा-वृत्तांतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और उन यात्राओं में हुई घटनाओं के बारे में बताया। अंतिम आलेख माचा हरिदास द्वारा प्रस्तुत किया गया, जो 'तेलुगु में यात्रा साहित्य' विषय के प्रथम शोध विद्वान थे। सत्र का समापन क्रिया सोसायटी, काकीनाडा के संयुक्त सचिव पी. जगन्नाधा राजू के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

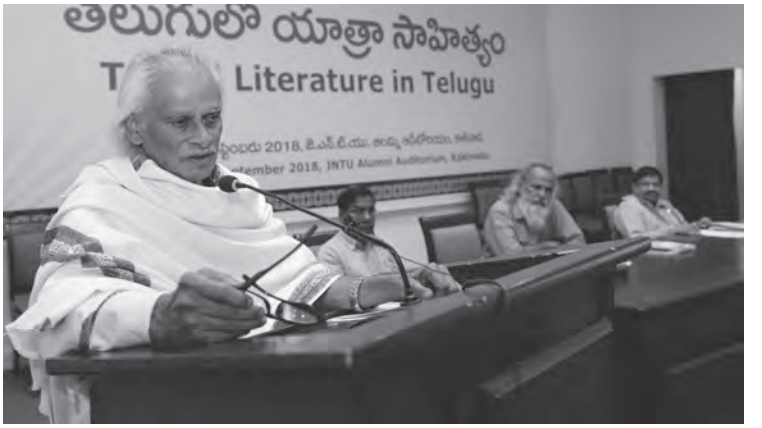

व्याख्यान देते हुए के. शिवारेड्डी

संगोष्ठी : नटाबरा सामंतरे जन्मशतवार्षिकी

9 सितंबर 2018, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा ओड़िया विभाग, बी.जे.बी. (स्वायत्त) कॉलेज, भुवनेश्वर के सहयोग से 9 सितंबर 2018 को नटाबरा सामंतरे जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने संगोष्ठी के उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में चर्चा की तथा नटाबरा समंतारे के साहित्यिक ऐतिहासिक कार्यों के बारे भी विस्तार से बताया। प्रख्यात ओड़िया समालोचक दशरथ दास ने कहा कि वे नटाबरा सामंतरे के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे, और उन्होंने रेवेनशॉ कॉलेज में सामंतरे के साथ बिताए समय की कुछ उदासीन कहानियाँ साझा कीं। प्रख्यात ओड़िया शोधकर्ता देवेंद्र दास ने बीज भाषण दिया। उन्होंने बताया कि कैसे नटाबरा सामंतरे के महत्त्वपूर्ण लेखन का तरीक़ा ओड़िया साहित्य के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया। सत्र की अध्यक्षता बी.जे.बी. (स्वायत्त) कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रसन्न कुमार मोहंती ने की। उप-प्रधानाचार्य रीता पाटी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िया समालोचक सुदर्शन आचार्य ने की तथा गौरंग दास एवं शकुंतला बलिअर्शिंग ने नटाबरा सामंतरे द्वारा लिखित साहित्यिक समालोचना के विभिन्न पहलुओं पर आधारित दो शोध आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता क्षीरोद बेहेरा ने की। समकालीन समय के दो समालोचकों, प्रेमानंद महापात्र और सुलेखा सामंतरे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। बिजयलक्ष्मी दाश (रेवेनशॉ विश्वविद्यालय) और प्रमोदिनी जेना (किस विश्वविद्यालय) ने संगोष्ठी की रूपरेखा तैयार की। बी.जे.बी. कॉलेज के संकाय की निरुपमा महापात्र ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी : सिद्धैया पुरानिक जन्मशतवार्षिकी

15 सितंबर 2018, बागलकोट

साहित्य अकादेमी द्वारा बी.वी.वी. संघ के बसावेश्वर कला महाविद्यालय, बागलकोट के सहयोग से 15 सितंबर 2018 को सिद्धैया पुरानिक की जन्मशतवार्षिकी पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बी.वी.वी. संघ, बागलकोट के कार्यकारी अध्यक्ष वीरन्ना सी. चरन्तिमथ ने की। सिद्धलिंगय्या ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा सिद्धैया पुरानिक और उनके साहित्यिक जीवन पर अपने विचार साझा किए। एस.पी. महालिंगेश्वर ने गणमान्य व्यक्तियों तथा उपस्थितगणों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य बालासाहेब लोकापुर ने अपने आरंभिक भाषण में सिद्धैया पुरानिक की जन्मशतवार्षिकी के उपलक्ष्य में संगोष्ठी आयोजित करने के उद्देश्यों के बारे में बताया।

प्रमुख कन्नड लेखक अमरेश नुगादोनी ने अपने बीज-भाषण में कहा कि सिद्धैया पुरानिक ने कन्नड साहित्य को समृद्ध किया। एम.एल.ए. और बी.वी.वी. संघ के अध्यक्ष वीरन्ना सी. चरंतिमथ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा सिद्धैया पुरानिक के जीवन पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कॉलेज गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष अशोक एम. सज्जन तथा बसावेश्वर कला महाविद्यालय, बागलकोट के प्राचार्य वी.एस. कतागिहल्लिमथ भी उपस्थित थे।

प्रथम सत्र के दौरान, गुरुपद मारेगुड्डी ने एक नवोदय कवि और आधुनिक वाचनाकार के रूप में सिद्धैया पुरानिक के विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। राजशेखर हालेमनी ने पौराणिक नाटकों के दार्शनिक आधारों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। के.आर. सिद्धगंगाम्मा ने विश्लेषण किया और पुरानिक की आत्मकथा के अनूठेपन पर अपने विचार व्यक्ति किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता आनंद वी. पाटिल ने की। सिद्धैया पुरानिक के पुत्र प्रसन्नकुमार पुरानिक ने अपने आलेख 'मेरे पिता का जीवन' में अपने पिता के बचपन और कन्नड भाषा सीखने में उनकी रुचि की चर्चा की। समापन सत्र की अध्यक्षता कॉलेज प्रशासनिक परिषद्, बी.वी.वी. संघ के अध्यक्ष अशोक एम. सज्जन (बेवूर) ने की। बालासाहेब लोकापुर ने समापन व्याख्यान दिया। वी.एस. कतागिहल्लिमथ ने कर्नाटक राज्य में वाचन साहित्य को बनाए रखने में पुरानिक तथा उनके प्रयासों पर अपने विचार व्यक्त किए।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए सिद्धलिंगय्या

परिसंवाद : संताली लिपि : चुनौतियाँ एवं समाधान

15 सितंबर 2018, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा आदिवासी सोशियो-एज्युकेशनल एंड कल्चरल एसोसिएशन, कामरूप ज़िला के संयुक्त तत्त्वावधान में सत्यार्थ बर' सभागार, गुवाहाटी में 'संताली लिपि : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन संताली के प्रतिष्ठित लेखक उदयनाथ माझी ने किया, जबकि उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संताली साहित्यकार एवं असम सरकार के पूर्व मंत्री पृथिवी माझी ने की। आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने संताली भाषा एवं साहित्य के संवर्धन के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि संताली साहित्य देवनागरी, बाङ्ला, ओड़िया और रोमन लिपि में लिखा जाता था और अभी लिखा जा रहा है; इसी को ध्यान में रखकर लगभग सौ वर्ष पूर्व पंडित रघुनाथ मुर्मु ने 'ओलचिकी' लिपि का आविष्कार किया, ताकि सारी दुनिया का संताल-समाज एक लिपि अपनाकर एक-दूसरे के और क़रीब आ सके; अकादेमी ने ओलचिकी को ही मान्यता दी हुई है और इसलिए अकादेमी के पास आए दिन ऐसे पत्र प्राप्त होते हैं, जिनमें यह आग्रह किया जाता है कि दूसरी लिपियों में छपनेवाले संताली साहित्य पर भी पुरस्कार के लिए विचार किया जाए। लेकिन व्यावहारिक समस्या होने के कारण ही इस तरह के विचार-विमर्श के लिए यह आयोजन किया जा रहा है।

अकादेमी में संताली परामर्श मंडल के संयोजक मदन मोहन सोरेन ने ओलचिकी लिपि को अपनाए जाने पर बल देते हुए तमाम क्षेत्रों में इसकी व्यापकता और प्रचार-प्रसार के लिए किए जाने वाले प्रयासों के बारे में बताया। गणेश मुर्मु ने अपने बीज-वक्तव्य में बताया कि किस प्रकार ओलचिकी लिपि तकनीकी और ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से सक्षम और समर्थ है। उन्होंने बताया कि तमाम तकनीकी माध्यम ओलचिकी समर्थित हैं। उदयनाथ माझी ने आह्वान किया कि संताली साहित्य को व्यापकता प्रदान करने के लिए एक लिपि को अपनाया जाना ज़रूरी है। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय से ओलचिकी लिपि सीखने और उसे प्रचारित-प्रसारित करने की अपील की। सभाध्यक्ष पृथिवी माझी ने भी संताली समुदाय को अपनी भाषा, संस्कृति और साहित्य को संवर्धित करने के लिए एकजुट होने को कहा। एसोसिएशन के अध्यक्ष लखन सोरेन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का विचार सत्र कालीचरण हेंब्रम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में गुरुचरण मुर्मु, जतिंदरनाथ बेसरा, गैब्रिएल मुर्मु और लक्ष्मण बास्के ने संताली लिपि की चुनौतियों और समाधान के विभिन्न पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने मिशन ओलचिकी को सफल बनाने का आह्वान किया तथा पश्चिम बंगाल, ओड़िशा, बिहार, झारखंड, असम, मेघालय और अन्य क्षेत्रों में अन्य लिपियों में लिखित साहित्य को ओलचिकी में रूपांतरित करने की ज़रूरत पर बल देते हुए सभी से ओलचिकी लिपि अपनाने का आह्वान किया।

परिसंवाद : संताली भाषा और साहित्य : अनुसंधान की संभावना

16 सितंबर 2018, तेजपुर, असम

साहित्य अकादेमी ने आदिवासी सोशियो-एज्यूकेशनल एंड कल्चरल एसोसिएशन, सोनितपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 16 सितंबर 2018 को तेजपुर, असम में 'संताली भाषा और साहित्य : अनुसंधान की संभावना' विषयक एक दिवसीय परिसंवाद आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्घाटन संबलपुर विश्वविद्यालय के प्रख्यात संताली लेखक

नकु हांसदा ने किया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी, विशेषकर संताली भाषा और साहित्य के क्षेत्र में। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक मदन मोहन सोरेन ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। सत्र की अध्यक्षता पूर्व मंत्री, असम सरकार तथा साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल से सदस्य पृथिवी माझी ने की। सत्र के अंत में आदिवासी सोशियो-एज्यूकेशनल एंड कल्चरल एसोसिएशन, सोनितपुर के अध्यक्ष डंबोरू सोरेन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता प्रमोदिनी हांसदा ने की। इस सत्र में पलटन मुर्मु, फटीक मुर्मु तथा श्रीपति टुडू ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक मदन मोहन सोरेन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय काव्य महोत्सव

17 सितंबर 2018, तुरा, मेघालय

उत्तर-पूर्वी हिल विश्वविद्यालय, तुरा कैम्पस, मेघालय के सहयोग से 'अखिल भारतीय काव्य महोत्सव' का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता बारबरा एस. संगमा ने की। कार्यक्रम का आरंभ अंग्रेज़ी विभाग द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत के साथ हुआ। गीत की प्रस्तुति के पश्चात् साहित्य अकादेमी के सदस्यों तथा विशिष्ठ अतिथि को सम्मानित किया गया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्या फेमलीन के. मराक ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि अकादेमी संपादकों, विद्वानों, लेखकों आदि को उनके जनजातीय साहित्य, गीत आदि को समृद्ध बनाने तथा आदान-प्रदान करने के लिए मंच प्रदान करती है और इस प्रकार भाषाएँ आमने-सामने आती हैं तथा एकजुट हो जाती हैं।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि सुजाता गुरुदेव, अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष एवं पीवीसी प्रभारी, नेहू, तुरा परिसर थीं। उन्होंने कहा कि अन्य समुदायों के साहित्य का अनुवाद महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह समुदायों के लिए मूल्यों में वृद्धि करता है। तत्पश्चात् विभाग के छात्रों द्वारा एक देशभक्ति गीत अथवा गारो-गान प्रस्तुत किया गया।

कविता सत्र की अध्यक्षता सुजाता गुरुदेव ने की। पहले कविता-पाठ करने वाले कवि गारो विभाग, नेहू के सहायक प्रोफ़ेसर तथा *सिंगकम* उपन्यास के लिए राज्य पुरस्कार से सम्मानित क्रिस्टल कोर्नेलियस डी. मराक (गारो) थे।

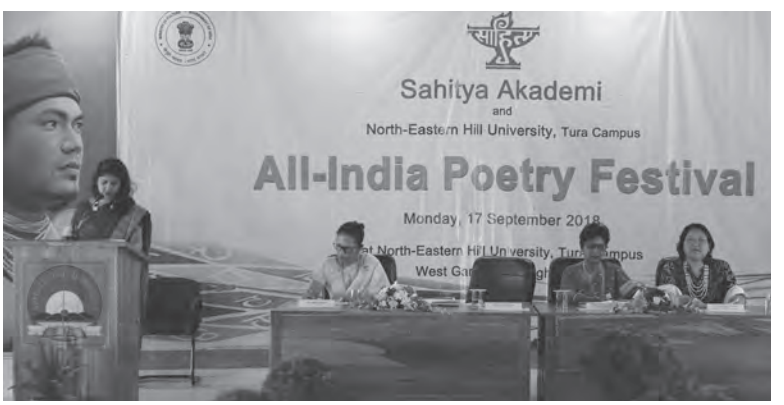

उद्घाटन सत्र का दृश्य

दूसरे कवि मिजोरम विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर जोरामथिंदरा (मिजो) थे। तीसरे कवि युम्लम ताना (न्यीशी) थे। पाँचवें कवि अंडाल प्रियदर्शिनी (तमिळ), एचओडी, पुदुचेरी और दूरदर्शन के लिए कहानी लिखने वाले लेखक थे। पापिनेनी शिवशंकर (तेलुगु) ने 'एन्दापतनी', 'वुमेन एंड मैन', 'फुटवियर' और 'नर्चरिंग' आदि कविताओं का पाठ किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, लेखिका और कवयित्री कर्बी डेका हाज़रिका ने की। इस सत्र के कवि थे—ज्वश्री बर' (बोडो), बारबरा संगमा (गारो), बशीर आरिफ़ (कश्मीरी) और मंगेश नारायणराव काले (मराठी)। सत्र के अंत में सत्राध्यक्ष ने असमिया में 'गॉड एंड वीमेन' कविता का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता कैरोलीन आर. मराक ने की। इस सत्र के कवि थे—डोरोथी मराक (गारो), किशोरसिंह सोलंकी (गुजराती), चित्तरंजन मिश्र (ओड़िया), भोलानाथ टुडू (संताली) और कैलाश शादाब (सिंधी)।

कार्यक्रम का समापन अध्यक्ष द्वारा कविता-पाठ से हुआ। उन्होंने अपनी कविताएँ 'मानसून ऑफ़ 2018' और 'पेन इन लिविंग इन अनदर लैंड' पढ़ीं।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता लेखिका और कवि कवयित्री अनिता थम्पी ने की। धीमान बर्मन (असमिया), अरित्या सान्याल (बाङ्ला), कोलनट मराक (गारो), बालकृष्ण थामी (नेपाली) और संदीप जसवाल (पंजाबी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का समापन अध्यक्ष द्वारा कविता-पाठ से हुआ। उन्होंने अपनी कविताएँ 'किचापरी/फ्रूट एज़ इट इज़' और 'मिडिल एजेड वुमेन' पढ़ीं। उन्होंने मलयाळम् में कविता-पाठ करने के पश्चात् उनका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

सत्र के बाद पंढरियों की प्रस्तुति की गई। सुजाता गुरुदेव के धन्यवाद ज्ञापन तथा उनकी कविता-पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कविता-पाठ सत्र के बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में गारो विभाग द्वारा एक उद्घाटन गीत प्रस्तुत किया गया। इसके बाद गारो विभाग द्वारा वांगला नृत्य की कोरियोग्राफी प्रस्तुत की गई। गोंदेंग्रे सांस्कृतिक मंडली ने वांगला नृत्य का प्रदर्शन किया और कार्यक्रम के अंत में गारो और अंग्रेज़ी विभाग द्वारा 'गॉड विल केयर ऑफ़ यू' गीत के गायन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

संगोष्ठी : साहित्य में पर्यावरण, भूमंडलीकरण तथा गाँधीवादी दृष्टि की प्रासंगिकता

23 सितंबर 2018, अहमदाबाद

गुजरात विश्वकोश ट्रस्ट के सहयोग से 23 सितंबर 2018 को अहमदाबाद में गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी भाषाओं के प्रतिभागियों के साथ 'साहित्य में पर्यावरण, भूमंडलीकरण तथा गाँधीवादी दृष्टि की प्रासंगिकता' विषय पर एक दिवसीय बहुभाषी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि स्वच्छता अच्छे स्वस्थ के लिए आवश्यक है। साहित्य हमें प्रकृति के प्रति जागरूकता की समझ देता है। आज पर्यावरण और जीवन-शैली भूमंडलीकरण से अत्यधिक प्रभावित है। गाँधी जी ने अपने विचारों और जीवन-शैली के साथ पर्यावरण की रक्षा करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उद्घाटन भाषण में जाने-माने गुजराती साहित्यकार रघुवीर चौधरी ने कहा कि जब हम पर्यावरण की बात करते हैं तो हम पानी, जंगल और भूमि सभी को एक साथ जोड़ कर भविष्य के बारे में सोच सकते हैं। साहित्य अकादेमी की कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने बीज भाषण दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि प्रकृति और हमारे सामाजिक जीवन के बीच गहरा संबंध है। यदि पर्यावरण में गिरावट आ रही है, तो इसका प्रभाव साहित्य में भी देखा जा सकता है। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में जाने-माने गुजराती साहित्यकार चंद्रकांत टोपीवाला ने कहा कि संगोष्ठी का विषय वैश्विक स्थिति को पेश करने वाला है। इस अवसर पर उन्होंने अपनी कविता 'टॉवर ऑफ़ साइलेंस' के माध्यम से मनुष्यों, पक्षियों और पर्यावरण के अंतर्योगों की व्याख्या की। साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य कुमारपाल देसाई ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र का दृश्य

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की मराठी परामर्श मंडण के संयोजक रंगनाथ पठारे ने की। भद्रायु वाचरजनी (गुजराती), प्रकाश वाज़रीकर (कोंकणी), राजन गवास (मराठी) तथा कमला गोकलानी (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वाचरजनी ने श्रव्य-दृश्य माध्यम से विभिन्न पहलुओं को दर्शाया। वाज़रीकर ने कहा कि लोक साहित्य में पर्यावरण, सुग्राहीकरण और अहिंसा का बोध कोंकणी साहित्य में शुरू से ही रहा है। जबकि गवास ने यह निष्कर्ष निकाला कि अपनी तीव्र महत्त्वाकांक्षा के कारण मानव हिंसक और विरोधी प्रकृति का हो गया है। लोगों के मन में फैल रहे वैश्वीकरण के कारण संस्कृति की पहचान समाप्त हो गई है। सत्र की चौथी वक्ता कमला गोकलानी ने कहा कि वैश्वीकरण ने दुनिया को एक क्षेत्र में बदल दिया है। कवियों और लेखकों का उद्देश्य दुनिया को ख़ुश रखना है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि गाँधी जी का अहिंसा सिद्धांत शाश्वत है।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य वासदेव मोही ने की। गुजराती भाषा के पहले आलेख प्रस्तोता भरत जोशी ने कहा कि जब हम पर्यावरण के बारे में बात करते हैं तो इसमें प्राकृतिक और मानव निर्मित वातावरण शामिल होता है। उसी तरह, वैश्वीकरण में सांस्कृतिक और आर्थिक पहलू भी शामिल हैं। कोंकणी भाषा के वक्ता कृपाली नायक ने कहा कि हम प्रकृति के साथ लगातार मज़ाक कर रहे हैं। साहित्य में प्रकृति के प्रति हमारे दायित्वों का निर्वाह भी समय-समय पर किया जाता है। गाँधी जी ने अपने विचारों से स्वच्छता और पर्यावरण का पाठ पढ़ाया है। मराठी भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाले रंगनाथ पठारे ने अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैश्वीकरण ने हमेशा खुली अर्थव्यवस्था और लाभ का पोषण किया है। इससे सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया। उन्होंने कहा कि हमें प्रकृति में कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिए। यदि गाँधी जी हर समय प्रासंगिक हों तो गाँधी जी के विचारों और सिद्ध ांतों को वास्तविक रूप में समझा जा सकता है। सत्र का अंतिम आलेख सिंधी भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाले हुंदराज बलवाणी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि गाँधी जी समग्रता में ब्रह्मांड को देख रहे थे। उन्होंने प्रकृति में दृश्य-अदृश्य वस्तुओं के संतुलन पर चर्चा की।

सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदाणी ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि वैश्वीकरण के युग में साहित्य और गाँधी जी के विचार से पर्यावरण संरक्षण हो सकता है। साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबाहुने ने सभी अतिथि वक्ताओं तथा उपस्थितगणों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद : अनुवाद : समस्याएँ, काव्य-शास्त्र और राजनीति

24 सितंबर 2018, कोलकाता

*जतिंद्र कुमार नायक, संयुक्ता दासगुप्ता तथा मिहिर कुमार साहु (**बाएँ-दाएँ**)*

भारतीय साहित्य अनुवाद केंद्र (सी.ई.एन.टी.आई.एल.), जादवपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से, जादवपुर विश्वविद्यालय की परियोजना अनुवाद के भाग के रूप में (यू.जी.सी.यू.पी.ई. 2ः सांस्कृतिक संसाधन) 'अनुवाद : समस्याएँ, काव्य-शास्त्र और राजनीति' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम 24 सितंबर 2018 को जादवपुर विश्वविद्यालय के के.पी. बसु मेमोरियल हॉल में आयोजित किया गया।

अमलान दासगुप्ता ने जादवपुर विश्वविद्यालय के यू.पी.ई. कार्यक्रम की ओर से स्वागत भाषण दिया। इसके बाद मिहिर कुमार साहु ने साहित्य अकादेमी की ओर से प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

उद्घाटन भाषण सी.ई.एन.टी.आई.एल. के समन्वयक और परियोजना अनुवाद के प्रधान अन्वेषक सायंतन दासगुप्ता ने प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद के महत्त्व और अनुवाद की सभी साझेदारी को एक साथ काम करने की आवश्यकता पर बल दिया। साहित्य अकादेमी की अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक संयुक्ता दासगुप्ता ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर दासगुप्ता, एक अनुभवी अनुवादक एवं अकादमिक हैं। उन्होंने अपने विद्वतापूर्ण आलेख में अनुवाद के शैक्षिक और रचनात्मक पहलुओं को एक साथ प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की अंग्रेज़ी परामर्श मंडल के सदस्य जतिंद्र कुमार नायक ने की।

प्रथम सत्र में जतिंद्र कुमार नायक, रामकुमार मुखोपाध्याय और शिवराम पडिक्कल ने क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता संयुक्ता दासगुप्ता ने की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। इस सत्र के आलेख वक्ता थे—गोकुल सिन्हा, इंद्रनील आचार्य और नीलांजना भट्टाचार्य। संगोष्ठी का समापन धन्यवाद ज्ञापन तथा भगवानपुर विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा एक लघु संगीत प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसमें भारत की भाषायी बहुलता पर प्रकाश डाला गया था।

अखिल भारतीय लेखक महोत्सव

28-29 सितंबर 2018, पोर्ट ब्लेयर

साहित्य अकादेमी ने कला और संस्कृति विभाग, अंडमान और निकोबार प्रशासन के सहयोग से पोर्ट ब्लेयर में 28-29 सितंबर 2018 को 'अखिल भारतीय लेखक महोत्सव' का आयोजन किया। इस समारोह में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के 10 साहित्यकारों सहित पूरे भारत के 36 प्रख्यात साहित्यकारों ने भाग लिया। अकादेमी

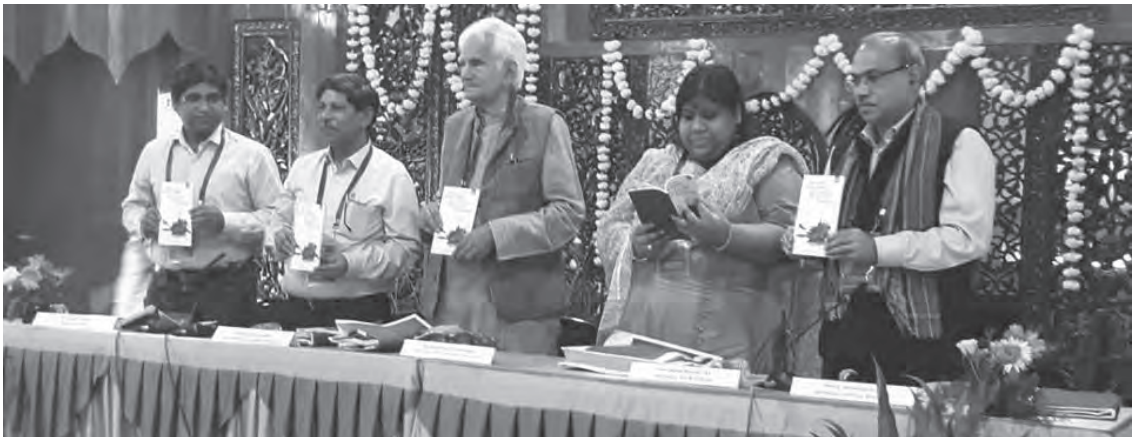

उद्घाटन सत्र का दृश्य

ने पहली बार कार्यक्रम स्थल पर अपने प्रकाशनों की एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस उत्सव का आयोजन इन दूर-दराज के द्वीपों के साहित्यिक परिदृश्य को बेहतर बनाने और द्वीपवासियों को हमारे देश के साहित्य की सर्वदा बदलने वाली विविधता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया था।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण ने कहा कि भारत कहानी कहने वाला देश है। उन्होंने उपस्थित जनों को बताया कि साहित्य अकादेमी राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था है तथा देश में संवाद, प्रकाशन और संवर्धन के लिए केंद्रीय संस्थान है। यह एकमात्र संस्था है जो अंग्रेज़ी सहित 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को चलाती है। उन्होंने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के प्राकृतिक सौंदर्य और स्वच्छ वातावरण के बारे में विशेष उल्लेख किया, उनका मानना है कि यह देशभर के सभी लेखकों को इसके बारे में लिखने के लिए प्रेरित करेगा।

समारोह का उद्घाटन प्रख्यात गुजराती लेखक रघुवीर चौधरी ने किया, उन्होंने कहा कि उन्हें यह देखकर प्रसन्नता हुई कि पोर्ट ब्लेयर में अधिकांश लोग हिंदी बोलते हैं, जिससे उन्हें घर जैसा प्रतीत हो रहा है। उन्होंने कहा कि आज के युवाओं को ऐसे महान बलिदानों के बारे में पता होना चाहिए जो हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान द्वीपों से संबंधित थे। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि यह उत्सव लेखकों, साहित्यकारों, युवाओं और नवोदित लेखकों को एक-दूसरे से बातचीत करने और उनके लेखन कौशल को विकसित करने का एक अच्छा मंच है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से महान स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि भी दी।

कला और संस्कृति विभाग की सचिव नेहा बंसल ने कहा कि ये द्वीप भारत की अमूल्य संपत्ति हैं और इन द्वीपों के बारे में सबसे दिलचस्प बात अंतर-सांप्रदायिक सद्भाव है। उन्होंने भविष्य में भी द्वीप समूह में इस प्रकार के महोत्सव आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को प्रशासन द्वारा समर्थन दिए जाने का आश्वासन दिया। आई.पी.एंड टी. के निदेशक अमित आनंद ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र आज तक प्रकृति पर ध्यान केंद्रित करता रहा है, लेकिन एक सतत् पर्यटन के लिए हमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान की आवश्यकता है।

उद्घाटन सत्र का समापन ज्ञान पुजारी (असमिया), दुर्ग विजय सिंह दीप (हिंदी), चंद्रकांत मुरासिंह (काकबरोक) और आर. गोपालन द्वारा कविता-पाठ के साथ हुआ।

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित अखिल भारतीय लेखक महोत्सव पर एक पुस्तिक का भी विमोचन किया गया। उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम सत्र का विषय था—'मेरे लेखन की प्रेरणा'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध

विद्वान और सांस्कृतिक इतिहासकार पुरुषोत्तम अग्रवाल ने की। इस सत्र के वक्ता थे—मुकुल कुमार, रेखा बैजल और ए. कृष्णाराव।

द्वितीय सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पंजाबी कवि सुरजीत पातर ने की। अरविंद उज़ीर (बोडो), अनादिरंजन बिस्वास (बाङ्ला), भारत नायक (गुजराती), व्यासमणि त्रिपाठी (हिंदी), जगदीश नारायण राय (हिंदी), ल्यानसंग तमसंग (लेप्चा), चंद्रन कोक्कादन (मलयाळम्), मुथामिष़ विरुम्बी (तमिळ) और चंद्रभान ख़याल (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

महोत्सव के दूसरे दिन की शुरुआत 29 सितंबर को कहानी-पाठ सत्र के साथ हुई, जिसकी अध्यक्षता सी. राधाकृष्णन ने की तथा वसुंधरा (कन्नड), जयंती नायक (कोंकणी), पारमिता सतपथी (ओड़िया) और चंद्र प्रकाश देवल (राजस्थानी) ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम का अंतिम सत्र 'अस्मिता' था, जिसमें लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि ममंग दई ने की। सेबंती घोष (बाङ्ला), नेहा बंसल (अंग्रेज़ी), कैरोलीन मैथ्यू (अंग्रेज़ी), सुमन केशरी (हिंदी), डी.एम. सावित्री (हिंदी), अरामबम मेमचोबी (मणिपुरी), मैरी ग्रेस (निकोबारी), तूलिका चेतिया येन (असमिया), डी. आदिलक्ष्मी (तेलुगु) और रोशन आरा दिलबर (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

साहित्य अकादेमी के सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा पोर्ट ब्लेयर में महोत्सव के सफल आयोजन में योगदान देने के लिए नेहा बंसल और कला एवं संस्कृति विभाग के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

संगोष्ठी : डोगरी साहित्य में पर्यावरणीय जागरूकता

28-29 सितंबर 2018, जम्मू

साहित्य अकादेमी तथा जम्मू एंड कश्मीर एकेडेमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के संयुक्त तत्त्वावधान में 28-29 सितंबर 2018 को जम्मू के अभिनव थियेटर में दो दिवसीय डोगरी सम्मेलन का आयोजन किया गया।

पद्मश्री से सम्मानित प्रख्यात डोगरी, हिंदी और संस्कृत विद्वान, लेखक एवं आलोचक वेद कुमारी घई ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की। डोगरी और हिंदी के वरिष्ठ लेखक ओम गोस्वामी मुख्य अतिथि थे। इकोलॉजी, एन्वॉयरमेंट एंड रिमोट सेंसिंग, जम्मू एंड कश्मीर के निदेशक तथा डोगरी लेखक ओ.पी. विद्यार्थी ने बीज वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक दर्शन दर्शी, साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश एवं एकेडेमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़, जम्मू एंड कश्मीर के अपर सचिव भी मंच पर उपस्थित थे।

वेद कुमारी घई ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि जब विभिन्न क्षेत्र प्रदूषित होने लगते हैं तो लेखक अपने लेखन के माध्यम से पर्यावरण के समर्थन में खड़े होते हैं और वातावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए जागरूकता लाने पर विचार-विमर्श करते हैं। 'डोगरी साहित्य च पर्यावरण चेतना' विषय पर बोलते हुए वेद कुमारी घई ने डोगरी कवियों, लेखकों एवं विचारकों से प्रदूषण की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित कर अपने लेखन के माध्यम से उसका समाधान खोज निकालने की बात की। उन्होंने डोगरी लोक कला में दशकों एवं शताब्दियों तक पर्यावरण को प्रभावी तरीक़े से प्रस्तुत करने पर बल दिया। ओ.पी. विद्यार्थी ने प्रदूषण के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डोगरी कवियों, लेखकों और बुद्धिजीवियों ने पर्यावरण के समर्थन में अपनी आवाज़ बुलंद की है।

दर्शन दर्शी ने उद्घाटन वक्तव्य में 'डोगरी साहित्य च पर्यावरण चेतना' विषय पर पर्यावरण और उसकी सुरक्षा की आवश्यकता पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन किया और अरविंदर सिंह अमन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'डोगरी लोकसाहित्य च पर्यावरण चेतना' विषय पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता एन. डी. जाम्वाल ने की। 'डोगरी लोक गीतें च पर्यावरण चेतना' विषय पर ध्यान सिंह की अनुपस्थिति में सुनीता भडवाल ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। शिव निर्मोही ने 'डुग्गर संस्कृति च पर्यावरण चेतना' तथा देशबंधु डोगरा नूतन ने 'डोगरी कथा च पर्यावरण चेतना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'डोगरी काव्य च पर्यावरण चेतना' विषयक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रकाश प्रेमी ने की। ज्ञान सिंह ने 'छंदबद्ध कविता ते कविता च पर्यावरण चेतना' तथा विजय वर्मा ने 'बंद्धमुक्त कविता ते ग़ज़लेइन च पर्यावरण चेतना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन 29 सितंबर 2018 को तृतीय सत्र की अध्यक्षता मोहन सिंह ने की जो 'डोगरी नाटक च पर्यावरण' विषय पर आधारित था। इस सत्र में दीपक कुमार ने 'पूर्णांकी नाटकों में पर्यावरण चेतना', एन. एस. मन्हास ने 'रेडियो/टी.वी. नाटकों में पर्यावरण चेतना' तथा सुधीर महाजन ने 'एकांकी एवं नुक्कड़ नाटकों में पर्यावरण चेतना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता ललित मगोत्रा ने की जो 'डोगरी कथासाहित्य एवं बालसाहित्य में पर्यावरण चेतना' विषय पर आधारित था। शिवेदव सुशील ने 'उपन्यासें च पर्यावरण चेतना', जगदीप दुबे ने 'कहानियाँ च पर्यावरण चेतना' तथा सुनीता भडवाल ने 'बाल साहित्य च पर्यावरण चेतना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। ललित मगोत्रा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हमें 'पर्यावरण चित्रण' और 'पर्यावरण चेतना' के बीच के अंतर को जानना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद : एस.एस. नरूला जन्मशताब्दी

29 सितंबर 2018, लुधियाना

साहित्य अकादेमी और एस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रख्यात पंजाबी साहित्यकार सुरिंदर सिंह नरूला की जन्मशताब्दी के अवसर पर लुधियाना में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने सभी प्रतिभागियों और उपस्थित श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि अकादेमी का यह प्रयास रहता है कि जन्मशताब्दी समारोह को जन्मस्थान पर या लेखक के कार्यस्थल पर मनाया जाए। यह प्रसन्नता की बात है कि नरूला की जन्मशताब्दी उसी कॉलेज में मनाई जा रही है जहाँ वे पढ़ाते थे। दिल्ली विश्वविद्यालय से आए रवि रविंदर ने अपने आरंभिक वक्तव्य द्वारा एस.एस. नरूला के जीवन से संबंधित घटनाओं और उनकी शख़्सियत तथा उनकी साहित्यिक रचनाओं की विश्वभर में महत्ता के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि नरूला जी का उपन्यास *पियोपुत्त* विश्व की बीस भाषाओं में अनूदित हो चुका है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता, लेखक बलदेव सिंह ने एस.एस. नरूला को पंजाबी साहित्य में यथार्थवाद लानेवाले प्रणेता बताते हुए कहा कि उनके इसी प्रयास से पंजाबी साहित्य को वैश्विक साहित्य की उपलब्धि प्राप्त हुई है। सत्र में बीज भाषण देते हुए सुरिंदर

परिसंवाद का दृश्य

कुमार दवेश्वर ने नरूला की साहित्यिक रचनाओं के सामाजिक महत्त्व पर बात करते हुए कहा कि नरूला जी के पास समाज के यथार्थ को पेश करने का हौसला था, जो बहुत कम लेखकों में होता है। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष तथा पंजाब साहित्य अकादमी, लुधियाना के अध्यक्ष रविंदर भट्टल ने आधुनिक पाठ्यक्रम में एस.एस. नरूला की कोई भी रचना न होने पर अफ़सोस प्रकट किया। उन्होंने नरूला के संपूर्ण साहित्य को पंजाबी साहित्य के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण बताया। सत्र के अंत में एस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य धर्म सिंह संधु ने साहित्य अकादेमी द्वारा बुलाए गए सभी प्रतिभागियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के भाषा विभाग के प्रोफ़ेसर एवं डीन गुरपाल सिंह संधु ने की। सत्र में अलग-अलग विद्वानों ने एस.एस. नरूला के जीवन एवं उनके साहित्यिक क्षेत्र से संबंधित शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र में जंग बहादुर गोयल ने एस.एस. नरूला की राजिंद्र कॉलेज, फरीदकोट से हुई अपनी मित्रता की स्मृतियों को साँझा करते हुए उनके बारे में कई रोचक जानकारियाँ दीं। गुरइक़बाल सिंह ने नरूला के उपन्यासों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्होंने अपने उपन्यासों में शहरों के इतिहास को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। नरूला द्वारा साहित्य के अध्ययन और चिंतन की रुचि के बारे में पंजाबी साहित्य अकादमी, लुधियाना के उपाध्यक्ष गुलज़ार पंधेर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी में जगविंदर जोधा एवं दविंदर सैफी ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हम इतने बड़े रचनाकार की कर्मभूमि में उन्हें याद कर रहे हैं। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों से अपील करते हुए कहा कि वे अपनी मातृभाषा में ही सृजन को आगे बढ़ाएँ, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस सत्र के अध्यक्ष गुरपाल संधु ने साहित्य अकादेमी, दिल्ली एवं एस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय, लुधियाना द्वारा एस.एस. नरूला जन्मशताब्दी पर आयोजित किए जा रहे कार्यक्रम के लिए बधाई देते हुए कहा कि एक बड़े रचनाकार की स्मृति को सँजोए रखने के लिए ज़रूरी है कि हम उनके लेखन को एक बार फिर नई दृष्टि से समझें और युवा पीढ़ी को उसे पुनः पढ़ने के लिए उपलब्ध कराएँ। उन्होंने कार्यक्रम में पंजाबी विभाग के अतिरिक्त हिंदी विभाग के अध्यापकों और अन्य विभागों से आए अध्यापकों और विद्यार्थियों का भी धन्यवाद किया।

परिसंवाद : तेलुगु और कन्नड कहानियों में सामाजिक परिवर्तन

29 सितंबर 2018, हिंदुपुर

साहिती श्रवंति, हिंदूपुर के सहयोग से 'तेलुगु और कन्नड कहानियों में सामाजिक परिवर्तन' विषय पर साप्तागिरी कॉलेज, हिंदुपुर में 29 सितंबर 2018 को परिसंवाद का आयोजन किया गया। आरंभिक व्याख्यान पिल्ल कुमारस्वामी ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य आर. चंद्रशेखर रेड्डी ने साहित्य के मूल सिद्धांतों के बारे में बताया। अपने भाषण में उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि अकादेमी किस प्रकार स्थानीय भाषाओं के साहित्य को विभिन्न भाषाओं के लेखकों को समर्पित संगोष्ठियों, परिसंवादों और जन्म शताब्दी संगोष्ठियों के आयोजन द्वारा प्रोत्साहित कर रही है।

कार्यक्रम पाँच सत्रों में विभक्त था और प्रत्येक सत्र साहित्य के एक अलग विषय का प्रतिनिधित्व करता है। प्रथम सत्र का विषय था—'सामाजिक सुधार और स्वतंत्रता आंदोलन की कहानियाँ'। इस सत्र का प्रारंभ सदलापल्ली चिदंबरम रेड्डी के अध्यक्षीय व्याख्यान के साथ हुआ। कोलकलूरि आशा ज्योति (तेलुगु) और सा. रघुनाथ (कन्नड) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आशा ज्योति ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए तेलुगु साहित्य के उदाहरणों का उल्लेख किया और इसके विकास की प्रक्रिया और प्रगति की व्याख्या की। बंदारू अचमाम्बा, वह महिला जिसने शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की मुक्ति के लिए अपनी आवाज़ उठाई थी, की सेवाओं को याद किया।

सा. रघुनाथ ने महसूस किया कि दलित साहित्य के गीतों में दलितों की दुर्दशा को कुशलता से दर्शाया गया है, क्योंकि वे उन लोगों द्वारा लिखे गए हैं जिन्होंने इसे अनुभव किया है। उनका मानना था कि जब तक मनुष्य और उसकी आत्मा कहानियों में स्थान पाते रहेंगे, साहित्य फलता-फूलता रहेगा।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र 'प्रगतिशील और क्रांतिकारी कहानियों' को समर्पित था। इस सत्र का प्रारंभ ई. अस्वार्थनारायण के अध्यक्षीय व्याख्यान के साथ हुआ। अत्तदा अप्पला नायडू (तेलुगु) और चिदानंद साली (कन्नड) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अत्तदा अप्पला नायडू ने गोर्की की एक सुंदर पंक्ति से शुरुआत की, ''यह साहित्य ही है जो मनुष्य को उसके बुरे समय में सांत्वना देता है।'' उन्होंने कहा कि प्रारंभिक चरण में साहित्य ब्राह्मणों के घरों की गलियों और दहलीज़ों तक ही सीमित था और यह केवल अरासम (तेलुगु साहित्य में प्रगतिशील लेखक आंदोलन) के विकास के बाद ही दलितों के साहित्य को कहानियों में स्थान मिलना आरंभ हुआ। उनके अनुसार कम्युनिस्ट/वामपंथी साहित्य तब शुरू हुआ जब भूमिहीन किसानों ने ज़मींदारों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाई तथा हमारे देश की संसदीय प्रणाली पर सवाल उठाया और नक्सली आंदोलन ने तेलुगु साहित्य के लिए पर्याप्त स्रोत दिए।

चिदानंद साली ने उल्लेख किया कि कन्नड साहित्य में विचार के पाँच विद्यालय हैं, यथा—नवोदय, प्रगतिशील, नव्या, बंदया और दलित साहित्य। तृतीय सत्र का प्रारंभ एम.सी. गंगाधर के अध्यक्षीय व्याख्यान के साथ हुआ तथा उनका व्याख्यान दलित और बहुजन साहित्य के प्रतिनिधित्व पर आधारित था। बी. नागसेशु (तेलुगु) और श्री रंगनाथ रामचंद्र राव (कन्नड) अपने-अपने प्रस्तुत किए। नागसेशु ने कहा कि उन्हें *महाभारत* ग्रंथ, *बाइबिल* और बुद्ध की शिक्षाओं, जो मानव जाति की एकता की बात करते हैं, की देखभाल न करने के लिए समाज को उत्तरदायी ठराया। उन्होंने यह भी कहा कि भारत राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में सफल रहा है, लेकिन वह सामाजिक क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्त करने में विफल रहा है। रंगनाथ रामचंद्र राव ने कन्नड के प्राचीन स्थिति पर गर्व करते हुए अपनी प्रस्तुति आरंभ की। उनका मानना था कि कन्नड भाषा ने 1500 वर्ष पूर्व अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी।

परिसंवाद में व्याख्यान देते हुए आर. चंद्रशेखर रेड्डी

परिसंवाद के चतुर्थ सत्र का आरंभ आर.एन. रवि कुमार के परिचय से हुआ। एस. समिउल्ला ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने सवाल उठाया कि दशकों से मुसलमानों को उनके अस्तित्व की कहानी क्यों बतानी पड़ती है। उन्होंने मुस्लिम समाज में तीन तलाक के शिकार लोगों के प्रति चिंता व्यक्त की।

कुम. वीरभद्रप्पा ने समापन वक्तव्य कर्नाटक सरकार और वहाँ के लोगों की प्रशंसा की ताकि वे अपने साहित्य को अधिक से अधिक प्रोत्साहित कर सकें। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

संगोष्ठी : बोडो नाटक में आधुनिकता

30 सितंबर 2018, कोकराझार, असम

साहित्य अकादेमी ने बोडो विभाग शिक्षक संघ के सहयोग से 30 सितंबर 2018 को कोकराझार सरकारी कॉलेज, कोकराझार में 'बोडो नाटक में आधुनिकता' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

सत्र की शुरुआत कोकराझार सरकारी कॉलेज के छात्रों द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक बोडो नृत्य के साथ हुई। इस नृत्य के माध्यम से बोडो की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया गया।

मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद कार्य के माध्यम से भारत की स्थानीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन पर बल दिया। इस अवसर पर अदराम बसुमतारी ने विद्वतापूर्ण बीज भाषण दिया। उन्होंने आधुनिकता के आरंभ से लेकर अब तक पश्चिमी दर्शन में आधुनिकता के उद्भव/विकास और नाटक के क्षेत्र में नई प्रवृत्तियों के उदय का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

अपने संबोधन में साहित्य अकादेमी की बोडो परामर्श मंडल के संयोजक एवं सत्राध्यक्ष अनिल कुमार बर' ने नाटक/रंगमंच को प्रमुख रूप से प्रदर्शन कला के रूप में अध्ययन करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा आधुनिक बोडो साहित्य/संस्कृति में नाटक के क्षेत्र में आंदोलन की कमी पर चर्चा की। बोडो विभाग शिक्षक संघ के अध्यक्ष तुलन मुसाहारी ने सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी का दृश्य

पहले सत्र की अध्यक्षता रीता बर' ने की तथा मिहिर कुमार ब्रह्मा, सुनील फुकन बसुमतारी और नरेश्वर नाज़ारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अपने आलेख में मिहिर कुमार ब्रह्म ने जतिंद्रनाथ बर' के नाटक *सिगुन राजा* की चर्चा की। उन्होंने नई/अभिनव तकनीक, मंच-शिल्प/चरण, रंगमंच की सामग्री और नाटक में प्रतीकों के उपयोग पर प्रकाश डाला।

नरेश्वर नाज़ारी ने कमल कुमार ब्रह्म के नाटक *होर बड़ी क्वसी* पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने आधुनिकता के संकट और आधुनिक जीवन और पारंपरिक बोडो परिवारों पर इसके प्रभाव पर चर्चा की कि कैसे अनपढ़ माता-पिता और शिक्षित बच्चों के बीच पीढ़ी का अंतर परिवार में एक बाधा बन जाता है।

सुनील फूकन बसुमतारी ने मुख्य रूप से केशॉप बसुमतारी के नेतृत्व में कुछ उभरते और नई प्रतिभाओं के नवीनतम रुझानों और प्रदर्शन पर अपने विचार प्रकट किए, जो उनके अनुसार बोडो रंगमंच के एक नए जीवन का आरंभ है। द्वितीय विचार सत्र की अध्यक्षता गोबिंद बर' ने की और मल्लिका बसुमतारी, धनजय नाज़ारी और फूकन बसुमतारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

मल्लिका बसुमतारी ने प्रख्यात बोडो नाटककार कमल कुमार ब्रह्म पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने मुख्य रूप से उनके नाटकों में चरित्र चित्रण को प्रस्तुत किया।

धनजय नाज़ारी ने आधुनिक नाटक के तकनीकी पहलुओं तथा बोडो समाज के सांस्कृतिक लोकाचार को ध्यान में रखते हुए नाटक में एक संरचना और रूप विकसित करने की आवश्यकता पर चर्चा की। फूकन बसुमतारी ने आधुनिक बोडो नाटक में विभिन्न विषयों-वस्तुओं, विशेषरूप से राजनीतिक विषयों की उपस्थिति पर चर्चा की। सत्र आलेख वक्ताओं एवं श्रोताओं के मध्य एक जीवंत बातचीत के साथ समाप्त हुआ।

संगोष्ठी : बंगाली पत्रिकाओं के 200 वर्ष और बंगाली लघु पत्रिकाएँ

4-5 अक्तूबर 2018, कोलकाता

साहित्य अकादेमी और कोलकाता लिटिल मैगज़ीन पुस्तकालय और गवेषणा केंद्र के संयुक्त तत्त्वावधान में एक संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी के कोलकाता कार्यालय में 4-5 अक्तूबर 2018 को किया गया, जिसका विषय था—'बंगाली पत्रिकाओं के 200 वर्ष और बंगाली लघु पत्रिकाएँ'। संगोष्ठी में स्वागत भाषण मिहिर कुमार साहु ने दिया। प्रख्यात बाङ्ला विद्वान और लेखक कमल चक्रवर्ती ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने लघु पत्रिकाओं द्वारा युवा लेखकों को मंच प्रदान करने के लिए उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि इन सबके बावजूद उनकी सीमाएँ

भी हैं किंतु साहित्य और विचारों के लिए इनका होना ज़रूरी है।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार ने कहा कि बाङ्ला साहित्य को महत्त्वपूर्ण बनाने में लघु पत्रिकाओं की बड़ी भूमिका रही है। इस संदर्भ में उन्होंने कुछ विशेष पत्रिकाओं का ज़िक्र भी किया।

संगोष्ठी का दृश्य

कॉलेज स्ट्रीट पर 1978 में संदीप दत्ता की 150 पत्रिकाओं से शुरू अपनी इस लायब्रेरी में सन् 2006 में 46000 पत्रिकाएँ थीं। इसे सन् 1995 में एक सोसायटी का रूप दिया गया। बाद में इसे बंगाली लघुपत्रिकाओं के शोध केंद्र के रूप में विकसित किया गया।

संगोष्ठी का बीज वक्तव्य बाङ्ला परामर्श मंडल के सदस्य और प्रख्यात विद्वान एवं लेखक बारिदवरन घोष ने दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संदीप दत्ता ने की।

बीज वक्तव्य में श्री घोष ने बंगाली लघु पत्रिकाओं की परंपरा और उसके इतिहास तथा बाङ्ला साहित्य पर उनका प्रभाव की चर्चा की। संगोष्ठी के प्रथम सत्र में आलोक गोस्वामी ने 'लघुपत्रिकाओं में सृजनात्मक साहित्य की परंपरा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता पवित्र मुखोपाध्याय ने की। श्री गोस्वामी ने बताया कि कई प्रख्यात लेखकों की पहली रचनाएँ इन लघु पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। दूसरे सत्र का विषय था—'लघु पत्रिकाओं में आलोचना और भाषा पर विचार'। इस सत्र की अध्यक्षता अनिल आचार्य ने की और अर्णव साहा तथा चिरंजीव सुर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र का विषय था—'लघु पत्रिकाओं के आवरण एवं रेखांकन की परंपरा'। इस सत्र में प्रणवेश मैती की अध्यक्षता में कृष्णजीत सेनगुप्ता एवं सुशांतो चौधुरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र में 'लघु पत्रिकाओं में स्थानीय और प्राचीन इतिहास की प्रस्तुति' पर चर्चा की गई। इस सत्र की अध्यक्षता शिवेंदु मन्ना ने की और विश्वेंदु नंदा तथा ज्योतिरींद्र नारायण लाहिड़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र का निष्कर्ष था कि लघु पत्रिकाओं ने वंचित लोगों तथा लोक संस्कृति को मुख्यधारा में लाने का कार्य किया है।

पंचम सत्र 'लघुपत्रिकाएँ और किशोर एवं बाल साहित्य परंपरा' विषय पर केंद्रित था। अशोक कुमार मित्र और अनुपमा बंद्योपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता अर्शफी ख़ातून ने की। समापन वक्तव्य प्रख्यात विद्वान सौरिन भट्टाचार्य ने दिया तथा धन्यवाद ज्ञापित किया संदीप दत्ता ने।

संगोष्ठी : विंदा करंदीकर जन्मशताब्दी

6-7 अक्तूबर 2018, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने अपने सभागार में 6-7 अक्तूबर 2018 को 'विंदा करंदीकर जन्मशताब्दी संगोष्ठी' का आयोजन किया। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबाहुने ने मंच पर उद्घाटन सत्र के गणमान्य अतिथियों को आमंत्रित किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव के विद्वानों का स्वागत करते हुए

उदय करंदीकर, वसंत पाटनकर, वसंत अबाजी दहाके, के. श्रीनिवासराव तथा आनंद करंदीकर (बाएँ-दाएँ)

कहा कि विंदा करंदीकर न केवल मराठी साहित्य के वरन् सब समय के महानतम कवि हैं। उनकी कविताओं और लेखन ने *वसुधैव कुटुंबकम* का संदेश दिया। उनकी कविताएँ मानव संघर्ष, भावनाओं का दस्तावेज़ हैं। वह हर उम्र और शैली के लिए लिखते थे। विंदा की बहुआयामी रचना और विश्व कविता में उनका योगदान कल्पना से परे है। अपने उद्घाटन भाषण में, एक प्रसिद्ध मराठी साहित्यकार वसंत आबाजी दहाके ने कहा कि विंदा ने अपने जीवनकाल में महत्त्वपूर्ण कविताएँ, आलोचनाएँ और लघु निबंध लिखे। उनकी भाषा के चमत्कार ने बच्चों को भी आकर्षित किया। उनकी कविताएँ मानव केंद्रित हैं और मार्क्स और गाँधी से प्रेरित हैं। मराठी समीक्षक वसंत पाटनकर ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि विंदा ने कविता के कई रूपों का प्रयोग किया है। इसका कारण यह है कि उनके कार्यों का अलग-अलग भाषाओं में अनुवाद किया गया है। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबाहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'विंदा की कविता में आधुनिकता'। इस सत्र की अध्यक्षता पुष्पा भावे ने की। प्रमोद मुंघटे और अरुणा दुभाषी ने उक्त विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। मुंघटे ने कहा कि विंदा की कविता जीवन, बौद्धिकता और आधुनिकता से भरी हुई है। उन्होंने पारंपरिक आधुनिक कल्पना को नया अर्थ दिया। अरुणा दुभाषी ने कहा कि विंदा की कविताओं में ऐसे कई उदाहरण हैं जो मराठी साहित्य में आधुनिकता के लिए नई भूमि प्रदान करते हैं।

मराठी परामर्श मंडल के संयोजक रंगनाथ पठारे ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र का विषय था—'विंदा करंदीकर की समालोचना'। महेंद्र कदम और विश्वधर देशमुख ने अपने आलेखों में कहा कि विंदा ने मराठी साहित्य की समीक्षा परंपरा को समृद्ध किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता अनंत भावे ने की। इस सत्र का विषय था—'विंदा का बालसाहित्य'। आलेख वक्ता थे—सुमन नवलकर और राजीव तांबे। उन्होंने कहा कि विंदा ने अपनी कविताओं में कई प्रयोग किए हैं जिनमें चुटकुले, मनोरंजन के तत्त्व शामिल हैं। उन्होंने कविता को कम शब्दों में बहुतायत से अर्थ दिया है। उन्होंने कुछ कविताओं का भी ज़िक्र किया।

संगोष्ठी का चतुर्थ सत्र 7 अक्तूबर 2018 को आयोजित किया गया। सत्र की अध्यक्षता सतीश कलसेकर ने की। इस सत्र का विषय था—'विंदा करंदीकर की कविता : अध्यात्म और सौंदर्यशास्त्र'। सत्र के पहले निबंधकार

रवींद्र इंगाले चावरेकर ने कहा कि समकालीन कविता बौद्धिक समाज की विचारधारा है। जबकि रफ़ीक़ सूरज और दीपक बोरगावे को विंदा के अनुवाद और निबंधों पर आधारित विषय दिया गया था, उन्होंने कहा कि विंदा करंदीकर की कविता उनके निबंधों में भी परिलक्षित होती है। उनका निबंध गद्य की कविता का एक सुंदर संयोजन है।

संगोष्ठी के पंचम और अंतिम सत्र में नीलकंठ कदम और डी.जी. काले ने 'विंदा कृत कविता में प्रयोग' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। यह पाया गया है कि प्रयोगों द्वारा मानव जीवन का कल्याण होता है, तो विविध कला क्षेत्रों की विपरीत परिस्थितियों में भी प्रभावी रहता है। सत्र की अध्यक्षता रेखा इनामदार साने ने की। विंदा करंदीकर के जीवन पर एक वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया, जिसकी दर्शकों ने प्रशंसा की।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : जनभाषा संस्कृतम् भारतीय जनजातियश्च

10-11 अक्तूबर 2018, नरेंद्रपुर, कोलकाता

रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, नरेंद्रपुर, कोलकाता के सहयोग से 'जनभाषा संस्कृतम् भारतीय जनजातियश्च' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 10-11 अक्तूबर 2018 को किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन 10 अक्तूबर को गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करने के साथ हुआ तथा संस्कृत विभाग, रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय के छात्रों ने वैदिक और लौकिक मंगलाचरण का प्रदर्शन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक तथा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश के पूर्व कुलपति प्रोफ़ेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। रामकृष्ण मिशन के सचिव स्वामी सर्वलोकानंद कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत में मिहिर कुमार साहू ने कार्यक्रम के विषय के बारे में बताया तथा गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उद्घाटन भाषण बनमाली बिस्वाल, व्याकरण विभाग प्रमुख, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, रघुनाथ कीर्ति परिसर, देव प्रयाग, उत्तराखंड ने दिया। उन्होंने जन, भाषा, लोकव्यवहार, जाति, जनजाति आदि जैसे शब्दों व्युत्पत्ति व अर्थ पर प्रकाश डाला। उन्होंने हमारी संस्कृति और संस्कृत भाषा के महत्त्व को भी दर्शाया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि स्वामी सर्वलोकानंद महाराज ने बताया कि वैदिक भजन अधिक शक्तिशाली होते हैं और मंत्रों का जाप करने के बाद हम अधिक ऊर्जावान और प्रबुद्ध हो जाते हैं। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि कुछ देशों के विद्यालयों में संस्कृत की शिक्षा दी जा रही है। संस्कृत भाषा का अध्ययन किए बिना हम भारतीय संस्कृति को नहीं जान सकते।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अभिराज राजेंद्र मिश्र ने देश के ऐतिहासिक विकास और संस्कृत साहित्य की ओर संकेत किया। उन्होंने अरब देशों में संस्कृत भाषा के प्रयोग पर चर्चा की। उन्होंने *वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, कादंबरी, मृच्छकटिकम्* आदि में जनजातियों की स्थिति के बारे में विस्तार से बताया।

उद्घाटन सत्र का संस्कृत में कुशलता से संचालन रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष नारायण दास ने किया।

संगोष्ठी के पहले शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता रंजीत बेहेरा ने की। सत्र का संचालन रचना रस्तोगी ने की। पहले सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए—गौरंग बाघ; सस्मिता बंदार नायक; और श्यामाश्री किस्कू ने।

दूसरा सत्र कविता-पाठ का था। कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध संस्कृत कवि अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। सत्र का संचालन एम. किशन ने किया। अपनी संस्कृत कविताओं का पाठ किया—एम. किशन, प्रदीप बाघ, रंजीत बेहेरा, बनमाली बिस्वाल, नारायण दास, और अभिराज राजेंद्र मिश्र ने।

संगोष्ठी के दूसरे दिन शैक्षणिक सत्र वैदिक और लौकिक मंगलचरण से आरंभ हुआ। तीसरे सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर टेक चंद मीणा ने की। इस सत्र के समन्वयक प्रणब बर' थे। अपने आलेख प्रस्तुत किए—एम. किशन, भास्कर राय, प्रदीप बाघ, टेक चंद मीणा ने।

चौथा सत्र कथावाचन का था। इस सत्र की अध्यक्षता बनमाली बिस्वाल ने की तथा कार्यक्रम का संचालन रणजीत बेहेरा ने किया। संस्कृत कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया—प्रदीप बाघ, योगमाया राय, लक्ष्मीकांत मुर्मू, रंजीत बेहेरा, नारायण दास, और बनमाली बिस्वाल ने।

समापन सत्र की अध्यक्षता अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। रंजीत बेहेरा ने समापन भाषण दिया। उन्होंने संस्कृत भाषा और व्याकरण के बारे में बात की। श्री मिश्र ने हमारे देश की संस्कृत भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए स्वामी विवेकानंद के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने संगोष्ठी के प्रतिभागियों और कॉलेज के छात्रों को संस्कृत माध्यम से संस्कृत भाषा सिखाने और सीखने के लिए प्रेरित किया। समापन सत्र का संचालन नारायण दास ने किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद और शांति-पाठ से हुआ।

परिसंवाद : बाङ्ला साहित्य में कविपत्र

11 अक्तूबर 2018, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने 'कविपत्र' पत्रिका के संयुक्त तत्त्वावधान में 11 अक्तूबर 2018 को कोलकाता में एक परिसंवाद का आयोजन किया, जिसका विषय था—'बाङ्ला साहित्य में कविपत्र का योगदान'।

उद्घाटन सत्र का आरंभ साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय प्रभारी मिहिर कुमार साहु के स्वागत भाषण से हुआ। आरंभिक वक्तव्य देते हुए बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार ने कविपत्र द्वारा बाङ्ला साहित्य को दिए योगदान के बारे में विस्तार से बताया। उद्घाटन वक्तव्य संजोय मुखोपाध्याय ने दिया। उन्होंने कविपत्र पत्रिका को स्थापित करने में आई मुश्किलों का उल्लेख करते हुए बताया कि कैसे वे कविपत्र को बाङ्ला भाषा की एक महत्त्वपूर्ण पत्रिका बना पाए।

मिहिर कुमार साहु, सुबोध सरकार, पवित्र मुखोपाध्याय, संजोय मुखोपाध्याय तथा शुभेंदु बारिक ***(बाएँ-दाएँ)***

बीज वक्तव्य देते हुए शुभेंदु बारिक ने पत्रिका की विवेचना करते हुए उसकी विचारधारा का विश्लेषण किया। सत्र की अध्यक्षता पवित्र मुखोपाध्याय ने की। प्रथम सत्र में अनंत दास की अध्यक्षता में फाल्गुनी घोष और सुधांशु शेखर मुखोपाध्याय द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। इन आलेखों के शीर्षक थे– 'कविपत्र एवं समकालीन बाङ्ला कविता' एवं 'कविपत्र का इतिहास'। द्वितीय सत्र में प्रथा शर्मा एवं राहुल दासगुप्ता ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता पारमिता भौमिक ने की।

समापन वक्तव्य श्रीकुमार चक्रवर्ती ने दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया रूबी चट्टोपाध्याय ने।

परिसंवाद : गत पाँच वर्षों में सिंधी ग़ज़ल का स्वरूप

14 अक्तूबर 2018, मुंबई

'गत पाँच वर्षों में सिंधी ग़ज़ल का स्वरूप' विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 14 अक्तूबर 2018 को मुंबई में किया गया। उद्घाटन सत्र में कृष्णा किंबाहुने ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया और कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उद्घाटन भाषण प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक घनश्याम वासवानी ने प्रस्तुत किया, उन्होंने कहा कि सिंधी की ग़ज़ल विधा अपनी पहचान और अस्तित्व को दर्शाती है। साहित्य अकादेमी की सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य वासदेव मोही ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सिंधी ग़ज़ल ने ग़ज़लों की परंपरा को समृद्ध किया है। सिंधी ग़ज़ल में रूमानीवाद का रंग हमेशा से क़ायम रहा है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में, ग़ज़ल में सामाजिक मुद्दे भी प्रकाश में आए हैं। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदानी ने कहा कि सिंधी में शायरी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ग़ज़ल मिट्टी से जुड़ी हुई है। पिछले कुछ सालों में साहित्य में विचारों की प्रधानता बढ़ी है।

परिसंवाद के पहले सत्र में विनोद आसुदानी ने 'ग़ज़ल में नई विशेषताओं की उत्पत्ति' पर अपने विचार व्यक्त किए और कहा कि सिंधी ग़ज़ल ने पिछले पाँच वर्षों में नई भावनाओं को प्रकट किया है और उपन्यासों

परिसंवाद में व्याख्यान देते हुए वासदेव मोही

को शिल्प और कहानी में दिखाया गया है। सत्र का दूसरा आलेख कैलाश शादाब ने प्रस्तुत किया, उन्होंने 'ग़ज़ल में अभिव्यक्ति की शैली' पर अपने विचार व्यक्त किए और कहा कि प्रौद्योगिकी के समय में अभिव्यक्ति की शैली जीवन के साथ बदल गई है। थकावट, आराम, चिंता और जीवन की वास्तविकता के अलावा, कहानी भी सिंधी ग़ज़ल में पाई गई है। 'ग़ज़ल और समाजवाद' पर तीसरा आलेख मनोज चावला द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें कहा गया था कि सिंधी ग़ज़ल आज के समय की हर तरह की तस्वीर पेश कर रही है। सिंधी शायरों ने समाजवाद का हवाला देते हुए पिछले पाँच वर्षों में एक महान शायरी की है। बैठक की अध्यक्षता लक्ष्मण दुबे ने की।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता विनोद असुदानी ने की। सत्र का प्रथम आलेख नरेश असुदानी ने प्रस्तुत किया। 'ग़ज़ल और रोमांस' विषय पर उन्होंने कहा कि सिंधी शायरी में प्रेम की भावनाओं के अक्षर नए तरीक़ों से मिल रहे हैं। शायरी अवसाद, दुख और भावनाओं के अन्य रूपों का सामना कर रही है। 'ग़ज़ल और प्रकृति' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए रेखा पोहनी ने कहा कि ग़ज़ल मनुष्य की प्रकृति के साथ बदलती रहती है और मानवीय भावनाओं की आंतरिक आवाज़ है। नए प्रतीकों और मूर्तियों के उपयोग ने सिंधी ग़ज़ल के शिल्प और प्रकृति को बदल दिया है। सत्र का तीसरा आलेख भगवान बाबानी द्वारा 'ग़ज़ल के सौंदर्य' विषय पर प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि सिंधी ग़ज़ल परंपरा के मामले में बहुत समृद्ध है और सौंदर्यवाद के कई उत्कृष्ट उदाहरण शायरी में पाए जाते हैं।

ओम प्रकाश नागर ने अतिथि वक्ताओं और श्रोताओं को कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद किया।

परिसंवाद : उत्तरांधरा तेलुगु साहित्यम

14 अक्तूबर 2018, श्रीकाकुलम

श्रीकाकुला साहिती, श्रीकाकुलम के सहयोग से उत्तर आंध्र तेलुगु साहित्य (उत्तरांधरा तेलुगु साहित्यम) पर 14 अक्तूबर 2014 को ग्रांड होटल, श्रीकाकुलम में एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। कथाकार मल्लीपुरम जगदेश ने एक मंगल गीत प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक के. शिवा रेड्डी ने की। साहित्य अकादेमी के प्रशासनिक एवं लेखा सहायक एन.वी. पुरुषोतम ने श्रोताओं एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रख्यात तेलुगु लेखक एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कालीपटनम रामाराव ने साहित्य के महत्त्व पर बल दिया। साहित्य अकादेमी की तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य अट्टदा अप्पलानायडू ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया।

पहले सत्र की अध्यक्षता चिंतदा तिरुमलाराव ने की। गारा रंग्नाधम ने 'उत्तर आंध्र के प्राचीन काव्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। रामतीर्थ ने 'उत्तर आंध्र के आधुनिक काव्य' पर आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें 1960 की अवधि तक गुरजाडा अप्पाराव से पुरीपांडा अप्पालस्वामी, श्रीरंगम नारायणबाबू, श्री अरूद्र तथा अन्य कवियों की कविताएँ शामिल थीं। एस. नारायणरेड्डी ने '1960 से आज तक के उत्तर आंध्र के आधुनिक काव्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। 'उत्तर आंध्र की आधुनिक कहानी' पर दूसरे सत्र की अध्यक्षता दसारी रामचंद्र राव ने की। उन्होंने 1950 तक 'उत्तर आंध्र की आधुनिक कहानी' पर एक आलेख भी प्रस्तुत किया, जो गुरजाडा से शुरू होकर पुदिपेद्दी वेंकटरमण, स्थानपति रुक्मिणम्मा, सेट्टी ईश्वरराव और अन्यों तक पर आधारित था। गंतेदु गौरूनायडू ने '1951 से 1970 की अवधि के बीच की कहानियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया जिसमें चागंटि सोमयाजुलु, रवि शास्त्री, बलिवाडा कांताराव और उस काल के अन्य लेखक शामिल थे। किन्नेरा श्रीदेवी ने '1971 से 2017 तक

परिसंवाद में व्याख्यान देते हुए कालीपटनम रामाराव

की कहानियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया जिसमें उस अवधि के दौरान उत्तर आंध्र में सामाजिक परिवर्तनों का सारांश दिया गया था।

'उत्तरी आंध्र के उपन्यास' विषय पर तीसरे सत्र की अध्यक्षता रेड्डी शास्त्री ने की। अट्टदा अप्पलानायडू ने बलिवाडा कांताराव, घंटीकोटा ब्रह्माजीराव, उप्पला लक्ष्मणराव, रविशास्त्री, बीना देवी, पतंजलि तथा अन्य लेखक द्वारा लिखित उपन्यासों पर आलेख प्रस्तुत किया। कोप्पला भानुमूर्ति ने भूषणम, छायाराज तथा अप्पलानायडू के उपन्यासों पर आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता के. शिवा रेड्डी ने की। इस सत्र में चिंतदा तिरुमलाराव के कविता-संग्रह का विमोचन कालीपटनम रामाराव और गंतेदा गौरीनायडू ने किया। सन्नासेट्टी राजशेखर ने समापन वक्तव्य दिया तथा सभी प्रतिभागियों, श्रीकाकुला साहिती और साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। बी. जगन्नाथराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। परिसंवाद कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

परिसंवाद : डोगरी में छंदमुक्त कविता की स्थिति एवं स्वीकृति

19 अक्तूबर 2018, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 अक्तूबर 2018 को जम्मू में 'डोगरी च छंद मुक्त कविता दी स्वीकृति ते स्थिति' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक, शोधकर्ता तथा यूनिवर्सिटी ऑफ़ जम्मू के डोगरी विभाग की संस्थापक अध्यक्ष चंपा शर्मा ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में 'डोगरी में छंदमुक्त कविता' के इतिहास पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। इससे पहले साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक दर्शन दर्शी ने श्रोताओं का स्वागत करते हुए आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने मुक्त छंद और डोगरी कविता में इसके प्रयोग की विस्तारपूर्वक चर्चा की। लब्धप्रतिष्ठ डोगरी साहित्यकार मोहन सिंह ने उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में आलेख-पाठ के दो सत्र हुए, जिसमें सुषमा शर्मा तथा शशि पठानिया ने क्रमशः अध्यक्षता की। बंसीलाल शर्मा और संदीप सूफी ने प्रथम सत्र में आलेख प्रस्तुत किए, विषय थे—'डोगरी छंद मुक्त कविता दा रंभ, स्वीकृति ते स्थिति' तथा 'डोगरी छंद कविता दे विशे, स्वीकृति ते

स्थिति'। द्वितीय सत्र में रत्तन बसोत्रा तथा राजिंदर रंजना ने 'समकालीन हिंदी छंदमुक्त कविता दा डोगरी छंदमुक्त कविता पर प्रभाव' तथा '21वीं सदी में डोगरी में छंदमुक्त कविता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्रोताओं ने इन विषयों की सराहना की एवं वे साहित्यिक चर्चा में भी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित किया गया।

मलयाळम् कविता पर परिसंवाद तथा कवि सम्मिलन

21 अक्तूबर 2018, एर्नाकुलम, कोच्चि

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए एम.के. सानू

साहित्य अकादेमी द्वारा समस्त केरल साहित्य परिषद् के सहयोग से 21 अक्तूबर 2018 को महाकाव्य जी. सभागार, अस्पताल रोड, एर्नाकुलम, कोच्चि में 'मलयाळम् कविता' पर परिसंवाद तथा 'कवि सम्मिलन' आयोजित किया गया।

साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य बालाचंद्रन वदक्केदाथ ने 'मलयाळम् काव्य पर साहित्यिक आलोचना' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने उपस्थितगणों का स्वागत किया। मलयाळम् साहित्य के प्रख्यात आलोचक एम.के. सानू ने सत्र का उद्घाटन किया। मिनी प्रसाद, अजयपुरम ज्योतिष कुमार और संजू मैथ्यू ने मलयाळम् में नए रुझानों तथा साहित्यिक आलोचना के विभिन्न तरीक़ों पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए। अगले सत्र में 'कवि सम्मिलन' का उद्घाटन मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक प्रभा वर्मा ने किया। ओ.पी. सुरेश, बिजय चंद्रन, मोहन कृष्णन कालाडी, सेबेस्टियन, एम.एस. बनेश, एस. कालेष, माधवन पुराचेरी, आर.के. दामोदरन, आर. श्रीलता वर्मा, अथीना निरंज, नेदुमुडी हरिकुमार और पद्मदास ने अपनी कविताओं का पाठ किया। समस्त केरल साहित्य परिषद् के महासचिव टी.एन. विश्वंभरण ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद : आधुनिक तेलुगु साहित्य में दलित नारीवाद

24 अक्तूबर 2018, तिरुपति

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने 24 अक्तूबर 2018 को तेलुगु अध्ययन विभाग, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम, तिरुपति के सहयोग से सीनेट हॉल, नंदमुरी तारक रामाराव भवन, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम, में 'आधुनिक तेलुगु साहित्य में दलित नारीवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत कोलाकलूरि इनोक द्वारा लिखित तथा संगीत विभाग, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम् तिरुपति के प्रोफ़ेसर सरस्वती वासुदेवन द्वारा स्वरबद्ध किए गए वंदना-गीत से हुई। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता

परिसंवाद के प्रतिभागी

प्रख्यात तेलुगु लेखक एवं साहित्य अकादेमी की तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य रचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने की। एम. विजयलक्ष्मी, डीन, अकादमिक कार्य और तेलुगु अध्ययन विभाग की प्रमुख ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने दलित साहित्य की पृष्ठभूमि के पहलुओं की चर्चा की तथा सदियों से हो रहे इसके क्रमिक विकास पर प्रकाश डाला। क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के प्रशासनिक और लेखा सहायक, एन.वी. पुरुषोत्तम ने श्रोताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए रचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने राजाओं के संरक्षण में फलने-फूलने वाले साहित्य और आम लोगों के साहित्य के अंतर को स्पष्ट किया।

आंध्र प्रदेश सरकार के जनजातीय कल्याण के पूर्व प्रधान सचिव तथा प्रख्यात लेखक अंग्लाकुर्ती विद्या सागर ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वी.उमा, रेक्टर, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालयम ने इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण विषय पर परिसंवाद आयोजित करने के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की। परिसंवाद के निदेशक के. मधु ज्योति ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

एम. विजयलक्ष्मी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की और 'भाषा में दलित नारीवाद का दर्शनशास्त्र' विषय पर एक आलेख भी प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न जातियों, उप जाति की संस्कृतियों, भोजन की आदतों, विवाहों, पालतू जानवरों के साथ मज़बूत संबंधों का भाषा के माध्यम से उसके साहित्य में परिलक्षण को, विस्तार से समझाया। दारला वेंकटेश्वर राव ने 'उपन्यास में दलित नारीवाद का दर्शनशास्त्र' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने नारीवाद, दलित नारीवाद, दलित नारीवाद का दर्शनशास्त्र, ज्योतिबा फुले, अंबेडकर और विभिन्न विचारों से प्रभावित दलित साहित्य के दर्शनशास्त्र की अवधारणाओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

चल्लापल्ली स्वरूप रानी ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की और कविता में दलित नारीवाद के दर्शनशास्त्र पर आलेख प्रस्तुत किया। वी. पोतन्ना ने 'नाटक में दलित नारीवाद के दर्शनशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। जूपका सुभद्रा ने 'कहानी में दलित नारीवाद के दर्शनशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने समाज में जाति, लिंग राजनीति और अन्य महिलाओं की राजनीति पर चर्चा की। कोयी कोटेश्वरराव ने 'सौंदर्य में दलित नारीवाद के दर्शनशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने शास्त्रीय साहित्य और दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र में अंतर को स्पष्ट किया। समापन व्याख्यान रचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने 'आलोचना में दलित नारीवाद के दर्शनशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

परिसंवाद : मीडिया और साहित्य

24 अक्तूबर 2018, चेन्नै

व्याख्यान देते हुए भारती बालन

साहित्य अकादेमी के चेन्नै उप-क्षेत्रीय कार्यालय तथा अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नै के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मीडिया और साहित्य' विषय पर केंद्रित परिसंवाद का आयोजन 24 अक्तूबर 2018 को गुइन्नेस हॉल, मैन्यूफ़ैक्चरिंग इंजीनियरिंग विभाग, अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नै में हुआ। के.पी. राधाकृष्णन, कार्यक्रम अधिकारी, साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में साहित्य और मीडिया के अंतस्संबंध को रेखांकित किया। मालन, सदस्य, सामान्य परिषद्, साहित्य अकादेमी ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। मीडिया और साहित्य की एक-दूसरे पर निर्भरता को अपने वक्तव्य में रेखांकित करते हुए उन्होंने इस विशेष कार्यक्रम के उद्देश्य को बताया। भारती बालन, सदस्य, सामान्य परिषद्, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने स्वतंत्रता से पूर्व और बाद की साहित्यिक पत्रिकाओं द्वारा तमिळ साहित्य के विकास के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को रेखांकित किया। समस, संपादक, *द हिंदू* (तमिळ) ने बीज वक्तव्य दिया। एम. सरोजा देवी, विभागाध्यक्ष, मीडिया साईंसेज़ विभाग ने सभी का अभिनंदन किया। सा. अरुलचेलवन, निदेशक, सेंटर फ़ॉर डेवलपमेंट ऑफ़ तमिळ इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, अन्ना यूनिवर्सिटी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। विचार सत्रों में ए. रामासामी, के.एन. शिवरामन, आर. वेंकटेश, सुगुना दिवाकर और भास्कर शक्ति ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी और मीडिया विश्लेषक मौजूद थे।

परिसंवाद : नदी संस्कृति और भारतीय साहित्य

27 अक्तूबर 2018, इंदौर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नदी संस्कृति और भारतीय साहित्य' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 27 अक्तूबर 2018 को इंदौर में किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी, प्रधानमंत्री, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर ने की। बीज वक्तव्य श्रीराम परिहार, सदस्य, हिंदी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने दिया। उन्होंने कहा कि अर्वाचीन साहित्य में नदी रूपक बनकर आई है। लेकिन पुरातन समय में वेदों में विष्णु पुराण एवं वायु पुराण में आकाशगंगा का वर्णन मिलता है। नदियों के जो उद्गम हैं वह केवल मिट्टी की कोख से नहीं होते। नदी का संबंध पशु-पक्षियों से लेकर आस-पास की प्रकृति और समाज से भी होता है। इस तरह नदी हमारी सहोदरा हुई। धरती की इन बेटियों की रक्षा करने का दायित्व उसी दिन से हमारे जीवन में जुड़ गया। नदी प्राणदायिनी है। समय के

परिवर्तन के कारण नदी को दोहन का साधन मान लिया गया। सारी सभ्यताएँ नदियों के किनारे विकसित हुईं। नदी को बचाने का संकल्प हमारी संस्कृति में है। यदि नदी का जल हमारे भीतर नहीं होता तो ये प्रार्थनाएँ इतनी उदात्त नहीं होतीं। नदी निर्जीव नहीं है।

सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि जीवन का जल से और जल का साहित्य से अटूट संबंध है। जीवन नदी की कल-कल धारा की तरह है। विश्व के सभी प्रमुख नगर व सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही बसी व विकसित हुईं। इसलिए जब नदी दूषित होती है तो जीवन भी दूषित होता है और इसके ज़रिए साहित्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें नदियों को साफ़ करने पर करोड़ों रुपये ख़र्च करने के साथ यह ज़िम्मेदारी भी लेनी चाहिए कि हम स्वयं नदियों को गंदा न करें। सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता इंदुशेखर 'तत्पुरुष' ने की तथा उषा उपाध्याय, विश्वास पाटिल एवं रश्मि रमानी ने अपने आलेखों का वाचन किया। उषा उपाध्याय ने गुजराती साहित्य में नदी संस्कृति पर बात करते हुए वहाँ के प्रमुख लेखकों के कई उदाहरण देकर समझाया कि नदी गुजराती साहित्य और संस्कृति में हमेशा से महत्त्वपूर्ण रही है। उन्होंने काका कालेलकर की पुस्तक *सप्त सरिता* का उल्लेख करते हुए कहा कि हिमालय की क़रीब 2000 किमी. की यात्रा करने वाले काका कालेलकर ने इसमें वहाँ की कई नदियों का मनोरम वर्णन किया है। सिंधी की प्रख्यात रचनाकार और अनुवादिका रश्मि रमानी जी ने कहा कि हर देश को अपनी संस्कृति पर गर्व होता है। भारत विश्व में हर सभ्यता का युग प्रवर्तक रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता प्राचीन, निराली और संपन्न रही है। सैंधव संस्कृति सांस्कृतिक सहिष्णुता में विश्वास रखती थी। मिश्र को नील नदी की देन कहा जाता है, उसी प्रकार सिंधु प्रदेश को सिंधु नदी की देन कहा जाता है।

मराठी के प्रख्यात साहित्यकार विश्वास पाटिल जी ने मराठी साहित्य में नदी संस्कृति का वर्णन करते हुए कहा कि इस देश में हमने नदी को मात्र पानी की धारा नहीं माना वरन् वह हमारे लिए विराट आस्था का प्रतीक रही है।

राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष इंदुशेखर 'तत्पुरुष' ने नदी की व्यापकता को चिन्हित करते हुए कहा कि नदियों के तट पर केवल मंदिर ही नहीं बल्कि सामाजिक एकता की मिसालें भी बनीं। नदी सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध रही। यह प्रतीक हमारे समाज में समानता का सबसे अद्‌भुत उदाहरण है। द्वितीय सत्र की

परिसंवाद के प्रतिभागी

अध्यक्षता श्रीराम परिहार ने की तथा इंदुशेखर 'तत्पुरुष' और गोविंद कुमार गुंजन ने आलेख पाठ किया। श्री गुंजन ने कहा कि भारत की तरह ही दुनिया की अन्य लोक संस्कृतियों ने नदियों को बहुत सम्मान दिया है। हम लोगों ने नदियों की पूजा की, लेकिन हमने सारी गंदगी पूजा के नाम पर नदियों को अर्पित कर दी। नदियाँ मरती चली जा रही हैं। नदी की कल-कल करती ध्वनि का जो प्रवाह है वह हमने समाप्त कर दिया है। जिस दिन नदी का यह कल-कल नाद रुक जाएगा, उस दिन जीवन की कल्पना करना भी असंभव-सा लगता है। जल है तो जीवन है, संस्कृति है, साहित्य है। जब हम नदी संस्कृति की बात करते हैं तो केवल नदियों की गाथा नहीं गाते बल्कि वहाँ की संस्कृति, आदिवासी जन-जीवन इत्यादि विषयों पर भी चर्चा करते हैं। भारतीय साहित्य नदियों का अभिनंदन करने वाला साहित्य है। आधुनिक साहित्य में भी हमारे चिंतकों ने बहुत गहराई से नदियों का ज़िक्र किया है।

अंत में डॉ. परिहार ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि हमारा साहित्य वेदों का साहित्य है। जिन दो महान् ग्रंथों ने संपूर्ण जनमानस को प्रभावित किया है, वह है *रामायण* और *महाभारत*। सरस्वती नदी को हम भौतिक रूप से ढूँढ़ रहे हैं, लेकिन वह तो हमारे अंतःमन में वर्षों से प्रवाहित हो रही है। उन्होंने कहा कि गाँव का उत्पाद गाँव में रहेगा तो गाँव आत्मनिर्भर रहेगा।

तीनों सत्रों का संचालन *वीणा* पत्रिका के संपादक राकेश शर्मा ने किया और अंत में अकादेमी के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

संगोष्ठी : सैयद अब्दुल मलिक जन्मशतवार्षिकी

29-30 अक्तूबर 2018, डिब्रूगढ़, असम

साहित्य अकादेमी ने असमिया विभाग, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, असम के सहयोग से सैयद अब्दुल मलिक जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 29-30 अक्तूबर 2018 को द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्‌घाटन 29 अक्टूबर 2018 को पूर्वाह्न 10:30 बजे इंद्रा मिरी कॉन्फ्रेंस हॉल, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में हुआ। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने समस्त आमंत्रित अतिथियों, प्रतिभागियों एवं विद्वानों का स्वागत किया। उन्होंने सैयद अब्दुल मलिक द्वारा असमिया एवं भारतीय साहित्य को दिए गए उनके योगदान की चर्चा की। डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के डीन, मानविकी, सामाजिक विज्ञान और क़ानून, एन.के. हनदीक़ी ने अतिथियों का परिचय दिया। उन्होंने साहित्य अकादेमी तथा असमिया विभाग को हार्दिक धन्यवाद भी दिया।

कुलपति रंजीत तामुली ने सत्र का उद्‌घाटन किया। उन्होंने सैयद अब्दुल मलिक के जीवन का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। मदन शर्मा ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने सैयद अब्दुल मलिक के असाधारण गुणों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मलिक एक कहानीकार और गद्य लेखक थे। उन्होंने यह भी कहा कि मलिक न केवल एक गद्य लेखक थे बल्कि एक कवि, गीतकार, लोकगीतकार आदि भी थे। श्री शर्मा ने यह भी बताया कि मलिक ने किस प्रकार अपने लेखन में यथार्थवादी विचारों को दर्शाया है। उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान एवं लेखक नगेन शइकीया ने की। उन्होंने कहा कि मलिक मानवतावादी थे। उन्होंने सैयद अब्दुल मलिक की काव्य गुणवत्ता पर बात की। नगेन शइकीया ने कहा कि मलिक न केवल एक कवि और लेखक थे बल्कि वे एक चित्रकार भी थे, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज की छवि को चित्रित किया। उन्होंने मलिक के लेखन के मुहावरे और वाक्यगत प्रयोग भी दर्शाए।

सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के कार्यालय प्रभारी मिहिर कुमार साहु ने अतिथियों तथा उपस्थितगणों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने असमिया विभाग को सहयोग देने हेतु

भी धन्यवाद दिया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया लेखिका करबी डेका हाज़रिका ने की। इस सत्र में बसंत कुमार गोस्वामी ने 'सैयद अब्दुल मनिकोर उपन्यास भाषा', कैलाश पट्टनायक ने 'सैयद अब्दुल मलिक तथा उनके समय के ओड़िया उपन्यास' तथा प्रसून वर्मन ने 'समकालीन बाङ्ला साहित्यारू सैयद अब्दुल मलिक' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता के. भीमकांत बरुआ ने की। करबी डेका हाज़रिका ने 'सैयद अब्दुल मलिकर कबितारू गीत' तथा प्राणजीत बोस ने 'सैयद अब्दुल मलिकर कविता' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता गोविंद प्रसाद शर्मा ने की। जयंत कुमार बोस ने 'सैयद अब्दुल मलिकोर ऐतिहासिक नाटक', कनक सहारिया ने 'सैयद अब्दुल मालिकोर साहित्य लोक सांस्कृतिकखोमोल, प्रांजल शर्मा वशिष्ठ ने 'सैयद अब्दुल मलिकोर गोल्पो : खीमाबोद्धोत्तारू प्रखोंगगिकोता तथा संजीब डेका ने 'सैयद अब्दुल मलिक धर्मियो अनुभूति आरूखहावासतन' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता ध्रुवज्योति बोरा ने की। लखिप्रिया गोगोई ने 'सैयद अब्दुल मलिक ऐज़ राइटर ऑफ़ सटायर', मो. नूरुल सुल्तान ने 'मलिकोर उपन्याखोर चोरित्रोर निर्माण' तथा सत्यकाम बरठाकुर ने 'मलिकोर साहित्य अरु नाहोरोनी' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता अपर्णा कँवर ने की तथा समापन व्याख्यान आनंद बरमुदोइ ने प्रस्तुत किया। संजीब डेका ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद : तुलनात्मक साहित्य एवं तुलनात्मक अध्ययन

31 अक्तूबर 2018, तेजपुर, असम

साहित्य अकादेमी ने सादोउ असोम लेखिका समारोह समिति के सहयोग से 'तुलनात्मक साहित्य एवं तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर 31 अक्तूबर 2018 को बन थियेटर हॉल, तेजपुर, असम में एक परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के कार्यालय प्रभारी मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया तथा संक्षेप में साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक ध्रुव ज्योति वक्तव्य बोरा ने बीज भाषण दिया। उन्होंने परिसंवाद के विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। इस सत्र की अध्यक्षता आभा बोरा ने की। सादोउ असोम लेखिका समारोह समिति की उपाध्यक्ष पादुमी गोगोई ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता करबी डेका हाज़रिका ने की। गीता सरकार, जूरी दत्ता नाथ, स्वाति किरण तथा मालिनी ने विभिन्न विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता रंजन कलिता ने की। मामोनी बोरा खरघोरिया तथा महाश्वेता देवी ने 'माधव कंदली रामायण और तुलसीदास रामायण के मध्य आधारभूत अंतर' तथा 'वर्तमान संदर्भ में तुलनात्मक भारतीय साहित्य का अध्ययन' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। सादोउ असोम लेखिका समारोह समिति की कार्यकारी अध्यक्ष तथा तेजपुर कॉलेज की सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य चारु सहारिया नाथ ने समापन वक्तव्य दिया।

इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी एवं स्थानीय लेखक उपस्थित रहे।

उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी लेखक सम्मिलन

10 नवंबर 2018, कोच्चि

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए याकूब

साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने 22वें कोच्चि इंटरनेशनल बुक फेस्टिवल के दौरान 10 नवंबर 2018 को एर्नाकुलथप्पन मैदान, कोच्चि में 'उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया। एस.पी. महालिंगेश्वर, क्षेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु ने सभी प्रतिभागियों-श्रोताओं का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और इस तरह के सम्मिलन आयोजित करने की अकादेमी की पहल की जानकारी दी।

प्रख्यात मलयाळम् उपन्यासकार सी. राधाकृष्णन ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि लेखकों को समाज में शांति और सद्भाव पैदा करना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्य मानव संस्कृति और सभ्यता से संबंधित कालजयी कहानियों का एक विशाल महासागर है। एक लेखक की मुख्य ज़िम्मेदारियाँ इन कहानियों का अध्ययन और विश्लेषण करना और समाज के लिए उनके मूल्यों का निर्धारण करना है। आगे उन्होंने कहा कि 'विविधता में एकता' एक विशिष्ट भारतीय अवधारणा है और केरल ऐसे विचारों पर पूरी तरह खरा उतरने वाला राज्य है। यहाँ विभिन्न राज्यों की संस्कृतियाँ विद्यमान हैं। उन्होंने उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी लेखकों के सम्मिलन की सराहना करते हुए कहा कि इससे पूरे देश के विभिन्न लेखकों और उनके विचारों को एक मंच प्राप्त हुआ है।

साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल की संयोजक प्रभा वर्मा की अनुपस्थिति में प्रख्यात तेलुगु लेखक याकूब ने लेखक सम्मिलन का उद्घाटन किया और कहा कि इस तरह के अनूठे सांस्कृतिक सम्मेलनों से युवा पीढ़ी में आपसी सहयोग और प्रेम के मूल्यों का भाव पैदा होगा। उन्होंने अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी दो तेलुगु कविताओं का पाठ भी किया।

देवकांत रामचियारी (बोडो) प्रमीला देवी, अयमानम रवींद्रन (मलयाळम्) शरतचंद थियाम (मणिपुरी) और चंद्रकुमार राय (नेपाली) ने भी अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। दोपहर के सत्र की अध्यक्षता सी. राधाकृष्णन ने की और कृष्ण कुमार दास (असमिया), आर. उन्नी माधव (मलयाळम्) ने अपनी लघुकथाएँ प्रस्तुत कीं। सभी ने इस कार्यक्रम की सराहना की।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : नेपाली लोक साहित्य

13-14 नवंबर 2018, ताड़ोंग

साहित्य अकादेमी द्वारा 'नेपाली लोक साहित्य' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 13-14 नवंबर 2018 को ताड़ोंग, सिक्किम में किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी की नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य बलराम पांडे, ने आरंभिक व्याख्यान दिया। साहित्य अकादेमी की नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य जीवन नामदुंग ने अध्यक्षता की। उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफ़ेसर पुष्कर पराजुली ने बीज-भाषण दिया। अविनाश खरे, प्रोफ़ेसर एवं मानद कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे तथा समर सिंह, फ़ैकल्टी, नेपाली विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'नेपाली लोक अभिव्यक्ति' को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता जीवन नामदुंग ने की। के.एन. शर्मा ने 'नेपाली लोक अभिव्यक्ति' पर, के. घटानी ने 'लोक साहित्य अनि लोक तत्त्व' पर, शंकर देव ढकाल ने 'नेपाली उखंको अध्ययन' पर तथा थीरू प्रसाद नेपाल ने 'नेपाली लोक अभिव्यक्ति बिविद श्रोत' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र 'लोक गीत अनि नाटक' को समर्पित था तथा इसकी अध्यक्षता रूद्र पौड्याल ने की। नरेंद्र गुरुंग ने 'नेपाली लोक गीत अनि नाच' पर, खेमराज नेपाल ने 'नेपाली अनि असमिया लोक नाटक्को तुलनात्मक अध्ययन' पर, बलराम उप्रिति ने 'लोक गीतको अध्ययन-विश्लेषण' पर तथा गीता निरुला ने 'सिक्किम्मा नेपाली लोक नाटक' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र में 'नेपाली लोक साहित्याको स्थिति' को समर्पित था तथा पुष्पा शर्मा ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उदय ठाकुर ने 'उत्तर पश्चिमांचलको नेपाली लोक साहित्य' पर, रेमिका थापा ने 'दूअर्समा नेपाली लोक साहित्य' पर तथा भूपेंद्र अधिकारी ने 'देहरादूनको नेपाली लोक साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र 'नेपाली लोक साहित्य : विविध पक्ष' को समर्पित था। पेम्पा तमांग ने इस सत्र की अध्यक्षता की। कबीर बस्नेत ने 'नेपाली लोक साहित्यको अभिलेखन' तथा देवचंद्र सुब्बा ने 'नेपाली लोक साहित्य अनि परिवेश' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता कबिता लामा, डीन, भाषा एवं साहित्य, सिक्किम विश्वविद्यालय ने की और समापन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण नेपाली विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय के देव चंद्र सुब्बा ने प्रस्तुत किया।

परिसंवाद : गत पाँच वर्षों में सिंधी कहानी की प्रकृति

16 नवंबर 2019, अजमेर

सिंधी संगीत समिति, अजमेर के सहयोग से 'गत पाँच वर्षों में सिंधी कहानी की प्रकृति' पर एक परिसंवाद का आयोजन 16 नवंबर 2018 को अजमेर में किया गया। प्रख्यात सिंधी कवि एवं समालोचक वासदेव मोही ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात सिंधी लेखक कमला गोकलाणी ने की। सिंधी संगीत समिति के अध्यक्ष घनश्याम भुरानी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। भगवान अतलाणी तथा हास्सो ददलाणी ने दो सत्रों की अध्यक्षता की। सुरेश बबलाणी ने 'सिंधी कहानी के नए चेहरे', जेठो लालवाणी ने 'सिंधी कहानियों के नए विषय', अर्जन कृपलाणी ने 'सिंधी कहानी में चरित्रीकरण', किशन रतनाणी ने 'सिंधी कहानी के सामाजिक पहलू', कमला गोकलाणी ने 'सिंधी कहानी को महिला-लेखकों का योगदान' तथा मोहन हिमथाणी ने 'सिंधी कहानी की आलोचना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : आधुनिक ओड़िया साहित्य में लोक-तत्त्व

17 नवंबर 2018, संबलपुर, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी ने गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय, संबलपुर, ओड़िशा के सहयोग से 17 नवंबर 2018 को जी.एम. विश्वविद्यालय की लेक्चर गैलरी-1 में 'आधुनिक ओड़िया साहित्य में लोक-तत्त्व' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र दीपक प्रज्ज्वलित कर तथा विश्वविद्यालय के गान के साथ शुरू हुआ। इस विशेष सत्र की अध्यक्षता संबलपुर विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर कृष्णचंद्र प्रधान ने की, जिसमें जी.एम. विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति अतनु कुमार पाटी ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। मुख्य अतिथि प्रो. पाटी ने आम जनता के उपचार में लोक दवाओं के महत्त्व पर ज़ोर दिया और उन्होंने जॉन बीम्स, गोपाल चंद्र प्रहराज और कुंज बिहारी दास जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों के योगदान के बारे में भी बताया। साहित्य अकादेमी की ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने स्वागत भाषण दिया तथा मिट्टी के महान कवियों, स्वभाबा कवि गंगाधर मेहेर और संत कवि भीमा भोई को याद किया।

उद्घाटन सत्र में द्वारिकानाथ नायक ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने उपन्यास, गल्प, नाटक और कविता के क्षेत्रों में लोक तत्त्वों के प्रभुत्व पर बल दिया। उनका संबोधन उदाहरणों से परिपूर्ण था उन्होंने आधुनिक ओड़िया साहित्य में विभिन्न शैलियों के लोक तत्त्वों की उपस्थिति को स्कैन करने का प्रयास किया।

इसके बाद संबलपुर विश्वविद्यालय के ओड़िया विभाग के स्नातकोत्तर के प्रोफ़ेसर कृष्णचंद्र प्रधान ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर प्रधान ने लोक साहित्य की समृद्धि के लिए प्रशंसा की। कैसे आधुनिक साहित्यिक कृतियाँ लोक तत्त्वों के प्रवेश से प्रभावित हो रही हैं, उनके संबोधन का मूल धेय था। उन्होंने ओड़िया साहित्य के समकालीन लेखकों के कई यथार्थवादी उदाहरणों का हवाला देते हुए कहा कि आधुनिक साहित्यिक घटनाओं पर लोक तत्त्व किसी भी कथा के हृदय के समान हैं।

उद्घाटन सत्र के अंत में जी.एम. विश्वविद्यालय के कुलसचिव गिरीशचंद्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता श्याम सुंदर धर ने की, जिसमें क्षेत्रबासी नायक और सिद्धार्थ पंडा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री नायक ने कहानियों में लोक तत्त्वों के महत्त्व के बारे में तथा डॉ. पंडा ने लोक तत्त्वों और साहित्य की विशेषताओं पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए। कई उदाहरणों की मदद से श्री नायक ने इस बात पर चर्चा शुरू की कि किस प्रकार कथा लेखक पाठकों के दिलों को जीतने के लिए लोक तत्त्वों से संकेत ले सकते हैं। वह यह व्यक्त करना चाहते थे कि लोक भाषा और लोक परंपरा को मौजूदा साहित्यिक कृतियों के स्टॉक के साथ जोड़कर और अधिक अच्छा किया जा सकता है।

व्याख्यान देते हुए श्याम भोई

दोपहर के बाद के सत्र (द्वितीय तकनीकी सत्र) की अध्यक्षता ओड़िया स्कूल, गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय, संबलपुर के लंबोदर साहू ने की। इस सत्र के वक्ता थे—श्याम भोई (ओड़िया उपन्यासरे लोक उपादान) और स्वयं प्रकाश पंडा (ओड़िया नाटकारे लोक उपादान)। डॉ. भोई ने आधुनिक ओड़िया साहित्य के संवर्धन के लिए ज़मीनी स्तर पर जुड़े लोगों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रथम उपन्यासकार से लेकर आज तक कैसे लोक तत्त्व मानव अस्तित्व और प्रगति की सांस्कृतिक वास्तविकता को प्रभावित कर रहे हैं, उनके आलेख का केंद्र बिंदु था। स्वयं प्रकाश पंडा द्वारा एक उदाहरण-उन्मुख प्रस्तुति की गई जिसमें उन्होंने श्रोताओं को बताया कि किस प्रकार नाटकों ने समृद्ध और व्यापक रूप से स्वीकार्य बनने के लिए लोक सुविधाओं का उपयोग किया।

एक दिवसीय परिसंवाद 17 नवंबर 2018 की दोपहर को समाप्त हुआ। सत्र के अंत में श्रीबंता दास ने इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने संबलपुर जैसे स्थान पर इस प्रकार की समृद्ध चर्चा का आयोजन किए जाने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रयासों की प्रशंसा की। कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु अकादेमी का सहयोग देने हेतु गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय के अधिकारियों की सराहना की गई।

परिसंवाद : इंदर भोजवाणी जन्मशताब्दी

18 नवंबर 2018, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने गुजरात साहित्य अकादेमी के सहयोग से 18 नवंबर 2018 को अहमदाबाद में 'इंदर भोजवाणी जन्मशताब्दी परिसंवाद' का आयोजन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने सभी प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया।

प्रख्यात सिंधी लेखक प्रेम प्रकाश ने परिसंवाद का उद्घाटन किया तथा सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदानी ने मुख्य अतिथि के रूप में वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि इंदर भोजवाणी का व्यक्तित्व विशाल था। उन्होंने अपने लेखन से अपने युग को बहुत ही सार्थक रूप से प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि इंदर भोजवाणी का गद्य और पद्य—दोनों ही उनकी अपूर्व लेखकीय क्षमता को दर्शाता है। गुजरात साहित्य अकादमी के

व्याख्यान देते हुए जेठो लालवानी

कुलसचिव अजय सिंह चौहान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता जेठो लालवानी ने की और वासुदेव मोही द्वारा 'इल्म उरूज़ और शायरी' और हुंदराज बलवानी द्वारा 'इंदर भोजवाणी का गद्य लेखन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए गए। जेठो लालवानी ने अपने वक्तव्य में इंदर भोजवाणी के लेखकीय कौशल को रेखांकित करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने समय और समाज की वास्तविक तस्वीर पेश की है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता वासुदेव मोही ने की जिसमें कोडुमल जानिब ने 'इंदर भोजवाणी का शिल्प विधान' और जगदीश शाहदादपुरी ने 'इंदर भोजवाणी की कविता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए। वासुदेव मोही ने कहा कि कोई भी रचनाकार तभी बड़ा बनता है जब वह आम जनता के सुख-दुख और संपूर्ण जीवन-स्थितियों पर न सिर्फ़ नज़र रखता है बल्कि उन्हें पूरी संवेदना के साथ व्यक्त भी करता है। इंदर भोजवाणी ने अपनी रचनाओं में ऐसा करके एक बड़े लेखक का मुकाम हासिल कर लिया है।

अंत में, घनश्याम इंद्रदेव भोजवाणी ने इंदर भोजवाणी से जुड़ी अपनी स्मृतियों को साझा किया। परिसंवाद में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमियों ने सहभागिता की। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

संगोष्ठी : मणिपुरी साहित्य के विविध रूपों का आलोचनात्मक मूल्यांकन

24-25 नवंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने सांस्कृतिक मंच के सहयोग से 24-25 नवंबर 2018 को मणिपुर हिंदी परिषद् हॉल, इंफाल में 'मणिपुरी साहित्य के विविध रूपों का आलोचनात्मक मूल्यांकन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के प्रभारी मिहिर कुमार साहु द्वारा दिए गए स्वागत भाषण के साथ हुई। अपने संबोधन में उन्होंने संगोष्ठी के विषय पर संक्षेप में बात की। उन्होंने

साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। आरंभिक व्याख्यान साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार सिंह ने दिया। उन्होंने श्रोताओं को वक्ताओं का परिचय दिया तथा विषय के महत्त्व पर चर्चा की। ई. दीनामणि सिंह ने बीज-भाषण दिया, उन्होंने मणिपुरी साहित्य की विभिन्न शैलियों के महत्त्व का संक्षेप में विश्लेषण प्रस्तुत किया। क्षेत्री सिंह तथा साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक प्रोफ़ेसर एच. बिहारी सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में बुद्धिचंद्र हेइस्नाम्बा, एस. लाल्लेइबी और डब्ल्यू.एंजेला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र की अध्यक्षता ई. दिनामणि सिंह ने की। द्वितीय सत्र में के. मेमटों, एस.लनचैनबा मेमी तथा एल.सी. मीतेई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र की अध्यक्षता ख. कुंजो ने की। तीसरे सत्र में ओकेन्द्रो लेइशाङ्थेम, के. शांतिबाला, टी. कुंजेशोर तथा वाई. नंदिनी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र की अध्यक्षता राजेन तोइजांबा ने की। अंतिम सत्र में एन. बिरामाला, संध्यारानी सिंघा, शरतचंद्र लॉन्गजोम्बा तथा थिंगनाम जयश्री ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी मणिपुरी परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक एच. बिहारी सिंह ने की।

संगोष्ठी : भारत में सिंधी साहित्य तथा सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण

25-26 नवंबर 2019, गुजरात

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई और भारतीय सिंधविज्ञान संस्थान, आदिपुर ने संयुक्त रूप से 25-26 नवंबर 2018 को आदिपुर, गुजरात में 'भारत में सिंधी साहित्य तथा सांस्कृतिक धरोहर का सरंक्षण' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी के समस्त लेखकों-प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। प्रख्यात सिंधी लेखक सतीश रोहरा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदानी ने बीज-वक्तव्य दिया। सिंधी कवि और समालोचक वासुदेव मोही ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सतीश रोहरा, के. श्रीनिवासराव, नामदेव ताराचंदानी तथा वासदेव मोही ***(बाएँ-दाएँ)***

लखमी खिलानी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की तथा मोहन गेहानी ने 'सिंधी गौरवग्रंथों', जेठो लालवानी ने 'सिंधी संत साहित्य' और कलाधर मुतवा ने 'सिंधी लोक साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

विनीता बसंतानी ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की और भावना राजपाल ने 'सिंधी सिनेमा', जगदीश शाहदादपुरी ने 'सिंधी नाटक और टेलीफिल्म्स' तथा किशोर लालवानी ने 'भगत और अन्य लोक कलाएँ' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता जेठो लालवानी ने की। इस सत्र में नंदिता भावनानी ने 'विभाजन और प्रवास' तथा सुभद्रा आनंद ने 'सिंधी तीर्थ स्थलों' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता साहिब बिजानी ने की तथा हीरो ठाकुर ने 'काज़ी कदान का कलाम' और साज़ अग्रवाल ने 'सिंध की कहानियाँ' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। नामदेव ताराचंदानी ने पंचम सत्र की अध्यक्षता की। वासदेव मोही ने 'सिंधी साहित्य और डिजिटाइज़ेशन', साहिब बिजानी ने 'प्राचीन पांडुलिपियाँ और दुर्लभ पुस्तकें' तथा एस.पी. मन्घिर्मलानी ने 'आभासी विश्व' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। षष्ठ सत्र की अध्यक्षता मोहन गेहानी ने की तथा विनीता बसंतानी ने 'सिंधीयत और नई पीढ़ी' तथा विम्मी सदरंगानी ने 'सिंधी शिक्षा' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : निलबीर शर्मा शास्त्री के जीवन और कार्य

26 नवंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने मणिपुर साहित्य समाज इंफाल के सहयोग से 26 नवंबर 2018 को मणिपुर हिंदी परिषद्, इंफाल, मणिपुर में निलबीर शर्मा शास्त्री के जीवन और कार्यों पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में उद्घाटन सत्र के समस्त गणमान्य अतिथियों को मंच पर आमंत्रित किया गया। सभी गणमान्य अतिथियों ने स्वर्गीय निलबीर शास्त्री के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। साहित्य अकादेमी, कोलकाता के प्रभारी अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण दिया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि मणिपुर साहित्य के दिग्गज कहानीकार पर आयोजित इस कार्यक्रम का लाभ उठाने की उन्हें अत्यंत प्रसन्नता है। उन्होंने संगोष्ठी के सह-आयोजक को भी धन्यवाद दिया। उन्होंने संगोष्ठी में उपस्थित स्वर्गीय निलबीर शर्मा शास्त्री के परिवार के सभी सदस्यों का धन्यवाद किया। उन्होंने उनके द्वारा एक लेखक के रूप में जीवन की समस्याओं का सामना किए जाने पर बात की तथा उनके साहित्य पर पड़े उसके प्रभाव के बारे में भी बताया। उन्होंने भारतीय साहित्य के निर्माता के अंतर्गत शास्त्री जी पर विनिबंध लेखन का प्रस्ताव रखा। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि यह उचित समय है जब प्रसिद्ध लेखकों के जीवन पर वृत्तचित्रों का निर्माण किया जाना चाहिए।

मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार सिंह ने निलबीर शर्मा के लेखन पर बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने आयोजकों का उनके जीवन और कार्यों पर आधारित परिसंवाद कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आभार व्यक्त किया। यह आयोजक की ओर से एक अत्यधिक सराहनीय कार्य था। चूँकि यह परिसंवाद निलबीर शास्त्री के साहित्य के नवीन महत्त्व को दर्शाने का एक प्रयास था। उन्होंने निलबीर शास्त्री के कार्यों के बारे में बात की और संगोष्ठी के प्रतिभागियों के बारे में बताया। रहस्यवाद के पहलू, संस्कृत साहित्य के प्रभाव, लेखन शैली और तकनीक आदि विषयों पर प्रतिभागियों वक्ताओं ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

मणिपुरी साहित्य समाज के अध्यक्ष शामुलैलात्पम प्रह्लाद शर्मा ने अपने भाषण में निलबीर शर्मा के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बताया। उन्होंने उल्लेख किया कि उनका लेखन मणिपुर की भूमि को देशभक्ति की छाप दे सकता है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मणिपुरी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष काङ्जम इबोहल सिंह ने की। एस. वेदेश्वर शर्मा, नांगोम एकाषिनी देवी तथा शैखोम घनश्याम सिंह ने क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री शर्मा ने 'श्री निलबीर शर्मा शास्त्री के जीवन और कार्य' पर आधारित अपने आलेख में उल्लेख किया है कि शास्त्री जी कर्मयोगी थे। यह पहलू उनकी कविता—*डस्ट ऑन द रोड* (लमबिगी उपहुल) में परिलक्षित हुआ था। वे मणिपुरी साहित्य परिषद्, मणिपुरी हिंदी परिषद् और मणिपुर संस्कृत परिषद् की समस्त गतिविधियों में शामिल थे। उन्होंने समाज के नैतिक मूल्य को ऊपर उठाने की कोशिश की। उन्होंने अपने लेखन यथा—कहानियों तथा कविताओं में मानवतावाद और देशभक्ति के रंग भरे। कभी-कभी उनका लेखन सामाजिक वास्तविकताओं, रोमांस, मानवीय मूल्यों और रहस्यवाद को भी प्रतिबिंबित करता था।

एकाषिनी ने अपने साहित्य में वीरता के पहलू पर बात की, उनकी कविताओं में देशभक्ति का रंग था। उन्होंने इस विधा को पुनर्जीवित किया लेकिन उन्होंने कविताओं में राजनीतिक स्वर नहीं दिया। उनकी उल्लेखनीय कविता थी—खोंगजोम पिलग्रिमेज स्पॉट (खोंगजोम तीर्थ)।

शैखोम घनश्याम सिंह ने *संस्कृत साहित्य का प्रभाव : कालिदास* एक संस्कृत नाटककार विषय पर बोलते हुए कहा कि शास्त्री का लेखन उनसे गहनता से प्रभावित था। भक्त और भगवान के बीच भक्ति को अविसारिका में दिखाया गया। प्रेम एक औरत के रूप में है जो महान आत्मा (भगवान) से मिलने के लिए यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो कर खड़ी है। चरित्र और प्रसंग : उन्होंने संस्कृत साहित्य से कई पात्रों और प्रसंगों का उपयोग किया है। नारीत्व की पूजा में उन्होंने संस्कृत के श्लोकों को याद किया। वृद्ध व्यक्ति की आशा व्यक्त करते हुए लेखक ने शंकराचार्य के संस्कृत श्लोकों का प्रयोग किया। जब लेखक ने कुछ संदेश देने की कोशिश की तो उन्होंने संस्कृत साहित्य की दुनिया में प्रवेश किया।

सत्र की अध्यक्षता एस. लनचेनबा मीतेई ने की। हेइक्रुजम रायबाला देवी, क्षेत्रिमायुम राधाप्यारी देवी और माया नेपरम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

हेइक्रुजम रायबाला देवी ने शास्त्री की कहानियों पर चर्चा की ओर बताया कि लेखक की कहानियों में रोमांटिक प्रवृत्तियाँ थीं। इसके अलावा, बाद की उनकी कहानियाँ सामाजिक वास्तविकताओं पर आधारित थीं। जब लेखक ने जीवन की मुश्किल परिस्थितियों से मुक्ति पाई, तो उसने सहानुभूति के साथ इन्हें लिखा। उनकी कुछ कहानियाँ कार्य संस्कृति, दृढ़ संकल्प तथा महिलाओं के प्रति उच्च सम्मान परिलक्षित करती हैं। वे सामाजिक यथार्थवादी होने के साथ-साथ आदर्शवादी भी थे। वे अपनी कहानियों में अतीतावलोकन विधि का भी प्रयोग किया करते थे। उनकी कहानियों में अर्थपूर्ण संवादों का उपयोग किया गया। उनकी कहानियों में राजनीतिक स्वर नहीं थे।

क्षेत्रिमायुम राधाप्यारी देवी ने रहस्यवाद पर बात की। उनकी कविता रहस्यवाद और अध्यात्मवाद के संबंध को दर्शाती है। अपने कविता-संग्रह *नाइट डीयू* (अहिंग लिक्ला) में उन्होंने व्यक्त किया कि वे प्राकृतिक सुंदरता के दायरे में महान आत्मा को देख सकते हैं। प्रकृति सर्वव्यापकता का खंड है। उनकी प्रकृति पूजा भगवान के लिए उनकी भक्ति है। संध्या-गीत (संध्याज़ एशेई) में उन्होंने कहा कि प्रकृति के हर क्षेत्र में, आत्मा और महान आत्मा का बंधन पाया गया है। यह रहस्यवाद उनकी कविताओं में परिलक्षित हुआ था। इसे भक्ति की भावना के साथ प्रेम-प्रसंग के रूप में व्यक्त किया गया था। उन्होंने जीवन-चक्र-जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म में विश्वास किया।

माया नेपरम ने शास्त्री जी की लेखन शैली और तकनीक पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उनकी कविताएँ वैष्णववाद के पहलुओं को परिलक्षित करती हैं। शुरुआत में, आधुनिक लहर उन्हें छू नहीं पाई, उनकी कविताओं

में केवल प्राकृतिक सौंदर्य की पूजा और आंतरिक आत्मा के लिए समर्पण ही था। देशभक्ति की भावनाएँ उनकी रचनाओं में निरंतर देखी जा सकती थीं। उन्होंने इसे आम भाषा में व्यक्त किया था। शब्दों को सजाया नहीं गया था, रूपकों, उपमाओं, प्रतीकों का ना के बराबर इस्तेमाल किया गया था। उनकी कविताएँ रहस्यवाद को परिलक्षित करती थीं। वे सर्वशक्तिमान की उपस्थिति में विश्वास करते थे। वे प्रकृति के साथ गहराई से जुड़े थे, यहाँ तक कि वे प्रकृति का मानवीकरण भी कर देते थे। उनकी कविताएँ मुख्य रूप से देशभक्ति और मानवतावाद पर आधारित थीं। अपने जीवन के उत्तरार्ध में, उन्होंने सामाजिक व्यवस्था के उत्थान के लिए भी रुचि दिखानी प्रारंभ की। सत्र का समापन एस. लनचेनबा मीतेई के विश्लेषणपूर्ण भाषण के साथ हुआ।

परिसंवाद : स्वयं, राष्ट्र और औपनिवेशिक जीवन में असमिया कथा लेखन

29 नवंबर 2018, तेजपुर, असम

साहित्य अकादेमी ने तेजपुर विश्वविद्यालय, असम के सहयोग से 29 नवंबर 2018 को 'स्वयं, राष्ट्र और औपनिवेशिक जीवन में असमिया कथा लेखन' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन तेजपुर विश्वविद्यालय, असम में किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण बी.के. दंता ने प्रस्तुत किया। तेजपुर विश्वविद्यालय की ओर से एस्थेर दयमारी ने अपने भाषण में असमिया साहित्य में संगोष्ठी के विषय के महत्त्व पर चर्चा की। तेजपुर विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर वी.के. जैन ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया। तेजपुर विश्वविद्यालय के सम-कुलपति दिलीप कुमार सैकिया ने परिसंवाद की योजना और इसके सफल निष्पादन पर संतोष व्यक्त किया। एच.एस.एस. के डीन पी.के. दास ने असमिया साहित्यिक क्षेत्र में परिसंवाद के विषय की प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रोफ़ेसर प्रदीप आचार्य ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने परिसंवाद के विषय के महत्व पर विस्तारपूर्वक विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता मदन एम. शर्मा ने की। एस्थेर दयमारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में बिभास चौधुरी, जयप्रकाश राय, संजीब पॉल डेका और संजीब साहू ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर प्रदीप आचार्य ने की। द्वितीय सत्र में अरानी सैकिया, हेमज्योति मेधी, जूरी दत्त और लखीप्रिया गोगोई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। बिभास चौधुरी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। समापन भाषण शरत कुमार डोळे ने प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन

1-2 दिसंबर 2018, अगरतला

अगरतला के सुकांत अकादमी सभागार में 1 और 2 दिसंबर 2018 को दो दिवसीय अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन त्रिपुरा विश्वविद्यालय के कुलपति वी.एल. धरूरकर, जाने-माने लेखक एवं विद्वान निर्मलकांति भट्टाचार्जी, प्रख्यात लेखक, आलोचक, अनुवादक और विद्वान सरोज चौधुरी तथा साहित्य अकादेमी एन.ई.सी.एल. के निदेशक चंद्रकांत मुरासिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया।

के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में मौखिक भाषाओं सहित भारत की सभी भाषाओं में साहित्य के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य अकादेमी के प्रयासों की चर्चा की। सरोज चौधुरी ने इस तथ्य पर

लेखक सम्मिलन का दृश्य

बल दिया कि पूर्वोत्तर लोककथाकारों के लिए स्वर्ग है। उन्होंने पारंपरिक और वाचिक साहित्य के सरंक्षण में मदद करने के लिए एन.ई.सी.एल. की भी प्रशंसा की। निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने कहा कि पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत हेतु सोने की खान है। उन्होंने साहित्य के वर्तमान रुझानों-स्त्रीवादी और दलित लेखन पर प्रकाश डाला। वी.एल. धरूकर ने त्रिपुरा विश्वविद्यालय द्वारा वाचिक और पारंपरिक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए की गई पहलों पर प्रकाश डाला। अंत में, चंद्रकांत मुरासिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कवि सम्मिलन का प्रथम सत्र देशभर से आए ग्यारह कवियों की कविता-पाठ के साथ प्रारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता सरोज चौधुरी ने की। इस सत्र के प्रतिभागी कवि थे—अकबर अहमद, स्वप्न सेनगुप्ता, धनश्री स्वर्गियारी, मनीलाल पटेल, इज़हार मुबाशीर, बिजॉय देववर्मा, संजय बोरकर, मंगत बादल, हरिदत्त शर्मा, श्रीकांत सोरेन तथा नंद कुमार सनमुखानी।

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। इस सत्र में सुनीता भदवाल, अर्पा घोष, प्रमिला माधव, एल. बीरमंगल सिंह तथा दर्शन जोगा ने अपनी कहानियों का पाठ किया। प्रकाश भातंब्रेकर ने इस निमंत्रण के लिए साहित्य अकादेमी तथा त्रिपुरा के लोगों को धन्यवाद दिया तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। मयूर बोरा ने समकालीन असमिया साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने यह भी बताया की किस प्रकार से यह उत्पात और सत्ता की राजनैतिक अशांति एवं हिंसा से प्रभावित है। सरोज कुमार पाधी ने दुनिया भर के साथ-साथ भारत तथा ओड़िशा में भी साहित्य के सामान्य रुझानों पर चर्चा की। बी. तिरुपति राव ने कहा कि समय के प्रति जागरूकता तेलुगु साहित्य के प्रमुख विषयों में से एक है। 1918 से तेलुगु में प्रगतिशील आंदोलनों में गिरावट आई है। अंत में, प्रकाश भातंब्रेकर ने वर्तमान कविता एवं साहित्य की प्रवृत्तियों, मुद्दों और समस्याओं, मराठी साहित्य में दलित लेखन के प्रभुत्व, जो भारत में अन्य दलित लेखन के लिए अग्रणी एजेंट के रूप में कार्य कर रहा है पर अपने विचारों के साथ सत्र का सारांश प्रस्तुत किया और दोहराया कि साहित्य का उद्देश्य 'कल्याण' है। 'मुलाक़ात' सत्र की अध्यक्षता दुलाल घोष ने की। इस कार्यक्रम के प्रतिभागी थे—चकमा लेखक जनेश अयन चकमा, हिंदी कवि और समालोचक सुनील कुमार मिश्र, मैथिली कथाकार निक्की प्रियदर्शनी, मलयाळम् विद्वान एवं कवि सुमेश कृष्णन, नेपाली लेखक, गायक और अभिनेता पुष्कर तमांग तथा उर्दू कवि आस फातमी। अंत

में दुलाल घोष ने समापन वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी की संपादक, स्नेहा चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। के. श्रीनिवासराव ने कहा कि यह एक सफल लघु साहित्यिक उत्सव रहा, हालाँकि यह एक लेखक सम्मिलन है तथा भारत के सभी कोनों से आए लेखकों ने इसमें भाग लिया और इस कार्यक्रम में अपना योगदान दिया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि वे भविष्य में अगरतला में और साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे। अंततः उन्होंने सभी को धन्यवाद किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : आचार्य बच्चूलाल अवस्थी और आधुनिक साहित्य

01-02 दिसंबर 2018, भोपाल

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं वीणापाणि संस्कृत समिति, भोपाल के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' जी की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर के भवभूमि प्रेक्षागार में दिनांक 01-02 दिसंबर 2018 को द्विदिवसीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन किया गया।

आचार्य बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' जी न केवल संस्कृत अपितु हिंदी, उर्दू के प्रकांड विद्वान के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। उनकी ग्रंथ-गरिमा एवं ज्ञान-प्रखरता से साहित्य जगत सर्वथा लाभान्वित होता रहा है। अतः इनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के आकलन एवं स्मरण हेतु भारत के प्रतिष्ठित मूर्धन्य विद्वानों की यह संगोष्ठी सभी के लिए अवश्य ही लाभप्रद रही है।

दिनांक 01 दिसंबर 2018 को प्रातः 10.30 बजे से प्रारंभ संगोष्ठी के प्रथम उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सह-संपादक अजय कुमार शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी की गतिविधियों का परिचय कराया। मुख्य वक्ता आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं पूर्व कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान मानद् विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अवस्थी की साहित्य यात्रा एवं जीवन यात्रा की महानीय प्रवृत्तियों का खुलासा किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष अभिराज राजेंद्र मिश्र, पूर्व कुलपति संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं संयोजक, संस्कृत भाषा परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने आचार्य अवस्थी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के यथार्थ-निरूपण के साथ-साथ उनके संस्मरण से भी अवगत कराया। धन्यवाद देते हुए बालकृष्ण शर्मा, निदेशक, सिंधिया प्राच्यविद्या शोध संस्थान, उज्जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रतिभागी

द्वितीय सत्र के शोधपत्र वाचन में वंदना त्रिपाठी, उज्जैन की अध्यक्षता में सत्यनारायण आचार्य, तिरुपति एवं रमाकांत शुक्ल, नई दिल्ली के शोध-पत्र की प्रस्तुति हुई। सत्यनारायण आचार्य ने अवस्थी जी के खंडकाव्य अगतिक-गतिकम् के काव्यसौंदर्य का व्याख्यान किया। रमाकांत शुक्ल ने ज्ञान जी की विपन्नता जीवनी के साथ साहित्य-साधना की निष्ठा पर रेखांकित किया।

तृतीय सत्र आचार्य बच्चूलाल अवस्थी जी के काव्य का गायन एवं काव्य-पाठ को समर्पित था, जिसमें अनुपम गर्ग शुक्ल अवस्थी जी की पौत्री, निरुपभा उनकी पुत्री वंदना त्रिपाठी, धर्मेंद्र कुमार सिंहदेव, नारायण दाश, ऋषभ भारद्वाज, रामविनय सिंह, सत्यनारायण आचार्य, निलिम्प त्रिपाठी, वनमाली विश्वाल, बालकृष्ण शर्मा, संतोष पण्ड्या, राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिराज राजेंद्र मिश्र एवं रमाकांत शुक्ल ने ज्ञान जी के काव्य-पाठ के साथ अपनी रचनाओं द्वारा सभा को उत्प्रेरित किया।

दूसरे दिन के चतुर्थ सत्र में वनमाली बिश्वाल की अध्यक्षता में ऋषभ भारद्वाज, वंदना त्रिपाठी, नारायण दाश, ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। साथ ही अध्यक्ष वनमाली बिश्वाल जी ने अवस्थी के काव्य में नए प्रतिमान पर पत्र वाचन किया।

पंचम सत्र में के.बी. पंडा, की अध्यक्षता में डॉ. संतोष पंड्या, रामविनय सिंह और बालकृष्ण शर्मा, ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्ष पंडा ने अवस्थी जी के शोध परक ग्रंथों का अनुशीलन करते हुए उन के महान व्यक्तित्व के मानदंडों का आकलन किया।

समापन पत्र की अध्यक्षता विजय बहादुर सिंह ने की। समापन वक्तव्य में आधुनिक हिंदी साहित्य के वरिष्ठ आलोचक, समीक्षक विजय बहादुर सिंह ने कवि की कविता और जन मानस के अंतःसंबंध तथा काव्य की प्रयोजनीयता पर समीक्षा करते हुए अवस्थी जी के साहित्य का मूल्यांकन किया। अवस्थी जी के जामाता हरिओम त्रिपाठी ने अपने अनुभव को श्रोताओं के साथ साझा किया। संगोष्ठी के संयोजक धर्मेंद्र कुमार सिंहदेव थे। अध्यक्षीय वक्तव्य में हिंदी एवं अर्वाचीन संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान्, कवि, साहित्यिक एवं समीक्षक रमाकांत शुक्ल ने निष्पक्ष रूप से बताया कि प्रत्येक साहित्य में विद्यमान भाषा की मर्यादा एवं भावप्रवणता को पाठक या समीक्षक को समझना चाहिए। साथ ही नई पीढ़ी से आग्रह किया कि मानव अपने नित्य कर्म तथा दायित्व का निर्वाह पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से करें तो समाज, साहित्य एवं संस्कृति हमेशा सब के लिए अनुकरण के योग्य हो जाएगी।

संगोष्ठी : श्रीरामचंद्र दाश जन्मशताब्दी

2 दिसंबर 2018, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने 2 दिसंबर 2018 को गीत गोविंद भवन, भुवनेश्वर, ओड़िशा में श्रीरामचंद्र दाश पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के प्रभारी अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण दिया। आरंभिक व्याख्यान साहित्य अकादेमी की ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक विजयानंद सिंह ने दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय देते हुए श्रीरामचंद्र दाश के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। संगोष्ठी का उद्घाटन देवदास छोटराय ने किया। उन्होंने संक्षेप में श्रीरामचंद्र दाश के जीवन और कार्य पर बात की। अभिराम बिस्वाल ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रीरामचंद्र दाश की विशिष्ट विशेषताओं के बारे में विस्तार से बात की और उनके लेखन का विश्लेषण किया। मनोरंजन पाणिग्राही ने सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रदिप्ता कुमार पांडा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र में देव प्रसाद दाश तथा मनोरंजन प्रधान ने श्रीरामचंद्र दाश के जीवन और कार्य पर आलेख प्रस्तुत किए। रविनारायण दास ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने देश के सांस्कृतिक क्षेत्र में ओड़िशा की परंपरा को बनाए रखने में उनकी भूमिका के महत्त्व पर बात की। समापन सत्र में स्मिता नायक ने आलेख प्रस्तुत किया। समापन वक्तव्य अजीत कुमार त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। सुखदेव नंदा ने सत्र की अध्यक्षता की। बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी : गोविंद पंजाबी जन्मशताब्दी

7 दिसंबर 2018, मुंबई

व्याख्यान देते हुए लक्ष्मण दुबे

साहित्य अकादेमी, मुंबई ने शुक्रवार, 7 दिसंबर 2018 को अपने सभागार में *गोविंद पंजाबी जन्मशताब्दी* विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने अतिथि वक्ताओं और दर्शकों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन भाषण में प्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार जगदीश लाछानी ने कहा कि साहित्य अकादेमी ने इस प्रकार के आयोजन द्वारा पुरानी पीढ़ी की यादों को पुनर्जीवित किया है। आज के मशीनी युग में, मनुष्य की इच्छाएँ और चुनौतियाँ अधिक हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अकेला होता जा रहा है। गोविंद पंजाबी अपनी यथार्थवादी कहानियों में मानव स्वरों को प्रेरित करने वाले लेखक थे। प्रख्यात सिंधी विद्वान मोहन गेहानी ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गोविंद पंजाबी के लेखन में गरीबों और कामकाजी लोगों के जीवन और वास्तविकता का वर्णन किया गया है। उन्होंने कहा कि सच्ची स्वतंत्रता के सपनों के पक्षधर गोविंद पंजाबी ने कभी आशा नहीं छोड़ी।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता कन्हैयालाल लेखवानी ने की। प्रथम आलेख संध्या कुंदनी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गोविंद पंजाबी बोली और साहित्य के निर्माण के उत्थान के एक नेता थे। शोभा लालचंदानी ने कहा कि उनकी कहानियाँ आम आदमी की पीड़ा की गाथा है। उन्होंने सिंधी जीवन और संस्कृति पर कई कहानियाँ लिखीं। इन कहानियों में कोई दोष नहीं है, वे जीवन की प्राकृतिक तस्वीरें हैं।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में सरिता शर्मा ने अपने आलेख में व्यक्त किया कि गोविंद पंजाबी का सिंधी कहानियों में एक विशेष स्थान है। वे प्रकृति के धनी थे और उनका व्यक्तित्व दोस्ताना था। प्रख्यात सिंधी कवि लक्ष्मण दुबे ने सत्र की अध्यक्षता की। क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

परिसंवाद : अविभाजित दरंग, अविभाजित कामरूप, ग्वालपारा, उत्तर बंगाल (मेच) और अविभाविज नगांव की स्थानीय बोडो बोलियाँ

8 दिसंबर 2018, कार्बी आंगलोंग, असम

साहित्य अकादेमी ने कार्बी आंगलोंग ज़िला बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 8 दिसंबर 2018 को 'अविभाजित दरंग, अविभाजित कामरूप, ग्वालपारा, उत्तर बंगाल (मेच) और अविभाजित नगांव की स्थानीय बोडो बोलियाँ' पर परिसंवाद का आयोजन अनंदारार्ण मुसाहारी भवन, लंघिन, कार्बी आंगलोंग, असम में किया।

कार्यक्रम के आरंभ में कर्बी आंगलोंग ज़िला, बोडो साहित्य सभा के सचिव खगेन गोयारी ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कार्बी आंगलोंग ज़िला बोडो साहित्य सभा के सीताराम बसुमतारी ने की। परिसंवाद के मुख्य अतिथि तारेंद्र ब्रह्म थे। मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अरविंद उजीर और प्रेमानंद मुसाहारी ने इस विषय पर परिसंवाद आयोजित करने के महत्त्व के बारे में बताया। परिसंवाद की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की बोडो परामर्श मंडल के सदस्य बिसेस्वर बसुमतारी ने की। चार आलेख वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। धरणीधर वारी ने 'बवखाओजयवी कामरूप ज़िल्लानी बोरो रावोसा', विद्युत बसुमतारी ने 'पश्चिम बंगालनी मेच-दलाई राव अर्व बोरो बिफंग राव सयाव अंगणी फोंग्न्विस्व', राजेंद्र कुमार बसुमतारी ने 'बव्खौजैवी दारंग्नी दलाई राव' तथा अंतिम आलेख प्रशांत बोरा ने 'एन.सी. नगांव ज़िल्लानी बोरो रावसा' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : आज की मराठी कहानी

9 दिसंबर 2018, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने रविवार, 9 दिसंबर 2018 को अपने सभागार में 'आज की मराठी कहानी' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने उपस्थित गणों का स्वागत किया और साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों का ब्योरा प्रस्तुत किया। उद्घाटन भाषण साहित्य अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य राजन गावस ने दिया। उन्होंने कहा कि आज की मराठी कहानी का शिल्प और कहानी हमें हमारी परंपरा से जोड़ती है। ये कहानियाँ हमें पाठक की जिज्ञासा की ओर ले जाती हैं। उन्होंने मराठी कहानी की परंपराओं और आज के मराठी साहित्य के सामंजस्य और अंतर पर भी सवाल उठाया। अपने बीज-भाषण में निखिलेश चित्रे ने मराठी कहानियों में शिल्प और कथाओं पर विस्तृत विवरण दिया। उन्होंने कहा कि आज की कहानियाँ सामाजिक यथार्थवाद के करीब हैं। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में मराठी कहानी परंपरा के योगदान को रेखांकित करते हुए प्रख्यात मराठी लेखक कौतिकराव थाले-पाटिल ने कहा कि आज की कहानी ग्रामीण संस्कृति, शक्ति, राजनीति और जीवन के दर्शन के दर्द को भी बयान करती है।

परिसंवाद के प्रथम सत्र में आसाराम लोमटे ने बताया कि बाज़ारोन्मुखी समाज के परिवर्तन से कहानियों और सूत्रों की प्रकृति भी बदल जाती है। आज की मराठी कहानियाँ समाज के बदलने का दर्पण हैं। दूसरा आलेख भगवान काले द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण ने कहानियों के शिल्प को प्रभावित किया है। आज की मराठी कहानियाँ दलित और महिला चर्चाओं के स्वर में अधिक मुखर हो गई हैं। उन्होंने कहा कि आज के लेखकों की कहानियों में शिल्प और बहुत सुंदर नवपरिवर्तन देखा जा सकता है, जो मराठी कथासाहित्य

को समृद्धि प्रदान कर रहा है। तीसरे आलेख वक्ता गोविंद काजरेकर ने 'मराठी में महिलाओं का लेखन' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महिलाओं की कहानियों में घर, परिवार और समाज में महिलाओं के यथार्थवादी चित्रण से एक शून्य-सा प्रतीत होता है। वहाँ भी परिवार के विघटन का एक दंश है। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी लेखक सुबोध जावड़ेकर ने की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जयंत पवार ने की और मोनिका गजेंद्रगडकर और किरण गौरव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम अधिकारी ओमप्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी : इतिहास के एक स्रोत के रूप में कार्बी लोकसाहित्य की खोज

9-10 दिसंबर 2018, कार्बी आंगलोंग, असम

साहित्य अकादेमी ने कार्बी लम्मेट अमेई के सहयोग से 9-10 दिसंबर 2018 को रंगसिना सरपो सभागार, लोरूलंगसो, दीफू, कार्बी आंगलोंग, असम में 'इतिहास के एक स्रोत के रूप में कार्बी लोकसाहित्य की खोज' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के प्रभारी अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। तुलिराम रोंगहांग ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि पद्मश्री रांगबोंग तेरंग थे। साहित्य अकादेमी की बोडो परामर्श मंडल के संयोजक अनिल कुमार बर' ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। सुरेन क्रमसा ने सत्र की अध्यक्षता की। जय सिंग टोकबी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम सत्र के आलेख वक्ता थे—धर्म सिंग तेरोन, लिन्सो तिमुगपी, हैंगमिंजी हंसे एवं सेर्दिहून तेरोंपी। फादर जॉन तिमुंग ने सत्र की अध्यक्षता की। द्वितीय सत्र के आलेख वक्ता थे—काचे तेरोंपी, मावे रोंगपिपि, सबिता तोकबिपी एवं सेर्दिहून बेयपी। वुल्ली धनराजू ने सत्र की अध्यक्षता की। तृतीय सत्र के आलेख वक्ता थे—कबीन तेरोंपी, सेरमिली तेरंगपी एवं खोर्सिंग तेरोन। रबिंद्र तेरॉन ने सत्र की अध्यक्षता की।

दूसरे दिन, चतुर्थ सत्र के आलेख वक्ता थे—खोयासिंग हंसे, मैगी कथारपी, मोनालिसा रोंगपिपि एवं सुरेन क्रमसा। सिकारी तिस्सो ने सत्र की अध्यक्षता की। वक्ताओं ने अतीत से लेकर वर्तमान तक के कार्बी लोकसाहित्य का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं के समक्ष लोकसाहित्य के उदाहरण भी प्रस्तुत किए। उन्होंने ऐतिहासिक जानकारी की ओर इशारा किया जो लोकसाहित्य में विद्यमान है। इन तत्त्वों को पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

संगोष्ठी : तमिळ संगीत परंपरा और नृत्य कला

11-12 दिसंबर 2018, कोयंबटूर

साहित्य अकादेमी के चेन्नै उप-क्षेत्रीय कार्यालय और डॉ. एन.जी.पी. कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'तमिळ संगीत परंपरा और नृत्य कला' पर केंद्रित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 11-12 दिसंबर 2018 को कॉलेज परिसर में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम, संयोजक, तमिळ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु एक ऐसा राज्य है जिसके पास प्राचीन और समृद्ध संगीत परंपरा है; ओदुवार्स, नागस्वरम्

कलाकारों और देवदासियों ने मंदिरों में संगीत की प्राचीन परंपरा के संरक्षण में बड़ी भूमिका निभाई है। सी. रामकृष्णन का साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत *संचारम्* उपन्यास नागस्वरम् कलाकारों के जीवन पर आधारित है। यह उपन्यास उनके संगीत और कृषि के बास्ते सहजीवन की बात करता है। संगीत विशेषज्ञ ना. मम्मादु ने आरंभिक वक्तव्य दिया। पुवियारसु, (साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत) ने बीज वक्तव्य दिया। नल्ला जी. पालानिसामी, अध्यक्ष और वी. राजेंद्रन, कॉलेज प्राचार्य ने सभी का अभिनंदन किया। एस. थंगमानिकंदन, तमिळ प्रोफ़ेसर ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

पहले सत्र की अध्यक्षता सुभाषिनी चंद्रशेखरन ने की और 'भरतनाट्यम के विकास में तेवरादियार की भूमिका' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से ही तमिलनाडु के मंदिरों के भक्तों के जीवन का हिस्सा नृत्य रहा है। ए.के. अलगारस्वामी ने 'विरालिविदु थूटु में तेरावदियार की भूमिका' पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किया।

के. सदाशिवम ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की और 'देवदासी प्रथा उन्मूलन अधिनियम के परिणाम' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि देवदासी प्रथा दिव्य मानी गई क्योंकि यह मंदिर-सेवा की आत्मिक इच्छा से जुड़ी थी। समय और परिदृश्य में बदलाव के साथ ही यह देवदासी प्रथा सामाजिक संघर्ष का कारण बनती गई।

एन. मरज़िया गाँधी ने 'तेरावदियार परंपरा और पुरातत्त्व संबंधी आँकड़े' विषय पर केंद्रित अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि तंजावु का वृहदीश्वर मंदिर वह मंदिर है जहाँ अब तक का सबसे बड़ा शिलालेख 'थालिचेरी कालवेत्तु' है जिसमें राजराजा चोल के द्वारा मंदिर सेवा के लिए नियुक्त नर्तकों, संगीतकारों, गायकों और कवियों के नाम पद सहित वर्णित हैं। बी. जीवसुंदरी ने 'मूवालुर रामामिरथम कर्मियों के जीवन' पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किया।

सनमुगा सेल्वागणपति ने तृतीय सत्र की अध्यक्षता की और 'मंदिर पूजा में तेरावदियार-सेवा' पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि तेरावदियार मंदिर-पूजा में नृत्य और संगीत एक आवश्यक हिस्सा रहा है। के. नर्मदा ने 'भारतम—एक प्राचीन कला का अनुवर्तन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भरतनाट्यम एक समृद्ध शास्त्रीय नृत्य विधा रही है और इसने वास्तविक कला भावना और व्यावसायिकता रहित भावना का निर्वहन किया है। रथिनम्मल ने 'सर्वेंद्र भूपाल कुरवनजी में नृत्य और संगीत प्रणाली' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तंजावु के राजा सराबोजी एक महान संगीत, नृत्य और विविध कलारूपों के संरक्षक रहे हैं और उनका साहित्य, कार्य भूपाल कुरवनजी एक तमिळ काव्य रूप है, जिसमें नृत्य-नाट्य के द्वारा कथावाचन की अद्‌भुत प्रक्रिया समाहित है।

एन. मरज़िया गाँधी ने चतुर्थ और पंचम सत्र की अध्यक्षता की। के.पी.के. चंद्रशेखरन ने 'थंजई नावलार के पहले और बाद में नृत्य गीत' पर आलेख प्रस्तुत किया। पुलवार पो. वेलुसामी ने 'तेरावदियार परंपराएँ : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे तेरावदियार परंपरा ने संगम काल और मदुरै कांची, पट्टिनप्पालई, मणिमेखलाई, सिलाप्परटिकरम, पेरुनकातई और सीवागा सिंतामणि के कार्यों से संदर्भ प्राप्त कर अपने में समावेश किया। उन्होंने तमिळ लोक कथाओं और रंगमंचीय कलाओं की वृहद् परंपरा का उल्लेख किया। दिनेश कुमार का आलेख नृत्य और संगीतिक परंपरा के दुर्लभ अभिलेखों पर केंद्रित था।

पी.आर. मुथुसामी, निदेशक, डॉ. एन.जी.पी. कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साइंस ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। नांजिल नदन ने समापन वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी : श्रीरामानुजाचार्य जन्मसहस्राब्दी

14-15 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 14 और 15 दिसंबर 2018 को श्रीरामानुजाचार्य जन्मसहस्राब्दी के अवसर पर साहित्य अकादेमी के सभाकक्ष में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि 'श्रीरामानुजाचार्य वैदिक धर्म के महानतम आचार्यों में से एक हैं और उनका नाम आज हज़ार वर्षों बाद भी व्यापक रूप से सम्मानपूर्वक लिया जाता है। निस्संदेह श्रीरामानुजाचार्य भारतीय दर्शन के अप्रतिम आचार्य और मंदिर की अर्चना-व्यवस्था के महानतम सुधारक थे। वे एक ऐसे संत थे जिन्होंने संपूर्ण भारत में भक्ति परंपराओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किया, अनेक मध्यकालीन आंदोलनों के जनक होने के साथ-साथ वे एक ऐसे विद्वान अध्येता थे, जिनका प्रभाव आज भी भलीभाँति महसूस किया जाता है। के. श्रीनिवासराव ने विशेष तौर पर कहा कि समय के साथ श्रीरामानुजाचार्य के अभूतपूर्व कार्यों का प्रसार हुआ और उनकी परंपरा अन्य क्षेत्रों और देशों में भी फैली। उनके कार्यों ने विदेशी शासन से त्रस्त जनता में विश्वास जगाने का कार्य किया और संपूर्ण भारत में वैष्णव संप्रदाय के प्रसार के रूप में इसका विस्तृत परिणाम हम सबके सामने है।

अपने उद्घाटन वक्तव्य में अनन्त श्रीविभूषित श्रीमद्जगद्गुरु रामानुजाचार्य वासुदेवाचार्य महाराजस्वामी 'विद्याभास्कर' ने कहा कि शेषावतार श्रीरामानुजाचार्य एक महान संत थे और उनका प्रभाव कुछ विशिष्ट समुदायों तक ही सीमित नहीं रहा है बल्कि इस प्रभाव की व्याप्ति आज भी आम जनता तक है। उन्होंने प्रसिद्ध विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया। इस दर्शन को भारतीय दर्शन की दार्शनिक विचारधाराओं में प्रमुख स्थान प्राप्त है। उन्होंने कहा कि वैदिक ज्ञान के शाश्वत रहस्य को उद्घाटित करने वाली श्रीरामानुजाचार्य की कृति *श्रीभाष्यम् उत्कृष्टतम* साहित्य का प्रतिनिधित्व करती है। एक प्रभावशाली विचारक के रूप में उनका योगदान उल्लेखनीय है और उन्हीं के प्रयासों के कारण भक्ति परंपरा का प्रसार हुआ। यह उन्हीं की शक्ति थी, जिसके कारण भारतीय संस्कृति की विविधतापूर्ण परंपराओं के भीतर भक्ति एक प्रमुख शक्ति बनकर उभरी। उन्होंने आत्मानुभूति के लिए भक्ति और ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर विशेष बल दिया। उनका भाषण मुख्य रूप से श्रीरामानुज के दर्शन, उनके द्वारा किए गए सामाजिक सुधारों, संपूर्ण भारत में हज़ार वर्षों के दौरान उपजे आंदोलनों और परंपराओं पर श्रीरामानुज के प्रभावों और समकालीन समाज में उनके कार्यों और दर्शन की प्रासंगिकता पर केंद्रित था।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि और प्रख्यात संस्कृत विद्वान सत्यव्रत शास्त्री ने कहा कि विगत सहस्राब्दी में भारत में अनेक उल्लेखनीय व्यक्तियों ने जन्म लिया है। श्रीरामानुजाचार्य इन्हीं महान व्यक्तियों में से एक थे जिनका राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक क्षेत्र में अद्वितीय स्थान है। उन्होंने दार्शनिक मार्ग का वरण किया और आम जनता तक पहुँचे। भक्ति पर बल देते हुए उन्होंने नितांत नवीन दर्शन की नींव रखी, जिसे विशिष्टाद्वैत के नाम से जाना जाता है। उन्होंने वेदों और उपनिषदों की अंतर्दृष्टियों का अनुपम समागम प्रस्तुत किया। अपने बीज वक्तव्य में प्रख्यात संस्कृत विद्वान एम. ए. आलवार ने श्रीरामानुजाचार्य की शिक्षाओं की विशिष्टताओं पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने अद्वैत और द्वैत का अद्भुत समायोजन प्रस्तुत किया और विशिष्टाद्वैत दर्शन की प्रस्तावना की।

अपने समाहार वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने इस बात पर विशेष बल दिया कि श्रीरामानुजाचार्य की शिक्षा सिर्फ़ धर्म के क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि उनका दायरा सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों तक भी विस्तृत है। अपनी दार्शनिक उपलब्धियों के साथ-साथ उन्होंने शोषित और वंचित लोगों के लिए

संगोष्ठी के दौरान श्रीरामानुजाचार्य पर लिखित विनिबंधों का लोकार्पण

भी उल्लेखनीय कार्य किया और सभी के लिए मोक्ष और मुक्ति का मार्ग सुलभ कराया। इस अवसर पर एम. नरसिम्हाचारी द्वारा लिखित श्रीरामानुजाचार्य के विनिबंध के संस्कृत, हिंदी, तमिळ, तेलुगु, उर्दू, मैथिली और डोगरी भाषाओं में किए गए अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया।

पहले दिन का प्रथम विचार सत्र 'इक्कीसवीं सदी में श्रीरामानुजाचार्य की प्रासंगिकता' पर और द्वितीय सत्र 'श्रीरामानुजाचार्य और मध्यकालीन आंदोलन' विषय पर केंद्रित रहा। प्रथम सत्र की अध्यक्षता जे. श्रीनिवासमूर्ति ने और द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तीन सत्र संपन्न हुए। दूसरे दिन के प्रथम और द्वितीय सत्र के विषय क्रमशः 'श्रीरामानुजाचार्य द्वारा सामाजिक पुनर्रचना' तथा 'श्रीरामानुजाचार्य का दार्शनिक साहित्य' थे और इन दोनों सत्रों की अध्यक्षता एस. आर. भट्ट ने की। इस अवसर पर संस्कृत के पाँच महत्त्वपूर्ण विद्वानों ने अपना आलेख पाठ किया—राजलक्ष्मी वर्मा, सत्यजीत लायेक, गोदावरीश मिश्र, डी. रामकृष्ण और रामजी तिवारी।

अपने आलेख-पाठ में राजलक्ष्मी वर्मा ने कहा कि श्रीरामानुजाचार्य ने प्राचीन अंतर्दृष्टियों पर आधारित सामाजिक पुनर्रचना का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सत्यजीत लायेक ने कहा कि श्रीरामानुजाचार्य भारतीय चेतना के महान उन्नायक थे। उन्होंने अनेक भ्रांत धारणाओं का निराकरण किया और भक्ति को मोक्ष का मुख्य मार्ग बतलाया। गोदावरीश मिश्र ने कहा कि श्रीरामानुजाचार्य ने वेदांत दर्शन को एक विशिष्ट दिशा प्रदान की। रामजी तिवारी ने कहा कि उन्होंने विभिन्न समुदायों में मानवीय मूल्यों का संचार किया। डी. रामकृष्ण ने अन्य भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में श्रीरामानुजाचार्य के दर्शन की विशेषताएँ बताईं तथा दक्षिण भारत की लोक परंपरा पर श्रीरामानुजाचार्य के प्रभावों की चर्चा की। एस. आर. भट्ट ने कहा कि जाति, धर्म, पंथ, भाषा के बंधनों से बहुत ऊपर उठकर वेदांत के सारतत्त्व को प्रस्तुत करने वाले श्रीरामानुजाचार्य का योगदान अप्रतिम है।

अंतिम सत्र का विषय 'श्रीरामानुजाचार्य की व्याप्ति और प्रभाव' था और इसकी अध्यक्षता गौतम भाई पटेल ने की। इस सत्र में दो महत्त्वपूर्ण विद्वानों ने अपना आलेख प्रस्तुत किया—प्रदीप ज्योति महंता और मोहम्मद

आज़म। महंता ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में श्रीशंकरदेव के आंदोलन पर श्रीरामानुजाचार्य के प्रभावों की विस्तृत विवेचना की। मोहम्मद आज़म ने अपने विद्वत्तापूर्ण आलेख में विभिन्न धर्म संप्रदायों और दर्शनों के सारतत्त्व की सुव्यवस्थित और क्रमबद्ध विवेचना की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी, लेखक, छात्र, कलाकार और श्रोता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी में संपादक अनुपम तिवारी ने किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई।

परिसंवाद : युवा कोंकणी साहित्य : 2000-2018

17 दिसंबर 2018, गोवा

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने पार्वतीबाई चौगुले महाविद्यालय, मडगाँव, गोवा के सहयोग से सोमवार, 17 दिसंबर 2018 को 'युवा कोंकणी साहित्य : 2000-2018' विषय पर कॉलेज परिसर में परिसंवाद का आयोजन किया। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य नंदकुमार सावंत ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रख्यात कोंकणी नाटककार एवं समालोचक प्रकाश वाजरिकर ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा कॉलेज में सहायक प्रोफ़ेसर हनुमंत चोपड़ेकर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। राजे पवार ने 'मैं और मेरा लेखन' विषयक प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। युवा लेखकों– क्रिस्टोफर डीसूज़ा, बबीता सावंत, संदेश बांदेकर, हेमंत ऐया, नम्रता किनि ने अपने रचनात्मक लेखन के बारे में अपने विचार साझा किए।

द्वितीय सत्र का विषय था–'कोंकणी लेखक के रूप में मेरी विश्वदृष्टि'। इस सत्र की अध्यक्षता मर्कुस गोंजाल्वेस ने की। इंद्रजीत घुले, अरविंद शंभाग, शुभा बराड़ तथा दीपराज सतारडेकर ने इस सत्र में प्रतिभागिता की। अंतिम सत्र की अध्यक्षता गौरीश वर्नेकर ने की। इस सत्र में नरेश नायक, अन्वेशा सिंगबल तथा श्री अमेय नायक ने अपने रचनात्मक लेखन के अनुभवों को साझा किया।

परिसंवाद : द्रविड़ साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव

18 दिसंबर 2018, तिरुवरूर

साहित्य अकादेमी और तमिल विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 18 दिसंबर 2018 को 'द्रविड़ साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' विषय पर तमिल विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय (सी.यू.

परिसंवाद के प्रतिभागी

टी.एन.), तिरुवरूर, तमिलनाडु में परिसंवाद का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय की रजिस्ट्रार एस. भुवेनश्वरी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। साहित्य अकादेमी बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय के तमिळ विभाग के प्रमुख पी. वेलमुरुगन ने परिसंवाद के विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि तिरुवरूर, जहाँ चोल क्षेत्र और तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय का एक हिस्सा स्थित है, बौद्ध धर्म के प्रमुख केंद्रों में से एक था जो पहले के समय में व्यापारियों और राजाओं के समर्थन से फला-फूला था, लेकिन बाद में ब्रह्मवादी धर्मों (शैववाद और वैष्णववाद) के उद्भव के कारण धीरे-धीरे कम हो गया।

साहित्य अकादेमी की तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अपने बीज भाषण में 'द्रविड़ साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि बौद्ध धर्म ने पूरे विश्व में अपना प्रभाव बढ़ाया, हालाँकि यह भारत में उत्पन्न हुआ। कांचीपुरम, नागपट्टनम, पुंपूघर, बुद्धमंगलम एवं अन्य स्थान प्राचीन तमिलाहम में बौद्ध धर्म के महत्त्वपूर्ण केंद्र थे। तमिळ बौद्ध भिक्षुओं ने न केवल देश के भीतर बल्कि भारत के बाहर भी बौद्ध धर्म के सिद्धांतों एवं भिक्षाओं का प्रसार किया। उन्होंने कहा कि 'द्यान बौद्ध धर्म' का बाद में नाम बदलकर 'ज़ेन बौद्ध धर्म' कर दिया गया था। वित्त अधिकारी सीएमए.वी. पालानी ने स्वागत भाषण दिया तथा तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय के तमिळ के सहायक प्रोफ़ेसर के. जवाहर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र के बाद 'युगों से द्रविड़ साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' को समर्पित प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की कन्नड परामर्श के संयोजक सिद्धलिंगय्या ने की। प्रख्यात विद्वानों—तालताजे वसंतकुमार ने 'कन्नड साहित्य में बौद्ध प्रभाव', रायदुर्गा विजयलक्ष्मी ने 'तेलुगु साहित्य में बौद्ध प्रभाव' तथा के. नेदुन्चेज्हियाँ ने 'कैनकम साहित्य में बौद्ध प्रभाव' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'बौद्ध धर्म का प्रभाव : साहित्य, कला और संस्कृति' को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता एन. कंदासामी ने की। उन्होंने 'तमिळ महाकाव्यों पर बौद्ध प्रभाव, मनिमेकलाई के विशेष संदर्भ में' पर अपना आलेख भी प्रस्तुत किया। प्रख्यात विद्वानों—टी. एम. भास्कर ने 'कन्नड़ कला और संस्कृति में बौद्ध प्रभाव' तथा श्री आनंद कावलम ने 'मलयाली कला और संस्कृति में बौद्ध प्रभाव' पर आधारित अपने आलेख में विभिन्न क्षेत्रों में कन्नड और मलयाळम् पर बौद्ध धर्म के प्रभाव पर चर्चा की।

समापन सत्र की अध्यक्षता तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय अकादमिक डीन सेंगादिर ने की। के. नेदुन्चेज्हियाँ तथा तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय के तमिळ के सहायक प्रोफ़ेसर पी. कुमार ने क्रमशः समापन व्याख्यान दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया। संगोष्ठी के अंत में, 200 से अधिक प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए गए जो समस्त भारत से आए थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

संगोष्ठी : बी.एच. श्रीधर की जन्मशताब्दी

22 दिसंबर 2018, सिद्धपुरा, कर्नाटक

साहित्य अकादेमी ने बी.एच. श्रीधर के लेखन पर जन्मशताब्दी के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन बी.एच. श्रीधर प्रशस्ति समिति, सिरसी और महात्मा गाँधी शताब्दी कला, वाणिज्य और गणेश हेगड़े दमने विज्ञान महाविद्यालय, सिद्धपुरा, उत्तर कन्नड, कर्नाटक के सहयोग से 22 दिसंबर 2018 को ए.वी. हॉल, एमजीसी कला एवं वाणिज्य कॉलेज, सिद्धपुरा में आयोजित किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन सिद्धलिंगय्या ने जाने-माने लेखक एम.जी. हेगड़े, शिक्षिका प्रसार समिति सिद्धपुरा के उपाध्यक्ष, शशिभूषण हेगड़े, बी.एच. श्रीधर प्रशस्ति समिति के सचिव राजशेखर हेब्बार, सचिव की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यक्रम सहायक एल. सुरेश कुमार ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। एम.जी.सी. कॉलेज की प्रधानाचार्य ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र की शुरुआत विद्यालय के छात्रों के साथ विश्वनाथ हीरामठ द्वारा प्रस्तुत वंदना गीत के साथ हुई। श्री विनायक एम. एस. ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अपने उद्घाटन भाषण में सिद्धिलिंगय्या ने व्यक्त किया कि बी.एच. श्रीधर ने उपन्यास साहित्य (नव्या साहित्य) और आधुनिक साहित्य के बीच मध्य मार्ग का अनुसरण किया और वे टी. एस. एलियट से प्रभावित थे। एम.जी. हेगड़े ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रीधर के लेखन और उसकी प्रासंगिकता के बारे में चर्चा की। श्रीधर को 'बेंदारे बेंद्रेयागाबहुदु', 'मस्ती कन्नादादा आस्ति' जैसे नारे गढ़ने में उनकी क्षमता के लिए उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा। बी.एच. श्रीधर के पुत्र तथा श्रीधर प्रशस्ति समिति के सचिव राजेशखर हेब्बार ने अपने पिता के साथ बिताए अपने बचपन के दिनों की स्मृतियाँ साझा कीं।

शशिभूषण हेगड़े ने इस बात की सराहना की कि श्रीधर एक प्रेरक शिक्षक थे और प्रधानाचार्य के रूप में एक अच्छे प्रशासक भी थे।

संगोष्ठी में व्याखान देते हुए सिद्धलिंगय्या

प्रथम तकनीकी सत्र बी.एच. श्रीधर के सृजनात्मक लेखन पर आधारित था। सुनंदा प्रकाश कदमने ने 'श्रीधर की कवितओं' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इसके बाद प्रतिभा सागर ने 'श्रीधर के नाटक' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र 'बी.एच. श्रीधर का तर्कसंगत लेखन एवं समालोचना' पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य तथा जाने-माने समालोचक आर.डी. हेगड़े ने की। सुब्रया मत्तिहाल्ली ने 'श्रीधर का तर्कसंगत लेखन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत हुए उनके निग्रहों को ध्यान में रखते हुए उनके लेखन में निहित तर्क का विश्लेषण किया। तत्पश्चात् मेति मल्लिकार्जुन ने 'श्रीधर की समालोचना' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने समीक्षकों द्वारा उनके समकालीन लेखन की जाँच तथा श्रीधर के लेखन में विरोधाभासों का गहन विश्लेषण भी प्रस्तुत किया। सत्र का समापन करते हुए आर.डी. हेगड़े ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में श्रीधर के व्यक्तित्व और उनके अंतर्मन पर अपने विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी का समापन वक्तव्य प्रख्यात कन्नड लेखक और कुवेंपू विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त कुलसचिव श्रीकांत कुडिगे ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के अंत में बी.एच. श्रीधर द्वारा लिखे गए गीत को विश्वनाथ हीरामठ ने अपनी मधुर आवाज़ में छात्र गायकों के कोरस गायन के साथ प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी : तेलुगु भाषी क्षेत्रों में जनजातीय साहित्य

22-23 दिसंबर 2018, विजयवाड़ा

साहित्य अकादेमी ने आंध्र प्रदेश सरकार के भाषा और संस्कृति विभाग के सहयोग से 22-23 दिसंबर 2018 को टैगोर मेमोरियल लाइब्रेरी हॉल, विजयवाड़ा में 'तेलुगु भाषी क्षेत्रों में जनजातीय साहित्य' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह थी कि पहली बार संगोष्ठी में प्रतिभागिता करने वाले लगभग सभी वक्ता (आलेख प्रस्तोता) और लेखक स्वयं जनजातीय/आदिवासी समुदायों से थे। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में देश के विभिन्न भागों में आदिवासी और मौखिक साहित्य पर साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की चर्चा की। तेलुगु के जाने-माने लेखक और साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता के. इनोक ने अपने उद्घाटन में तेलुगु लोगों के सांस्कृतिक लोकाचार को गढ़ने में जनजातीय और वाचिक साहित्य के महत्त्व को रेखांकित किया। विशाखापत्तनम के वयोवृद्ध जनजातीय सामाजिक और सांस्कृतिक नेता आर.एस. डोरा उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने बताया कि 1940 से विभिन्न शैक्षिक और रोजगार योजनाओं के कारण आदिवासी समुदाय को किस प्रकार फायदा हुआ है। प्रख्यात लोककथाकार तथा लोकसाहित्य संस्थान, तिरुवनंतपुरम के निदेशक एन. भक्तवत्सला रेड्डी ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों, विशेष रूप से जनजातीय साहित्य केंद्र, वारंगल, पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय द्वारा किए गए व्यापक अनुसंधान और प्रलेखन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। आंध्र प्रदेश के भाषा और संस्कृति विभाग के निदेशक डी. विजय भास्कर ने लोक, मौखिक और जनजातीय साहित्य की पुस्तकों को शीघ्र लाने के लिए अपनी तत्परता व्यक्त की।

उद्घाटन सत्र का मुख्य आकर्षण कुमरा लिंग और समूह द्वारा आदिलाबाद के राज गोंडों द्वारा सृजन मिथक (सदर भिडी) से एक शानदार गायन प्रस्तुति था। उनके द्वारा धनुष और तार वाद्य यंत्र की कुशलतापूर्वक की गई प्रस्तुति का दर्शकों ने स्वागत किया। जनजातीय पौराणिक कथाओं पर आधारित प्रथम सत्र की अध्यक्षता वाचिक और जनजातीय साहित्य केंद्र के सदस्य एस. नागमल्लेश्वर राव ने की तथा प्रसिद्ध तेलुगु साहित्यकार और समालोचक भट्ट रमेश ने बंजारा ऐतिहासिक कथाएँ पर चर्चा की और बताया कि कैसे वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास के संदर्भ

*एन. भक्तवत्सला रेड्डी, के. श्रीनिवासराव, के. इनोक, डी. विजय भास्कर तथा आर.एस. डोरा (**बाएँ-दाएँ**)*

में बंजारा समुदाय की ऐतिहासिक त्रासदियों, अनुभव और नायकों को समझने में मदद करते हैं। पी.एस. तेलुगु विश्वविद्यालय, वारंगल के अनुसंधान विद्वान और सहायक ए. मल्लिकार्जुन ने अपने आलेख में बताया कि तेलुगु राज्यों के कई भागों पर शासन करने वाले पद्मानायक वंश से संबंधित प्रमुख ऐतिहासिक जानकारी को नायकपादों की कोराजुला कथा से किस प्रकार से जाना जा सकता है। दोपहर के भोजन के बाद का सत्र 'जनजातीय गीतों' पर आधारित था और इसकी अध्यक्षता आंध्र प्रदेश के भाषा और संस्कृति विभाग के निदेशक डी. विजय भास्कर ने की। पोल्लला बोर्रम रेड्डी ने उत्तरी आंध्र के एक आदिम लेकिन तेलुगु भाषी जनजाति कोंडा रेड्डिस के विवाह गीतों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। आंध्र प्रदेश के प्रकासम ज़िले के एक चेनचू शिक्षक दसारी चाइना मूगन्ना ने बताया कि किस तरह गीत सब प्रकार के भोजन एकत्र करने की गतिविधि से जुड़े होते हैं, चाहे वह कंद, फूल, फल, खाद्य पत्तियों, छोटे जानवरों का शिकार करते हैं और शहद इकट्ठा करते हैं। सावर उत्तरी आंध्र और ओड़िशा की एक प्रमुख आदिवासी जनजाति है। आरिका कृष्ण राव ने सावरों के प्रेम और विवाह गीतों की एक बहुत ही स्नेही और सूचनाप्रद जानकारी दी, साथ ही इसमें शामिल सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों का भी विवरण प्रस्तुत किया।

दूसरा सत्र आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के आदिवासी समुदायों के समकालीन रचनात्मक पुरुष लेखकों को समर्पित था। इस सत्र में एक उपन्यासकार, एक कहानी लेखक और छह कवियों तथा सर्वश्रेष्ठ वरिष्ठ लेखकों ने भाग लिया। बीमार लेखक एकुला वेंकटेश्वरलु, जिन्होंने प्रसिद्ध उपन्यास *एन्नेला नव्वु* लिखा था, ने सत्र में भावपूर्ण प्रस्तुति दी। उपन्यास में दर्शाया गया है कि किस प्रकार से यानादिस जिसे परंपरागत रूप से एक अर्द्ध खानाबदोश वन आधारित जीवन शैली पसंद है और वह शिकार करता है, मछली पकड़ता है, सुपारी एकत्रित करता है तथा जिमीकंद एवं जड़ों को इकट्ठा करता है, वह किस प्रकार से आधुनिक जीवन की प्रणालियों में चूसा गया जिससे कि वह शोषण और ग़रीबी का शिकार बना और फिर भी वे हास्य, गीत और नृत्य के माध्यम से उसके कष्टों को उजागर करते हैं। साहित्य अकादेमी की तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य तथा साहित्य समीक्षक वासीरेड्डी नवीन ने इस सत्र की अध्यक्षता की। नवीन ने वेंकटेश्वरलु के कार्यों का ब्योरा प्रस्तुत किया। मल्लीपुरम जगदीश (सावरा समुदाय) ने अपनी कहानी प्रस्तुत की तथा युवा कवियों कृष्ण चव्हाण, रमेश कार्तिक नायक (दोनों बंजारा/लंबादा), बिद्दिका रवि (सावरा) तथा अथराम मोतीराम (कोलम) जिन्होंने यद्यपि तेलुगु में लिखित अपनी कविता में (मोतीराम को छोड़कर जिन्होंने अपनी कविताएँ दोनों कोलम और तेलुगु में पढ़ी) अपने समुदायों के जीवन और अनुभवों के बारे में महत्त्वपूर्ण और कलात्मक रूप से अंतर्दृष्टि व्यक्त की। गुगुल्थु कृष्ण ने *भगवद्गीता* के छंदों के कुछ स्वयं द्वारा बंजारा भाषा में किए गए अनुवादों को सुनाया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तेलुगु कथाकार पी. सत्यवती ने की। यह सत्र 'जनजातीय महिला अभिव्यक्ति' विषय पर आधारित था। हैदराबाद से तेलुगु के सहायक प्रोफ़ेसर और स्वयं एक गोंड, कोडी नीलिमा ने विभिन्न अनुष्ठानों पर गाए जाने वाले गोंड महिलाओं के गीतों पर आलेख प्रस्तुत किया। तेलुगु में लिखने वाले आदिवासी समुदायों के कहानी लेखकों में से एक पद्मम अनसूया ने जंगल में गर्मी में तेंदू के पत्ते इकट्ठा

करने वाली एक कोया महिला की त्रासदियों पर लिखित एक दुखदायी कहानी प्रस्तुत की। महबूबाबाद की स्कूल की शिक्षिका कुंज कल्याणी ने तेलुगु और कोया में भलीभाँति लिखित और मर्मस्पर्शी कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिनमें कोया के अनुभव और आदिवासी हृदय का चित्रण किया गया है। शाम के समय तेलंगाना के आदिलाबाद ज़िले के एक राज गोंड आदिवासी बल्लादीर के साथ एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें उनकी रचना मिथक का वर्णन किया गया तथा श्रीकाकुलम से सावरा जनजाति के एक अनुष्ठान नृत्य थोंगसेंस की प्रस्तुति की गई। ए.पी. विधान सभा के उपसभापति मंडली बुद्ध प्रसाद इस समारोह के अतिथि थे। सदर भिडी या रचना मिथक पूरे उत्साह और विशिष्ट रूप से वयोवृद्ध थोती कलाकार कुमरा लिंगु ने प्रस्तुत किया जबकि इसके साथ उन्होंने प्राचीन वाद्य जतुर भी बजाया (यह सरस्वती वीणा के समान है, किंतु इसे वायलिन की भाँति एक धनुष के साथ बजाया जाता है।)। थोंगसेंग नृत्य मंडली में पुरुष और महिला नर्तकों की एक बड़ी मंडली थी तथा पुरुष वादकों का नेतृत्व बिदिका रायकन्ना ने किया। उन्होंने सवारस के दोनों अनुष्ठान और काम से संबंधित नृत्यों का प्रदर्शन किया और दर्शकों में से अन्य आदिवासी जनजातियों के सदस्य उत्साह में आकर उनके नृत्य में शामिल हो गए। दूसरे दिन (23 दिसंबर) प्रथम सत्र फिर से *जनजातीय पौराणिक कथाओं* पर आधारित था तथा उत्तर आंध्र आदिवासी लोकसाहित्य के प्रसिद्ध विद्वान आर. शिवरामकृष्ण ने इस सत्र की अध्यक्षता की। प्रकासम ज़िले के चेनचू शिक्षक ठोकला गुरवहिया ने विष्णु के अवतार नरसिंह से विवाह करने वाले जनजाति के संरक्षक देवता चेनचू लक्ष्मी की पौराणिक कथाओं पर आलेख प्रस्तुत किया। *येरुका जनजाति,* एक अखिल दक्षिण भारतीय और पूर्व घुमंतू जनजाति *येरुका* या *सूथ्सयिंग* कई व्यवसायों में शामिल है। सुरेश जगन्नाथम, जो स्वयं येरुका हैं, ने अपने आलेख में कला के कई अज्ञात पहलुओं को उजागर किया जिसमें येरुकला महिलाएँ निपुण हैं तथा वे अपनी आजीविका सहज रूप से किस प्रकार से अर्जित करने में कामयाब होती हैं।

अंतिम सत्र आदिलाबाद के राज गोंडों के पारंपरिक वाचिक साहित्य को समर्पित किया गया था। गोंड दो तेलुगु राज्यों में सबसे बड़े आदिवासी समुदाय हैं। आदिलाबाद में ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन के सहायक स्टेशन निदेशक सुमनापति रेड्डी ने सत्र की अध्यक्षता की। बी.एड. कॉलेज, उंटूर के प्रधानाचार्य मेसराम मनोहर 'गोंड लोकसाहित्य' में पारिस्थितिक चेतना पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अरका मानिक राव ने 'राज गोंड पौराणिक कथाओं में टोटेमिक कबीले देवताओं' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। वेदमा जयवंत राव का आलेख 'राज गोंड लोकगीत में सामाजिक व्यवस्था की छह विधियाँ' पर आधारित था। ऑल इंडिया रेडियो, आदिलाबाद के स्टाफ उद्घोषक दुर्वा भुमना ने गुमेला गीतों की सुंदरता को समझाने के लिए ऑडियो क्लिप का उपयोग किया (गुमेला एक छोटा तालवाद्य है)। संगोष्ठी ने दो तेलुगु राज्यों से व्यापक रूप से फैले जनजातीय और आदिवासी समुदायों के सदस्यों को एक साथ लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिन्होंने अपने समुदायों के जीवन, संस्कृति और विरासत में शोध करने का कार्य प्रारंभ किया है तथा यह संगोष्ठी कुछ श्रेष्ठ रचनात्मक लेखकों को एक मंच पर लेने में भी सफल रही है।

परिसंवाद : एस. भानुमती देवी का जीवन और कार्य

23 दिसंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने मणिपुरी साहित्य परिषद के सहयोग से 23 दिसंबर 2018 को मणिपुरी साहित्य परिषद्, पुरानी विधान सभा रोड, इंफाल के सहयोग से 'एस. भानुमती देवी का जीवन और कार्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

गौतम पॉल ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी की मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक नोंगमाईथेम किरणकुमार सिंह ने आरंभिक व्याख्यान दिया। एस. भानुमती देवी के साथ अपने संबंधों को याद करते हुए

एन. किरणकुमार सिंह ने कहा कि वे भावनाओं, प्रेम और उदार प्रवृत्ति से संपन्न थीं। एल. इबेमहल देवी ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। मणिपुर साहित्य परिषद्, इंफाल के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर आई.एस. काङ्जम ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। मणिपुर साहित्य परिषद् के महासचिव प्रियब्रत इलांगबा ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर एल. सदानंद ने की। सत्र में एल. गोजेंद्रो सिंह ने 'संजेंबम भानुमती देवी के जीवन और रचनात्मक कार्यों' पर आलेख प्रस्तुत किया। बी.एस. राजकुमार ने 'अनुवाद के क्षेत्र में', एक अनुवादकर्ता के रूप में भानुमती विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अंतिम आलेख थोकचोम इबोहंबी सिंह ने 'कथा लेखक के रूप में भानुमती' विषय पर प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ए.के. शर्मा ने की। सत्र में एम. प्रियब्रत सिंह ने 'भानुमती का काव्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। के. हेमचंद्र ने 'एसेइमयेकेबी भानुमती' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् संध्याकालीन सत्र के अंतिम आलेख वक्ता पी. नवचंद्र ने 'भानुमती : भाषा और उनके लेखन की शैली' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी : पश्चिमी भारत में आदिवासी साहित्य

23-24 दिसंबर 2018, मुंबई

मुंबई विश्वविद्यालय के शाहिर अमरशेख चेयर, लोककला, अकादमी के सहयोग से, 'पश्चिमी भारत में आदिवासी साहित्य' पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 23-24 दिसंबर 2018 को मुंबई विश्वविद्यालय के कविवर्य कुसुमाग्रज भवन में किया गया। प्रख्यात मराठी साहित्यकार अरुणा ढेरे ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

प्रारंभ में, 23 दिसंबर 2019 को साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किम्बाहुने ने संगोष्ठी में सभी विद्वान प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया और अरुणा ढेरे को उद्घाटन वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किया।

ढेरे ने साहित्य अकादेमी को इस प्रकार की संगोष्ठी आयोजित करने के लिए बधाई दी, जिसमें निश्चित रूप से आदिवासी साहित्य के महत्त्व और इसे संरक्षित करने और पोषित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा विभिन्न राज्यों में आदिवासी साहित्य को एक विषय बनाने तथा इस पर चर्चा और अनुसंधान के लिए यह अवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। ढेरे ने यह भी बताया कि हमारी संस्कृति की समृद्ध विविधता को ऐसे छोटे समूहों द्वारा पोषित किया गया था और यह हमारी विरासत थी। और उन्होंने माना जब हमारा साहित्य एक भटकाव की स्थिति में फँस गया, तब हमने इस विरासत पर ही भरोसा किया।

संगोष्ठी का दृश्य

उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए माधव कौशिक ने कहा कि यह वास्तव में डोमेन है जो ठेठ भारतीय संवेदनशीलता की आग में इजाफा करता है। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि यदि कोई भारत को समझने का प्रयास करता है, तो उसे भारत के आदिवासी जीवन और साहित्य तक पहुँचना चाहिए जहाँ सौंदर्य और विद्रोह एक साथ रहते हैं। उन्होंने भविष्यवाणी की कि आने वाला दशक उन लोगों का दशक होगा जो वर्षों से मूक बने रहे हैं, जो सामाजिक-राजनीतिक रूप से उत्पीड़ित हैं।

उद्घाटन सत्र के अंत में मुंबई विश्वविद्यालय के शाहिर अमरशेख चेयर, लोककला अकादमी के समंवयक प्रकाश खडगे ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता तानाजी हालर्णकर ने की तथा विक्रम चौधरी ने 'आदिवासी साहित्य की सँभावना' तथा पी.के. कंकर ने 'आदिवासी साहित्य और पर्यावरण' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र में 'आदिवासी वाचिक परंपराएँ' विषय पर जॉ फर्नांडीस तथा कलाधर मुतवा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा काशीनाथ बरहाटे ने सत्र की अध्यक्षता की। जॉ फर्नांडीस ने कहा कि आदिवासी वाचिक परंपराओं में जन्म से मृत्यु तक के त्योहारों की कथाएँ शामिल हैं तथा जीवन में प्रत्येक घटना किसी न किसी त्योहार से जुड़ी है। कबीलाई आदिवासी जनजाति का उदाहरण देते हुए श्री मुतवा ने कुछ गीत प्रस्तुत किए ताकि यह स्थापित किया जा सके कि आदिवासी वाचिक साहित्य मानवीय मूल्यों को किस प्रकार रेखांकित करता है।

संगोष्ठी के अगले दिन तृतीय सत्र का विषय था—'आदिवासी बोली की विशेषता'। काशीनाथ बरहाटे और कांता गावड़े ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए। बरहाटे ने अपने आलेख में कोरकू बोली पर तथा गावड़े ने अपने आलेख में गोवा की गवाड़ा जनजाति द्वारा प्रयुक्त बोली पर विस्तार से चर्चा की। इस सत्र में विनोद कुमरे ने 'आदिवासी साहित्य और पर्यावरण' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि आदिवासी अपने स्वयं के अस्तित्व के हिस्से के रूप में पर्यावरण के बारे में सोचते हैं। प्रमोद मुंगाटे ने सत्र की अध्यक्षता की।

चतुर्थ सत्र—'आदिवासी साहित्य और वैश्वीकरण' पर आधारित था। दह्याभई वाधू तथा प्रमोद मुन्घाटे ने इस सत्र की अध्यक्षता की। प्रकाश खडगे ने षष्ठ सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र का विषय था—''आदिवासी साहित्य की समालोचना''। आशा गोहिल और मांडा नंदुरकर ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद : मणिपुरी साहित्य में कहानी का विकास

24 दिसंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने मणिपुरी शॉर्ट स्टोरी सोसायटी के सहयोग से 24 दिसंबर 2018 को जनजातीय अनुसंधान संस्थान, चिंगमेरूंग, ओल्ड असेंबली रोड, इम्फाल में 'मणिपुरी साहित्य में कहानी का विकास' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक गौतम पॉल ने स्वागत भाषण दिया। मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार ने आरंभिक व्याख्यान दिया। अपने संबोधन में किरणकुमार ने कहानियों के विकास के बारे में बताया। मणिपुरी शॉट स्टोरी सोसायटी की उपाध्यक्ष क्षेत्रीमायुम सुबदानी देवी ने मणिपुरी शॉर्ट स्टोरी समिति के कार्यकारी अध्यक्ष इंगूदम विनोद के साथ बीज-भाषण दिया। अपने भाषण में सुबदानी देवी ने मणिपुरी शॉर्ट स्टोरी सोसायटी की उत्पत्ति का वर्णन किया जिसका उद्देश्य मणिपुरी मूल की सभी साहित्यिक प्रतिभाशाली हस्तियों को इकट्ठा करना है तथा असम, त्रिपुरा और बांग्लादेश में छिटपुट रूप से बसना है। अंत में, मणिपुरी शॉर्ट स्टोरी सोसायटी के महासचिव खाईदेम कांता ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर नोंगमीथेम तोम्बी सिंह ने की। एल. बिरमंगल सिंह, थौङओजम गीतारानी देवी तथा नओरेम बिनॉय सिंह ने *त्रिपुरा में मणिपुरी साहित्य के विकास में स्थानीय समाचार पत्रों की भूमिका, 1946 से 1980 के* मध्य मणिपुरी साहित्य की प्रवृत्ति और विकास' तथा *1980 से 2000 के मध्य* 'मणिपुरी साहित्य में कहानी का विकास' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता नहाकपम अरुणा देवी ने की। सत्र के आलेख वक्ता थे—कुंजलाल सिंह, उषारानी सिंह तथा फुरितसबम खेलेंद्र सिंह। आलेख वक्ताओं ने 'असम का मणिपुरी साहित्य, ब्रह्मपुत्र घाटी में मणिपुरी कहानी का विकास' तथा 'वर्ष 2000 से लेकर आज तक के मणिपुरी साहित्य में कहानी का विकास' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

जी. वेंकटसुब्बैया को भाषा सम्मान अर्पित

25 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी ने मंगलवार, 25 दिसंबर 2018 को जी.वी. जन्मशताब्दी कला मंदिर, बेंगळूरु में भाषा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें प्रख्यात कन्नड कोशकार एवं लेखक जी. वेंकटसुब्बैया को वर्ष 2017 के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में योगदान देने के लिए भाषा सम्मान प्रदान किया गया। भाषा सम्मान में एक तांबे की पट्टिका के साथ 1,00,000/- रुपए का चेक प्रदान किया गया। के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं की लंबी और समृद्ध विरासत है। उन्होंने उल्लेख किया कि साहित्य अकादेमी ने विद्वानों को सम्मानित और मान्यता देने के लिए दो भाषा सम्मान पुरस्कार स्थापित किए हैं—मुख्य रूप से कालजयी और मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में उनके बहुमूल्य योगदान हेतु तथा दूसरा भारत की ग़ैर मान्यता प्राप्त भाषाओं को समृद्ध करने के लिए उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि जी. वेंकटसुब्बैया ने अपने जीवन भर विशिष्ट कन्नड शब्दकोश को तैयार

जी. वेंकटसुब्बैया को भाषा सम्मान प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार

करके कन्नड भाषा और साहित्य के विकास के लिए कार्य किया है। बाद में उन्होंने जी. वेंकटसुब्बैया को भाषा सम्मान अर्पित किया और कहा कि उन्हें पुरस्कार प्रदान करते हुए वे स्वयं को बहुत सम्मानित महसूस कर रहे हैं। इसके बाद जी. वेंकटसुब्बैया ने स्वीकृति भाषण प्रस्तुत किया। प्रख्यात कन्नड लेखक हंपा नागराजिया ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया।

जी. वेंकटसुब्बैया ने अपने स्वीकृति भाषण में कुवेम्पू, ए.आर. कृष्ण शास्त्री तथा कई दिग्गज कन्नड साहित्यकारों का स्मरण किया जिन्होंने उनके साहित्यिक उद्यमों का समर्थन किया। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के प्रारंभ से ही कन्नड में बोलने, पढ़ने और लिखने में सही कौशल सिखाने की आवश्यकता का आह्वान किया।

साहित्य अकादेमी की कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक सिद्धलिंगय्या ने समापन व्याख्यान दिया।

उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी प्रतिनिधि कविता : अंतस्संबंध

26-28 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के अनुवाद केंद्र शब्दना ने 'उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी प्रतिनिधि कविता : अंतस्संबंध (बहुभाषी अनुवाद कार्यशाला)' विषय पर 26-28 दिसंबर 2018 को सम्मेलन हॉल में , साहित्य अकादेमी, सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु में त्रि-दिवसीय अनुवाद कार्यशाला का आयोजन किया। छह दक्षिण-भारतीय भाषाओं के पाँच प्रमुख कवियों की कविताएँ जैसे कन्नड, तमिळ, तेलुगु, मलयाळम्, तुलु और कोडव तथा पूर्वोत्तर भाषाओं जैसे असमिया, बोडो, मणिपुरी, नेपाली तथा इसके अलावा बाङ्ला भाषा से भी अंग्रेज़ी में अनुवाद के लिए कविताएँ ली गईं थीं। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने भारत में अनुवादों के इतिहास की जानकारी दी। अनुवाद और ट्रांस-क्रिएशंस में दो प्रमुख अंतर हैं जिन्हें भारत ने आज के अनुवादों के इतिहास में विकसित किया है। कंबार ने सुझाव दिया कि दोनों की रचनात्मक शक्ति को लाना समय की आवश्यकता है। साहित्य अकादेमी की कन्नड परामर्श मंडल के

धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए एस.आर. विजयशंकर

संयोजक सिद्धलिंगय्या ने भारत के वर्तमान सांस्कृतिक परिदृश्य में अनुवाद के महत्व के बारे में बताया। कार्यशाला की निदेशक मीना चक्रवर्ती ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के.श्रीनिवासराव ने सभा का स्वागत किया। अनुवाद केंद्र के मानद निदेशक तथा कार्यशाला के निदेशक एस.आर. विजयशंकर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

ओ.एल. नागभूषण स्वामी, सुधाकरन रामनथली, एच. दंडप्पा, एम.एस. रघुनाथ, विषय विशेषज्ञ थे, जबकि कृष्णा मानवल्ली विषय विशेषज्ञ सह-अनुवादक थीं। कार्यशाला के अनुवादक थे—निरेंद्रनाथ ठाकुरिया (असमिया), प्रणब ज्योति (बोडो), के.एस.एच. प्रेमचंद्र नाज़ारी (मणिपुरी), सृजन सुब्बा (नेपाली), श्यामल भट्टाचार्य (बाङ्ला), एच.एस.एम. प्रकाश (मलयाळम्), के. दामोदर राव (तेलुगु), बी. सुरेन्द्र राव (तुलु), अज्जिनिकानंदा सी. महेश नाचेयच (कोडव)। पी.मारुदनायागम (तमिळ) अनुवादक ने कार्यक्रम में भाग नहीं लिया, किन्तु उन्होंने पाँच तमिळ कवियों का अंग्रेज़ी अनुवाद भेजा था जिन पर कार्यशाला में चर्चा की गई।

परिसंवाद : मीरजी अन्नाराय की जन्मशताब्दी

27 दिसंबर 2018, उजिरे

मीरजी अन्नाराय के जन्मशताब्दी समारोह के अवसर पर, साहित्य अकादेमी और कन्नड विभाग, एस.डी.एम. कॉलेज (स्वायत्त), उजिरे ने संयुक्त रूप से 'मीरजी अन्नाराय की जन्मशताब्दी' के अवसर पर 27 दिसंबर 2018 को समयक दर्शन सेमिनार हॉल, एस.डी.एम. कॉलेज, उजिरे में परिसंवाद का आयोजन किया। कन्नड विभाग के प्रमुख बी.पी. संपत कुमार ने अपने आरंभिक व्याख्यान में शैक्षिक संस्थानों और अकादेमी के अध्यक्षों को अगली पीढ़ी को महान लेखकों की विरासत सौंपे जाने की ज़िम्मेदारी पर बल दिया। साहित्य अकादेमी की कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य बालासाहेब लोकापुर ने अपने बीज-भाषण में कहा कि साहित्य अकादेमी कन्नड साहित्य के अग्रदूतों को याद करने और साहित्य में उनके पदचिह्नों को पाने के इरादे से कार्य कर रही है। महान विचारक, मीरजी अन्नाराय जैन धर्म के एक छोटे से संप्रदाय से संबंधित थे जो खेती करते थे। उन्होंने अपने लेखन में ऐसे परिवारों की जटिलताओं का पता लगाया। मीरजी ने अपने उपन्यास *निसर्ग* में समाज में महिलाओं के शोषण का विश्लेषण किया। उन्होंने अपने समुदाय के कुछ अनुष्ठानों और परंपराओं में व्याप्त पाखंड को उजागर किया। अन्नाराय ने गहन महत्त्वपूर्ण अंदरूनी दृष्टिकोण के साथ *निसर्ग, अशोक चक्र, श्रेयमसा, राष्ट्रपुरुष* जैसे उपन्यास लिखे।

26 कहानियाँ और 12 उपन्यास लिखने के अलावा, उन्होंने जीवनी, बाल साहित्य, साहित्यिक समालोचना, पुस्तक संपादन और अनुवाद में भी योगदान दिया है। उन्होंने जैन धर्म की नैतिकता और विश्लेषण पर पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने छोटे समुदायों से संबंधित लेखकों की जटिलताओं और उन्हें पार करने में सफलता अर्जित की है। कॉलेज के प्रधानाचार्य टी.एन. केशव ने कहा कि साहित्य मानव जीवन का अभिन्न अंग है। आज के छात्रों ने स्वयं को साहित्य और शिक्षा से अलग कर दिया है। उन्हें साहित्य में वापस लाने के लिए शिक्षा के प्रतिमानों में बदलाव करने की आवश्यकता है। विशेषज्ञों को कक्षा के अंदर लाकर तथा उन्हें अपने अनुभवों को साझा करने से न केवल साहित्य के प्रति रुचि को समृद्ध किया जा सकता है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त नीरसता से भी लड़ा जा सकता है।

कन्नड विभाग की संकाय दिवा कोकडा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कुल मिलाकर, पाँच सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में सविता बन्नाड़ी ने 'मीरजी अन्नाराय और कन्नड उपन्यास की परंपरा' विषय पर अपना

आलेख प्रस्तुत किया। वेंकटगिरि दलवइ ने 'मीरजी अन्नाराय की कहानियों में क्षेत्रीय पहचान' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि अन्नाराय ने अपने उपन्यासों में निष्पक्ष रूप से प्रांतीय संस्कृति को दर्ज दिया है जिसे हम आज खो रहे हैं। वीरेश बदिगेर ने अपने आलेख '*निसर्ग* उपन्यास में सामाजिक परिवर्तन' में कहा कि *निसर्ग* कन्नड का एक उल्लेखनीय उपन्यास है

परिसंवाद का दृश्य

जो सामाजिक मुद्दों जैसे—बाल विवाह, प्रेम और मानव कामेच्छा की वजह से होनेवाले परिवर्तनों की पड़ताल करता है। द्वितीय सत्र में पद्मिनी नागराज ने 'मीरजी अन्नाराय के लेखन में महिलाओं की पहचान' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि उनके लेखन ने महिलाओं के जीवन-संघर्ष का विश्लेषण किया है। शांतिनाथ दिब्बाद ने अपने आलेख 'जैन धर्म और मीरजी अन्नाराय' में टिप्पणी की कि अन्नाराय ने जैन धर्म का अध्ययन किया था।

हा.मा.ना. रिसर्च सेंटर के निदेशक एस.डी. शेट्टी ने अपने समापन भाषण में कहा कि अन्नाराय एक बहुत ही सम्मानित लेखक हैं, जिनकी छात्रवृत्ति शानदार थी। उन्होंने लेखक के साथ अपने संबंधों को याद किया और यह निष्कर्ष निकाला कि उनका जीवन हमारे लिए एक आदर्श है। कन्नड विभाग के के.वी. नागराजप्पा ने सत्रों को संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

परिसंवाद : मर्ढेकर के बाद मराठी काव्य में परिवर्तन

27 दिसंबर 2018, सोलापुर

साहित्य अकादेमी और डी.बी.एफ. दयानंद कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, सोलापुर के संयुक्त तत्त्वावधान में, 27 दिसंबर 2018 को सोलापुर में 'मर्ढेकर के बाद मराठी काव्य में परिवर्तन' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया।

बीज भाषण देती हुईं शोभा नायक

कॉलेज के प्राचार्य विजय कुमार उबाले ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। शोभा नायक, विख्यात मराठी समालोचक ने बीज-भाषण दिया तथा वासुदेव सावंत

ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। संगोष्ठी में दो सत्र—'मर्ढेकर के बाद मराठी काव्य में विषय में परिवर्तन' और 'मर्ढेकर के बाद काव्य की भाषा और शैली में परिवर्तन' विषयों पर आधारित थे। अविनाश सप्रे और महेंद्र क़दम ने सत्रों की अध्यक्षता की और केशव देशमुख, डी.जी.काले, रमेश शिंदे, विश्वधर देशमुख, प्रभाकर देसाई तथा केदार कलवाने ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन

29-30 दिसंबर 2018, गुवाहाटी

चाँदमारी में चल रहे 32वें गुवाहाटी पुस्तक मेले में साहित्य अकादेमी ने प्रकाशन बोर्ड असम के सहयोग से 29-30 दिसंबर 2018 को 'अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया।

कार्यक्रम का आरंभ 'असोमा सुसोमा निरुपमानजननी' गाने वाले गायकों के एक समूह द्वारा किया गया। समारोह का उद्घाटन साहित्य अकादेमी की असमिया परामर्श मंडल के संयोजक ध्रुवज्योति बोरा ने किया। प्रकाशन बोर्ड असम के सचिव प्रमोद कलिता ने सभी का स्वागत किया। स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने हेतु उन्हें युवा पुरस्कार, नवोदय योजना आदि जैसी अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। मिहिर कुमार साहु ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पहले कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता बोडो परामर्श मंडल के संयोजक अनिल कुमार बर' ने की। प्रतिभागी कवि थे—असमिया कवि अलकेश कलिता, बोडो कवि रिपेन, ओड़िया कवि सुजाता साहनी, गुजराती कवि तेजस दवे, कन्नड कवि सत्यमंगल महादेव और हिंदी कवि अप्रमेय मिश्र। दूसरा सत्र कहानी-पाठ का था। इसकी अध्यक्षता विभाष चौधुरी ने की। सत्र के प्रतिभागी थे—असमिया कथाकार मणिका देवी, अंग्रेज़ी कथाकार संगीता सान्याल, तेलुगु कथाकार मानसा येंदलूरि, नेपाली कथाकार संजीव छेत्री और बाङ्ला कथाकार शमीक घोष। तीसरे सत्र का विषय था—'मैं क्यों लिखता हूँ?' इस सत्र की अध्यक्षता कवि ज्ञान पुजारी ने की। तीन भारतीय भाषाओं के तीन वक्ताओं ने सत्र में भाग लिया, वक्ताओं ने अपने स्वयं के लेखन के पीछे के विचारों और कारणों का ख़ुलासा किया। कोंकणी लेखिका, अनुवादक और पत्रकार स्नेहा सबनिस ने कहा कि गोवा की समृद्ध कला, संस्कृति और परंपरा बहुत अलग है जो उसे कोंकणी में लिखने के लिए प्रेरित करती है। एक अन्य वक्ता अनिल प्रताप गिरि ने संस्कृत भाषा में 'अनुदेशक तर्कवादी लेखक' और 'तर्कवादी लेखक' के परिप्रेक्ष्य का उल्लेख किया। तमिळ लेखिका सौरी स्वारी ने लेखन के पीछे उनके कारणों का विश्लेषण किया क्योंकि वे अपनी संस्कृति और जीवन का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ सत्यों को उजागर करने के लिए अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाती हैं। दूसरे दिन, प्रथम सत्र कविता-पाठ का था। सत्र की

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि रत्नेश्वर बसुमतारी ने की। इस सत्र के प्रतिभागियों में मैथिली कवि रूपेश कुमार झा, मराठी कवि नितिन भारत वाघ, राजस्थानी कवि शिव बोधी और संताली कवि बाबूलाल हांसदा थे।

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया लेखक अरुपा पतंगीया कलिता ने की। इस सत्र में मलयाळम् लेखक पी.वी. शाजीकुमार, सिंधी लेखिका समीक्षा लछवानी पेसवानी और असमिया लेखक दिव्य ज्योति बोरा ने प्रतिभागिता की। बैठक के तृतीय सत्र का विषय था—'मेरे समकालीन युवा लेखक'। सत्र की अध्यक्षता संजीत कुमार शर्मा ने की। प्रथम वक्ता मणिपुर के अमरजीत तोंगब्रम थे जिन्होंने 'समकालीन मणिपुरी साहित्य' पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्र के एक अन्य वक्ता जाने-माने लेखक और उत्तर लखीमपुर कॉलेज के प्रोफ़ेसर अरविंदो राजखोआ थे। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक ध्रुव ज्योति बोरा ने की। समापन वक्तव्य कुल शइकीया ने किया। मिहिर कुमार साहु ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

परिसंवाद : संताली साहित्य में भूमंडलीकरण का प्रभाव

19 जनवरी 2019, बारीपदा

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 जून 2019 को एम.पी.सी. कॉलेज, बारीपदा, ओड़िशा में 'संताली साहित्य में भूमंडलीकरण का प्रभाव' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में गौतम पॉल ने अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया और बिष्णु चरण जेना ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। मदन मोहन सोरेन ने आरंभिक वक्तव्य दिया। गंगाधर हांसदा ने बीज भाषण दिया तथा सत्र की अध्यक्षता लक्ष्मण मरांडी ने की। माधव हांसदा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम विचार सत्र में जतिंद्रनाथ बेसरा, अंजन कर्मकार, गुहीराम किस्कू ने अपने आलेख प्रस्तुत किए एवं सत्र की अध्यक्षता दमयंती बेसरा ने की। जतिंद्रनाथ बेसरा ने 'साहित्य में आधुनिक मीडिया का प्रभाव' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अंजन कर्मकार ने 'संताली कथा पर भूमंडलीकरण की झलक' विषय पर कुछ उपन्यासों की समीक्षा की। गुहीराम किस्कू ने 'संताली कविता पर भूमंडलीकरण का प्रभाव' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने 'साहित्य में सांस्कृतिक तत्त्वों की प्रस्तुति' विषय पर भी चर्चा की।

संगोष्ठी : गुरुदेव कालीचरण ब्रह्म जन्मशतवार्षिकी

19-20 जनवरी 2019, कोकराझार

साहित्य अकादेमी ने बोडो साहित्य सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में 19-20 जनवरी 2019 को कोकराझार, असम में गुरुदेव कालीचरण ब्रह्म जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

स्वागत भाषण देवेंद्र कुमार देवेश, क्षेत्रीय सचिव, कोलकाता, साहित्य अकादेमी द्वारा दिया गया। चंदन ब्रह्म ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। बीज वक्तव्य प्रशांत बर' द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि कामेश्वर ब्रह्म थे और सत्र की अध्यक्षता तेरेन बर' ने की। पहले विचार सत्र में नीरेन ब्रह्म, प्रणब ज्योति नार्ज़ारी और प्रतिभा ब्रह्म ने आलेख प्रस्तुत किए और अनिल कुमार बर' ने सत्र की अध्यक्षता की।

द्वितीय सत्र में बिवा रानी नार्ज़ारी, लइश्री माहिलारी और निजवम नार्ज़ारी ने अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता विद्यासागर नार्ज़ारी ने की।

तृतीय सत्र में कामाख्या ब्रह्म, मनरंजन ब्रह्म और प्रमोद बर' ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता जनिल कुमार ब्रह्म ने की। चतुर्थ सत्र में अजित बर', इंदिरा बर', मिहिर कुमार ब्रह्म ने अपने आलेख प्रस्तुत किए एवं उर्खाव ग्वारा ब्रह्म ने अध्यक्षता की। समापन सत्र में राहिला ब्रह्म ने समापन वक्तव्य दिया। आर. देवनाथ समापन सत्र के मुख्य अतिथि एवं जगेश्वर ब्रह्म विशिष्ट अतिथि थे। अमरेंद्र ब्रह्म, के. बसुमतारी एवं रमीला बर' कार्यक्रम के सम्मानीय अतिथि थे। इस सत्र की अध्यक्षता राकेश्वर ब्रह्म ने की एवं धन्यवाद ज्ञापन किया अजित बर' ने।

परिसंवाद : डोगरी ग़ज़ल दा शिल्प एवं कथ्य - उर्दू ग़ज़ल के हवाले से

23 जनवरी 2019, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा जम्मू में 23 जनवरी 2019 को 'डोगरी ग़ज़ल दा शिल्प एवं कथ्य - उर्दू ग़ज़ल के हवाले से' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक दर्शन दर्शी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। प्रकाश प्रेमी ने बीज-भाषण दिया तथा आई.डी. सोनी ने अध्यक्षता की। कर्नल राज मानावरी और यश रैना ने प्रथम सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जितेंद्र उधमपुरी ने की तथा अशोक अंबर, शिवदेव सिंह मन्हास और ओम विद्यार्थी ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी : केरल की आदिवासी बोलियाँ एवं साहित्य

24 जनवरी 2019, वायनाड

साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु तथा साहित्यवेदी, एन.एम.एस.एम. गवर्नमेंट कॉलेज, कालपेट्टा, वायनाड के संयुक्त तत्त्वावधान में 'केरल की आदिवासी बोलियाँ एवं साहित्य' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 24 जनवरी 2019 को डिजिटल थियेटर, एन.एम.एस.एम. गवर्नमेंट कॉलेज सभागार में किया गया। उद्घाटन के दौरान पी.सी. अशरफ़, सहायक प्रोफ़ेसर ने आरंभिक वक्तव्य दिया। के.पी. राधाकृष्णन, कार्यक्रम अधिकारी, साहित्य अकादेमी ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी।

वी. अनिल, प्राचार्य, एन.एम.एस.एम. गवर्नमेंट कॉलेज ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि के रूप में पी.के. करियन ने आदिवासी साहित्य के व्यापक क्षेत्र के बारे में बात की और कहा कि हमें आदिवासी भाषा और साहित्य को संरक्षित करने की आवश्यकता है। बीज भाषण देते हुए मिनी प्रसाद, सदस्य मलयाळम् परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने आदिवासी भाषा, बोली एवं साहित्य के क्षेत्र में शोध के दौरान आई कई दुखद वास्तविकताओं को श्रोताओं के साथ साझा किया। उन्होंने यह भी कहा कि एक भाषा की मौत एक संस्कृति की मौत है इसीलिए भाषा और बोलियों को पुनः प्राप्त करने के लिए गंभीर प्रयास करने चाहिए। के. रमेशन, सहायक प्रोफ़ेसर एवं साहित्यवेदी के संयोजक ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए उद्घाटन सत्र का समापन किया।

प्रथम सत्र पी.सी. अशरफ़, सहायक प्रोफ़ेसर एवं साहित्यवेदी के संयोजक ने प्रतिभागियों के परिचय से कार्यक्रम का आरंभ किया। एम. बी. उषाकुमारी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। पी.जी. पद्मिनी, के.के. केलु, सिंधु कृष्णदास तथा एम.पी. वसु ने क्रमशः 'पानिया भाषा एवं साहित्य', 'कुरीछिया भाषा एवं साहित्य', 'बेट्टाकुरुमा

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए पी.के. करियन

भाषा एवं साहित्य' तथा 'कट्टुनायक भाषा एवं शिक्षा' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पी.जी. पद्मिनी ने आदिवासी भाषा एवं बोलियों के लुप्त होने पर दुख व्यक्त करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा का प्रयोग गर्व के साथ करने की अपील की।

के.के. केलु ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में कुरीचिया जनजाति के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन किया। सिंधु कृष्णदास ने वेट्टाकुरुमा जनजाति, जो केरल की शिल्पी आदिवासी है तथा उनके साहित्य के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। सिंधु कृष्णदास ने इस जनजाति के शिल्प एवं साहित्य के विभिन्न बिंदुओं का उल्लेख किया जो दूसरी जनजाति से इसे अलग करती है। एम.वी. वासु, जो कट्टुनायक जनजाति की शिक्षा एवं उत्थान के लिए पिछले 10 वर्षों से कार्य कर रहे हैं, ने इस बात पर अफ़सोस व्यक्त किया कि आदिवासी लोग हाशिये पर जा रहे हैं और उनकी भाषा एवं कला को कला उत्सव में उचित महत्त्व नहीं दिया जा रहा है। सत्र का समापन टिप्पणी, प्रश्न एवं स्पष्टीकरण से हुआ।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पी.सी. अशरफ़ ने की। के.के. बीजू, बी. विनीता, एम.सी. अकीता, के.रमेशन ने क्रमशः 'मुल्लुकुरुमा भाषा और साहित्य' 'कट्टुनायक भाषा और शिक्षा', 'पानिया भाषा और शिक्षा' तथा 'अदिया भाषा और साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। के.के. बीजू ने उल्लेख किया कि यह एक अकेली जनजाति है जिसका अपना लिखित साहित्य है। उनके साहित्य का एक बड़ा हिस्सा कलिप्पट्टु है, जिसमें विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले विविध गीत हैं। इस जनजाति के साहित्य का उल्लेख करते हुए डॉ. रमेशन ने कहा कि अदिया जनजाति के साहित्य में पुलप्पट्टु, गद्दिका तथा सोपानप्पट्टु जैसे गीत थे। अगली दो प्रस्तुति में इस तथ्य को उजागर किया गया कि उन्होंने नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व किया है। उनकी पहचान कभी भी रुकावट नहीं बनी बल्कि शैक्षिक और सामाजिक उत्थान के लिए प्रेरणादायक बनी। बी. विनीता और एम.सी. अकीता ने अपने जीवन के साथ-साथ अपने शैक्षिक कैरियर के अनुभवों को साझा किया। सुश्री विनीता ने कहा कि सरकार इन जनजातियों की उच्च शिक्षा पर ध्यान देती है तथा प्राथमिक स्तर तक शिक्षा के लिए भुगतान करती है। अकीता ने उल्लेख किया कि नशीले पदार्थों का सेवन और हीनता की भावना जनजातियों को पीछे खींचने वाले मुख्य तत्त्व है। अध्यक्ष पी.सी. अशरफ़ ने कहा कि निरंतर शोध कार्यक्रम एवं गतिविधियों के आयोजन हेतु अकादेमी से अनुरोध किया जाएगा।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्वान एवं विशेषज्ञ उपस्थित थे। कार्यक्रम में इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया कि पूरे भारत में जनजातियों की भाषा और साहित्य को संरक्षित करने की बहुत आवश्यकता है।

परिसंवाद : बसवराज कट्टीमणि जन्मशतवार्षिकी

31 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने बसवराज कट्टीमणि प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में बसवराज कट्टीमणि के जन्मशताब्दी के अवसर पर कर्नाटक संघ कॉन्फ्रेंस हॉल, दिल्ली कर्नाटक संघ, दिल्ली में 31 जनवरी 2019 को एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। दिल्ली कर्नाटक संघ के अध्यक्ष एवं लेखक वेंकटचला हेगड़े ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि संघ ने पिछले वर्षों साहित्य अकादेमी के सहयोग से कुवेम्पु, बेंद्रे तथा गौरीश कैकिनी पर जन्मशतवार्षिकी का आयोजन किया था। उन्होंने बसवराज कट्टीमणि के आधुनिक कन्नड साहित्य को अमूल्य योगदान देने पर प्रकाश डाला। मल्लिकार्जुन हिरेमथ, प्रतिष्ठित कथाकार एवं अध्यक्ष, बसवराज कट्टीमणि प्रतिष्ठान ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने विस्तारपूर्वक बताया कि कैसे कट्टीमणि ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

एस.पी. महालिंगेश्वर, क्षेत्रीय सचिव ने अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। बालासाहेब लोकापुर लेखक एवं सदस्य, सामान्य परिषद्, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा विस्तारपूर्वक बताया कि कैसे इस प्रगतिशील विचारक लेखक का जन्म हुआ। सरजू काटकर, लेखक एवं सदस्य, सामान्य परिषद्, साहित्य अकादेमी ने अगले सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि कट्टीमणि ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद लेखन प्रारंभ किया और उस समय की आवश्यकता मूल रूप में आम लोगों से संबंधित थी। 1930 के प्रगतिशील आंदोलन का श्री कट्टीमणि पर काफ़ी प्रभाव पड़ा। अनाक्रू. को. चेन्नाबसप्पा, निरंजना, पाटिल पुटप्पा, चदुरंग के साथ बसवराज कट्टीमणि का 1940 में प्रगतिशील साहित्य को आकार देने में बहुत बड़ा योगदान था।

एस.एल. कारीशंकरी, सरजू काटकर, एस.पी. महालिंगेश्वर, मल्लिकार्जुन हीरेमथ, वेंकटचला हेगडे, बालासाहेब लोकापुर तथा सी.एम. नागराज (बाएँ से दाएँ)

बसवराज सादर ने कट्टीमणि पर शोध किया और शोध के दौरान लेखक के साथ अपने संबंध को याद किया। उन्होंने कहा कि बसवराज कट्टीमणि आम लोगों के लेखक थे और अपने कार्य में ईमानदार थे। विजयकुमार कतागिहल्लीनाथ ने बताया कि कट्टीमणि ग़रीबी में जी रहे थे जबकि उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन और अपने लेखन में

अपने समय के सामाजिक सरोकारों में योगदान दिया। बसवराज डोनर ने कट्टीमणि के आत्मकथा लेखन के बारे में बात की। सिद्धलिंगय्या, संयोजक, कन्नड परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी तथा प्रख्यात कन्नड कवि ने कहा कि उन्होंने अपनी किशोरावस्था में उन्हें पढ़ा है।

समापन वक्तव्य देते हुए पुरुषोत्तम बिलीमाले ने समकालीन समाज की दुर्दशा पर ध्यान केंद्रित किया जहाँ धर्म निरपेक्षता, जातिवाद, धार्मिक कट्टरपंथी आदि बुराइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए कट्टीमणि विशेषरूप से जुड़े हुए थे। सी.एम. नागराजा, महासचिव, दिल्ली कर्नाटक संघ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद : बी.आर. राजम अय्यर और प्रारंभिक तमिळ उपन्यास

12 फ़रवरी 2019, गाँधीग्राम, दिंडुक्कल

साहित्य अकादेमी के चेन्नै उप-क्षेत्रीय कार्यालय और गाँधीग्राम रूरल इंस्टीट्यूट के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बी. आर. राजम अय्यर और प्रारंभिक तमिळ उपन्यास' विषय पर केंद्रित परिसंवाद का आयोजन 12 फ़रवरी 2019 को सिल्वर जुबली हॉल, जी.आर.आई. (डी.यू.) परिसर में किया गया। टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यक्रम सहायक, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत भाषण दिया। वी.पी.आर. शिवकुमार, कुलसचिव, जी.आर.आई. ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया और साहित्य अकादेमी के प्रति इस महत्वपूर्ण आयोजन को उनके महाविद्यालय में आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया। मालन, सदस्य, सामान्य परिषद्, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अपने अभिभाषण में उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी मात्र पुरस्कार देने वाली संस्था भर नहीं है, वह सभी भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को विकसित करने के लिए प्रयास भी करती है। उन्होंने कहा कि इस परिसंवाद को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य तीन महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों की रचनाओं का पुनर्संरक्षण और युवा पीढ़ी के लिए उन रचनाकारों के योगदान को रेखांकित करना है। साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत साहित्यकार डी. सेल्वराज ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने पाया कि उपन्यास अभिव्यक्ति की एक प्रचलित साहित्यिक विधा है और यह क्षेत्रीय और सामाजिक जीवन को अविभाज्य रूप से प्रस्तुत करती है। उन्होंने कुछ समकालीन तमिळ उपन्यासों के पुनर्मूल्यांकन पर परिसंवाद के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। पी.आनंदकुमार, सदस्य, तमिळ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। एन. मुरुगेसा पांडियन ने प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता की तथा 'प्रताप मुदालियार चरित्रम् का पुनः पाठ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सामुएल वेदानयागम पिल्लै ने इस उपन्यास को लिखा था और यह पहला तमिळ उपन्यास है जो सांप्रदायिकता और स्त्री सशक्तिकरण की बात करता है। मालन ने 'कमलाम्बल चरित्रम् : एक मूल्यांकन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा कि यह राजम अय्यर द्वारा लिखित है और यह दक्षिण भारतीय लोगों की पारंपरिक जीवनशैली को चित्रित करता है। मालन ने यह भी कहा कि कमलाम्बल चरित्रम् राजम अय्यर की विचार-समृद्धि का एक उत्तम उदाहरण है। द्वितीय सत्र में, एस. वेणुगोपाल ने 'पद्मावती चरित्रम् : एक मूल्यांकन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह उपन्यास ए. माधवय्या द्वारा लिखा गया है और यह दक्षिण भारतीय समुदाय का गंभीर समाजेतिहास है जो पारंपरिक नियमों और आदर्श जीवन मूल्यों से समृद्ध है। एन. रथिना कुमार ने 'शुरुआती जासूसी उपन्यास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने रेखांकित किया कि वादुवुर दुरैसामी अयंगार और वाइ. मु. कोटाइनयागी अम्माल तमिळ में जासूसी उपन्यास लिखनेवाले चर्चित लेखक थे। बाद में, इस विधा को कल्कि कृष्णमूर्ति ने बेहतर रूप दिया। सरल-सहज भाषा में लिखित उनकी रचनाओं ने व्यापक पाठकों का ध्यानाकर्षित किया।

तृतीय सत्र में, डी. कांतिमति ने एस. थोटातारी (जो कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके थे) के 'ए. माधवय्या के उपन्यासों की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि' विषयक आलेख का पाठ किया। पी. आनंद कुमार ने 'प्रारंभिक तमिळ उपन्यास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने रेखांकित किया कि वाल्टर स्कॉट की रचनाओं ने विभिन्न भारतीय उपन्यासों को गंभीरता से प्रभावित किया और नई साहित्यिक विधाओं का सृजन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महाविद्यालय के छात्र, प्राध्यापक और स्थानीय विद्वान उपस्थित थे।

परिसंवाद : असमिया आलोचना में नई प्रवृत्तियाँ

19 फ़रवरी 2019, नगाँव

साहित्य अकादेमी ने अंग्रेज़ी व असमिया विभाग, ए.डी.पी. कॉलेज, नगाँव, असम के संयुक्त तत्त्वावधान में 'असमिया आलोचना में नई प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 19 फ़रवरी 2019 को ए.डी.पी. कॉलेज, नगाँव, असम में किया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक ध्रुव ज्योति बोरा ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रख्यात असमिया विद्वान प्रदीप आचार्य ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने असमिया आलोचना में प्रचलित नई प्रवृत्तियों पर बात की तथा इन प्रवृत्तियों की पूर्व परंपरा के विषय में भी चर्चा की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात असमिया साहित्यकार सुरजीत भागोवती थे और अरिंदम बॅरकटकी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पहले विचार सत्र में विभाष चौधुरी, कमालुद्दीन अहमद ने अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया विद्वान मदन शर्मा ने की।

द्वितीय सत्र में अरिंदम शर्मा, दालिम दास और देवभूषण बोरा ने अपने गंभीर आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया विद्वान प्रभात बोरा ने की। सभी वक्ताओं ने असमिया साहित्यिक आलोचना की विभिन्न विधाओं/विधियों पर प्रकाश डाला।

परिसंवाद : पट्टाभि जन्मशताब्दी

19 फ़रवरी 2019, नेल्लोर

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 फ़रवरी 2019 को टाउन हॉल, नेल्लोर में साहिती श्रवंति, नेल्लोर के सहयोग से पट्टाभि की जन्मशताब्दी पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

साहिती श्रवंति के सचिव एथाकोटा सुब्बाराव ने अपने आरंभिक व्याख्यान में कहा कि साहित्य अकादेमी के साथ पट्टाभि की जन्मशताब्दी का आयोजन करना उनके लिए गर्व की बात है और हम या तो जन्मशताब्दी कार्यक्रमों या छोटे साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे और इसमें अकादेमी से सहयोग देने का अनुरोध करेंगे।

अपने बीज-वक्तव्य में तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य शिखामणि ने साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अकादेमी द्वारा नियमित रूप से साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन की जानकारी दी तथा हमारे सचिव के मार्गदर्शन के बारे में चर्चा की। वे आंध्र प्रदेश और उसके आस-पास अधिक से अधिक कार्यक्रम करेंगे।

आंध्रप्रदेश विधान सभा के सदस्य वी. बालसुब्रह्मण्यम कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अपने कॉलेज के दिनों को याद करते हुए उन्होंने बताया कि पुरस्कार प्राप्त करने के लिए छात्र-जीवन में वे लेखकों की भाँति निबंध और

कहानियाँ लिखते थे और उन्होंने यह भी बताया कि हैदराबाद में ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता स्वर्गीय सी. नारायण रेड्डी के साथ एक बार पट्टाभि रामी रेड्डी से किसी फ़िल्मी बैठक के संबंध में उनकी भेंट हुई थी।

परिसंवाद में व्याख्यान देते हुए राचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी

सत्र की अध्यक्षता कर रहे सामान्य परिषद् तथा तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य राचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने अकादेमी की गतिविधियों तथा अकादेमी में उनकी विगत 6 वर्षों से उपस्थिति की जानकारी दी जिसमें उन्होंने कई साहित्यिक कार्यक्रमों के संचालन किया तथा अपने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान में उन्होंने पट्टाभि के समस्त साहित्यिक कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया तथा अकादेमी के साहित्यिक कार्यक्रमों, यात्रा-अनुदान तथा युवा पुरस्कार आदि में भाग लेने के लिए नए साहित्य प्रेमियों से अपील की तथा उन्होंने आलेख वक्ताओं का स्वागत किया तथा उन्होंने पट्टाभि के इस जन्मशताब्दी कार्यक्रम में प्रस्तुत आलेखों को जल्द से जल्द एक पुस्तक के रूप में लाने का वादा भी किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता के. पुरुषोत्तम ने की। आलेख वक्ताओं—वी. प्रतिमा और याकूब ने 'फिदेलु रगला डज़न तथा पट्टाभी पंचांगम' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता एदुरु सुधाकर ने की। आलेख वक्ताओं—जे. प्रेमचंद, आर.सीताराम और एम. ओबुलेसू ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता पी. जयाप्रदा ने की। वाम्स्यकृष्ण तथा वी.एम. रविकुमार ने *पट्टाभि : तेलुगु सिनेमा* और *पट्टाभि : तेलुगु कवियों में उनकी विशिष्टता* विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता एस. जयप्रकाश ने की। सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर एवं अकादेमी की पुस्तकों के अनुवादक सुदंरम ने श्री पट्टाभि के साहित्यिक कार्यों और उनके साथ अपने कॉलेज के दिनों के बारे में विस्तार से बताया। साहिती श्रवंति के सचिव गोपीकृष्ण ने पूरे कार्यक्रम का समाहार एवं धन्यवाद प्रस्तुत किया।

एस.वी. विश्वविद्यालय तिरुपति के पूर्व कुलपति के. इनोक तथा अकादेमी पुरस्कार विजेता एल.आर. स्वामी, अनुवादक, लेखक, कवि, विद्वान, नेल्लोर के पीजी कॉलेज के पी-एच.डी. छात्र तथा साहित्य प्रेमियों और मीडिया के लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

संगोष्ठी : तेलुगु साहित्य और संस्कृति पर गाँधी का प्रभाव

2-3 मार्च 2019, अवनीगड्डा, आंध्र प्रदेश

महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के शुभ अवसर पर, गाँधी क्षेत्रम अवनीगड्डा के सहयोग से आंध्र प्रदेश में 2-3 मार्च 2019 को 'तेलुगु साहित्य और संस्कृति पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

संगोष्ठी में व्याख्यान देते हुए मंडली बुद्ध प्रसाद

किया गया। आंध्र प्रदेश विधान सभा के माननीय उपाध्यक्ष मंडली बुद्ध प्रसाद ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने व्याख्यान में बुद्ध प्रसाद ने स्वर्गीय मंडली वेंकट कृष्णराव के यहाँ गाँधी क्षेत्रम के निर्माण के प्रयासों तथा गाँधीवादी अवधारणा पर आधारित कई ऐसी गतिविधियों को आयोजित करने के बारे में बताया।

बुद्ध प्रसाद ने कहा कि गाँधी जी पत्रकारिता के एक आदर्श व्यक्ति थे। के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि गाँधी जी ने भारत तथा अन्य देशों की समस्त भाषाओं के लोगों को भी प्रभावित किया है। समारोह के मुख्य अतिथि साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं महत्तर सदस्य तथा प्रख्यात हिंदी लेखक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि वैसे तो कई प्रसिद्ध लेखक हुए हैं, लेकिन उन सभी लेखकों को प्रभावित करने वाले एकमात्र व्यक्ति गाँधी जी थे। गुजराती में कुमार शंकर व्यास, ओड़िया में सेनापति, तमिळ में सुब्रह्मण्यम भारती और विभिन्न भाषाओं के कई लेखक गाँधी जी से प्रभावित हुए तथा उन्होंने कई कविताएँ और कहानियाँ आदि लिखी हैं।

संगोष्ठी के विशिष्ठ अतिथि ए.पी. रचनात्मकता एवं संस्कृति आयोग के सीईओ विजयभास्कर ने संगोष्ठी में अपने विचार साझा किए।

तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य रचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने अपने बीज-वक्तव्य में 17वीं सदी के पोटुलुरी वीरब्राह्मम गारू के बारे में उल्लेख किया, उन्होंने गाँधी के जन्म की भविष्यवाणी करते हुए बताया था कि एक सुपरमैन का जन्म उत्तर भारत में 'वैश्य' जाति में होगा। तीन नई पुस्तकें—*गाँधी क्षेत्रम्, गाँधी की 150वीं जन्मशती* (तेलुगु और अंग्रेज़ी) और *गाँधी महात्मु बोधा* (बाला शतकम) का विमोचन विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने किया। इनका प्रकाशन ए.पी. रचनात्मकता एवं संस्कृति आयोग के सहयोग एवं प्रोत्साहन से प्रकाशित किया गया।

प्रथम सत्र 'तेलुगु काव्य पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता पापिनेनी शिवशंकर ने की। इस सत्र का आरंभ प्रसिद्ध कवि, लेखक गुम्मा संबाशिव राव द्वारा प्रस्तुत आलेख से हुआ। तत्पश्चात् कोप्पर्ति वेंकट रमण ने 'वाचन कवित्वम गद्य साहित्य—मुक्त कविता पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। ए.पी. लायब्रेरी के सचिव रावी शारदा ने 'बाल साहित्य 'पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता वासिरेड्डी नवीन ने की। उन्होंने 'तेलुगु कहानी पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। के. चेन्नाकेसव रेड्डी ने 'तेलुगु उपन्यास पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा पी.सी. वेंकटेश्वरलु ने 'तेलुगु में गाँधीवादी साहित्य पर समालोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता जी.वी. पूर्णचंद ने की तथा 'तेलुगु भूमि पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के दूसरे दिन कस्तूरी मुरली कृष्ण की अध्यक्षता में चतुर्थ सत्र आरंभ हुआ। कंदिमेल्ला

संबाशिवराव ने 'तेलुगु नाटक पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा श्री वामकृष्ण ने 'तेलुगु सिनेमा पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया।

पंचम सत्र की अध्यक्षता डोक्का मानिक्यावर प्रसाद ने की और उन्होंने 'दलित आंदोलन और साहित्य पर गाँधी का प्रभाव' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया।

तुर्लापति कुटुंबराव ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा गाँधी के जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण संघर्षों के बारे में बताया। अंत में मंडली बुद्ध प्रसाद ने इस संगोष्ठी के आयोजकों के प्रयासों की सराहना की तथा साहित्य अकादेमी का धन्यवाद किया। एस.पी. महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी : चंद्रमणि दास जन्मशताब्दी

3 मार्च 2019, कटक

साहित्य अकादेमी ने उत्कल साहित्य समाज के सहयोग से कटक में 3 मार्च 2019 को 'चंद्रमणि दास जन्मशताब्दी संगोष्ठी' का आयोजन किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध ओड़िया कथाकार विभूति पट्टनायक ने किया। डॉ. पट्टनायक ने चंद्रमणि के उपन्यासों के महत्त्व पर विस्तार से चर्चा करने से पहले ओड़िया उपन्यास का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया। उन्होंने चंद्रमणि और अन्य ओड़िया उपन्यासकारों के बीच तुलना भी की। स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने दिया। संगोष्ठी का शुभारंभ प्रवास चंद्र आचार्य के आरंभिक वक्तव्य के साथ हुआ। वैष्णव चरण सामल ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि जब वे स्कूल जाते थे तो किस प्रकार से वे चंद्रमणि के उपन्यासों से प्रभावित हुए। चंद्रमणि जब केवल 21 वर्ष के थे तबसे उन्होंने उपन्यास लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने प्रेम, अंधविश्वास और सामाजिक बुराइयों के बारे में लिखा। चंद्रमणि के उपन्यासों से पता चलता है कि वे गाँधीवादी सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थे। साहित्य अकादेमी की ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक विजयानंद सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। मनोज पट्टनायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता महेश्वर महांति ने की। सत्र में गोबिंद च. चंद ने चंद्रमणि दास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा उनके उपन्यासों के बारे में विस्तार से चर्चा की। चंद्रमणि ने अपने समय के लोगों की नब्ज़ को महसूस किया तथा प्रेम और सामाजिक बुराइयों के ख़िलाफ़ उपन्यास लिखे। रमेश च. बेहेरा ने चंद्रमणि दास को पुनर्जीवित करने के प्रयास के लिए साहित्य अकादेमी का धन्यवाद किया, जिसे लगभग भुला दिया गया है। संजीता मिश्रा ने मुख्यरूप से चंद्रमणि के तीन उपन्यासों पर चर्चा की। महेश्वर महांति ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उनके जासूसी और सामाजिक उपन्यासों की प्रशंसा की। उन्होंने चंद्रमणि के जीवन में उनके संघर्ष का उल्लेख करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के अंत में मिहिर कुमार साहु ने धन्यवाद ज्ञापन किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर तरुण कुमार साहू ने की। अध्यक्षता करते हुए प्रोफ़ेसर साहू ने चंद्रमणि दास के उपन्यासों के महत्त्व के बारे में बताया। रंजीता नायक और असित महांति ने सत्र में अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए और चंद्रमणि दास के उपन्यासों पर विस्तार से चर्चा की। कार्यक्रम का समापन जीबनानंद अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

परिसंवाद : ओड़िया में तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन : अतीत और वर्तमान

5 मार्च 2019, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के पी.जी. ओड़िया विभाग के सहयोग से 5 मार्च 2019 को पी.जी. परिषद् सम्मेलन कक्ष, वाणीविहार, भुवनेश्वर में 'ओड़िया में तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन : अतीत और वर्तमान' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक आदिकंद साहू ने की। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण दिया। ओड़िया विभाग के प्रमुख, उत्कल विश्वविद्यालय और साहित्य अकादेमी की ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य विष्णुप्रिया ने बीज भाषण दिया। उन्होंने तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन को शृंखला और विधियों के रूप में वर्णित किया। उन्होंने ने कहा कि तुलनात्मक अध्ययन सभी क्षेत्रीय बाधाओं को पार करता है और इस पर विश्व स्तर पर भी चर्चा की जानी चाहिए। उन्होंने भली-भाँति अध्ययन को परिभाषित किया। आदिकंद साहू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि ओड़िया साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन छात्रों और शिक्षकों के लिए अत्यधिक मूल्यवान है। उन्होंने सरला कृत *महाभारत* तथा व्यास कृत *महाभारत;* रवींद्रनाथ ठाकुर कृत *गीतांजलि* तथा गंगाधर मेहेर कृत *अर्घ्यथाली* के बीच तुलना पर ध्यान केंद्रित किया। मणींद्र कुमार मेहेर ने उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापन किया। सत्र का संचालन कवयित्री सुश्री स्नेहलता त्रुष्टि ने किया। परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता पंचानन मिश्र ने की। सत्र में गुरुचरण बेहेरा, रुद्र नारायण महापात्र और देवी प्रसाद सतपथी द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री बेहेरा ने तुलनात्मक साहित्य की कार्यप्रणाली और पारस्परिकता के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने गोपीनाथ महांति के *परजा* और महाश्वेता देवी के *छोटी मुंडा* के बीच अंतर पर ध्यान केंद्रित किया। महापात्र के आलेख का शीर्षक था—'तुलनात्मक साहित्य का वर्तमान और भविष्य'। उन्होंने एकीकृत संस्कृति और सार्वभौमिक भाषा के साथ तुलनात्मक साहित्य के विकास पर बल दिया। डॉ. सतपथी ने 'अंग्रेज़ी रोमांटिक रिवाइवल तथा सबुजा युग के ओड़िया साहित्य' पर चर्चा की। पश्चिमी साहित्य में रूमानीवाद की उत्पत्ति तथा विस्तार का एक समानांतर अध्ययन तथा ओड़िया लेखकों पर इसके प्रभाव को भी प्रस्तुत किया गया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गुरुचरण बेहेरा ने की। सत्र में असीम रंजन परही, संघमित्रा भंज और रमेश चंद्र मलिक ने आलेख प्रस्तुत किए। विद्वानों ने अंग्रेज़ी और ओड़िया, हिंदी और ओड़िया और साहित्य के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच संबंधों पर क्रमशः अपने विचार प्रकट किए। सत्र का संचालन हिमाद्रि तान्या मिश्र ने किया। आलोक रंजन षड़ंगी ने सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी : पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं के जनजातीय साहित्य में मिथक निर्माण

9-10 मार्च 2019, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी ने नेशनल एल्युमीनियम कंपनी के सहयोग से 9-10 मार्च 2019 को दमनजोड़ी, कोरापुट, ओड़िशा में 'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं के जनजातीय साहित्य में मिथक निर्माण' पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के कारण जनजातीय जीवन-शैली के बारे में अंधविश्वास और ग़लत धारणा का एक

सिलसिला अस्तित्व में है। संगोष्ठी के विषय पर विस्तार से बात करते हुए उन्होंने आदिवासी साहित्य की विभिन्न अनूठी विशेषताओं जैसे कि प्राणियों के रूप में पेश की गई प्राकृतिक स्थितियों, समुदाय के बीच परमेश्वर के वंश के साथ की किंवदंतियों, जीवन साथी और बच्चों वाले देवताओं आदि पर प्रकाश डाला। गदाधर परिडा ने बीज भाषण दिया। अपने संबोधन में परिडा ने कहा कि जनजातीय साहित्य कलम और काग़ज़ में नहीं है बल्कि इसे पीढ़ियों से वाचिक परंपरा या श्रुति के माध्यम से, जिसे लोककथाओं के नाम से भी जाना जाता है, सहेजा गया है। प्रख्यात कवि तथा साहित्य अकादेमी के एन.ई.सी.ओ.एल. के निदेशक चंद्रकांत मुरासिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में सरकार से आठवीं अनुसूची में शामिल देशज भाषाओं को अपना समर्थन देने का अनुरोध किया। रवि शंकर दास ने अपने अध्यक्षीय भाषण में एक ज़िम्मेदार कॉरपोरेट नागरिक के रूप में एन.ई.सी.ओ.एल. की भूमिका पर प्रकाश डाला और कहा कि एन.ई.सी.ओ.एल. कला और साहित्य के क्षेत्र को बढ़ावा देने के कार्य में हमेशा सहयोग करती रही है। उद्घाटन सत्र का समापन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्रथम सत्र में गौरहरि दास (ओड़िया) और एम. पओमिनलाल हाओकिप (मणिपुरी) द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। सत्र की अध्यक्षता विजयानंद सिंह ने की। गौरहरि दास ने चाधेई पक्षियों पर एक ऑस्ट्रेलियाई मिथक से आरंभ होनेवाली लोककथाओं का एक ज्वलंत वर्णन प्रस्तुत किया और इस संदर्भ में, प्रसिद्ध मानव विज्ञानी वेरियर एल्विन तथा उनके मौलिक कार्य, *इंट्रोडक्शन टू ट्राइबल मिथ* पर भी चर्चा की। मणिपुर के एम. पओमिनलाल हाओकिप ने मणिपुर केकुक्स जनजाति के कुलकुल पंथ तथा मिजोरम की चिन्लु जनजाति मिथकों के निर्माण पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्राध्यक्ष विजयानंद सिंह ने अपने समापन भाषण में कहा कि जनजातीय साहित्य धरती से जुड़ा साहित्य है और यदि हम भी हवा या पानी के बजाय ज़मीन पर चलें तो हम अधिक सुरक्षित रहेंगे।

दूसरे दिन की शुरुआत द्वितीय सत्र के साथ हुई जिसमें प्रीतिधारा सामल और राजेंद्र कुमार पाधी ने ओड़िया भाषा तथा टी.एम. बरेली ने नेपाली भाषा का प्रतिनिधित्व किया। सामल ने ओड़िशा में 62 जनजातियों के अस्तित्व का वर्णन करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा उन्होंने कोरापुट क्षेत्र के लोकसाहित्य पर प्रकाश डाला। राजेंद्र कुमार पाधी ने लोकगीतों को परिभाषित करने के लिए डब्ल्यू.आर. एस्कोम द्वारा 'अतीत में घटित घटनाओं के सच्चे विवरणों' का हवाला प्रस्तुत किया और कहा कि लोक साहित्य ही एकमात्र भरोसेमंद दस्तावेज़ है। टी.एम. बरेली ने लेपचा, भुतिया, किरात, शेरपा आदि जैसे विभिन्न हिमालयी जनजातियों का ब्योरा प्रस्तुत किया तथा बौद्ध युग में उभरी बोम संस्कृति पर ध्यान केंद्रित किया जहाँ तमयुग और कमयुग अस्तित्व में था। सत्र की अध्यक्षता करते हुए अपने समापन भाषण में महेंद्र मिश्र ने लोककथाओं के अध्ययन और अभ्यास के बीच के विरोधाभास पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र में मणिपुर के लईशराम अमरजीत सिंह, पश्चिम बंगाल की अनीता अग्निहोत्री और असम से प्रफुल्ल चंद्र दास ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता सुभाष चंद्र मिश्र ने की। पी.सी. दास ने असम के कार्बी आंगलोंग क्षेत्र की कार्बी जनजाति की काव्य का प्रतिभा और कल्पनाशील शक्ति का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया। अनीता अग्निहोत्री ने अपने प्रशासनिक जीवन के दौरान ओड़िशा के विभिन्न क्षेत्रों के लोक तत्त्वों से मिलकर बनी उनकी कहानियों और उपन्यासों की उत्पत्ति के बारे में बताया। लईशराम अमरजीत सिंह ने मणिपुर के लोक साहित्य, संस्कृति, परंपरा, मान्यताओं और लोक कथाओं पर विचार-विमर्श किया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए अपने समापन भाषण में सुभाष चंद्र मिश्र ने समाज और मिथक के बीच के संबंधों के बारे में विस्तार से बताया। इस सत्र के आलेख प्रस्तोता थे—बनोज त्रिपाठी (ओड़िया), नकु हांसदा (संताली) तथा पारसमणि दत्ता (असमिया)। इस सत्र की अध्यक्षता जगबंधु सामल ने की। नकु हांसदा ने ओड़िशा के विभिन्न अनुष्ठानों का वर्णन किया। पारसमणि दत्ता ने हनुकालकाचारी क्षेत्र पर विशेष ध्यान देने के साथ मिथक में हाल

की घटनाओं का पता लगाने का प्रयास किया, जो असम के ऊपरी पूर्वी भाग की अनुसूचित जनजाति है जिसे तनी के नाम से जाना जाता है। वनोज त्रिपाठी ने मनमोहन महापात्र द्वारा वर्णित मुदापात्र केडा के प्राचीन पारंपरिक खेल का हवाला देते हुए अपने भाषण की शुरुआत की। जगबंधु सामल ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए अपने समापन भाषण में आदिवासियों के महत्व को दोहराते हुए कहा कि वे पहले ऐसे मनुष्य हैं जिन्होंने सबके सामने सूर्य और प्रकृति का अनुभव किया है। साहित्य अकादेमी की ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य सुशांत नायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

स्थापना दिवस व्याख्यान : महात्मा गाँधी : एक लेखक और वक्ता के रूप में

12 मार्च 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 'महात्मा गाँधी : एक लेखक और वक्ता के रूप में' विषयक व्याख्यान देते हुए रामचंद्र गुहा ने कहा कि गाँधी रवींद्रनाथ ठाकुर की तरह सृजनात्मक लेखक तो नहीं थे लेकिन उनका लेखन विभिन्न भाषाओं में, जिनमें गुजराती, अंग्रेज़ी और हिंदी थी, में अलग-अलग तरीक़ों से व्यक्त होता था। गुजराती में जहाँ वे भारतीय जनता से संवाद करते दीखते हैं वहीं अंग्रेज़ी में उनका लेखन ब्रिटिश सरकार से राजनीतिक संवाद करता हुआ नज़र आता है। उन्होंने उनके लेखन के तीन उदाहरण पेश किए, जिनमें से पहला प्राकृतिक आपदा से संबंधित था जो सन् 1934 के बिहार-भूकंप के वर्णन का था। दूसरा मानवनिर्मित आपदा के बारे में था जो 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान प्रिंस वेल्स के बंबई आगमन के विरोध को लेकर था। तीसरा और अंतिम उदाहरण 1940 में सर एंड्रूज की श्रद्धांजलि से जुड़ा हुआ था। इन उदाहरणों के सहारे उन्होंने कहा कि इन तीनों में उनकी भाषा घटनाओं के अनुसार परिवर्तित हुई है। गाँधी भूकंप की घटना में जान-माल को हुए नुकसान को बड़ी संवेदना से वर्णित करते हैं तो बंबई की घटना में हिंदू-मुस्लिमों द्वारा पारसी और ईसाइयों पर किए गए हमलों की भर्त्सना करते हैं।

लुई फिशर की पुस्तक के एक उदाहरण से उन्होंने बताया कि गाँधी एक वक्ता के रूप में आक्रामक नहीं थे बल्कि बोलते समय बहुत ही सहज ढंग से अपनी बात रखते थे। उन्होंने गाँधी के *हिंद स्वराज* के एक उदाहरण के आधार पर बताया कि गाँधी का पूरा लेखन चार मुख्य विचारों—सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक उन्नति, सांस्कृतिक एकता और अहिंसा पर केंद्रित है।

उन्होंने गाँधी को एक वक्ता के रूप में बहुत संयत पाया। उन्होंने गाँधी द्वारा संपादित *इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया, हरिजन* के उदाहरणों द्वारा बताया कि इनके ज़रिये हम उनके लेखन में आए विभिन्न बदलावों को आसानी से लक्षित कर सकते हैं।

रामचंद्र गुहा ने कहा कि गाँधी के विपुल लेखन का महत्त्व तब और बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि उनका यह लेखन किसी तय स्थान पर बैठकर नहीं हुआ है, बल्कि तमाम यात्राओं और स्थानों पर अनेक काम करने के बीच उन्होंने ऐसा संभव कर दिखाया है। उन्होंने कहा कि के. स्वामीनाथन और सी.एन. पटेल द्वारा *गाँधी वांग्मय* के 97 खंडों का संपादन एक विश्वस्तरीय व्यवस्थित कार्य है।

रामचंद्र गुहा ने श्रोताओं द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि गाँधी को वकील के रूप में हम विफल भले ही कह लें किंतु भारतीय जनमानस से उनका संवाद नई ऊर्जा का संचरण करने वाला रहा है और जनता के अधिकारों की पक्षधरता उनका प्रमुख लक्ष्य रहा है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में, अकादेमी के पूर्व सचिव इंद्रनाथ चौधुरी ने पुस्तकें और अंगवस्त्रम् भेंट कर रामचंद्र गुहा का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी की अब तक की यात्रा के बारे में बताते हुए रामचंद्र गुहा का श्रोताओं से विधिवत् परिचय करवाया। उन्होंने बताया कि साहित्य अकादेमी स्थापना व्याख्यान कपिला वात्स्यायन, एस. एल. भैरप्पा और सीताकांत महापात्र जैसे प्रख्यात विद्वानों द्वारा दिया जा चुका है।

व्याख्यान देते हुए रामचंद्र गुहा

इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी, विद्वान, लेखक और छात्र मौजूद थे।

संगोष्ठी : मलयाळम् कहानी की व्युत्पत्ति और विकास

12-14 मार्च 2019, कासरगोड

साहित्य अकादेमी ने मलयाळम् विभाग के सहयोग से, केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड ने 12-14 मार्च 2019 को सबरामथी सभागार, विश्वविद्यालय, परिसर, केंद्रीय केरल विश्वविद्यालय, तेजस्विनी हिल्स, पेरिया, कासरगोड में 'मलयाळम् कहानी की व्युत्पत्ति और विकास' पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

चूँकि कासरगोड मलयाळम् कहानी का जन्मस्थल है तथा वेंगायिल कुंजीरामन नयनार प्रथम लेखक थे, इसलिए कासरगोड ज़िले का यह सौभाग्य है कि इस प्रकार की संगोष्ठी का यहाँ पर आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति के. जयप्रसाद ने किया तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार राधाकृष्णन नायर ने अध्यक्षता की। मलयाळम् के प्रख्यात कवि एवं लेखक एस. रामेसन नायर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। वेंगायिल कुंजीरामन नयनार और प्रसिद्ध मलयाळम् कवि पी. कुंजीरामन नायर की तस्वीरों का अनावरण क्रमशः प्रति-कुलपति तथा एस. रमेसन नायर ने किया। श्री शंकराचार्य सर्वशिक्षा विश्वविद्यालय के मलयाळम् की लिसी मैथ्यू ने वेंगायिल कुंजीरामन नयनार पर स्मृति भाषण दिया। भाषण देते हुए मुख्य अतिथि एस. रामेसन नायर ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों से पी. कुंजीरामन नायर की स्मृति में एक पीठ स्थापित करने का अनुरोध किया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी के.पी. राधाकृष्णन ने सबका स्वागत किया। क्रिस्टी थॉमस ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर वेंगायिल कुंजीरामन नयनार और पी. कुंजीरामन नायर के परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे।

व्याख्यान देते हुए जी. गोप कुमार

प्रथम सत्र प्रसिद्ध कथाकारों सी.वी.बालकृष्णन तथा अंबिकासुदन मंगद के साथ 'लेखकों के साथ चर्चा' आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय केरल विश्वविद्यालय में मलयाळम् की सहायक प्रोफ़ेसर पार्वती पी. चंद्रन ने की।

'मलयाळम् कहानी का इतिहास' पर आधारित द्वितीय सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य तथा केरल साहित्य अकादेमी के पूर्व सचिव पी.वी. कृष्णन नायर ने किया। 'क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में कहानी' पर आधारित तृतीय सत्र में, साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्या मिनी प्रसाद ने 'कथासाहित्य और परिस्थितिविज्ञान' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन, संगोष्ठी में 'विभिन्न क्षेत्रों के साथ तुलना करते हुए मलयाळम् कहानी का विकास' विषय पर आधारित सत्र का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र का विषय था—'कहानी अनुवाद'। केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी के एसोसिएट प्रोफ़ेसर जोसेफ कोयिप्पल्ली जोसेफ ने अनुवाद पद्धति तथा अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध अनुवादों से भारतीय भाषाओं में अनुवाद, विशेषरूप से मलयाळम् भाषा में एक सम्मोहक भाषण प्रस्तुत किया। केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी की एसोसिएट प्रोफ़ेसर सीमा चंद्रन ने हिंदी से मलयाळम् में हुए अनुवाद कार्यों के बारे में बताया। द्वितीय सत्र 'कहानी से फ़िल्मी पटकथा तक' विषय पर आधारित था। केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी के सहायक प्रोफ़ेसर इफ़्तिख़ार अहमद ने कुछ उदाहरणों के माध्यम से फ़िल्मी पटकथा के कुछ सैद्धांतिक पक्षों पर प्रकाश डाला। प्रख्यात फ़िल्म पटकथा लेखक कृष्ण पूजाप्पुरा ने व्यावसायिक फ़िल्मों की पटकथा पर अपने विचार व्यक्त किए। तृतीय सत्र 'कहानी' और 'सामाजिक सुधार' विषय पर आधारित था। सत्र का संचालन महात्मा गाँधी कॉलेज में अंग्रेज़ी के एसोसिएट प्रोफ़ेसर नद्यथ गोपालकृष्णन तथा *मलयाला मनोरमा* के वरिष्ठ उप-संपादक एवं प्रख्यात लेखक राजीव गोपालकृष्णन ने किया। चतुर्थ सत्र 'वृत्तांत सिद्धांत और कहानी' विषय पर आधारित था। सत्र का संचालन शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, त्रिचूर केंद्र के प्रोफ़ेसर कृष्णन नंबुथीरी तथा अज्थन मेनोथ ने किया। अज्थन मेनोथ ने कुछ मलयाळम् कहानियों की भावात्मक सामग्री द्वारा कहानी के कथा-सिद्धांत की व्याख्या करने का प्रयास किया। सत्र की अध्यक्षता केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय के भाषाविज्ञान के सहायक प्रोफ़ेसर चिन्मय ने की।

तीसरे दिन, अंतिम सत्र 'मलयाळम् कहानी की नई संवेदनशीलता पर अभिविन्यास' विषय पर आधारित था। सत्र का संचालन केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा विभाग के प्रोफ़ेसर ए.एम. उन्नीकृष्णन ने किया। समापन सत्र का उद्घाटन माननीय कुलपति जी. गोप कुमार ने किया। इस अवसर पर प्रख्यात फ़िल्म निर्देशक बालू किरियात विशिष्ठ अतिथि थे। इस सत्र की अध्यक्षता भाषा और तुलनात्मक साहित्य स्कूल के प्रोफ़ेसर, प्रमुख और

डीन तथा साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य एन. अजित कुमार ने की। साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य एल.वी. हरि कुमार ने विशिष्ट गणों का स्वागत किया।

परिसंवाद : बोडो भाषा और साहित्य में युवा लेखन

15 मार्च 2019, कामरूप, असम

साहित्य अकादेमी ने बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 15 मार्च 2019 को जे. एन. कॉलेज, बोको, कामरूप, असम में 'बोडो भाषा और साहित्य में युवा लेखन' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहु ने प्रस्तुत किया। साहु ने अपने भाषण में विशेषरूप से देश के लेखकों के लिए साहित्य अकादेमी के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। आरंभिक भाषण कामेश्वर बर' ने प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं को वक्ताओं का परिचय दिया। बोडो परामर्श मंडल के संयोजक अनिल कुमार बर' ने बीज भाषण दिया। उन्होंने बोडो साहित्य के समकालीन परिदृश्य और बोडो साहित्य को समृद्ध बनाने की दिशा में युवा बोडो लेखकों के योगदान पर चर्चा की। नृपेन गोस्वामी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा तोरेन बर' ने अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र के अंत में मुनिंद्र दैमारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। दो सत्रों में आनंद लहरी, भैरवी बर', बिनोय खेकतारी, बुद्धदेव लहरी, अंशुमा ख. बोडोसा, मामुनी दैमारी, मुन्नू बसुमतारी और समाईश्री खाखलरी ने युवा लेखकों द्वारा बोडो साहित्यिक कार्यों के विभिन्न पहलुओं पर आधारित अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रथम और द्वितीय सत्र की अध्यक्षता क्रमशः कमलकांत मुशाहारी तथा जीवेश्वर कोच ने की।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारत में आलोचना परंपरा

16-17 मार्च 2019, सूरत

साहित्य अकादेमी द्वारा 16-17 मार्च 2019 को ए.यू.आर.ओ. विश्वविद्यालय, सूरत में उदार कला और मानव विज्ञान विद्यालय के सहयोग से 'भारत में आलोचना परंपरा' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी तुलनात्मक दृष्टिकोण से समृद्ध और विविध भारतीय आलोचना परंपराओं को समझने और भारतीय चिंतन परंपरा की व्यापक तस्वीर प्राप्त करने का एक प्रयास थी। संगोष्ठी का प्रथम दिन उद्घाटन सत्र के साथ प्रारंभ हुआ। डीन एकेडमिक, रोहित सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। विषय वक्तव्य ओम प्रकाश द्विवेदी ने प्रस्तुत किया। आई.आई.ए.एस., शिमला के अध्यक्ष कपिल कपूर ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। ए.यू.आर.ओ. विश्वविद्यालय के कुलपति अवधेश कुमार सिंह ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। कुलसचिव अजय कुमार यादव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

भोजनोपरांत हुए दो सत्रों में अंग्रेज़ी, हिंदी, गुजराती, उर्दू तथा तेलुगु भाषाओं में पाँच-वक्ताओं—मालाश्री लाल, शाफ़े किदवई, कमल मेहता, भगवानदास पटेल तथा के. सुनीता रानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे दिन तीन सत्र आयोजित किए गए, जिसमें सात आलेख संस्कृत, हिंदी, असमिया, बाङ्ला, ओड़िया, मराठी और जनजातीय भाषाओं में प्रख्यात विद्वानों—रजनीश मिश्र, राजकुमार, फरहीन दत्ता, सुभा चक्रवर्ती दासगुप्ता, जतिन

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

नायक, सचिन केतकर और वंदना टेटे ने प्रस्तुत किए। इस अवसर पर गुजराती साहित्य परिषद के अध्यक्ष सितांशु यशश्चंद्र, समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे तथा आई.आई.ए.एस., शिमला के निदेशक मकरंद परांजपे ने बीज भाषण दिया। यह संगोष्ठी तुलनात्मक दृष्टिकोण से भारतीय भाषाओं में उपलब्ध महत्त्वपूर्ण चिंतन धारा को प्रस्तुत करने में सफल रही, जिसने अन्य भाषाओं में आलोचनात्मक परंपरा के तुलनात्मक अध्ययन और समझ को सुविधाजनक बनाया।

परिसंवाद : डोगरी नुक्कड़ नाटक का डोगरी साहित्य एवं समाज पर प्रभाव

22 मार्च 2019, जम्मू

साहित्य अकादेमी ने 22 मार्च 2019 को जम्मू के के.एल. सहगल हॉल में 'डोगरी नुक्कड़ नाटक का डोगरी साहित्य एवं समाज पर प्रभाव' पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र के दौरान डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक दर्शन दर्शी ने गणमान्य प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। मोहन सिंह ने बीज भाषण प्रस्तुत किया तथा सत्र की अध्यक्षता देश बंधु डोगरी 'नूतन' ने की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता अर्चना केसर ने की तथा शिवदेव सुशील 'डोगरी नुक्कड़ नाटक की डोगरी लोक साहित्य में उपस्थिति तथा उसका डुग्गर संस्कृति एवं समाज पर प्रभाव' एवं पद्म देव नादान 'आधुनिक डोगरी नुक्कड़ नाटक की विकास यात्रा तथा डोगरी साहित्य एवं समाज पर उसका प्रभाव' ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जनक खजुरिया ने की तथा रवींद्र कौल 'क्षेत्रीय भाषाओं में प्रोटेस्ट थिएटर एवं डोगरी नुक्कड़ नाटक संगोष्ठी पर खुली चर्चा' ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र का संलाचन ज्ञान सिंह ने किया तथा राजेंद्र रांझा ने समापन व्याख्यान एवं धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में स्थानीय विद्वानों, लेखकों और साहित्यकारों ने भी भाग लिया।

परिसंवाद : तमिळ पत्रिकाएँ : 1850-1920 (तमिळ अध्ययन के विशेष संदर्भ के साथ)

22 मार्च 2019, सैदापेट, चेन्नै

तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय, चेन्नै के स्कूल ऑफ़ तमिळ एंड कल्चरल स्टडीज़ के सहयोग से चेन्नै में साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने 'तमिळ पत्रिकाएँ : 1850-1920 (तमिळ अध्ययन के विशेष संदर्भ के साथ)' पर 22 मार्च 2019 को सम्मेलन हॉल, तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय परिसर में परिसंवाद का आयोजन किया। तमिळ और सांस्कृतिक अध्ययन स्कूल, टी.एन.ओ.यू. के प्रोफ़ेसर एवं प्रमुख एस. बालसुब्रमण्यन ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने तमिळ भाषा के विकास में पत्रिकाओं के योगदान के बारे में संक्षेप में चर्चा की। साहित्य अकादेमी

कि तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रमण्यम ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने 19वीं शताब्दी में तमिळ साहित्यिक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला और बताया कि किस प्रकार पत्रिकाओं ने तमिळ अध्ययन के संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उच्च शिक्षा विभाग, तमिलनाडु सरकार के प्रधान सचिव मंगत राम शर्मा की ओर से पी. त्यागराजन, कुलसचिव (आई/सी/), टी.एन.ओ.यू. ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य वी. आरसु ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने 19वीं शताब्दी में भारत द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों के समर्थन में हुए सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तन के बारे में बात की। प्रथम सत्र में एम.आर. आरसु ने *ज्ञानाबानु* पत्रिका के तमिळ भाषा को योगदान पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। अगले वक्ता एम. वैयापुरी ने *ज्ञानबोधिनी* पत्रिका का प्रभाव तथा तमिल अनुसंधान को बढ़ाने में उसकी भूमिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। जी. अरविंदन ने *देसोपकारी* पत्रिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में एम. नजमा ने *ज्ञानाविनोधिनी* पत्रिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। एस. सुजाह ने शोध पत्रिका *तमिलियन एंटीक्वेरी* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इसके बाद, के. कलैवनन ने *सिद्धांत दीपिका* पत्रिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रस्तुत आलेख तमिळ अध्ययन के क्षेत्र में उनके योगदानों पर केंद्रित थे। अंत में, जयबालन ने का. अयोथिदास पंडिथर की सामाजिक पत्रिका *ओरु पैसा तामिझन* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। एस. बालासुब्रमण्यम ने धन्यवाद संदेश में तमिल साहित्य के छात्रों और शोध विद्वानों के लाभ के लिए इस प्रकार के उपयोगी कार्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया।

संगोष्ठी : श्रीमंत शंकदेव की स्मृति में

23-24 मार्च 2019, गुवाहाटी, असम

साहित्य अकादेमी ने 23-24 मार्च 2019 को संगीताचार्य लक्ष्मीराम बरुआ सादा, असम साहित्य सभा, गुवाहाटी में श्रीमंत शंकरदेव की स्मृति में संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया। प्रख्यात असमिया लेखक नगेन शइकीया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। प्रदीप ज्योति महंत ने बीज भाषण प्रस्तुत किया और असमिया परामर्श मंडल के संयोजक ध्रुव ज्योति बोरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र 'वैष्णव भक्ति और शंकरदेव' विषय पर आधारित था तथा इसकी अध्यक्षता नंदकिशोर आचार्य ने की। आलेख प्रस्तोता थे—एम.ए. आलवार (अलवारों की परंपरा और विरासत), एस.आर.भट्ट (वैष्णववाद के दार्शनिक नव आधार) और शारोदी शइकीया (मंदिर से लोगों तक : सतरस के अग्रमंच से सत्तरिया नृत्यों के विकास की कहानी)।

द्वितीय सत्र 'वैष्णववाद की प्रथा' को समर्पित था तथा आलेख प्रस्तोता थे—बसंत पांडा (बंगाल और ओड़िशा में चैतन्य आंदोलन), उपेंद्र शर्मा (शंकरदेव और मणिपुरी वैष्णववाद), ध्रुव ज्योति बोरा (आम जनता तक पहुँचने के लिए शंकरदेव के समक्ष चुनौतियाँ) तथा इस सत्र की अध्यक्षता परमानंद राजबोंगशी ने की। तृतीय सत्र 'भक्ति शास्त्र से जन तक' विषय पर आधारित था तथा इसकी अध्यक्षता स्वाधीनता महंत ने की। आलेख प्रस्तोता थे—रानी सदाशिव मूर्ति (भागवत पुराण : माँ वैष्णववाद का पाठ), सूर्य प्रसाद दीक्षित (भारत के भक्ति कवि : तुलसीदास,

संगोष्ठी में बोलते हुए राणि सदाशिव मूर्ति

मीराबाई, तुकाराम) तथा सुरज्य हाज़रिका (वृंदावनी वस्त्र : एक दिव्य कला के रूप में बुनाई)। चतुर्थ सत्र 'भक्ति का सांस्कृतिक महत्त्व' विषय पर आधारित था और इसकी अध्यक्षता प्रदीप आचार्य ने की। आलेख प्रस्तोता थे—संध्या प्रेचा (धर्म वाहक के रूप में संस्कृति : भारतीय परंपरा और भक्ति), संजीव कुमार बरकटकी (शंकरदेव के विचार और दर्शन) और मृदुल शर्मा (शंकरदेव की काव्य परंपरा)। पंचम और अंतिम सत्र 'भव्य आंदोलन : भक्ति प्रदर्शन के रूप में' विषय पर आधारित था तथा आलेख प्रस्तोता थे—सत्यकाम बरठाकुर (भारतीय संदर्भ में सत्तरिया भवन) तथा पोना महंत (आमजन तक संदेश पहुँचाने वाली शंकरदेव की अद्वितीय नाटकीय और भाषायी शैली)। सत्र की अध्यक्षता निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने की। संगोष्ठी में कई विद्वानों, लेखकों और साहित्यप्रेमियों ने सहभागिता की।

जन्मशताब्दी संगोष्ठी : प्रफुल्लदत्त गोस्वामी : जीवन और कार्य

25 मार्च 2019, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी ने असम साहित्य सभा के सहयोग से 25 मार्च 2019 को संगीताचार्य लक्ष्मीराम बरुआ सदन, असम साहित्य सभा, दिघाली पुखुरी, गुवाहाटी, असम में 'प्रफुल्लदत्त गोस्वामी : जीवन और कार्य' पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में प्रफुल्लदत्त के पुत्र भास्करदत्त गोस्वामी ने दीप प्रज्ज्वलित कर पुष्प अर्पित किए। स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की असमिया भाषा परामर्श मंडल के संयोजक डी.जे. बोराह ने प्रफुल्लदत्त के जीवन और कार्यों पर आरंभिक व्याख्यान दिया। गौहाटी विश्वविद्यालय के लोककला विभाग के पूर्व प्रोफ़ेसर एवं प्रमुख नवीन चंद्र शर्मा ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए असम साहित्य सभा के अध्यक्ष परमानंद राजबोंगशी ने असम के साहित्य और लोककला अनुसंधान के क्षेत्र में प्रफुल्लदत्त गोस्वामी के योगदानों के कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। असम साहित्य सभा के महासचिव पदुम राजखोवा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र का शीर्षक था—'असमिया साहित्य के क्षेत्र में प्रफुल्लदत्त गोस्वामी'। इस सत्र में पराग कुमार भट्टाचार्य ने 'डॉ. प्रफुल्लदत्त गोस्वामी की कहानियाँ : एक विश्लेषण' और अनिल शइकीया ने 'बिहू गीतों के सदाबहार आकर्षण को फिर से खोजने में प्रफुल्लदत्त गोस्वामी का योगदान' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा रामचंद्र डेका ने प्रफुल्लदत्त गोस्वामी की समग्र साहित्यिक गतिविधियों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया तथा ऐसा करने में, वक्ता ने गोस्वामी के बेजोड़ रचनात्मक साहित्यिक संदर्भों का भी हवाला दिया। सत्र के चौथे और अंतिम वक्ता प्रणिता तालुकदार ने प्रफुल्लदत्त गोस्वामी के यात्रा-वृत्तांतों के बारे में विस्तार से बताया। सत्र की अध्यक्षता कर रहे रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आलेख में प्रफुल्लदत्त गोस्वामी को आधुनिक भारतीय साहित्य

के क्षेत्र का एक विशिष्ट लेखक बताया। अगले सत्र का विषय था—'प्रफुल्लदत्त गोस्वामी और अध्ययन तथा असम में लोकसाहित्य का अनुसंधान'। सत्र में, दिलीप कुमार कलिता ने 60 के दशक की अवधि पर बात की, जब असम में आम शैक्षणिक जन से लोकसाहित्य का अध्ययन और अनुसंधान बहुत दूर था। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक अनिल बर' ने असम के विभिन्न नृजाति-भाषायी समुदायों के लोगों के सामाजिक जीवन के अनूठे लोकसाहित्य के तत्वों को उजागर करने के लिए प्रफुल्लदत्त गोस्वामी के अथक प्रयासों की चर्चा की। विजय कुमार शर्मा ने असम के लोगों के विभिन्न समूहों के विभिन्न मेलों और त्योहारों के अध्ययन और अनसुंधान के क्षेत्र में प्रफुल्लदत्त गोस्वामी के योगदानों की चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता करते हुए सुजोय कुमार मंडल ने प्रफुल्लदत्त गोस्वामी को राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लोक कथाओं का अध्ययन करने वाला बताया। प्रफुल्लदत्त गोस्वामी के अध्ययन और लोक प्रदर्शन कला के विभिन्न रूपों पर अनुसंधान हेतु उनके इन शानदार योगदानों के सम्मान में, तीन लोक प्रस्तुतियाँ की गईं, जो थीं—'ओजा पाली', 'देवधानी नृत्य' और 'बिहू नृत्य'।

परिसंवाद : असमिया साहित्य में इतिहास की पड़ताल

26 मार्च 2019, गोलाघाट, असम

अंग्रेज़ी और असमिया विभाग के सहयोग से, देवराज रॉय कॉलेज, गोलाघाट, असम में 'असमिया साहित्य में इतिहास की पड़ताल' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 26 मार्च 2019 को देवराज रॉय कॉलेज, गोलाघाट, असम में किया गया।

उद्घाटन सत्र में देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया। देवराज रॉय कॉलेज के प्रधानाचार्य पुतुल चंद्र शइकीया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। ध्रुब ज्योति बोरा ने बीज-भाषण दिया। उन्होंने असमिया साहित्य पर इतिहास के प्रभाव पर बात की। असमिया परामर्श मंडल के सदस्य पिकुमणी दत्ता ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र में अरिंदम बरकटकी, चंदन शर्मा और कमल कुमार तांती ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अरूपा पतंगिया कलिता ने सत्र की अध्यक्षता की। द्वितीय सत्र में अरूपा पतंगिया कलिता, प्रांजल शर्मा वशिष्ठ, जूरी बोरा बरगोहाईं और सिवानंद काकोटी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अजीत बरुआ ने सत्र की अध्यक्षता की।

वर्ष 2018-2019 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

बोडो लेखिकाएँ
30 जून 2018, कोकराझार, असम

मणिपुरी लेखिकाएँ
14 जुलाई 2018, मणिपुर परिषद हॉल, ओल्ड असेंबली रोड, इंफ़ाल

बोडो लेखिकाएँ
20 अगस्त 2018, कोकराझार, असम

विभिन्न भारतीय भाषाओं की लेखिकाएँ
28 अगस्त 2018, नई दिल्ली

डोगरी लेखिकाएँ
13 अक्तूबर 2018, जम्मू (जे. एंड के.)

महिला लेखिकाएँ
23 अक्तूबर 2018, गुवाहाटी, असम

कश्मीरी लेखिकाएँ
17 नवंबर 2018, जम्मू (जे. एंड के.)

मलयाळम् लेखिकाएँ
04 फ़रवरी 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

बोडो लेखिकाएँ
08 फ़रवरी 2019, सोनितपुर, असम

असमिया लेखिकाएँ
18 फ़रवरी 2019, नागाँव, असम

ओड़िया लेखिकाएँ
05 मार्च 2019, पुरी, ओड़िशा

असमिया लेखिकाएँ
23 मार्च 2019, गुवाहाटी, असम

संताली लेखिकाएँ
24 मार्च 2019, डिब्रूगढ़, असम

असमिया लेखिकाएँ
26 मार्च 2019, गोलाघाट, असम

आविष्कार

मुक्तोमन द्वारा शिशिर कुमार दास कृत अलौकिक संकल्प से रूपांतरित मृत्युलोके सशरीरे एक संगीतमय नाट्य प्रस्तुति
18 सितंबर 2018, कोलकाता

कृष्ण अभिसार-ओड़िशा की एक देशज नृत्य शैली
24 मार्च 2019, कटक, ओड़िशा

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2017
22 जून 2018, गुवाहाटी, असम

प्रख्यात हिंदी लेखिका एवं अनुवादक डॉ. प्रतिभा अग्रवाल को हिंदी में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार
07 अगस्त 2018, नई दिल्ली

युवा पुरस्कार
26 अक्तूबर 2018, इंफ़ाल मणिपुर

बाल साहित्य पुरस्कार
14 नवंबर 2018, गांतोक, सिक्किम

डॉ. जी. वेंकटसुब्बया को भाषा सम्मान प्रदत्त
25 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

भाषा सम्मान
28 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2018
29 जनवरी 2019, नई दिल्ली

शीर्षेंदु मुखोपाध्याय को बाल साहित्य पुरस्कार प्रदत्त
08 फ़रवरी 2019, कोलकाता

दासरथी दास को ओड़िया भाषा के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदत्त
03 मार्च 2019, उत्कल साहित्य समाज, कटक

बाल साहिती

बाल साहिती
29 अगस्त 2018, नई दिल्ली

बाल साहिती
27 सितंबर 2018, चेन्नै

जानेमाने बाल लेखकों के साथ बाल साहिती (पुस्तक मेला)
09 जनवरी 2019, नई दिल्ली

जानेमाने ओड़िया लेखकों के साथ बाल साहिती कार्यक्रम
24 मार्च 2019, जरका, धर्मशाला, ओड़िशा

पुस्तक चर्चा

काशीनाथ कृत तमिळ अनुवाद *पिनाई काइधी* (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास) पर पी.के. बालसुब्रह्मण्यन
26 अप्रैल 2018, चेन्नै

शालोम पुस्तक पर प्रख्यात मराठी समालोचक श्री दीपक घारे
08 जून 2018, मुंबई

महारंदन कृत परबांजन पदाइप्पुलागम पर दुरइ सेनिसामी
14 जून 2018, चेन्नै

साहित्य अकादेमी प्रकाशन 'नेरालीना रेखेगाळु' (कन्नड अनुवाद)
29 जून 2018, बेंगळूरु

पेद्दीभोटला सुब्बारामय्या कथाइगळ (तेलुगु कहानी-संग्रह) पर टी.परमेश्वरी
19 जुलाई 2018, चेन्नै

शिखर सूर्य
21 जुलाई 2018, बेंगळूरु

प्रतिबिंब (कन्नड अनुवाद)
30 जुलाई 2018, बेंगळूरु

कावाले अणि काला पाणि (मराठी अनुवाद) पर जानेमाने मराठी समालोचक श्री नीलकांत क़दम
21 अगस्त 2018, मुंबई

जैरी पिंटो कृत एमुम्म पेरिया हुमुम (तमिळ अनुवाद) पर टी. मंगइ
23 अगस्त 2018, चेन्नै

गोपीनाथ मोहांती कृत कालजयी ओड़िया उपन्यास दादीबुढ़ा तथा उसके अनुवाद
20 सितंबर 2018, कोलकाता

अकादेमी के नवीनतम प्रकाशन *भगवान बुद्धर* पर श्री तंजावूर कविरायर
20 सितंबर 2018, चेन्नै

अकादेमी के नवीनतम प्रकाशन कनावुम विदियुम पर जानीमानी तमिळ लेखिका सुश्री जी. मीनाक्षी
16 अक्तूबर 2018, चेन्नई

लघुकथा संग्रह (भाग I एवं II) के कोंकणी अनुवाद पर जानीमानी कोंकणी लेखिका सुश्री शीला कोलंबकर
02 नवंबर 2018, मुंबई

अंग्रेज़ी अनुवाद में 'सप्तम ऋतु'
02 दिसंबर 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

कथन और प्रवचन के साथ शिवराम कारंथ के अंग्रेज़ी और कन्नड विनिबंध (सी.एन. रामचंद्रन की पुरस्कृत पुस्तक ''आख्यान व्याख्यान'' का अंग्रेज़ी अनुवाद)
09 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

शिवराम कारंथ कृत ''मनुम मणिथारुम'' पर पी. सुबास चंद्रबोस (कन्नड़ उपन्यास) (तमिळ अनुवाद)
13 दिसंबर 2918, चेन्नै

मालन द्वारा संकलित ''कणगलुवकु अप्पाल इधयत्तिर्कु अरुगिल'' पर के. भारती (तमिळ)
27 दिसंबर 2018, चेन्नै

''पट्टारायिल मालारत्ना मळयाला चिरुकथाइगळ'' पर बी. वीरमणि (तमिळ अनुवाद)
24 जनवरी 2019, चेन्नै

विनोद कुमार शुक्ल कृत ''सुवरिल ओरु जान्नल इरुनथु वनथाथु'' पर कृष्णगनी (तमिळ अनुवाद)
07 फ़रवरी 2019, चेन्नै

तेमसुला आओ कृत ''एन थलाइमाट्टिल'' पर ओप्पिला मतिवनन (तमिळ अनुवाद)
28 फ़रवरी 2019, चेन्नै

कीरानूर जाकेर राजा द्वारा संकलित ''सिरुपनमइ समूगा कथाइगळ'' पर रामा. गुरुनाथन
14 मार्च 2019, चेन्नै

सृजनात्मक लेखन कार्यशालाएँ

स्कूली बच्चों के लिए तेलुगु में सृजनात्मक लेखन पर कार्यशाला (चार दिन) मतलादेकलम : द स्पीकिंग पेन)
10-13 मई 2018, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

क़िस्सा-ओ-क़लम : सृजनात्मक लेखन कार्यशाला
21-25 मई 2018, नई दिल्ली

नाट्य लेखन पर कार्यशाला
12-14 जुलाई 2018, यूसमार्ग, श्रीनगर, जे.एंड के.

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया
18-20 अगस्त 2018, पोर्ट लूइस, मॉरीशस

नेपाल में भारतीय उत्सव के अंतर्गत ''संस्कृत : भारत और नेपाल का सार्वलौकिक ख़ज़ाना'' विषयक संगोष्ठी में भाग लिया
19-21 मार्च 2019, नेपाल

वृत्तचित्र प्रदर्शन

वैक्कं मुहम्मद बशीर
26 अप्रैल 2018, चेन्नै

वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
30 मई 2018-3 जून 2018,

कुंबाकोणम, तमिलनाडु 5 दिवसीय वृत्तचित्र फ़िल्मोत्सव
11-15 जून 2018, नई दिल्ली

सैय्यद मुस्तफ़ा सिराज
13 जून 2018, कोलकाता

आनंदशंकर राय
14 जून 2018, कोलकाता

डी. जयकांतन, यू. आर. अनंतमूर्ति, एम.टी. वासुदेवन नायर तथा कालीपट्टनम रामाराव
13-17 जून 2018, पुदुचेरी

कालीपतनम रामा राव
19 जुलाई 2018, चेन्नै

गुलज़ार
27 जुलाई 2018, कोलकाता

'कुवेम्पु'
11 अगस्त 2018, कालीपुर चेन्नै

रामपद चौधुरी
13 अगस्त 2018, कोलकाता

आर.के. नारायण
23 अगस्त 2018, चेन्नै

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती
29 अगस्त 2018, कोलकाता

महाश्वेता देवी
30 अगस्त 2018, कोलकाता

असम के दुर्लभ लोकगीत
20 सितंबर 2018, चेन्नै

शशि देशपांडे
16 अक्तूबर 2018, चेन्नै

वृत्तचित्र फ़िल्मोत्सव : (सुनील गंगोपाध्याय, मनोज दास, नवनीता देब सेन, गुलज़ार, केदारनाथ सिंह, महाश्वेता देवी, सैयद मुस्तफ़ा सिराज़, नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती पर वृत्तचित्र)
2-6 नवंबर 2018, कोलकाता

वृत्तचित्र फ़िल्मोत्सव : प्रख्यात साहित्यिक दिग्गजों धर्मवीर भारती, गिरीश कार्नाड, गुलज़ार, विंदा करिंदीकर, विजय तेंदुलकर, भालचंद्र नेमाडे, महेश एलकुंचवार पर वृत्तचित्र)
30 नवंबर-2 दिसंबर 2018, ठाणे, महाराष्ट्र

यू.आर. अनंतमूर्ति
13 दिसंबर 2018, चेन्नै

अय्यप्प पणिक्कर
27 दिसंबर 2018, चेन्नै

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती
12 जनवरी 2019, कोलकाता

गुलज़ार, भालचंद्र नेमाडे, विंदा करिंदीकर, महेश एलकुंचवर
22 जनवरी 2019, वसई, महाराष्ट्र

तकषि़ शिवशंकर पिल्लै
24 जनवरी 2019, चेन्नै

महाश्वेता देवी
07 फ़रवरी 2019, चेन्नै

मुल्कराज आनंद
28 फ़रवरी 2019, चेन्नै

गिरीश कार्नाड
12 मार्च 2019, बेंगळूरु

कमला दास
14 मार्च 2019, चेन्नै

साहित्योत्सव 2019
(28 जनवरी-2 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली)

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2018 का उद्घाटन
28 जनवरी 2019, नई दिल्ली

अखिल भारतीय आदिवासी लेखिका सम्मिलन
28-29 जनवरी 2019, नई दिल्ली

अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समाधान पर परिचर्चा
30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन
30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

गोपीचंद नारंग द्वारा ''फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ : तसव्वुरे इश्क़ मानी आफ़रीनी और जमालियाती एहसास'' विषय पर संवत्सर व्याख्यान
30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन
30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात विद्वानों/लेखकों के साथ आमने-सामने कार्यक्रम
31 जनवरी 2019, नई दिल्ली

भारतीय साहित्य में गाँधी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
31 जनवरी-02 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

युवा साहिती : नई फसल
31 जनवरी 2019, नई दिल्ली

मीडिया और साहित्य (परिचर्चा)
01 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य (परिचर्चा)
01 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

भारत में प्रकाशन की स्थिति (परिचर्चा)
02 फ़रवरी-2019, नई दिल्ली

बाल साहिती के अंतर्गत आओ कहानी बुनें
02 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन
02 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

स्थापना दिवस

प्रख्यात विद्वान एवं इतिहाकार डॉ. रामचंद्र गुहा द्वारा स्थापना दिवस व्याख्यान
12 मार्च 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात बाङ्ला विद्वान प्रो. भारती राय द्वारा ''महाकाव्यों की महिला पात्र क्यों हमें आकर्षित करती हैं? सीता और द्रौपदी'' विषय पर व्याख्यान
12 मार्च 2019, कोलकाता

प्रख्यात तमिळ लेखक डॉ. वाई. मणिकंदन द्वारा व्याख्यान
12 मार्च 2019, चेन्नई

साहित्य मंच : प्रख्यात कन्नड़ लेखक श्री के.जी. नागराजप्पा ने ''मेरी दुनिया, मेरा लेखन'' विषय पर व्याख्यान दिया
12 मार्च 2019, बेंगलूरु

प्रख्यात मराठी लेखक डॉ. सदानंद मोरे ने प्रख्यात मराठी लेखक एवं फ़िल्म निर्माता डॉ. दिलीप चित्रे के जीवन और कार्यों पर अपने विचार व्यक्त किए
12 मार्च 2019, मुंबई

ग्रामालोक

ग्राम चंदोल, केंद्रपाड़ा, ओड़िशा
01 मई 2018

ग्राम उत्तर बवाली, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल
08 मई 2018

ग्राम दाऊदनगर, ज़िला औरंगाबाद, बिहार
10 मई 2018

ग्राम सिलुक, ज़िला पूर्व सिओंग, अरुणांचल प्रदेश
01 जून 2018

ग्राम लोहना तोल कपासिया, ज़िला मधुबनी, बिहार
03 जून 2018

ग्राम हियांगलम, कॉकचिंग, मणिपुर
07 जून 2018

ग्राम नवग्राम, हुगली, पश्चिम बंगाल
09 जून 2018

ग्राम सतालमा, ज़िला बारगढ़, ओड़िशा
12 जून 2018

ग्राम लक्ष्मीपुर, ज़िला कोरापुट, ओड़िशा
24 जून 2018

ग्राम पश्चिम झारगाँव (बोलोकुची), ज़िला बस्का, असम
28 जून 2018

ग्राम धालाकचारी, मारंगी, गोलाघाट, असम
8 जुलाई 2018

ग्राम बैजितपुर, ज़िला पूर्व मिदिनापुर, पश्चिम बंगाल
22 जुलाई 2018

ग्राम नाकाचरी, जोरहाट, असम
29 जुलाई 2018

ग्राम भेजा, मधेपुर, ज़िला मधुबनी, बिहार
05 अगस्त 2018

ग्राम बन्नी, कच्छ, गुजरात
06 अगस्त 2018

ग्राम बार्बरुआ, ज़िला डिब्रूगढ़, असम
11 अगस्त 2018

ग्राम डोटमा, कोकराझार, असम
19 अगस्त 2018

ग्राम मायांग लैंगजिंग, इंफाल
30 अगस्त 2018

ग्राम बेज़ेरा, कामरूप, असम
09 सितंबर 2018

ग्राम कनेलवान, ज़िला अनंतनाग, जे. एंड के.
13 सितंबर 2018

ग्राम चौदवर, कटक, ओड़िशा
14 सितंबर 2018

ग्राम सालीपुर, कटक, ओड़िशा
16 सितंबर 2018

ग्राम नुगादा, ज़िला कोरापुट, ओड़िशा
7 अक्तूबर 2018

ग्राम रेमुना, ज़िला बालासोर, ओड़िशा
8 अक्तूबर 2018

ग्राम अचलपुर, ज़िला अम्रावती, महाराष्ट्र
08 अक्तूबर 2018

ग्राम केंदुपाली, ज़िला, नयागढ़, ओड़िशा
16 अक्तूबर 2018

ग्राम मलयाहनापुरा, ज़िला चमराजनगर, कर्नाटक
31 अक्तूबर 2018

ग्राम करयामपुथुर, पुदुचेरी
19 नवंबर 2018

ग्राम सोलाइ नगर, पुदुचेरी
19 नवंबर 2018

ग्राम ओराली, ज़िला क्योंझार, ओड़िशा
23 नवंबर 2018

ग्राम मनिजोरी, तहसील माहागा, कटक, ओड़िशा
24 नवंबर 2018

ग्राम भाद्दु, कठुआ, जे. एंड के.
01 दिसंबर 2018

ग्राम गणेशपाथेर, ज़िला करबी अंगलोंग, असम
06 दिसंबर 2018

ग्राम सनातिका, ज़िला बालनगीर, ओड़िशा
09 दिसंबर 2018

ग्राम नाउहता, जम्मू और कश्मीर
13 दिसंबर 2018

ग्राम मुनिगुदा, ज़िला रायगढ़, ओड़िशा
16 दिसंबर 2018

ग्राम नौबाद, ज़िला बिदर, कर्नाटक
22 दिसंबर 2018

ग्राम तंग्रा, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
27 दिसंबर 2018

ग्राम यालंदुर, ज़िला चमराजनगर, कर्नाटक
29 दिसंबर 2018

ग्राम कलोहा, ज़िला सांबा, जे.एंड के.
30 दिसंबर 2018

ग्राम, तहसील यालंदुर, ज़िला चमराजनगर, कर्नाटक
07 जनवरी 2019

ग्राम पूर्णननकुप्पम, पुदुचेरी
25 जनवरी 2019

ग्राम अलगुम, पुरी, ओड़िशा
03 फ़रवरी 2019

ग्राम गौरनगर, खोवाइ, त्रिपुरा
16 फ़रवरी 2019

ग्राम मोयनगढ़, पूर्व मेदिनापुर, पश्चिम बंगाल
09 मार्च 2019

ग्राम माजुली, असम
17 मार्च 2019

ग्राम सुनगल, ज़िला अखनूर, जम्मू, जे. एंड के.
24 मार्च 2019

कथासंधि

प्रख्यात हिंदी कथाकार, श्री शिवमूर्ति
19 जून 2018, नई दिल्ली

प्रख्यात मराठी कथाकार श्री समर खदास
22 जून 2018, मुंबई

प्रख्यात सिंधी लेखक : श्री हुंदराज बलवाणी
24 जून 2018, अहमदाबाद, गुजरात

जानेमाने बोडो लेखक श्रीतिरेन बोरो
29 जून 2018, बस्का, असम

प्रख्यात तमिल लेखक श्री कर्णन
30 जून 2018, मदुरै, तमिलनाडु

प्रतिष्ठित ओड़िया लेखक डॉ. कमलाकांत महापात्र
21 जुलाई 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

प्रख्यात मैथिली लेखक डॉ. नीरजा रेणु
02 सितंबर 2018, मधुबनी, बिहार

प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री तल्लवाझाला पतंजलि शास्त्री
09 सितंबर 2018, कक्इनाड, आंध्र प्रदेश

जानीमानी डोगरी लेखिका सुश्री शाकुंत दीपमाला
15 सितंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

प्रख्यात उर्दू लेखिका सुश्री तरन्नुम रिआज़
18 सितंबर 2018, नई दिल्ली

जानीमानी डोगरी लेखिका सुश्री सुदेश राज
19 अक्तूबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

जानीमानी सिंधी लेखिका सुश्री वीणा शृंगी
09 नवंबर 2018, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित गुजराती कथाकार श्री दिनकर जोशी
15 दिसंबर 2018, मुंबई

प्रतिष्ठित उर्दू कथाकार श्री सलाम बिन रज़ाक़
31 दिसंबर 2018, मुंबई

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री ए. के. रहबर
11 जनवरी 2019, नई दिल्ली

जानेमाने संताली लेखक श्री दिजपद हांसदा
20 जनवरी 2019, रायरंगपुर, ओड़िशा

जानेमाने बोडो लेखक श्री अरुण राजा
07 फ़रवरी 2019, सोनितपुर, असम

कवि अनुवादक

श्री चांदिकरन किशु ने अपनी संताली कविताएँ पढ़ीं तथा श्री धर्मकांत मुर्मू ने उनका असमिया अनुवाद प्रस्तुत किया
16 सितंबर 2018, तेजपुर, असम

जानेमाने डोगरी कवि श्री मोहन सिंह ने अपनी डोगरी कविताएँ पढ़ीं तथा जानेमाने कश्मीरी कवि श्री आर.एल. शांत ने उनका कश्मीरी अनुवाद प्रस्तुत किया
17 नवंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

जानेमाने कश्मीरी कवि श्री गुलाम रसूल जोश ने अपनी कश्मीरी कविताएँ पढ़ीं तथा जानेमाने डोगरी कवि श्री रविंद्र कौल ने उनका डोगरी अनुवाद प्रस्तुत किया
17 नवंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

प्रख्यात उर्दू कवि श्री खलील मामून ने अपनी उर्दू कविताएँ पढ़ीं तथा लब्ध प्रतिष्ठ अनुवादक श्री मेहर मंसूर ने उनका कन्नड़ अनुवाद प्रस्तुत किया
19 जनवरी 2019, बेंगलूरु

प्रख्यात डोगरी कवि तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री ध्यान सिंह ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा श्री सुधीर महाजन ने उनका अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया
24 जनवरी 2019, जम्मू, जे. एंड के.

कविसंधि

प्रख्यात हिंदी कवि डॉ. गंगा प्रसाद विमल
25 मई 2018, नई दिल्ली

प्रख्यात तमिळ लेखक श्री इरा. पचिप्पन
31 मई 2018, चेन्नई

प्रख्यात बाङ्ला कवि श्री पवित्र मुखोपाध्याय
14 जून 2018, कोलकाता

प्रख्यात मलयाळम् कवि प्रो. के. सच्चिदानंदन
16 जून 2018, बेंगलूरु

प्रख्यात संस्कृत कवि हरिराम आचार्य
22 जून 2018, जयपुर, राजस्थान

जानेमाने बोडो लेखक सरत चंद्र बर'
29 जून 2018, बस्का, असम

जानेमाने संस्कृत कवि डॉ. जनार्दन पांडेय 'मणि'
02 जुलाई 2018, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

जानेमाने मराठी कवि नारायण कुलकर्णी कवथेकर
06 जुलाई 2018, मुंबई

जानेमाने असमिया लेखक अनीस-उर-ज़मां
06 अगस्त 2018, गुवाहाटी, असम

प्रख्यात तेलुगु कवि सुंकिरेड्डी नारायण रेड्डी
24 अगस्त 2018, हैदराबाद, तेलंगाना

कविसंधि : श्यामलकांति दास
29 अगस्त 2018, कोलकाता

प्रख्यात तेलुगु कवयित्री जयप्रभा
19 सितंबर 2018, हैदराबाद, तेलंगाना

प्रतिष्ठित ओड़िया कवि श्रीनिवास उद्गाता
18 नवंबर 2018, बाल्लनगीर, ओड़िशा

प्रतिष्ठित डोगरी कवि ओम विद्यार्थी
17 दिसंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

प्रतिष्ठित डोगरी कवि शिवदेव सिंह सुशील
23 जनवरी 2019, जम्मू, जे. एंड के.

प्रतिष्ठित बोडो कवि विजय बगलारी
07 फ़रवरी 2019, सोनितपुर, असम

प्रतिष्ठित असमिया लेखक श्री अनुभव तुलसी
18 फ़रवरी 2019, नगाँव, असम

प्रख्यात असमिया कवि श्री दिलीप फूकन
26 मार्च 2019, गोलघाट, असम

भाषा सम्मेलन

भारतीय संस्कृति के संरक्षण में भोती भाषा का योगदान पर भाषा सम्मेलन
4-6 सिंतबर 2018, लेह, लद्दाख़

राभा भाषा सम्मेलन
14-15 सितंबर 2018, गोलपारा, असम

साहित्य मंच

कवि, विचारक, विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य केदानाथ सिंह को श्रद्धांजलि
03 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

सिंधी कवियों के साथ
19 अप्रैल 2018, ठाणे, महाराष्ट्र

आनंद ठाकोरे तथा सी.पी. सुरेंद्रन
14 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

हांस वर्नर वेस्लर के साथ साहित्य और अनुवाद : रचनात्मक, संपर्क और कला विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
17 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : नोमान शौक़ (उर्दू), मनीष कुमार सिंह (हिंदी), ताशी शेरपा (नेपाली), तथा विभा कुमारी (मैथिली)
19 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
23 अप्रैल 2018, बेंगळूरु

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
23 अप्रैल 2018, चेन्नै

साहित्य और स्वच्छता पर व्याख्यान
27 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

पर्यावरण और साहित्य
27 अप्रैल 2018, बेंगळूरु

साहित्य में स्वच्छता की अवधारणा
27 अप्रैल 2018, चेन्नै

स्वच्छता की आवश्यकता पर व्याख्यान
27 अप्रैल 2018, मुंबई

उर्दू-हिंदी कविता पाठ
08 मई 2018, मेरठ, उत्तर प्रदेश

साहित्य मंच
24 मई 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : मुखामुखम
09 जून 2018, त्रिवेंद्रम, केरल

जानेमाने हिंदी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
17 जून 2018, फरीदाबाद, हरियाणा

प्रतिष्ठित गुजराती लेखकों के साथ
17 जून 2018, भावनगर, गुजरात

मणिपुरी साहित्य में महिलाओं को किस प्रकार दर्शाया गया है, पर साहित्य मंच
19 जून 2018, इंफाल, मणिपुर

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2018, बेंगळूरु

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2018, कोलकाता

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2018, चेन्नै

प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी लेखकों के साथ साहित्य मंच
22 जून 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : गोपेश्वर सिंह तथा राजीव रंजन गिरी
29 जून 2018, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित मैथिली लेखकों के साथ साहित्य मंच
01 जुलाई 2018, जमशेदपुर, झारखंड

मणिपुरी साहित्य में स्थानिकता
15 जुलाई 2018, इंफाल, मणिपुर

मणिपुरी साहित्य में प्रगतिवाद
15 जुलाई 2018, इंफ़ाल मणिपुर

दलित भारतीय अंग्रेज़ी कवि
17 जुलाई 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : वासुमति रामासामी
18 जुलाई 2018, चेन्नै

साहित्य मंच : बलविंदर बरार, नछत्तर, गगनदीप शर्मा, कुलदीप कौर, कुलवीर गोजरा (प्रतिष्ठित पंजाबी लेखक)
18 जुलाई 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : कालिंदी चरण पाणिगृही
21 जुलाई 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

साहित्य मंच : मलयाळम् लेखकों से चर्चा
23 जुलाई 2018, कालिकट, केरल

साहित्य मंच : भारतीय सौंदर्यशास्त्रम्-पुनर्वर्णन
02 अगस्त 2018, कुराविलंगद, केरल

साहित्य मंच : पुष्पिता अवस्थी, लक्ष्मीकमल गेदम तथा प्रताप सिंह
08 अगस्त 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : कन्नड़ काव्य गमाखा
09 अगस्त 2018, बेंगळूरु

साहित्य मंच : 20वीं सदी का मलयाळम् उपन्यास और समालोचना
09 अगस्त 2018, कोज़हेनचेरी, केरल

साहित्य मंच
09 अगस्त 2018, सोलापुर, महाराष्ट्र

साहित्य मंच : सुश्री गिलि हाइमोविच, लक्ष्मी कानन तथा अलका त्यागी
10 अगस्त 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : रामपद चौधुरी
13 अगस्त 2018, कोलकाता

मणिपुरी काव्य पर खोंगजम युद्ध की प्रतिछाया
13 अगस्त 2018, इंफाल, मणिपुर

तनाव प्रबंधन योग सत्र
14 अगस्त 2018, नई दिल्ली

डॉ. मालाश्री लाल द्वारा संपादित पुस्तक कॉस्मोपोलिटन स्पेस्ज़ि का पुस्तक विमोचन
15 अगस्त 2018, बेंगळूरु

प्रख्यात कन्नड़ लेखक डॉ. सुमार्तींद्र नाडिग को श्रद्धांजलि
17 अगस्त 2018, बेंगळूरु

समालोचक के साथ संध्या : प्रतिष्ठित पंजाबी लेखक डॉ. जसपाल सिंह ने ''नए आधुनिक विश्व का उदय'' विषय पर व्याख्यान दिया
20 अगस्त 2018, चंडीगढ़

सद्भावना दिवस
20 अगस्त 2018, कोलकाता

साहित्य मंच : वचना चालुवलि माहु अनुभवी परंपरा (वचन आंदोलन तथा मिथक परंपरा)
21 अगस्त 2018, चमराजानगर, कर्नाटक

प्रतिष्ठित पंजाबी लेखकों के साथ साहित्य मंच
24 अगस्त 2018, श्रीनगर, जे. एंड के.

भारत-चीन साहित्यिक विनिमय : बहुभाषी चुनौती
24 अगस्त 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच
27 अगस्त 2018, नई दिल्ली

आधुनिक अनुवाद : नई चुनौतियाँ
31 अगस्त 2018, बेंगळूरु

कुवेम्पु और तेजस्वी के लेखन का पुनर्पाठ
01 सितंबर 2018, दोड्डाबल्लापुरा, कर्नाटक

लब्ध प्रतिष्ठ प्राकृत तथा संस्कृत, अमेरिका के डॉ. एनड्रियू ओल्लेट्ट द्वारा ''किंग हाला गाथा सप्तशती'' पर विशेष व्याख्यान
02 सितंबर 2018, बेंगळूरु

साहित्य मंच : श्री अभय के. तथा श्री संजय कुंदन के साथ
06 सितंबर 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : कवि रान्ना चम्पु के महाकाव्य ''गद्दायुद्ध'' पर काव्यानुसंधान द्रौपदी का चित्रांकन
08 सितंबर 2018, रामानगर, कर्नाटक

प्रतिष्ठित पंजाबी कवियों के साथ साहित्य मंच
15 सितंबर 2018, नई दिल्ली

स्वच्छता शपथ ग्रहण समारोह
18 सितंबर 2018, कोलकाता

मलयाळम् में कहानी-लेखन और सराहना
18 सितंबर 2018, कालिकट, केरल

वर्तमान वचन कवित्वम-सामाजिक ध्रुकपदम
18 सितंबर 2018, कुरनूल, आंध्र प्रदेश

लयात्मक मणिपुरी कविताएँ
23 सितंबर 2018, इंफ़ाल, मणिपुर

स्वच्छता पखवाड़ा अभियान
24 सितंबर 2018, कोलकाता

पश्च आधुनिक मलयाळम् कहानियों के सांस्कृतिक पहलू पर साहित्य मंच
25 सितंबर 2018, इरनाकुलम, केरल

एक समालोचक के साथ संध्या
27 सितंबर 2018, नई दिल्ली

स्वच्छता पर व्याख्यान
28 सितंबर 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : अनुवाद : भाषाओं के साथ व्यवहार
28 सितंबर 2018, बेंगळूरु

ऐतिहासिक बोडो उपन्यास
01 अक्तूबर 2018, कोकराझार, असम

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस
01 अक्तूबर 2018, नई दिल्ली

कन्नड़ साहित्य का इतिहास : नए आयाम
11 अक्तूबर 2018, गौरीबिदानूर, कर्नाटक

साहित्य मंच
12 अक्तूबर 2018, मुंबई

प्रतिष्ठित मलयाळम् कवियों के साथ कवि सम्मिलन
21 अक्तूबर 2018, कोची, केरल

असम में वर्तमान साहित्यिक दृश्य
22 अक्तूबर 2018, गुवाहाटी, असम

कवि मारुदाकासी
22 अक्तूबर 2018, थेल्लर, तमिलनाडु

मणिपुरी कविता दिवस
24 अक्तूबर 2018, बेंगळूरु

आईरिश कवयित्री सुश्री बेरनाडेट्टे गाल्लाघेर द्वारा कविता-पाठ
30 अक्तूबर 2018, नई दिल्ली

राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ ग्रहण
31 अक्तूबर 2018, कोलकाता

अनुवादकों का नगर : भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर चर्चा तथा जर्मन अनुवादकों से बातचीत
09 नवंबर 2018, कोलकाता

प्रतिष्ठित पंजाबी लेखकों के साथ साहित्य मंच
13 नवंबर 2018, नई दिल्ली

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह का उद्घाटन
14 नवंबर 2018, कोलकाता

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह तथा साहित्यिक कार्यक्रम– उद्घाटन कार्यक्रम
14 नवंबर 2018, थरिसूर, केरल

प्रतिष्ठित स्लोवेनियाई कवयित्री बारबरा पोगासनिक
14 नवंबर 2018, नई दिल्ली

भूमंडलीकरण और ओड़िया कविताएँ
18 नवंबर 2018, बाल्लनगीर, ओड़िशा

साहित्य मंच : मलयाळम् को सी.वी. रामन पिल्लै का योगदान
18 नवंबर 2018, त्रिवेंद्रम, केरल

लोक कथाएँ : वर्तमान समय में उनका शैक्षिक मूल्य
25 नवंबर 2018, काकचिंग, मणिपुर

तेलुगु-कन्नड बहुजन साहित्य-एक दृष्टिकोण
30 नवंबर 2018, बेंगळूरु

प्रतिष्ठित डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
01 दिसंबर 2018, कठुआ, जे. एंड के.

साहित्य, संस्कृति तथा संचार-गौरवग्रंथों पर पुनचर्चा-एक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण
07 दिसंबर 2018, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : बोडो काव्य
08 दिसंबर 2018, ज़िला-करबी अंगलौंग, असम

साहित्य मंच : पॉलमी सेनगुप्ता
11 दिसंबर 2018, कोलकाता

साहित्य मंच : आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल के साथ
13 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल का कोलकाता दौरा
14-19 दिसंबर 2018, कोलकाता

आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल के साथ गोल मेज़ चर्चा
17 दिसंबर 2018, कोलकाता

साहित्य मंच : भारतीय साहित्य पर ''वान थाऊजैंड वान नाइट्स'' पुस्तक का प्रभाव
18 दिसंबर 2018, अथावनाड, केरल

साहित्य मंच
19 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल से साहित्यिक वार्ता कार्यक्रम
20 दिसंबर 2018, मुंबई

साहित्य अकादेमी आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल के साथ साहित्यिक वर्ता कार्यक्रम
20 दिसंबर 2018, चेन्नई

मणिपुरी साहित्य के विकास के लिए मिति पंगल लेखक
22 दिसंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

समकालीन मणिपुरी साहित्य को हिंदी साहित्य का योगदान
22 दिसंबर 2018, इंफ़ाल, मणिपुर

कन्नड साहित्य में मलनाड जीवन और पर्यावरण
23 दिसंबर 2018, शिमोगा, कर्नाटक

साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को श्रद्धांजलि
26 दिसंबर 2018, कोलकाता

साहित्य अकादेमी की आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल से बातचीत
27 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

साहित्य मंच : सोफिया नाज़ तथा सोन्नेटे मंडल
27 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : कवि सम्मिलन
28 दिसंबर 2018, बिदर, कर्नाटक

साहित्य मंच : कुवेम्पु की पुनः सृष्टि
28 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

साहित्य मंच : गुलाम नबी गौहर
30 दिसंबर 2018, श्रीनगर, जे. एंड के.

साहित्य मंच : साहित्य अकादेमी की आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल से बातचीत (विषय : शुरुआत कहाँ है?– 19वीं शताब्दी में भारतीय, सिंगापुर)
31 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

प्रख्यात भौतिकविज्ञानी एंव लेखक मणिलाल भौमिक द्वारा व्याख्यान
04 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के 50 नव प्रकाशनों का पुस्तक मेले में कमल किशोर गोयनका द्वारा पुस्तक लोकार्पण
05 जनवरी 2019, नई दिल्ली

मणिपुरी लइनिंग लइशोल (भक्ति साहित्य)
05 जनवरी 2019, इंफाल, मणिपुर

आनंद कुमारस्वामी फ़ेलो नलिना गोपाल के साथ साहित्य मंच कार्यक्रम
06 जनवरी 2019, मुंबई

पुस्तक मेले में विभिन्न भारतीय भाषाओं के कवियों द्वारा बहुभाषी-पाठ
06 जनवरी 2019, नई दिल्ली

''रीडिंग एंड रीराइटिंग मिथ्स : क्रिएटिव एंगेजमेंट एंड क्रिटिकल रिस्पॉन्स इन मॉडर्न असमिया फिक्शन'' पर साहित्य मंच
07 जनवरी 2019, शिवसागर कॉमर्स कॉलेज, शिवसागर, असम

साहित्य मंच : बहुभाषी रचना-पाठ
07 जनवरी 2019, नई दिल्ली

''असमिया साहित्य पर संकट पर वार्ता तथा नई पीढ़ी के लेखकों के उत्तरदायित्व'' पर साहित्य मंच
09 जनवरी 2019, जोरहाट, असम

तमिळ लेखक प्रबंधन को श्रद्धांजलि
09 जनवरी 2019, चेन्नै

परिचर्चा : वर्तमान स्थिति में संस्कृति का पाठ (पुस्तक मेला)
10 जनवरी 2019, नई दिल्ली

पुस्तक मेले में विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित कवियों के साथ साहित्य मंच
11 जनवरी 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात बाङ्ला लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को श्रद्धांजलि
12 जनवरी 2019, कोलकाता

भारतीदासन के साहित्यिक कार्यों पर सांस्कृतिक प्रकाश
12 जनवरी 2019, पुदुचेरी

साहित्य मंच : बहुभाषी रचना-पाठ (नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला)
12 जनवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : बहुभाषी काव्य-संध्या
17 जनवरी 2019, कोलकाता

देवेंदु पालित को श्रद्धांजलि देने हेतु शोक-सभा
24 जनवरी 2019, कोलकाता

साहित्य मंच : राष्ट्रकवि कुवेम्पु साहित्यावलोकन
24 जनवरी 2019, मुदिगेरे, कर्नाटक

साहित्य मंच : भाषा और साहित्य
24 जनवरी 2019, रासिपुरम, तमिलनाडु

साहित्य मंच : बेंद्रे कृत काव्य के अनुवाद
25 जनवरी 2019, बेंगळूरु

धरोहर : राजस्थानी साहित्य की विरासत (जयपुर कला उत्सव)
25 जनवरी 2019, जयपुर, राजस्थान

साहित्य मंच : प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी लेखक डॉ. ताबिश ख़ैर ने अपनी रचनाओं का पाठ किया
29 जनवरी 2019, सूरत, गुजरात

साहित्य मंच : सरगरमवदम (सृजनात्मक व्याख्यान-मलयाळम् लेखकों के आमने-सामने
01 फ़रवरी 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : असमिया भाषा और साहित्य का भविष्य तथा विकास का मार्ग
02 फ़रवरी 2019, नगाँव, असम

नौ भाषाओं में 50 प्रकाशनों का लोकार्पण
05 फ़रवरी 2019, कोलकाता

साहित्य मंच : महाकवि भारती
05 फ़रवरी 2019, ज़िला थूथूकुडी, तमिलनाडु

प्रख्यात हिंदी लेखिका एवं साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्य सुश्री कृष्णा सोबती की शोक सभा
07 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फ़ेलो (2017) श्री सनथन अयाथुरइ के साथ गोलमेज़ परिचर्चा
08 फ़रवरी 2017, कोलकाता

साहित्य मंच : नयायुग एवं नया साहित्य तथा पी. सुरेश द्वारा कदामनित्तास रामकृष्णन पर लिखित मलयाळम् विनिबंध का लोकार्पण
09 फ़रवरी 2019, कालिकट, केरल

साहित्य मंच कार्यक्रम
10 फ़रवरी 2019, कालिकट, केरल

साहित्य मंच : कथानेरम- कहानी-पाठ एवं चर्चा
12 फ़रवरी 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

अतिन बंद्योपाध्याय को श्रद्धांजलि देने के लिए शोक सभा
13 फ़रवरी 2019, कोलकाता

साहित्य मंच : अफ़सार अहमद : जीवन और कृतित्व
15 फ़रवरी 2019, कोलकाता

साहित्य मंच : साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फ़ेलो श्री सांतन अय्यातुरै द्वारा रचना–पाठ एवं चर्चा
13 फ़रवरी 2019, बेंगळूरु

साहित्य मंच : कविता-पाठ
17 फ़रवरी 2019, अगरतला, त्रिपुरा

सुकुमार अषिकोडे के योगदानों पर व्याख्यान
17 फ़रवरी 2019, अदूर, केरल

समकालीन असमिया साहित्य : विचार एवं अपेक्षा
18 फ़रवरी 2019, नगाँव, असम

सांतन अय्यातुरै (साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फ़ेलो) के साथ साहित्यिक विमर्श
19 फ़रवरी 2019, चेन्नई

साहित्य मंच : अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
21 फ़रवरी 2019, चेन्नई

प्रख्यात हिंदी समालोचक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. नामवर सिंह के सम्मान में श्रद्धांजलि सभा
21 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : विज्ञान और अनुवाद
22 फ़रवरी 2019, बेंगळूरु

साहित्य और दृश्य संभावनाओं के रूप में वर्तमान समय के नाटक
23 फ़रवरी 2019, चिंतामणि, कर्नाटक

आधुनिक और सामाजिक विकास-19वीं शताब्दी और तेलुगु समाज
23 फ़रवरी 2019, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश

साहित्य मंच : पुदुचेरी के कवि तथा उनका साहित्यिक योगदान
23 फ़रवरी 2019, पुदुचेरी

साहित्य अकादेमी के प्रेमचंद फ़ेलो सांतन अय्यातुरै से साहित्यिक विमर्श
23 फ़रवरी 2019, पुदुचेरी

साहित्य मंच : नीलकांत दास
05 मार्च 2019, पुरी, ओड़िशा

साहित्य मंच : 21वीं शताब्दी में असमिया कविता
05 मार्च 2019, पुरी, ओड़िशा

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
08 मार्च 2019, बोरहाट, असम

असमिया साहित्य की हालिया प्रकृति और प्रवृत्तियाँ
16 मार्च 2019, डिब्रूगढ़, असम

केरल में स्थान के नामों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व पर साहित्य मंच कार्यक्रम
17 मार्च 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : गाँधी स्मृति
21 मार्च 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

विश्व कविता दिवस के अवसर पर कवि सम्मिलन कार्यक्रम का आयोजन
21 मार्च 2019, चेन्नई

साहित्य मंच : डोगरी कविता
23 मार्च 2019, जम्मू, जे. एंड के.

ओड़िशा साहित्य में जीवनी और आत्मकथा
24 मार्च 2019, जारका, धर्मशाला, ओड़िशा

साहित्य मंच : पं. रघुनाथ मुर्मू कृत बिदु चंदन : स्वतंत्रता के बाद के युग में संतालियों के मध्य सामाजिक जागृति में इसका महत्व
24 मार्च 2019, डिब्रगढ़, असम

साहित्य मंच : समकालीन तमिळ कविता
24 मार्च 2019, कोयंबटूर, तमिलनाडु

साहित्य मंच : अल्लामा प्रभु और कबीर के अनुवाद
29 मार्च 2019, बेंगळूरु

लोक : विविध स्वर

खुमुंग एशेइ मणिपुरी देशज सांस्कृतिक प्रस्तुति
22 सितंबर 2018, इंफाल मणिपुरी

घुबकुदू पारंपरिक ओड़िशा नृत्य
18 नवंबर 2018, बालनगीर, ओड़िशा

कुमरा लिंगु एवं उनकी मंडली द्वारा अदिलाबाद के राज गोंडा के सदर भिडी की प्रस्तुति तथा बिद्दिदका राइकन्ना एवं उनकी मंडली द्वारा सावरा थोंगसेंग नृत्य की प्रस्तुति
22 दिसंबर 2018, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

आरजीएमआरएचएसएस नूलपुज़हा द्वारा कट्टुनइक्का जनजातीय गीतों की प्रस्तुति
24 जनवरी 2019, वायनाड, केरल

मित्रता पर कुशान नृत्य प्रस्तुति
27 जनवरी 2019, बाल्लथी, हावड़ा

विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान के साथ श्री लीलाधर ब्रह्म ने पारंपरिक लोक बोडो नृत्यों की प्रस्तुति
08 फ़रवरी 2019, सोनितपुर, असम

ख्रंगजम पर्व और खुबाक एशेइ
16 फ़रवरी 2019, ग्राम गौरनगर, खोवइ, त्रिपुरा

पूथन और थीरा तथा नाडन पट्टकळ चिलमबोली की प्रस्तुति
14 मार्च 2019, कसरगौड़, केरल

लोक : विविध स्वर
17 मार्च 2019, अलप्पुज़हा, केरल

लेखक से भेंट

प्रख्यात बोडो लेखिका अंजलि नाज़ारी
30 जून 2018, कोकराझार, असम

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री सी. राधाकृष्णन
15 जुलाई 2018, बेंगळूरु

प्रख्यात गुजराती लेखिका सुश्री वर्षा अदलजा
25 अगस्त 2018, भुज, गुजरात

प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री नृसिंहा प्रसाद भादुरी
30 अगस्त 2018, कोलकाता

प्रतिष्ठित गुजराती लेखक डॉ. धीरेंद्र मेहता
15 सितंबर 2018, राजकोट, गुजरात

प्रख्यात मणिपुरी लेखक श्री जोधा चंद्र सनासम
22 सितंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

प्रख्यात मलयाळम् लेखिका डॉ. एम. लीलावती
21 अक्तूबर 2018, कोची, केरल

प्रख्यात मराठी लेखक डॉ. नंदा खेर
22 अक्तूबर 2018, अम्रावती, महाराष्ट्र

प्रख्यात ओड़िशा लेखक डॉ. प्रमोद कुमार मोहांती
01 दिसंबर 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

प्रतिष्ठित असमिया लेखक श्री रंग बोंग तेरोंग
08 दिसंबर 2018, दिफ़ु, असम

प्रख्यात सिंधी लेखक श्री ढोलन राही
09 फ़रवरी 2019, अजमेर, राजस्थान

प्रख्यात असमिया लेखक श्री कुल सइकिया
19 फ़रवरी 2019, नगाँव, असम

प्रख्यात मराठी लेखक डॉ. प्रभा गानोरकर
08 मार्च 2019, मुंबई

प्रख्यात मराठी लेखक डॉ. अनंत मनोहर
26 मार्च 2019, बेलगाँव, महाराष्ट्र

मुलाक़ात

ओड़िया लेखक
29 अप्रैल 2018, कटक, ओड़िशा

युवा बाङ्ला लेखक
27 जुलाई 2018, कोलकाता

युवा असमिया लेखक
18 अगस्त 2019, जोरहाट, असम

युवा असमिया लेखक
18 सितंबर 2018, डिब्रूगढ़, असम

युवा अंग्रेज़ी कवि
28 सितंबर 2018, कोलकाता

युवा बोडो लेखक
29 सितंबर 2018, गुवाहाटी, असम

युवा असमिया लेखक
07 दिसंबर 2018, गुवाहाटी, असम

युवा कश्मीरी लेखक
08 जनवरी, जम्मू, जे. एंड के.

युवा असमिया लेखक
15 मार्च 2019, ज़िला विश्वनाथ, असम

युवा असमिया लेखक
16 मार्च 2019, माजुली, असम

युवा ओड़िया लेखक
17 मार्च 2019, भवानीपटना, ओड़िशा

बहुभाषी सम्मिलन

बहुभाषी कवि सम्मिलन
18 जून 2018, नई दिल्ली

बहुभाषी लेखक सम्मिलन
25-26 अगस्त 2018, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल

अखिल भारतीय बहुभाषी कवि सम्मिलन
02 अक्तूबर 2018, नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 नवंबर 2018, नई दिल्ली

राष्ट्रीय कविता उत्सव
24 दिसंबर 2018, कोलकाता

अखिल भारतीय बहुभाषी कविता सम्मिलन
8-9 जनवरी 2019, बस्का, बोडोलैंड, असम

बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2019, कोलकाता

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

पृथ्वी : काव्योत्सव (बहुभाषी)
21 मार्च 2019, बेंगळूरु

नारी चेतना

विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठित लेखिकाएँ
24 जुलाई 2018, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित सिंधी लेखिकाएँ
02 अगस्त 2018, मुंबई

स्त्री कविता में लिंग के मुद्दे
11 अगस्त 2018, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित संताली लेखिकाएँ
31 अगस्त 2018, कोलकाता

सुश्री कल्याणी राजन, सुश्री श्रद्धा आदित्य वीर सिंह, सुश्री रति अग्निहोत्री तथा सुश्री पॉलमी सेनगुप्ता
26 सितंबर 2018, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित सिंधी लेखिकाएँ
28 सितंबर 2018, पुणे, महाराष्ट्र

प्रतिष्ठित सिंधी लेखिकाएँ
09 नवंबर 2018, नई दिल्ली

विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठित लेखिकाएँ
10 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित मलयाळम् लेखिकाएँ
13 दिसंबर 2018, नीलांबूर, केरल

प्रतिष्ठित कन्नड लेखिकाएँ
28 दिसंबर 2018, चिक्कामंगळूरु, कर्नाटक

विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठित लेखिकाएँ (पुस्तक मेला)
05 जनवरी 2019, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित तमिळ लेखिकाएँ
07 जनवरी 2019, कल्लाकुरिचि, तमिलनाडु

प्रतिष्ठित सिंधी महिला लेखिकाएँ
01 फ़रवरी 2019, भोपाल, मध्यप्रदेश

नारी चेतना - स्त्री अस्मिता
15 फ़रवरी 2019, चमराजनगर, कर्नाटक

प्रतिष्ठित तेलुगु लेखिकाएँ
04 मार्च 2019, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

भारतीय साहित्य में चित्रित महिला मुक्ति पर नारी चेतना
08 मार्च 2019, बेंगळूरु

प्रतिष्ठित मलयाळम् लेखिकाएँ
08 मार्च 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

नारी चेतना
08 मार्च 2019, चेन्नै

प्रतिष्ठित बोडो लेखिकाएँ
16 मार्च 2019, चिरंग, बीटीएडी, असम

महिला समानता, संघर्ष एवं सार्वभौमिक प्रभाव
29 मार्च 2019, बेंगळूरु

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2018

14-20 नवंबर 2018 : अकादेमी ने अपने नई दिल्ली तथा बेंगळूरु, कोलकाता, मुंबई एवं चेन्नै स्थित क्षेत्रीय उप-कार्यालयों में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2018 का आयोजन किया तथा पुस्तक सप्ताह के दौरान निम्नलिखित साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया

नई दिल्ली

जे.एन.यू. में साहित्य मंच
15 नवंबर 2018, नई दिल्ली

आई.आई.टी. में साहित्य मंच
15 नवंबर 2018, नई दिल्ली

मुल्कराज आनंद और केदारनाथ सिंह पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
19 नवंबर 2018, नई दिल्ली

भीष्म साहनी और शशि देशपांडे पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
20 नवंबर 2018, नई दिल्ली

तंजावूर, तमिलनाडु

डी. जयकांतन तथा सुब्रह्मण्य भारती पर वृतचित्रों का प्रदर्शन
15 नवंबर 2018, तंजावूर, तमिलनाडु

प्रतिष्ठित तमिळ लेखकों के साथ कवि सम्मिलन
16 नवंबर 2018, तंजावूर, तमिलनाडु

इंद्रा पार्थसारथी तथा नील पद्मनाभन पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
17 नवंबर 2018, तंजावूर, तमिलनाडु

पोन्नेल्लन और कमला दास पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
18 नवंबर 2018, तंजावूर, तमिलनाडु

अशोकमित्रन तथा वाइक्कोम मोहम्मद बशीर पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
19 नवंबर 2018, तंजावूरप, तमिलनाडु

''साहित्य पर मेरे विचार'' पर विचार-विमर्श
20 नवंबर 2018, तंजावूर, तमिलनाडु

त्रिशूर, केरल

तकषि़ शिवशंकर पिल्लै तथा यू. आर. अंनतमूर्ति पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
15 नवंबर 2018, त्रिशूर, केरल

एम.टी. वासुदेवन नायर, डी. जयकांतन तथा कमलादास पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
16 नवंबर 2018, त्रिशूर, केरल

वैक्कं मोहम्मद बशीर तथा बालमणि अम्मा पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
17 नवंबर 2018, त्रिशूर, केरल

कहानी-पाठ (राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह तथा साहित्यिक कार्यक्रम)
18 नवंबर 2018, त्रिशूर, केरल

अय्यप्प पणिक्कर, ओ.वी. विजयन तथा ओ.एन.वी. कुरुप पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
19 नवंबर 2018, त्रिशूर, केरल

साहित्य और जीवन पर विचार-विमर्श (राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह तथा साहित्यिक कार्यक्रम)
20 नवंबर 2018, त्रिशूर, केरल

पूर्वोत्तर तथा क्षेत्रीय सम्मिलन

पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी महिला लेखक सम्मिलन
6-7 जुलाई 2018, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मिलन
14-15 जुलाई 2018, भोपाल, मध्य प्रदेश

पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मिलन
21-22 जुलाई 2018, पटना, बिहार

पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी लेखक सम्मिलन
4-5 अगस्त 2018, भुज, गुजरात

पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी लेखक सम्मिलन
10 नवंबर 2018, कोची, केरल

पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर की भाषाओं के प्रतिष्ठित कवियों के साथ
03 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी : पूर्वी तथा उत्तरी भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ (पुस्तक मेला)
09 जनवरी 2019, नई दिल्ली

पूर्वोत्तर तथा पूर्वी कवि सम्मिलन
05 फ़रवरी 2019, कोलकाता

पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी लेखिका सम्मिलन
16-17 फ़रवरी 2019, मुंबई

पूर्वोत्तर लेखक सम्मिलन
02 मार्च 2019, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखिका सम्मिलन)
26-27 मार्च 2019, आगरा, उत्तर प्रदेश

व्यक्ति और कृति

एच. नंदकुमार शर्मा
19 जून 2018, इंफाल, मणिपुर

प्रख्यात शिक्षाविद् तथा सामाजिक कार्यकर्ता आई.डी. सोनी
15 सितंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

प्रतिष्ठित सिंधी गायिका एवं लोक नर्तकी विशिनी इस्रानी
22 सितंबर 2018, आदिपुर, कच्छ, गुजरात

जानेमाने चित्रकार प्रभाकर कोलटे ने जिन पुस्तकों ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए
14 नवंबर 2018, मुंबई

जानेमाने चिकित्सक आनंदमोहन सोरेन
15 दिसंबर 2018, जामताड़ा, झारखंड

प्रख्यात मूर्तिकार झनक झनकार नाज़ारी
11 जनवरी 2018, असम

ओड़िशा सरकार के पूर्व महाधिवक्ता जगन्नाथ पटनायक
03 मार्च 2019, कटक, ओड़िशा

प्रवासी मंच

अमेरिका से प्रतिष्ठित हिंदी लेखिका कविता वाचकनवी तथा अनिल प्रभा कुमार
29 अक्तूबर 2018, नई दिल्ली

अमेरिका से जानीमानी अंग्रेज़ी एवं हिंदी लेखिका कल्पना सिंह चिटनीस
03 जनवरी 2019, नई दिल्ली

अमेरिका से डॉ. कमला दत्त तथा ऑस्ट्रेलिया से सुभाष जयरथ
09 जनवरी 2019, नई दिल्ली

अमेरिका से प्रतिष्ठित बाङ्ला कवि गौतम दत्ता
18 फ़रवरी 2019, कोलकाता

राजभाषा

राजभाषा कार्यशाला
27 जून 2018, कोलकाता

राजभाषा कार्यशाला
27 जून 2018, नई दिल्ली

हिंदी सप्ताह
14-24 सितंबर 2018, नई दिल्ली

हिंदी दिवस
19 दिसंबर 2018, कोलकाता

हिंदी दिवस
19 सितंबर 2019, चेन्नई

संगोष्ठियाँ

कालिंदी चरण पाणिगृही पर संगोष्ठी
21 जुलाई 2018, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर

प्रकृति और साहित्य पर संगोष्ठी
31 जुलाई - 01 अगस्त 2018, कोलकाता

माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्ति और अभिव्यक्ति पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
1-2 सितंबर 2018, उदयपुर, राजस्थान

मनमोहन झा जन्मशवार्षिकी संगोष्ठी
1-2 सितंबर 2018, मधुबनी, बिहार

रमनभाई नीलकांत की 150वीं जन्मशती पर संगोष्ठी
1-2 सितंबर 2018, अहमदाबाद, गुजरात

नटबरा समंतराय जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
09 सितंबर 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

सिद्धइया पुरानिक जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
15 सितंबर 2018, बगलकोट, कर्नाटक

मोही-उद्-दीन की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
15-16 सितंबर 2018, गुलमर्ग, जे. एंड के.

''साहित्य में पर्यावरण, भूमंडलीकरण तथा गाँधीवादी दृष्टि का औचित्य'' पर संगोष्ठी
23 सितंबर 2018, अहमदाबाद, गुजरात

''हिंदी में उत्तर-पूर्व'' पर संगोष्ठी
24-25 सितंबर 2018, इटानगर, अरुणाचल प्रदेश

डोगरी साहित्य में पर्यावरण जागरूकता पर संगोष्ठी
28-29 सितंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

आधुनिकतावाद और बोडो नाटक पर संगोष्ठी
30 सितंबर 2018, कोकराझार, असम

बाङ्ला पत्र-पत्रिकाओं के 200 वर्ष होने पर बाङ्ला लघु पत्रिका के समन्वय पर संगोष्ठी
4-5 अक्तूबर 2018, कोलकाता

विंदा करिंदीकर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
6-7 अक्तूबर 2018, मुंबई

''जनभाषा संस्कृतम्-भारतीय जनजात्यश्च'' पर संगोष्ठी
10-11 अक्तूबर 2018, कोलकाता

सैयद अब्दुल मलिक जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
29-30 अक्तूबर 2018, डिब्रूगढ़, असम

''नेपाली लोक साहित्य'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
13-14 नवंबर 2018, ताडोंग, सिक्किम

इंद्र भोजवानी की जन्मशतवार्षिकी
18 नवंबर 2018, अहमदाबाद, गुजरात

अब्दुर रहमान बिजनौरी : जीवन और कार्य
23-24 नवंबर 2018, नई दिल्ली

मणिपुरी साहित्य की विभिन्न शैलियों की समालोचनात्मक समीक्षा
24-25 नवंबर 2018, इंफाल मणिपुर

भारत में सिंधी साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर संगोष्ठी
25-26 नवंबर 2018, आदिपुर, कच्छ, गुजरात

नएपन की परंपरा और परंपरा का नयापन : पंजाबी साहित्य
30 नवंबर-1 दिसंबर 2018, पटियाला, पंजाब

बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' की जन्मशतवार्षिकी
1-2 दिसंबर 2018, भोपाल, मध्य प्रदेश

प्रोफ़ेसर श्रीरामचंद्र दास की जन्मशतवार्षिकी
02 दिसंबर 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

इतिहास के स्रोत के रूप में कार्बी लोककलाओं की खोज
9-10 दिसंबर 2018, दिफू, असम

तमिळ संगीत परंपराएँ तथा नृत्य कला पर संगोष्ठी
11-12 दिसंबर 2018, कोयंबटूर, तमिलनाडु

गोराचंद टुडु की जन्मशतवार्षिकी
14 दिसंबर 2018, दुमका, झारखंड

श्री रामानुजाचार्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
14-15 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

बी.एच. श्रीधर की जन्मशतवार्षिकी
22 दिसंबर 2018, ज़िला उत्तर कन्नड़, कर्नाटक

फ़ैज़ल कश्मीरी की जन्मशतवार्षिकी
23-24 दिसंबर 2018, जम्मू, जे.एंड के.

पूर्वोत्तर में हिंदी
24-25 दिसंबर 2018, इटानगर,
अरुणाचल प्रदेश

मणिपुरी साहित्य की विभिन्न विधाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण
24-25 नवंबर 2018, इंफ़ाल, मणिपुर

भारतीय भाषाएँ : हिंदी और संस्कृति
29 दिसंबर 2018, गुवाहाटी, असम

कालीचरण ब्रह्म की जन्मशतवार्षिकी
19-20 जनवरी 2018, कोकराझार, असम

केरल आदिवासी बोली और साहित्य
24 जनवरी 2019, वायनाड, केरल

भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में कोंकणी भाषा को शामिल किए जाने की रजत जयंती के अवसर पर संगोष्ठी
18-19 फ़रवरी 2019, गोवा

प्रीतम सिंह की जन्मशतवार्षिकी
25 फ़रवरी 2019, अमृतसर, पंजाब

राजस्थानी कहानी : पारंपरिक दृष्टि और आधुनिकता की पहचान
25-26 फ़रवरी 2019, बीकानेर, राजस्थान

संस्कृत साहित्य तथा भारतीय साहित्य के मध्य अंतर्संबंध
1-2 मार्च 2019, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

तेलुगु साहित्य और संस्कृति पर गाँधी का प्रभाव
2-3 2019, अवनीगड्डा, आंध्र प्रदेश

चंद्रमणि दास की जन्मशतवार्षिकी
03 मार्च 2019, कटक, ओड़िशा

भक्ति साहित्य और भारतीय समाज
4-5 मार्च 2019, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

मलयाळम् कहानियों का उद्गम और विकास
12-14 मार्च 2019, कासरगोड, केरल

भारत की संकटमयी परंपराएँ
16-17 मार्च 2019, सूरत, गुजरात

कश्मीरी साहित्य में हास्य
18-19 मार्च 2019, बनीहाल, जे. एंड के.

श्रीमंत शंकरदेव की स्मृति में संगोष्ठी
23-24 मार्च 2019, गुवाहाटी, असम

प्रफुल्लदत्त गोस्वामी की जन्मशतवार्षिकी
25 मार्च 2019, गुवाहाटी, असम

परिसंवाद

हाशिए का स्वर : भारतीय दलित साहित्य
14 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

''जिन पुस्तकों ने बदला मेरा जीवन''
23 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

प्राचीन ग्रंथों में स्वच्छता की अवधारणा
24 अप्रैल 2018, नई दिल्ली

ओड़िया गीतों पर परिसंवाद
29 अप्रैल 2018, कटक, ओड़िशा

भारतीय साहित्य में योगदर्शन पातंजलि योगदर्शन
21 जून 2018, नई दिल्ली

मैथिली कहानियों की प्रवृत्तियाँ
30 जून 2018, सरायकेला, झारखंड

मैथिली कविता में समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ
01 जुलाई 2018, जमशेदपुर, झारखंड

प्राचीन मणिपुरी लिपियों में संस्कृति का प्रतिबिंब
16 जुलाई 2018, इंफाल, मणिपुर

भक्तकवि दीनाकृष्ण दास पर परिसंवाद
22 जुलाई 2018, बालसोर, ओड़िशा

गुजराती लोककथा संपादक विमर्श
27 जुलाई 2018, वल्लभ, विद्यासागर, गुजरात

आधुनिक तमिळ और मलयाळम् तुलनात्मक कहानियाँ
13 अगस्त 2018, माहे, पुदुचेरी

स्वतंत्रता की सीमाएँ विषय पर परिसंवाद
15 अगस्त 2018, नई दिल्ली

राजस्थानी गीतों में युगबोध
18 अगस्त 2018, बूंदी, राजस्थान

बोडो कविता : पाठकों तथा समालोचकों की प्रतिक्रिया
20 अगस्त 2018, कोकराझार, असम

दलित साहित्य : वर्तमान परिदृश्य
24 अगस्त 2018, वाइजपुर, महाराष्ट्र

नेपाली साहित्य में प्रयोगात्मक लेखन
24 अगस्त 2018, कुर्सियोंग, पश्चिम बंगाल

जम्मू कश्मीर दा पंजाबी गल्प
24 अगस्त 2018, श्रीनगर, जे. एंड के.

उर्दू अफ़साने में हुबलवतनी
25 अगस्त 2018, मेरठ, उत्तर प्रदेश

धर्म और साहित्य
28 अगस्त 2018, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु

संताली निबंध
31 अगस्त 2018, कोलकाता

नेपाली साहित्य के विकास में उत्तर-पश्चिम भारत का योगदान
02 सितंबर 2018, देहरादून, उत्तरखंड

संगम से समकालीन युग तक महिला लेखिकाओं के स्वर
07 सितंबर 2018, चेन्नै

उत्कलगौरव मधुसुदन दास
08 सितंबर 2018, कटक, ओड़िशा

तेलुगु में यात्रा साहित्य
09 सितंबर 2018, काकिनाड़, आंध्र प्रदेश

अन्नमभट्ट एवं तारकसंग्रह
10 सितंबर 2018, अरावल्ली, गुजरात

संताली लिपि : चुनौतियाँ और समाधान
15 सितंबर 2018, गुवाहाटी, असम

संताली भाषा एवं साहित्य में शोध की स्थिति
16 सितंबर 2018, तेजपुर, असम

साहित्यिक अनुवाद : समस्याएँ, काव्य और राजनीति
24 सितंबर 2018, कोलकाता

मलयाळम् के लोकप्रिय उपन्यास
29 सितंबर 2018, कालिकट, केरल

सामाजिक बदलाव : तेलुगु एवं कन्नड़ कहानियाँ
29 सितंबर 2018, हिंदुपुर, आंध्र प्रदेश

एस.एस. नरूला पर परिसंवाद
29 सितंबर 2018, लुधियाना, पंजाब

बोडो नाटक में आधुनिकतावाद
30 सितंबर 2018, कोकराझार, असम

कश्मीरी साहित्य में कालजयी मर्श का महत्व
04 अक्तूबर 2018, मगाम, बडगाम,
जे. एंड के.

21वीं शताब्दी के लोकप्रिय उर्दू उपन्यास
06 अक्तूबर 2018, बेंगळूरु, कर्नाटक

बाङ्ला साहित्य में कवि यात्रा का योगदान
11 अक्तूबर 2018, कोलकाता

उत्तर-आंध्र का तेलुगु साहित्य
14 अक्तूबर 2018, श्रीकाकुलम,

आंध्र प्रदेश विगत पाँच वर्षों में सिंधी ग़ज़ल के चेहरे और चरण
14 अक्तूबर 2018, मुंबई

डोगरी में छंदमुक्त कविता की स्वीकृति और स्थिति
19 अक्तूबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

संस्कृत में कहानी सुनाने की परंपरा
20 अक्तूबर 2018, मैसूरु, कर्नाटक

मलयाळम् कविता पर परिसंवाद
21 अक्तूबर 2018, कोच्ची, केरल

आधुनिक तेलुगु साहित्य में दलित नारीवाद
24 अक्तूबर 2018, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

मीडिया और साहित्य
24 अक्तूबर 2018, चेन्नई

समकालीन उर्दू ग़ज़ल की प्रवृत्तियाँ
27 अक्तूबर 2018, पटना, बिहार

नदी संस्कृति तथा भारतीय साहित्य
27 अक्तूबर 2018, इंदौर, मध्य प्रदेश

तुलनात्मक साहित्य और तुलनात्मक अध्ययन
31 अक्तूबर 2018, तेजपुर, असम

साहित्य में भारतीयता का विचार
31 अक्तूबर 2018, नई दिल्ली

गुलाम नबी फ़िराक़ पर परिसंवाद
10 नवंबर 2018, श्रीनगर, जे. एंड के.

दुखांतिक दौरां दा पंजाबी साहित्य
12 नवंबर 2018, नई दिल्ली

बाल साहित्य का विकास
15 नवंबर 2018, गांतोक, सिक्किम

विगत पाँच वर्षों में सिंधी कहानी की दशा और दिशा
16 नवंबर 2018, अजमेर, राजस्थान

आधुनिक ओड़िया साहित्य में लोकतत्त्व
17 नवंबर 2018, संबलपुर, ओड़िशा

नीलबीर शर्मा शास्त्री के जीवन और कार्यों पर परिसंवाद
26 नवंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

शंकरदास स्वामीगळ की 150वीं जन्मशतवार्षिकी
27 नवंबर 2018, पुदुचेरी

स्व, राष्ट्र तथा असमिया में औपनिवेशिक जीवन लेखन में कथन
29 नवंबर 2018, तेजपुर, असम

अविभाजित दारंग, अविभाजित कामरूप, गोलपाड़ा, उत्तर बंगाल तथा अविभाजित नागाँव की बोडो स्थानीय बोलियाँ
08 दिसंबर 2018, कार्बी आंगलौंग, असम

वर्तमान मराठी कहानी पर परिसंवाद
09 दिसंबर 2018, मुंबई

संताली यात्रा-वृत्तांतों पर परिसंवाद
15 दिसंबर 2018, जामताड़ा, झारखंड

कोंकणी 2000-2018, में युवा लेखन
17 दिसंबर 2018, गोवा

द्रविड़ साहित्य का बौद्ध धर्म का प्रभाव
18 दिसंबर 2018, तिरुवारू, तमिलनाडु

एस. भानुमति देवी के जीवन और कार्यों पर परिसंवाद
23 दिसंबर 2018, इंफाल, मणिपुर

मणिपुरी साहित्य में कहानी का विकास
24 दिसंबर 2018, इंफाल मणिपुर

मीरजी अन्नाराय की जन्मशतवार्षिकी
27 दिसंबर 2018, उजीरे, कर्नाटक

मर्ढेकर के बाद मराठी कविता में बदलाव
27 दिसंबर 2018, सोलापुर, महाराष्ट्र

राजस्थानी में महिला लेखन
28 दिसंबर 2018, सालासर, राजस्थान

राजस्थानी नाटक पर परिसंवाद
29 दिसंबर 2018, सुजानगढ़, राजस्थान

आधुनिक राजस्थानी कविता
13 जनवरी 2019, बंसवाड़ा, राजस्थान

संताली साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव
19 जनवरी 2019, बारीपदा, ओड़िशा

पश्चिमी भारतीय साहित्य पर पर्यावरण का प्रतिबिंब
21 जनवरी 2019, वसई, महाराष्ट्र

आधुनिक विश्व व्यवस्था में साहित्य की प्रासंगिकता
22 जनवरी 2019, जम्मू, जे. एंड के.

डोगरी ग़ज़ल दा शिल्प ते कथ्य उर्दू ग़ज़ल दे हवाले कन्ने
23 जनवरी 2019, जम्मू, जे. एंड के.

कोंकणी में महिला साहित्य
28 जनवरी 2019, मंगळूरु, कर्नाटक

बसवराज कट्टिमणि की जन्मशती
31 जनवरी 2019, नई दिल्ली

सिंधी कविता के विगत पाँच वर्ष चेहरे एवं चरण
03 फ़रवरी 2019, नागपुर, महाराष्ट्र

स्वातंत्र्योत्तर मराठी कथा के बदलते विषय
08 फ़रवरी 2019, सोलापुर, महाराष्ट्र

साहित्य और मीडिया
12 फ़रवरी 2019, राजकोट, गुजरात

बी.आर. राजम अय्यर तथा आरंभिक तमिळ उपन्यास
12 फ़रवरी 2019, गाँधीग्राम, तमिलनाडु

भारत में अंग्रेज़ी अध्ययन पर पुनर्विचार : सांस्कृतिक अध्ययन की बारी और उसकी संभावनाएँ
14 फ़रवरी 2019, बेंगळूरु

पट्टाभी (टी. पट्टाभीरामी रेड्डी) की जन्मशती
19 फ़रवरी 2019, नेल्लोर, आंध्र प्रदेश

असमिया साहित्यिक समालोचना की वर्तमान प्रवृत्तियाँ
19 फ़रवरी 2019, नगाँव, असम

आधुनिकता का अनुवाद : भारत में साहित्यिक संस्कृतियों का अध्ययन
20 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

ओड़िया में तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन : भूतकाल तथा वर्तमानकाल
05 मार्च 2019, भुवनेश्वर, ओड़िशा

युवा लेखकों का बोडो भाषा और साहित्य को योगदान
15 मार्च 2019, जे.एन. कॉलेज, बोको

तमिळ पत्रिकाएँ : 1850-1920 (तमिळ अध्ययन का संदर्भ)
22 मार्च 2019, चेन्नई

डोगरी नुक्कड़ नाटक : डुग्गर समाज पर उनका प्रभाव
22 मार्च 2019, जम्मू, जे. एंड के.

असमिया साहित्य में इतिहास की पड़ताल
26 मार्च 2019, गोलाघाट, असम

मेरे झरोखे से

अर्पणा मोहांती द्वारा अर्चना नायक पर व्याख्यान
30 अप्रैल 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

प्रख्यात सिंधी लेखक सुश्री संध्या कुंदनानी द्वारा श्री बंसी खूबचंदनानी के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
25 मई 2018, मुंबई

श्री एम. के. रैना द्वारा स्वर्गीय श्री मोतीलाल केमु के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
28 मई 2018, जम्मू, जे. एंड के.

विख्यात बाङ्ला लेखक स्वप्नमय चक्रवर्ती द्वारा प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री अमर मित्र के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
13 जून 2018, कोलकाता

विख्यात तमिळ लेखक श्री एन. मुरुगेसा पंदियन द्वारा प्रख्यात तमिळ लेखक श्री पी. सिंगराम के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
30 जून 2018, मदुरै, तमिलनाडु

विख्यात हिंदी लेखक डॉ. उर्मिला शिरीष द्वारा प्रख्यात हिंदी लेखक श्री प्रभाकर श्रोत्रिय पर व्याख्यान
13 जुलाई 2018, भोपाल, मध्यप्रदेश

प्रख्यात उर्दू समालोचक प्रो. सादिक़ द्वारा प्रख्यात उर्दू कथाकार श्री जोगिंदर पॉल पर व्याख्यान
26 जुलाई 2018, नई दिल्ली

विख्यात ओड़िया नाटककार सुश्री संघमित्र मिश्र द्वारा श्री रमेश पाणिगृही के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
08 सितंबर 2018, भुवनेश्वर, ओड़िशा

विख्यात कश्मीरी विद्वान श्री मो. सलीम बेग ने प्रख्यात कश्मीरी लेखक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्ता द्वारा सुश्री अतीक़ा बानो के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
07 अक्तूबर 2018, सोपोर, जे. एंड के.

विख्यात उर्दू लेखक डॉ. शमीम तारिक़ द्वारा प्रख्यात उर्दू लेखक डॉ. वारिस अल्वी पर व्याख्यान
27 अक्तूबर 2018, मुंबई

विख्यात बोडो लेखक सुश्री राखाओ बसुमतारी द्वारा प्रख्यात बोडो लेखक श्री चित्तरंजन मुसाहारी के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
15 दिसंबर 2018, बारपेटा, असम

विख्यात डोगरी लेखक श्री यश शर्मा द्वारा प्रख्यात डोगरी लेखक श्री बिशन सिंह दर्दी के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
17 दिसंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

श्री दिनकर गंगल द्वारा प्रख्यात मराठी लेखक स्वर्गीय श्री अरुण संधु के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
21 दिसंबर 2018, मुंबई

श्री सुरजीत होश
24 जनवरी 2019, जम्मू, जे. एंड के.

विख्यात बोडो लेखक श्री फूकन चंद्र बसुमतारी द्वारा प्रख्यात बोडो लेखक श्री ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
08 फ़रवरी 2019, सोनितपुर, असम

प्रख्यात पंजाबी लेखक डॉ. वनीता द्वारा प्रख्यात पंजाबी लेखक डॉ. जसवंत सिंह नेकी के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
14 मार्च 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात संताली लेखक श्री चंद्रमोहन सोरेन द्वारा विख्यात संताली लेखक के जीवन और कृतित्व पर व्याख्यान
24 मार्च 2019, डिब्रूगढ़, असम

अनुवाद कार्यशालाएँ

गारो-अंग्रेज़ी अनुवाद कार्यशाला
29-31 मई 2018, शिलौंग, मेघालय

अंग्रेज़ी-उर्दू अनुवाद कार्यशाला
27-29 अगस्त 2018, नई दिल्ली

महिला लेखिकाओं द्वारा लघुकथा पर अनुवाद कार्यशाला
6-8 अक्तूबर 2018, नई दिल्ली

अनुवाद कार्यशाला
10-11 अक्तूबर 2018, नई दिल्ली

अनुवाद कार्यशाला (तमिळ तथा तेलुगु कहानियाँ)
24-29 अक्तूबर 2018, सालेम, तमिनाडु

कोंकणी-कन्नड़ कहानी अनुवाद कार्यशाला
26-28 अक्तूबर 2018, बेंगळूरु, कर्नाटक

उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी प्रतिनिधि कविता : अन्तस्संबंध (बहुभाषी अनुवाद कार्यशाला)
26-28 दिसंबर 2018, बेंगळूरु

अनुवाद कार्यशाला : दक्षिण भारतीय भाषाओं का पंजाबी में अनुवाद
23-25 जनवरी 2019, मैसूर, कर्नाटक

अनुवाद कार्यशाला (दक्षिण भारतीय कहानियाँ : कन्नड, तेलुगु, मलयाळम् तथा तमिळ से पंजाबी)
23-25 जनवरी 2019, मैसूर, कर्नाटक

मराठी-उर्दू अनुवाद कार्यशाला
26-28 मार्च 2019, मुंबई

वाचिक और जनजातीय साहित्य कार्यक्रम

साहित्य मंच : साहित्य लोक-कर्नाटक जनजातीय महाकाव्य
11 जून 2018, चामराजानगर, कर्नाटक

दक्षिण जनजातीय लेखक सम्मिलन
27-28 जुलाई 2018, चेन्नई

अखिल भारतीय युवा संताली लेखक उत्सव
30-31 जुलाई 2018, नई दिल्ली

जनजातीय लेखक सम्मिलन
30 अगस्त 2018, नई दिल्ली

साहित्य मंच : वाचिक साहित्य का अनुवाद : समस्याएँ और समझौते
30 नवंबर 2018, बेंगळूरु

जनजातीय कवि सम्मिलन
05 दिसंबर 2018, नई दिल्ली

कोंकणी में जनजातीय साहित्य : भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल
12-13 दिसंबर 2018, गोवा

साहित्य मंच : जनजातीय भाषाएँ और साहित्य
21 दिसंबर 2018, वायनाड, केरल

तेलुगु भाषी क्षेत्रों में जनजातीय साहित्य पर संगोष्ठी
22-23 दिसंबर 2018, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश

आदिवासी लेखक सम्मिलन
23-24 दिसंबर 2018, मुंबई

विभिन्न जनजातीय भाषाओं के कवियों के साथ जनजातीय लेखक सम्मिलन (पुस्तक मेला)
08 जनवरी 2019, नई दिल्ली

कोंकणी में वाचिक साहित्य पर परिसंवाद
11 जनवरी 2019, गोवा

आदिवासी (हो) लेखक सम्मिलन तथा संताली में कथासंधि कार्यक्रम
20 जनवरी 2019, रायरंगपुर, ओड़िशा

जनजातीय लेखक सम्मिलन
16-17 फ़रवरी 2019, खडगपुर, पश्चिम बंगाल

पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं की जनजातीय भाषाओं में सृजन मिथक पर संगोष्ठी
9-10 मार्च 2019, कोरापुट, ओड़िशा

मोग-चकमा-कॉकबोरोक काव्योत्सव
24 मार्च 2019, अगरतला, त्रिपुरा

लेखक सम्मिलन

कृतिबास उत्सव
07-08 अप्रैल 2018, कोलकाता

उर्दू युवा लेखक सम्मिलन
05 मई 2018, नई दिल्ली

अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन
8-9 जून 2018, काकचिंग, मणिपुर

अनुवादक सम्मिलन
23 जून 2018, गुवाहाटी, असम

अभिव्यक्ति
23-24 जून 2018, गुवाहाटी, असम

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन
17 जुलाई 2018, कोलकाता

युवा संस्कृत लेखक सम्मिलन
10-11 अगस्त 2018, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन
17-18 अगस्त 2018, आईज़ोल, मिज़ोराम

बोडो कविता : पाठकों तथा आलोचकों का प्रत्युत्तर
20 अगस्त 2018, कोकराझार, असम

उर्दू कवि सम्मिलन
02 सितंबर 2018, दरभंगा, बिहार

अखिल भारतीय काव्योत्सव
17 सितंबर 2018, वेस्ट गारो हिल्स, मेघालय

अखिल भारतीय मैथिली काव्योत्सव
25 सितंबर 2018, नई दिल्ली

अखिल भारतीय लेखक उत्सव
28-29 सितंबर 2018, पोर्ट ब्लेयर,
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

डोगरी कवि सम्मिलन
29 सितंबर 2018, जम्मू, जे. एंड के.

अखिल भारतीय हिंदी युवा लेखक सम्मिलन
21-22 अक्तूबर 2018, चंडीगढ़

अखिल भारतीय युवा लेखक उत्सव-आविष्कार
27-28 अक्तूबर 2018, इंफाल, मणिपुर

लेखक सम्मिलन
15 नवंबर 2018, गांतोक, सिक्किम

अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन
1-2 दिसंबर 2018, अगरतला, त्रिपुरा

अखिल भारतीय बोडो युवा लेखक सम्मिलन
22-23 दिसंबर 2018, कोकराझार, असम

अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन
29-30 दिसंबर 2018, गुवाहाटी, असम

नेत्रहीन कवियों का 7वाँ ब्रायली काव्य महोत्सव 2019
26-27 जनवरी 2019, नरेंद्रपुर, पश्चिम बंगाल

लेखक सम्मिलन
30 जनवरी 2019, नई दिल्ली

बोडो लेखक उत्सव के अंतर्गत बोडो कवि सम्मिलन
07 फ़रवरी 2019, सोनितपुर, असम

तीसरा बोडो लेखक उत्सव
07-08 फ़रवरी 2018, सोनितपुर, असम

दक्षिणी काव्योत्सव
10 फ़रवरी 2019, हैदराबाद, तेलंगाना

अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक सम्मिलन 2019
12-13 फ़रवरी 2019, सिसिर मंच, कोलकाता

कविता उत्सव 2019
14 फ़रवरी 2019, सिसिर मंच, कोलकाता

कविता उत्सव 2019
15 फ़रवरी 2019, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

कविता उत्सव 2019
17 फ़रवरी 2019, कोलकाता

युवा लेखक सम्मिलन
20 फ़रवरी 2019, नई दिल्ली

सूफ़ी एवं बौद्ध धर्म पर दक्षिण एशियाई उत्सव
22-24 फ़रवरी 2019

युवा लेखक सम्मिलन
24-25 फ़रवरी 2019, मुंबई

युवा मिज़ो काव्योत्सव
1-2 मार्च 2019, आईज़ोल, मिज़ोराम

पूर्वोत्तर लेखक सम्मिलन
2 मार्च 2019, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

अखिल भारतीय लेखिका सम्मिलन
08 मार्च 2019, नई दिल्ली

कार्बी कवि सम्मिलन
16-17 मार्च 2019, रंगसिना सर्पो
ऑडिटोरियम हॉल, लोरुलांगसाओ,
दीफू, कार्बी आंगलोंग, असम

बोडो युवा लेखक सम्मिलन
17 मार्च 2019, उदलगुड़ी, असम

गाँधी कविगोष्ठी (गाँधी पर केंद्रित कवि सम्मिलन)
26 मार्च 2019, मैसूर, कर्नाटक,

युवा साहिती

युवा डोगरी लेखकों के साथ
05 मई 2018, जम्मू, जे. एंड के.

युवा तमिळ लेखकों के साथ
02 अगस्त 2018, चेन्नै

युवा साहिती
31 अगस्त 2018, बेंगळूरु

विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों के साथ
07 दिसंबर 2018, दिल्ली

युवा संताली लेखकों के साथ
19 जनवरी 2019, बारीपदा, ओड़िशा

युवा मणिपुरी लेखकों के साथ
17 फ़रवरी 2019, अगरतला, त्रिपुरा

युवा ओड़िया लेखकों के साथ
17 मार्च 2019, रायगढ़, ओड़िशा

युवा असमिया लेखकों के साथ
23 मार्च 2019, गुवाहाटी, असम

युवा बाङ्ला कवियों के साथ
28 मार्च 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

2018-2019 में आयोजित शासकीय निकाय, क्षेत्रीय मंडलों तथा भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल की बैठकें

तिथि	स्थान
22 जून 2018	गुवाहाटी
05 दिसंबर 2018	नई दिल्ली
28 जनवरी 2019	नई दिल्ली

सामान्य परिषद् की बैठकें

तिथि	स्थान
22 जून 2018	गुवाहाटी
29 जनवरी 2019	नई दिल्ली

वित्त समिति की बैठकें

तिथि	स्थान
13 जून 2018	नई दिल्ली
20 नवंबर 2018	नई दिल्ली

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
उत्तरी क्षेत्रीय मंडल	20 जून 2018	नई दिल्ली
	20 फ़रवरी 2019	नई दिल्ली
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	24 मई 2018	कोलकाता
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल	26 मई 2018	मुंबई
	27 अप्रैल 2019	मुंबई
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल	14 जून 2018	बेंगळूरु
	10 फ़रवरी 2019	हैदराबाद
भाषा विकास मंडल	27 अगस्त 2018	नई दिल्ली
एन.ई.सी.ओ.एल.	7 जून 2018	इंफाल
सी.ओ.टी.एल.आई.टी.	3 अक्तूबर 2018	नई दिल्ली
अनुवाद केंद्र	14 जून 2018	बेंगळूरु

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
असमिया	18 मई 2018	असम
	12 जनवरी 2019	कोलकाता
बाङ्ला	11 मई 2018	कोलकाता
	13 जनवरी 2019	कोलकाता
बोडो	19 मई 2018	असम
	12 जनवरी 2019	कोलकाता
डोगरी	1 मई 2018	नई दिल्ली
	16 जनवरी 2019	नई दिल्ली
अंग्रेज़ी	18 जून 2018	नई दिल्ली
	15 जनवरी 2019	नई दिल्ली
गुजराती	28 अप्रैल 2018	मुंबई
हिंदी	7 मई 2018	नई दिल्ली
	15 जनवरी 2019	नई दिल्ली
कन्नड़	5 मई 2018	बेंगळूरु
	25 दिसंबर 2018	बेंगळूरु

मंडल	तिथि	स्थान
कश्मीरी	1 मई 2018	नई दिल्ली
	11 जनवरी 2019	नई दिल्ली
कोंकणी	26 मई 2018	मुंबई
	18 जनवरी 2019	मुंबई
मलयाळम्	5 मई 2018	बेंगळूरु
	19 जनवरी 2019	कोच्ची
मैथिली	12 मई 2018	कोलकाता
	13 जनवरी 2019	कोलकाता
मणिपुरी	24 मई 2018	कोलकाता
	12 जनवरी 2019	कोलकाता
मराठी	28 अप्रैल 2018	मुंबई
	18 जनवरी 2019	मुंबई
नेपाली	19 मई 2018	गुवाहाटी
	14 जनवरी 2019	नई दिल्ली
ओड़िया	11 मई 2018	कोलकाता
	6 जनवरी 2019	भुवनेश्वर
पंजाबी	3 मई 2018	नई दिल्ली
	21 जनवरी 2019	नई दिल्ली
राजस्थानी	02 मई 2018	नई दिल्ली
	07 जनवरी 2019	नई दिल्ली
संस्कृत	02 मई 2018	नई दिल्ली
	14 जनवरी 2019	नई दिल्ली
संताली	12 मई 2018	कोलकाता
	13 जनवरी 2019	कोलकाता
सिंधी	29 अप्रैल 2018	मुंबई
	18 जनवरी 2019	मुंबई
तमिळ	20 अप्रैल 2018	चेन्नै
	9 जनवरी 2019	चेन्नै
तेलुगु	7 अप्रैल 2018	हैदराबाद
	17 जनवरी 2019	हैदराबाद
उर्दू	4 मई 2018	नई दिल्ली
	14 जनवरी 2019	नई दिल्ली

पुस्तक मेलों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची–आयोजन एवं सहभागिता : 2018-2019

प्रधान कार्यालय

क्र.स.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	एनसीपीयूएल द्वारा आयोजित पुस्तक मेला, किशनगंज, बिहार	07-15 अप्रैल 2018
2.	एनबीटी द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी, ग्वालियर	12-20 मई 2018
3.	उर्दू हिंदी कविता के अवसर पर मेरठ में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी	08 मई 2018
4.	पुस्तक मेला, कुल्लू	09-17 जून 2018
5.	एनबीटी द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी, हल्दवानी	23 जून-01 जुलाई 2018
6.	पुस्तक प्रदर्शनी, फरीदाबाद	17 जून 2018
7.	उत्तर-पूर्वी कार्यक्रम के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी	13-16 जुलाई 2018
8.	उत्तर-पूर्वी कार्यक्रम के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी, पटना	20-23 जुलाई 2018
9.	पुस्तक प्रदर्शनी, अभोर	17-21 जुलाई 2018
10.	पुस्तक प्रदर्शनी, अमृतसर	24-27 जुलाई 2018
11.	पुस्तक प्रदर्शनी, अमृतसर	18-19 अगस्त 2018
12.	पुस्तक प्रदर्शनी, मेरठ	25 अगस्त 2018
13.	आईटीपीओ द्वारा आयोजित पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली	25 अगस्त-2 सितंबर 2018
14.	विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर पुस्तक मेला, मॉरीशस	18-20 अगस्त 2018
15.	माखनलाल चतुर्वेदी संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, उदयपुर	01-02 सितंबर 2018
16.	हैरिटेज पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम द्वारा आयोजित पुस्तक मेला	10-11 सितंबर 2018
17.	हिंदी सप्ताह पर एनएचपीसी, फरीदाबाद द्वारा आयोजित पुस्तक मेला	12 सितंबर 2018
18.	संचार केंद्र, फरीदकोट द्वारा आयोजित बाबा फ़रीद आगामी पुस्तक मेला	19-23 सितंबर 2018
19.	पोर्टब्लेयर में, अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन तथा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन	28-29 सितंबर 2018
20.	जम्मू में 'डोगरी साहित्य में पर्यावरण चेतना' संगोष्ठी तथा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन	28-29 सितंबर 2018
21.	शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	30 अक्तूबर-9 नवंबर 2018
22.	लखनऊ साहित्योत्सव	16-18 नवंबर 2018
23.	जे.एन.यू. पुस्तक प्रदर्शनी (एनबीडब्ल्यू)	14-20 नवंबर 2018

24.	आई.आई.टी. पुस्तक प्रदर्शनी (एनबीडब्ल्यू)	14-20 नवंबर 2018
25	साहित्य आज तक पुस्तक प्रदर्शनी	16-18 नवंबर 2018
26.	पुस्तक प्रदर्शनी (संस्कृत कार्यक्रम) भोपाल	01-02 दिसंबर 2018
27.	मेघदूत पुस्तक प्रदर्शनी (मैथिली संगोष्ठी मंगलियात)	08-09 दिसंबर 2018
28.	उर्दू कार्यक्रम जश्न-ए-रेखता तथा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन	14-16 दिसंबर 2018
29.	मिथिला उत्सव, प्रेस कल्ब, नई दिल्ली	22 दिसंबर 2018
30.	विश्व पुस्तक मेला (हॉल नं. 12 एवं हॉल नं. 10)	05-13 जनवरी 2019
31.	भोपाल साहित्योत्सव 2019	12-14 जनवरी 2019
32.	कुंभ (प्रयागराज)	10-21 जनवरी 2019
33.	वाराणसी (प्रवासी भारतीय दिवस)	21-23 जनवरी 2019
34.	साहित्योत्सव	28 जनवरी-02 फ़रवरी 2019
35.	पटना साहित्योत्सव	01-03 फ़रवरी 2019
36.	कुंभ (प्रयागराज)	10 जनवरी-04 मार्च 2019
37.	आगरा पुस्तक मेला	26-27 मार्च 2019

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

क्र.सं.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	साहित्यिक कार्यक्रम, कइराली, बेंगळूरु	19 जून 2018
2.	एनईएसडब्ल्यूडब्ल्यूएम, तिरुपति	6-7 जुलाई 2018
3.	साहित्यिक कार्यक्रम, कइराली, बेंगळूरु	15 जुलाई 2018
4.	साहित्यिक कार्यक्रम, अत्तग़ालत्ता, बेंगळूरु	21 जुलाई 2018
5.	द्विदिवसीय संस्कृत संगोष्ठी, तिरुपति	10-11 अगस्त 2018
6.	साहित्यिक कार्यक्रम, बेंगळूरु	17 अगस्त 2018
7.	वी.बी.एफ.एस. द्वारा आयोजित दूसरा नैल्लोर पुस्तक मेला	10-19 अगस्त 2018
8.	साहित्यिक कार्यक्रम, बेंगळूरु	02 सितंबर 2018
9.	मणिपाल पुस्तक मेला, मणिपाल विश्वविद्यालय	06-08 सितंबर 2018
10.	सिद्ध पुरानिक पर एक दिवसीय जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी, बागलकोट	15 सितंबर 2018
11.	उर्दू संगोष्ठी, बेंगळूरु	06 अक्तूबर 2018
12.	वी.बी.एफ.एस. द्वारा आयोजित दूसरा अनंतपुरम पुस्तक मेला	06-14 अक्तूबर 2018
13.	बी.बी.पी.ए. द्वारा आयोजित बेंगळूरु पुस्तक मेला	15-21 अक्तूबर 2018

14.	साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम के दौरान के.एल.ई. कॉलेज में पुस्तक प्रदर्शनी	31 अक्तूबर 2018
15.	तेलुगु-कन्नड साहित्यिक कार्यक्रम, बेंगळूरु	30 नवंबर 2018
16.	साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित पुस्तक विमोचन कार्यक्रम, बेंगळूरु	09 दिसंबर 2018
17.	32वाँ हैदराबाद राष्ट्रीय पुस्तक मेला 2018, नवतेलंगाना, हैदराबाद	15-25 दिसंबर 2018
18.	साहित्यिक कार्यक्रम, सिद्धपुरा	22 दिसंबर 2018
19.	आदिवासी साहित्य संगोष्ठी, विजयवाड़ा	22-23 दिसंबर 2018
20.	भाषा सम्मान, जयनगर	25 दिसंबर 2018
21.	उज्जेरे-मिर्ज़ी अन्नाराई जन्मशतवार्षिकी कार्यक्रम	27 दिसंबर 2018
22.	वी.बी.एफ़.एस. द्वारा आयोजित 30वाँ विजयवाड़ा पुस्तक मेला	1-11 जनवरी 2019
23.	84वाँ अखिल भारतीय कन्नड साहित्य सम्मेलन, कर्नाटक साहित्य परिषद	4-6 जनवरी 2019
24.	धारवाड़ सम्भ्रम ट्रस्ट द्वारा आयोजित 7वाँ धारवाड़ साहित्य सम्भ्रम	18-20 जनवरी 2019
25.	कन्नड पुस्तक प्राधिकरण, बेंगळूरु द्वारा आयोजित जनपद मेला	8-12 फ़रवरी 2019
26.	साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रम, अवनिगड्डा	2-3 मार्च 2019
27.	विश्व कविता दिवस संगोष्ठी, बेंगळूरु	21 मार्च 2019

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्र.सं.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	धनबाद पुस्तक मेला 2018	01-08 अप्रैल 2018
2.	नववर्ष बोई मेला 2018	13-22 अप्रैल 2018
3.	पुस्तक बाज़ार, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता	25 मई-02 जून 2018
4.	अनुवाद पुरस्कार 2017 के साथ अभिव्यक्ति कार्यक्रम तथा त्रि-दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, गुवाहाटी	22-24 जून 2018
5.	एन.बी.टी. द्वारा आयोजित इंफाल पुस्तक मेला 2018 में क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता की सहभागिता	26 मई-03 जून 2018
6.	मैथिली कार्यक्रम के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, जमशेदपुर	30 जून-01 जुलाई 2018
7.	मणिपुरी कार्यक्रम के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, इंफाल	14-15 जुलाई 2018
8.	मणिपुरी कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, इंफाल	16 जुलाई 2018
9.	ई.आर.बी. संगोष्ठी के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, इंफाल	31 जुलाई-01 अगस्त 2018
10.	दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, ईटानगर	4-5 अगस्त 2018

11.	अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, पछुंगा विश्वविद्यालय, आइज़ोल	17-18 अगस्त 2018
12.	तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, दार्जीलिंग	24-26 अगस्त 2018
13.	पुस्तक बाज़ार, विश्व भारती भाषा भवन	25-27 अगस्त 2018
14.	पुस्तक बाज़ार, एमयूसी महिला कॉलेज, बुर्दवान	29-31 अगस्त 2018
15.	संताली कार्यक्रम के साथ एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी	31 अगस्त 2018
16.	मनमोहन झा कार्यक्रम के साथ मधुबनी और दरभंगा पुस्तक प्रदर्शनी	01-02 सितंबर 2018
17.	संताली कार्यक्रम के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, तेजपुर, असम	15-16 सितंबर 2018
18.	हिंदी संगोष्ठी के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, आर.जी.सी.यू., ईटानगर	24-25 सितंबर 2018
19.	डिब्रूगढ़ पुस्तक मेला 2018	02-13 अक्तूबर 2018
20.	लघु पत्रिका कार्यक्रम के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, कोलकाता	04-05 अक्तूबर 2018
21.	सयैद अब्दुल मलिक संगोष्ठी के साथ तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, डिब्रूगढ़ और तेजपुर, असम	29-31 अक्तूबर 2018
22.	पुस्तक बाज़ार, भारतीय भाषा परिषद्	02-06 नवंबर 2018
23.	20वाँ पूर्वोत्तरी पुस्तक मेला 2018, गुवाहाटी	09-20 नवंबर 2018
24.	बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह के साथ दो दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी, गांतोक	14-15 नवंबर 2018
25.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता	14-20 नवंबर 2018
26.	36वाँ उत्तर बंगाल पुस्तक मेला 2018, सिलिगुड़ी	23 नवं.-02 दिसं. 2018
27.	12वाँ जोरहाट पुस्तक मेला 2018, असम	05-16 दिसंबर 2018
28.	पुस्तक पर्व 2018, बांगुर	06-16 दिसंबर 2018
29.	सिमुराली पुस्तक मेला 2018, सिमुराली, कोलकाता	23-29 दिसंबर 2018
30.	न्यू टाऊन बोईमाला	21 दिसं. 2018-01 जन. 2019
31.	32वाँ गुवाहाटी पुस्तक मेला 2018	22 दिसं. 2018 -02 जन. 2019
32.	कूच बिहार जिला पुस्तक मेला 2018	30 दिसं. 2018 -06 जन. 2019
33.	बरिश बुक मेला	04-13 जनवरी 2019
34.	खड़गपुर बोइमेला 2019	05-13 जनवरी 2019
35.	19वाँ राजधानी पुस्तक मेला 2018	05-14 जनवरी 2019

36.	बोकाखत पुस्तक मेला 2019	06-09 जनवरी 2019
37.	साहित्य उत्सव एवं लघु पत्रिका मेला 2019	11-15 जनवरी 2019
38.	अखिल भारतीय उर्दू पुस्तक मेला 2019	20-29 जनवरी 2019
39.	43वाँ अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला 2019	31 जनवरी - 11 फ़रवरी 2019
40.	पुस्तक प्रदर्शनी, खड़गपुर	16-17 फ़रवरी 2019
41.	कविता उत्सव पुस्तक प्रदर्शनी, रवींद्र सदन	23-26 फ़रवरी 2019
42.	भुवनेश्वर राज्य पुस्तक मेला 2019	20-26 फ़रवरी 2019
43.	प्रथम कलिंपोंग ज़िला पुस्तक मेला	20-23 मार्च 2019
44.	पुस्तक प्रदर्शनी, गुवाहाटी एवं गोलाघाट, असम	23-26 मार्च 2019

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्र.सं.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	काफिला कवितांचा, चिंचिनी, दहानु, महाराष्ट्र	2-3 जून 2018
2.	पुस्तक प्रदर्शनी, धुले, महाराष्ट्र	10-14 जून 2018
3.	पुस्तक प्रदर्शनी, जलगाँव, महाराष्ट्र	16-20 जून 2018
4.	परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात	27 जुलाई 2018
5.	पूर्वोत्तर एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, भुज, कच्छ, गुजरात	4-5 अगस्त 2018
6.	साहित्य मंच के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, सोलापुर, महाराष्ट्र	9-12 अगस्त 2018
7.	परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, वैजापुर, महाराष्ट्र	24 अगस्त 2018
8.	संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, अहमदाबाद, गुजरात	1-2 सितंबर 2018
9.	पुस्तक प्रदर्शनी, जलगाँव, महाराष्ट्र	2-8 सितंबर 2018
10.	पुस्तक प्रदर्शनी, राजकोट, गुजरात	15-18 सितंबर 2018
11.	सिल्वासा पुस्तक उत्सव, सिल्वासा, गुजरात	30 सितं.-7 अक्तू. 2018
12.	पुस्तक प्रदर्शनी, अकोला, महाराष्ट्र	4-6 अक्तूबर 2018
13.	पुस्तक प्रदर्शनी, अचलपुर, महाराष्ट्र	8-10 अक्तूबर 2018
14.	पुस्तक प्रदर्शनी, वर्धा, महाराष्ट्र	12-15 अक्तूबर 2018
15.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, मुंबई, महाराष्ट्र	14-20 नवंबर 2018
16.	संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, आदिपुर, गुजरात	25-26 नवंबर 2018
17.	पुस्तक प्रदर्शनी, ठाणे, महाराष्ट्र	30 नवं.-2 दिसं. 2018

18.	ऑक्टेव-2018, नागपुर, महाराष्ट्र	1-4 दिसंबर 2018
19.	पुस्तक प्रदर्शनी, ठाणे, महाराष्ट्र	4-5 दिसंबर 2018
20.	पुस्तक प्रदर्शनी, अहमदाबाद, गुजरात	7-10 दिसंबर 2018
21.	पुस्तक प्रदर्शनी, मुंबई, महाराष्ट्र	8-9 दिसंबर 2018
22.	परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, मडगाँव, गोवा	17 दिसंबर 2018
23.	संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, मुंबई, महाराष्ट्र	23-24 दिसंबर 2018
24.	40वाँ मराठवाड़ा साहित्य सम्मेलन, उदगिर, महाराष्ट्र	23-25 दिसंबर 2018
25.	परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, सोलापुर, महाराष्ट्र	27 दिसंबर 2018
26.	ग्रंथ महोत्सव, सतारा, महाराष्ट्र	4-7 जनवरी 2019
27.	गुजराती साहित्य सम्मेलन, सूरत, गुजरात	11-13 जनवरी 2019
28.	92वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन, येवोतमाल, महाराष्ट्र	11-13 जनवरी 2019
29.	परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, वसई, महाराष्ट्र	21-22 जनवरी 2019
30.	परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, तेंभुरनी, महाराष्ट्र	08 फ़रवरी 2019
31.	सौराष्ट्र साहित्योत्सव, राजकोट, गुजरात	9-13 फ़रवरी 2019
32.	गेटवे साहित्योत्सव-2019, मुंबई, महाराष्ट्र	1-2 मार्च 2019
33.	संगोष्ठी तथा पुस्तक प्रदर्शनी, सूरत, गुजरात	16-17 मार्च 2019
34.	लेखक से भेंट के साथ पुस्तक प्रदर्शनी, बेलगाम, कर्नाटक	26-28 मार्च 2019

उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

क्र.सं.	**पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण**	**तिथि**
1.	नीलगिरीज़ पुस्तक मेला, नीलगिरी	07-15 अप्रैल 2018
2.	अरूपकोट्टई पुस्तक मेला, अरूपकोट्टई	20-24 अप्रैल 2018
3.	उद्कई पुस्तक मेला, उद्कई	19-27 मई 2018
4.	पुस्तक सप्ताह, कुंबकोणम	29 मई-03 जून 2018
5.	पुदुच्चेरी तमिळ संगम कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी एवं बिक्री, पुदुच्चेरी	13-17 जून 2018
6.	कायलपट्टनम पुस्तक मेला, कायलपट्टनम	18-20 जून 2018
7.	नेयवेली पुस्तक मेला, नेयवेली	30 जून-09 जुलाई 2018
8.	अरियालुर पुस्तक मेला, अरियालुर	10-18 जुलाई 2018
9.	होसूर पुस्तक मेला, होसूर	13-24 जुलाई 2018

10. करूर पुस्तक मेला, करूर	13-22 जुलाई 2018
11. कोयंबटूर पुस्तक मेला, कोयंबटूर	20-29 जुलाई 2018
12. उदुमलाई पुस्तक मेला, उदुमलाई	03-12 अगस्त 2018
13. धर्मपुरी पुस्तक मेला, धर्मपुरी	03-12 अगस्त 2018
14. इरोड पुस्तक मेला, इरोड	04-14 अगस्त 2018
15. चौथा चैन्नै पुस्तक मेला, चैन्नै	17-27 अगस्त 2018
16. मदुरै पुस्तक मेला, मदुरै	31 अगस्त-10 सितंबर 2018
17. गुडियाथम पुस्तक मेला, गुडियाथम	22 सितं.-01 अक्तू. 2018
18. देवाकोट्टई पुस्तक मेला, देवाकोट्टई	27 सितं.-07 अक्तू. 2018
19. कराइकुडी पुस्तक मेला, कराइकुडी	5-14 अक्तूबर 2018
20. धारापुरम पुस्तक मेला, धारापुरम	5-14 अक्तूबर 2018
21. तिरुवन्नामलाई पुस्तक मेला, तिरुवन्नामलाई	31 अक्तू.-09 नवं. 2018
22. कोच्चि पुस्तक मेला, कोच्चि	02-11 नवंबर 2018
23. सेलम पुस्तक मेला, सेलम	09-21 नवंबर 2018
24. राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, केरल	14-20 नवंबर 2018
25. कुड्डालोर पुस्तकोत्सव	14-21 नवंबर 2018
26. राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, तंजावुर	14-20 नवंबर 2018
27. पलानी पुस्तक मेला, पलानी	22-26 नवंबर 2018
28. डिंडीगुल पुस्तक मेला, डिंडीगुल	29 नवं.-09 दिसं. 2018
29. कोट्टायम पुस्तक मेला, कोट्टायम	30 नवं.-09 दिसं. 2018
30. 22वाँ पुदुचेरी पुस्तक मेला, पुदुचेरी	21-30 दिसंबर 2018
31. चेंगालपट्टु पुस्तकोत्सव	24 दिसं. 2018-02 जन. 2019
32. 42वाँ चेन्नई पुस्तक मेला, चेन्नै	04-20 जनवरी 2019
33. कृष्णागिरी पुस्तक मेला, कृष्णागिरी	24 दिसं. 2018-02 जन.2019
34. त्रिची पुस्तक मेला, त्रिची	11-21 जनवरी 2019
35. तिरुप्पुर पुस्तक मेला, तिरुप्पुर	31 जन.-02 फ़र. 2019
36. राष्ट्रीय पुस्तक मेला, त्रिशूर	02-11 फ़रवरी 2019
37. कृति कोच्चि पुस्तक मेला, कोच्चि	08-17 फ़रवरी 2019
38. कन्याकुमारी पुस्तक मेला, कन्याकुमारी	15-25 फ़रवरी 2019
39. पुदुकोट्टई पुस्तक मेला, पुदुकोट्टई	15-24 फ़रवरी 2019
40. कुन्नूर पुस्तक मेला, कुन्नूर	01-10 मार्च 2019
41. थेनी पुस्तक मेला, थेनी	22 मार्च-01 अप्रैल 2019

1 अप्रैल 2018 से 31 मार्च 2019 तक प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

आन कोनो नहाए (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *'कोई दूसरा नहीं'*)
ले. कुँवर नारायण
अनु. नीलिम कुमार
पृ. 144; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-87989-65-8

आधुनिक असमिया गल्प-संग्रह (कहानी-संग्रह)
चयन एवं संपादन त्रिलोकीनाथ गोस्वामी
पृ. 280; ₹ 210/-
ISBN: 978-81-260-1522-1 (पुनर्मुद्रण)

असमिया कल्पविज्ञान गल्प संकलन (चयनित विज्ञान कथा)
सं. शांतनु तामुली
पृ. 258; ₹ 235/-
ISBN: 978-81-260-5397-1 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला-असमिया द्विभाषिक अभिधान
स. नगेन शइकीया, सह. सं मुकुल हाज़रिका एवं सत्येंद्र नारायण चौधुरी
मुख्य सं. अशोक मुखोपाध्याय
पृ. 424; ₹ 490/-
ISBN: 978-93-86771-64-3

भिन्न रंग भिन्न सुर (बोडो कविता-संग्रह का असमिया अनुवाद, 'बैदी देङ्खु बैदी गाब')
ले. ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म
अनु. विभिन्न अनुवादक
अनु. सं. बिरुपाक्ष गिरि बसुमतारी
पृ. 120; ₹ 150/-
ISBN: 978-93-87567-67-2

गाँधी-कथामृत (अंग्रेज़ी में महात्मा गांधी का चयनित लेखन *ऑल मैन आर ब्रदर्स*)
चयन एवं संपादन कृष्ण कृपलानी
अनु. ओमियो कुमार दास
पृ. 208; ₹ 250/-
ISBN: 978-93-88468-72-5 (पुनर्मुद्रण)

गेंजीकोनवरार साधु (जापानी कालजयी गेंजी मानोगतारी- गेंजी की कथाएँ, खंड-I)
ले. मुरासाकी शिकिबु
अनु. अतुलचंद्र हाज़रिका
पृ. 314; ₹ 250/-
ISBN: 978-81-260-2011-9 (पुनर्मुद्रण)

गोदान (हिंदी उपन्यास)
ले. मुंशी प्रेमचंद
अनु. निरुपमा फुकन
पृ. 344; ₹ 240/-
ISBN: 978-81-260-2669-2 (पुनर्मुद्रण)

खरस्रोत (पुरस्कृत नेपाली लघु कहानी-संग्रह)
ले. शिव कुमार राई
अनु. जयंत कृष्ण सरमा
पृ. 88; ₹ 130/-
ISBN: 978-93-87989-66-5

लहारी चंपा (पुरस्कृत कन्नड नाटक *सिरिसंपिगे*)
ले. चंद्रशेखर कंबार
अनु. प्रेम नारायण नाथ
पृ. 60; ₹ 110/-
ISBN: 978-93-87567-81-8

महेश्वर निओग (विनिबंध)
ले. नगेन शइकीया
पृ. 64; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-3111-5 (पुनर्मुद्रण)

निर्बाचित असमिया शिशु नट (असमिया बाल नाटकों का संकलन)
चयन एवं संपादन शांतनु तामूली
पृ. 272; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-87989-39-9

बाङ्ला

बंगाली मेयर भावनामूलक गद्य (महिला लेखन का संकलन)
चयन एवं संपादन सुतपा भट्टाचार्य
पृ. 328; ₹ 210/-
ISBN: 978-81-260-2510-7 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला गल्प संकलन खंड 3 (कहानी-संग्रह)
चयन एवं संपादन अश्रु कुमार सिकदर
पृ. 356; ₹ 220/-
ISBN: 978-81-260-2307-3 (पुनर्मुद्रण)

बंकिम 175 (लेख-संग्रह)
चयन सत्यजीत चौधुरी
पृ. 288; ₹ 320/-
ISBN: 978-81-260-4655-3 (पुनर्मुद्रण)

भगवानेर दस्तुमी (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *दैवतिंटे विकृतिकळ*)
ले. एम. मुकुंदन
अनु. बासबी चक्रवर्ती
पृ. 288; ₹ 210/-
ISBN: 978-81-260-3217-4 (पुनर्मुद्रण)

भारतचंद्र (रचना-संचयन)
चयन एवं संपादन मदन मोहन गोस्वामी
पृ. 136; ₹ 110/-
ISBN: 978-81-260-4661-4 (पुनर्मुद्रण)

चैतन्य भागवत
(मध्यकालीन बाङ्ला कालजयी कृति)
ले. वृंदावन दास
चयन एवं संपादन सुकुमार सेन
पृ. 344; ₹ 350/-
ISBN: 978-81-260-1769-0 (पुनर्मुद्रण)

चिंगरी
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास 'चेम्मिन')
ले. तकषी शिवशंकर पिल्लै
अनु. बोम्मन विश्वनाथन एवं
निलिना अब्राहम
पृ. 256; ₹ 180/-
ISBN: 978-81-260-2658-6 (पुनर्मुद्रण)

हरप्रसाद शास्त्री
(बाङ्ला विनिबंध)
ले. सत्यजीत चौधुरी
पृ. 162; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2019-5 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी साहित्येर इतिहास
ले. विजेंद्र स्नातक
अनु. ज्योतिमय दास
पृ. 494; ₹ 340/-
ISBN: 978-81-260-2397-4 (पुनर्मुद्रण)

इडियट - खंड 1 (रूसी उपन्यास)
ले. फ़्योदोर दोस्तोएवस्की
अनु. अरुण सोम
पृ. 454; ₹ 420/-
ISBN: 978-93-87567-68-9

इडियट - खंड 2 (रूसी उपन्यास)
ले. फ़्योदोर दोस्तोएवस्की
अनु. अरुण सोम
पृ. 392; ₹ 370/-
ISBN: 978-93-87567-69-6

कपास फूल ओ अन्यान्य कविता
ले. केदारनाथ सिंह
अनु. सोमा बंद्योपाध्याय
पृ. 112; ₹ 140/-
ISBN: 978-93-87989-41-2

काज़ी अब्दुल ओदुड (बाङ्ला विनिबंध)
ले. ज़हीरूल हसन
पृ. 118; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2591-6 (पुनर्मुद्रण)

मानसमंगल
(मध्यकालीन कालजयी कृति)
ले. केतकदास खेमनंदा
चयन एवं संपादन
बिजनबिहारी भट्टाचार्य
पृ. 152; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-1765-2 (पुनर्मुद्रण)

मानुष अमार भाई
चयन एवं संपादन कृष्ण कृपलानी
अनु. प्रियरंजन सेन
पृ. 182; ₹ 250/-
ISBN: 978-93-88468-71-8 (पुनर्मुद्रण)

पायरा उदाल (अंग्रेज़ी उपन्यास *ए फ्लाइट ऑफ़ पिजन्स*)
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. देवी प्रसाद बंद्योपाध्याय
पृ. 110; ₹ 110/-
ISBN: 978-81-260-1322-7 (पुनर्मुद्रण)

प्रयानेर सतवर्षे विद्यासागर
(संगोष्ठी आलेख)
पृ. 108; ₹ 110/-
ISBN: 978-81-260-2193-2 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. प्रकाशचंद्र गुप्त
अनु. सुधाकांत राय चौधुरी
पृ. 64; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1760-7 (पुनर्मुद्रण)

राजा राममोहन राय (बाङ्ला विनिबंध)
ले. सोमेंद्रनाथ रेणु
अनु. सोमेंद्रनाथ बोस
पृ. 68; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2410-0 (पुनर्मुद्रण)

रेणु रचना-संचयन
ले. फणीश्वरनाथ रेणु
चयन एवं संपादन भारत जजाबार
अनु. ननी सुर
पृ. 334; ₹ 230/-
ISBN: 978-81-260-2666-1 (पुनर्मुद्रण)

साढ़े तीन हाथ भूमि
(पुरस्कृत उर्दू उपन्यास)
ले. अब्दुस समद
अनु. अफ़सार अहमेद एवं
कालिम हाज़िक़
पृ. 224; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-2444-5 (पुनर्मुद्रण)

समकालीन सिंधी गल्पसंग्रह 1980-2005
ले. प्रेम प्रकाश
अनु. संध्या चौधुरी
पृ. 208; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-88468-10-7

स्वर्णकुमारी देवी (बाङ्ला विनिबंध)
ले. सुदक्षिणा घोष
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2124-6 (पुनर्मुद्रण)

सैयद मुज़्तबा अली (बाङ्ला विनिबंध)
ले. प्रशांत चक्रवर्ती
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2914-3 (पुनर्मुद्रण)

वैष्णव पदावली
ले. विभिन्न लेखक
चयन एवं संपादन सुकुमार सेन
पृ. 128; ₹ 90/-
ISBN: 978-81-260-2509-1 (पुनर्मुद्रण)

युगांत (पुरस्कृत मराठी कृति)
ले. इरावती कर्वे
अनु. अरुंधति बंद्योपाध्याय
पृ. 180; ₹ 130/-
ISBN: 978-81-260-2182-6 (पुनर्मुद्रण)

बोडो

दाओबयारी
(असमिया उपन्यास 'अभिजात्री')
ले. निरुपमा बरगोहाई
अनु. ऋतुराज बसुमतारी
पृ. 432; ₹ 490/-
ISBN: 978-93-87989-25-2

गोजोन देरा
(नवोदय योजना के अंतर्गत बोडो में कहानी-संग्रह)
ले. कबिता रामचियारी
पृ. 64; ₹ 120/-
ISBN: 978-93-87989-33-7

मासे इलिश ननी झूठी अर गुबुन गुबुन सोलो (मणिपुरी कहानी-संग्रह)
ले. एन. कुंजमोहन सिंह
अनु. विभिन्न अनुवादक
अनु. एवं सं. अनिल बर'
पृ. 136; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-87989-11-5

सिनेथिगवी बेगेंग (नवोदय योजना के अंतर्गत बोडो में कविता-संग्रह)
ले. बर्नाली बग्लारी
पृ. 64; ₹ 120/-
ISBN: 978-93-87567-08-5

डोगरी

आधुनिक भारतीय कविता संकलन : सिंधी (1950-2010)
डोगरी अनु. एवं सं. शशि पठानिया
पृ. 196; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-5386-5

गोरा (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. वीणा गुप्त
पृ. 431; ₹ 350/-
ISBN: 978-93-87567-54-2

हिंदी कहानी संग्रह
ले. भीष्म साहनी
अनु. उषा व्यास
पृ. 356; ₹ 320/-य
ISBN: 978-81-260-4235-7 (पुनर्मुद्रण)

राग दरबारी (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. श्रीलाल शुक्ल
अनु. रतन बसोत्रा
पृ. 384; ₹ 550/-
ISBN: 978-93-88468-55-8

श्रीरामानुज
(अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
डोगरी अनु. ज्ञान सिंह
पृ. 50; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-08-4

डोगरी नाटक
सं. छत्रपाल
पृ. 120; ₹ 230/-
ISBN: 978-93-88468-31-2

अंग्रेज़ी

ए बाउण्डलेस मोमेंट
(पुरस्कृत ओड़िया कहानी-संग्रह)
ले. पारमिता सतपथी
अनु. स्नेहपर्व दास
पृ. 252; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-88468-65-7

ए फ्लावर फॉरलॉर्न एंड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत मणिपुरी कहानी-संग्रह)
ले. एलाङ्बम रजनीकांत सिंह
अनु. ओ.आनंद सिंह
पृ. 100; ₹ 110/-
ISBN: 978-93-87567-84-9

ए फ्लाइंग डॉल
ले. कवि गोपालकृष्णन
अनु. इंदिरा आनंदकृष्णन
पृ. 40; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1297-8 (पुनर्मुद्रण)

ए हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर
ले. एम.के. नायक
पृ. 344; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-1872-7 (पुनर्मुद्रण)

ए न्यू बिगनिंग
(पुरस्कृत तमिळ कहानी-संग्रह)
ले. नांजिल नादान
अनु. गीता सुब्रह्मण्यम्
पृ. 190; ₹ 175/-
ISBN: 978-93-87989-60-3

ए नाईट इन द वुड
ले. लीलावती भागवत
अनु. डी.आर. भागवत
पृ. 40; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-532-9 (पुनर्मुद्रण)

आचार्य ब्रजेंद्रनाथ सिल
(अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. अमिता चटर्जी
पृ.132; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-13-9

ए फ्लोट इन द अटलांटिक
(मराठी यात्रा-वृत्तांत)
ले. एवं अनु. गंगाधर गाडगीळ
पृ. 176; ₹ 150/-
ISBN: 978-93-87989-01-6

अमृतर संतान
(पुरस्कृत ओड़िया उपन्यास)
ले. गोपीनाथ मोहांति
अनु. बिधु भीषण दास, प्रभात नलिनी दास एवं उपाली ओपरजिता
पृ. 640; ₹ 400/-
ISBN: 978-81-260-4746-8 (पुनर्मुद्रण)

अमुक्तामलायदा
अनु. सी.वी. रामचंद्र
पृ. 344; ₹ 230/-
ISBN: 978-81-260-3145-X (पुनर्मुद्रण)

एंथोलॉजी ऑफ़ बंगाली शॉर्ट स्टोरीज़
चयन सुनील गंगोपाध्याय
स. संयुक्ता दासगुप्त
पृ. xxiv + 560; ₹ 485/-
ISBN: 978-81-260-4254-8 (पुनर्मुद्रण)

एशियन वैरिएशन इन रामायणा
सं. के.आर. श्रीनिवास अयंगर
पृ. 306; ₹ 225/-
ISBN: 978-81-260-1809-3 (पुनर्मुद्रण)

बियोंड द बैकयार्ड (तेलुगु लेखकों की कहानियों का संकलन)
चयन एवं सं. पी. सत्यवती, वी. प्रतिमा एवं सी.एल.एल. जयाप्रदा
पृ. 352; ₹ 260/-
ISBN: 978-93-88468-59-6

भारतीदासन (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. मुरुगु सुंदरम्
अनु. एन. मुरुगैयन
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-67-2

भारत नाट्य शस्त्र
ले. कपिला वात्स्यायन
पृ. 218; ₹ 175/-
ISBN: 978-81-260-1808-9 (पुनर्मुद्रण)

कंटेंपररी शॉर्ट स्टोरीज़ फ्रॉम मिज़ोरम
सं. मार्गरेट च. ज़ामा
पृ. 288; ₹ 250/-
ISBN: 978-93-86771-45-2 (पुनर्मुद्रण)

डिस्कोर्स डेमोक्रेसी एंड डिफ़रेंस
सं. एम.टी. अंसारी एवं दीपथा आचर
पृ. 454; ₹ 275/-
ISBN: 978-81-260-2846-7 (पुनर्मुद्रण)

डोगरी शॉर्ट स्टोरीज़ टुडे
सं. ललित मंगोत्रा
अनु. सुमन के. शर्मा
पृ. 314; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-4747-5 (पुनर्मुद्रण)

द्रौपदी (पुरस्कृत तेलुगु उपन्यास)
ले. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद
अनु. के.वी. पुर्णेश्वर राव
पृ. 264; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-4257-9 (पुनर्मुद्रण)

इमोशंस, एक्सप्रेशंस एंड एस्थेटिक्स
(संगोष्ठी आलेख)
सं. इश्शिता चंदा
पृ. 168; ₹ 140/-
ISBN: 978-93-87989-15-3

फैशिनेटिंग स्टोरीज़
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. अशोक देव चौधुरी
पृ. 40; ₹100/-
ISBN: 978-81-260-1482-8 (पुनर्मुद्रण)

फ़ाउंडेशन डे लेक्चर
ले. सीताकांत महापात्र
पृ. 24; ₹ 25/-
ISBN: 978-93-87567-48-1

फ़ाउंडेशन डे लेक्चर
ले. कर्ण सिंह
पृ. 20; ₹ 25/-
ISBN: 978-93-87989-61-0

हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न इंडियन नेपाली लिटरेचर
ले. जीवन नामदुंग
पृ. 144; ₹ 150/-
ISBN: 978-93-88468-58-9

आई एम मैन अश्वथामा
(पुरस्कृत कोंकणी कविता-संग्रह)
ले. प्रकाश डी. पडगाँवकर
अनु. एस.एस. कुलकर्ण एवं किरण बुडकुले
पृ. 68; ₹ 70/-
ISBN: 978-93-86711-16-2 (पुनर्मुद्रण)

इन एंड अराउंड द मार्केट प्लेस
ले. बलाइचंद मुखोपाध्याय
अनु. शुमा राहा
पृ. 136; ₹ 120/-
ISBN: 978-81-260-2184-0 (पुनर्मुद्रण)

जयंत महापात्र : ए रीडर
सं. दुर्गा प्रसाद पांडा
पृ. 486; ₹ 360/-
ISBN: 978-93-87567-66-5

जीवन संगीत (लघु भक्ति गीत-संग्रह)
ले. कांताकबि लक्ष्मीकांत महापात्र
अनु. बिक्रम केसरी दास
पृ. 210; ₹ 190/-
ISBN: 978-93-87567-51-1

कल्हणाज़ राजतरंगिणी
ले. आर.एस. पांडी
पृ. 826; ₹ 500/-
ISBN: 978-81-260-1236-6 (पुनर्मुद्रण)

ललद्यद
ले. जयालाल कौल
पृ. 136; ₹ 125/-
ISBN: 978-93-87989-70-2 (पुनर्मुद्रण)

लक्ष्मीधर नायक (विनिबंध)
ले. के.के. मोहंति
पृ. 134; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-91-7

लेटर्स फ्रॉम द विलेज
(पुरस्कृत कविता-संग्रह)
ले. रघु लेइशाङ्थेम
अनु. सलाम रूपचंद्र सिंह
पृ. 80; ₹ 90/-
ISBN: 978-81-260-5155-7 (पुनर्मुद्रण)

लिटरेचर एंड अदर आर्ट्स
(संगोष्ठी आलेख)
ले. इश्शिता चंदा
पृ. 102; ₹ 110/-
ISBN: 978-93-87989-16-0

लोंगिंग फॉर सनशाइन
ले. सैयद अब्दुल मलिक
अनु. प्रदीप आचार्य
पृ. 172; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-1157-5 (पुनर्मुद्रण)

एम.पी. पेरियासामी थूरान (विनिबंध)
ले. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-71-9

महादेव गोविंद रानाडे (विनिबंध)
ले. अशोक एस. चौसलकर
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-4584-6 (पुनर्मुद्रण)

मराठी पोएट्री : 1975-2000
सं. संतोष भूमकर
पृ. 200; ₹ 180/-
ISBN: 978-81-260-4158-9 (पुनर्मुद्रण)

मिज़ो फोकटेल्स
सं. आर.एल. थङ्माविया एवं
रुआल्ज़ाखुमि रालते
पृ. 176; ₹ 210/-
ISBN: 978-81-260-5370-4 (पुनर्मुद्रण)

मिज़ो सोंग्स एंड फोकटेल्स
सं. लाल्टलुआङ्लियाना खियांगते
पृ. 306; ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-1364-7 (पुनर्मुद्रण)

मिस्ट्री ऑफ़ द मिसिंग कैप
ले. मनोज दास
पृ. 226; ₹ 165/-
ISBN: 978-81-7201-886-X (पुनर्मुद्रण)

नरेशन एंड डिसकोर्स (पुरस्कृत कन्नड
आलोचनात्मक निबंध-संग्रह)
अनु. सी.एन. रामचंद्रन एवं
गीता श्रीनिवासन
पृ. 420; ₹ 365/-
ISBN: 978-93-88468-01-5

नोटिस, पीरियड
(नवोदय योजना के अंतर्गत
कविता-संग्रह)
ले. रॉनोजॉय सिरकार
पृ. 91; ₹ 100/-
ISBN: 978-93-88468-29-9

पर्व (कन्नड उपन्यास)
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. के.राघबेंद्र
पृ. xii+840; ₹ 450/-
ISBN: 978-81-7201-659-3 (पुनर्मुद्रण)

पतंजलि ऑफ़ योगसूत्रा (विनिबंध)
ले. चंद्रमौली एस. नायकर
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN: 978-81260-1285-5 (पुनर्मुद्रण)

प्रतीचि
सं. सीतांशु यशश्चंद्र
पृ.284; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-88468-62-6

पुदुमैपित्तन
अनु. आर.ई. आशेर एवं वी. सुब्रह्मण्यम
पृ. 864; ₹ 400/-
ISBN: 978-81-260-4624-9 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ टैगोर ए सेंटेनरी वोल्यूम
पृ. 560; ₹ 450/-
ISBN: 978-81-7201-332-5 (पुनर्मुद्रण)

रजनीगंधा (पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह)
ले. पापिनेनी शिवशंकर
अनु. श्यामला कल्लूरि
पृ. 112; ₹ 110/-
ISBN: 978-93-87989-93-1

राजवंशी फोक टेल्स एंड फोक सोंग्स
चयन, सं. एवं अनु. सुखबिलास बर्मा
पृ. 184; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-5341-4 (पुनर्मुद्रण)

रूट टू ओरल लिटरेचर (संगोष्ठी आलेख)
सं. अन्विता अब्बी
पृ.162; ₹ 225/-
ISBN: 978-93-88468-02-2

साद्दत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
अनु. जय रतन
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0863-6 (पुनर्मुद्रण)

संवत्सर लेक्चर -32
ले. एस.एल. भैरप्पा
पृ. 20; ₹ 25/-
ISBN: 978-83-87567-41-2

शंकरदेव (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. पोना महंता
पृ. 126; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-56-6

सेवेंथ सीज़न
(पुरस्कृत ओड़िया कविता-संग्रह)
ले. रमाकांत रथ
अनु. लिपिपुष्प नायक
पृ. 136; ₹ 120/-
ISBN: 978-93-87989-51-1

शदाक्षरदेव (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. चंद्रमौली एस. नायर
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-941-9 (पुनर्मुद्रण)

शिवनाथ (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. विजय रामास्वामी
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-51-0

शिवपूजन सहाय (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. एवं अनु. मंगलमूर्ति
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-41-1

शिवराम कारंत (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. सी.एन. रामचंद्रन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1071-1

शॉर्ट स्टोरीज़ फ्रॉम पाकिस्तान
ले. इंतिज़ार हुसैन एवं आसिफ़ फारूखी
अनु. एम. असादुद्दीन
पृ. 334; ₹ 200/-
ISBN: 978-81.260-1598-6 (पुनर्मुद्रण)

सोंग्स ऑफ़ पुरंदरदासा
सं. एवं अनु. मैदुर रघुनंदन
पृ. 158; ₹ 95/-
ISBN: 978-81-260-3134-4 (पुनर्मुद्रण)

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
पृ. 52; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1833-8 (पुनर्मुद्रण)

श्री रामायण दर्शनम्
(पुरस्कृत कन्नड महाकाव्य)
ले. के.वी. पुट्टप्पा 'कुवेम्पु'
अनु. एस.एम. पुणेकर
पृ. 686; ₹ 250/-
ISBN: 81-260-1728-7(पुनर्मुद्रण)

सुकांत भट्टाचार्य (विनिबंध)
ले. जगन्नाथ चक्रवर्ती
पृ. 68; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2281-6 (पुनर्मुद्रण)

सुंदरी उत्तमचंदानी (विनिबंध)
ले. मोहन गेहानी
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-18-4

द चारिअट
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास 'थेरू')
ले. राघवेंद्र पाटील
अनु. जी.एस. अमूर
पृ. 120; ₹110/-
ISBN: 978-93-87567-79-5

द कंप्लीट वर्क ऑफ़ कालिदास-I
अनु. चंद्र राजन
पृ. 410; ₹ 450/-
ISBN: 978-81-7201-824-5 (पुनर्मुद्रण)

द ड्यूअल ऑफ़ द हार्ट
चयन - इवो स्वेतिना
पृ. 136; ₹ 150/-
ISBN: 978-93-87567-23-8

द हॉल ऑफ़ मिरर (पुरस्कृत कश्मीरी समालोचना 'आने-खाने')
ले. अज़ीज़ हाजिनी
अनु. मोहम्मद ज़ाहिद
पृ. 208; ₹ 150/-
ISBN: 978-93-87989-77-1

द हिमालया : ए कल्चरल पिलग्रिमेज
ले. दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेकर
अनु. अशोक मेघानी
पृ. 288; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-4262-3 (पुनर्मुद्रण)

द इनएक्ज़ॉस्टिबल (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास 'आखेपातर')
ले. बिंदु भट्ट
अनु. विनोद मेघानी
पृ. 230; ₹ 348/-
ISBN: 978-93-87567-24-5

द पारसी कंट्रीब्यूशन टू इंडियन लिटरेचर
(परिसंवाद आलेख)
सं. कूमी एस. वेवैना
पृ. 232; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-87989-89-4

द विलेज एंड द रिफ़्यूजी
(पुरस्कृत मणिपुरी कविता-संग्रह)
ले. नाओरेम विद्यासागर
अनु. सलाम रूपचंद्र सिंह
पृ. 132; ₹ 160/-
ISBN: 978-93-87989-14-6

द विलेज वेल एंड अदर स्टोरीज़
(तेलुगु लघु कथा 'उरा बावी')
ले. कोलाकालूरि इनोक
अनु. पी. जयलक्ष्मी
पृ. 248; ₹ 180/-
ISBN: 978-81-260-5145-8 (पुनर्मुद्रण)

द वेटिंग (भक्ति/सूफ़ी कविता)
ले. उषा अकेल्ला
पृ. 60; ₹ 80/-
ISBN: 978-93-88468-00-8

अनरिटन लैंग्वेज इन इंडिया
सं. अन्विता अब्बी
पृ. 216; ₹ 400/-
ISBN: 978-81-260-5266-0 (पुनर्मुद्रण)

उपेंद्र ठाकुर (विनिबंध)
ले. शिव कुमार मिश्र
पृ. 92; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-62-7

विगनेट्टेस (अनुवाद कार्यशाला के आलेख)
सं. मंजु जैद्का
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 232; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-87989-31-3

विदर गंगा? (तमिळ उपन्यास 'गंगई एंजे पोगिराल?')
ले. जयकांतन
अनु. के.एस सुब्रमण्यन
पृ. 152; ₹ 130/-
ISBN: 978-93-87989-76-4

गुजराती

आरण्यक (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. चंद्रकांत मेहता
पृ. 264; ₹ 250/-
ISBN: 978-81-260-1036-3 (पुनर्मुद्रण)

धुम्मासे ढँकेला रंग (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास 'कोहरे में कैद रंग')
ले. गोविंद मिश्र
अनु. सुनीता चौधरी
पृ. 176; ₹220/-
ISBN: 978-93-87989-07-8

ग्रामगीता
ले. तुकदोजी महाराज
अनु. अरुणा जडेजा
पृ. 424; ₹ 400/-
ISBN: 978-93-87989-35-1

गुजरातना लोकगीत (कविता)
सं. खोदीदास परमार
पृ. 332; ₹ 325/-
ISBN: 978-93-87989-42-9 (पुनर्मुद्रण)

गुजरातनी लोककथाव (लघु कथाएँ)
सं. जोरवरसिंह जडेजा
पृ. 320; ₹ 325/-
ISBN: 978-93-87989-47-7 (पुनर्मुद्रण)

कथाविविधा
सं. रमेश सोनी एवं हिमांशी शेलत
पृ. 168; ₹200/-
ISBN: 978-93-87567-07-8

समकालीन सिंधी वार्ता संग्रह (1980-2005)
सं. प्रेम प्रकाश
अनु. रमेश लुहाना
पृ. 228; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-87567-74-0

हिंदी

आचार्य रामचंद्र शुक्ल (विनिबंध)
ले. रामचंद्र तिवारी
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2053-9 (पुनर्मुद्रण)

अचरज ग्रह की दंतकथा
ले. ताजिमा सिंजी
अनु. हरीश नारंग
पृ. 64; ₹ 75/-
ISBN: 978-81-260-0224-5 (पुनर्मुद्रण)

आधुनिक भारतीय कविता संचयन
ले. वी.पी. तिवारी
अनु. रेवती रमण
पृ. 248; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-4012-4 (पुनर्मुद्रण)

अज्ञेय काव्य स्तबक
(134 कविताओं का संग्रह)
सं. विद्यानिवास मिश्र एवं रमेशचंद्र शाह
पृ. 216; ₹ 130/-
ISBN: 978-93-87567-14-6 (पुनर्मुद्रण)

अमरकांत (विनिबंध)
ले. मधुरेश
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-96-2

अमृता प्रीतम (विनिबंध)
ले. सुतिंदर सिंह नूर
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-3170-2 (पुनर्मुद्रण)

अंडमान तथा निकोबार की लोककथाएँ
ले. व्यासमणि त्रिपाठी
पृ. 130; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2542-5 (पुनर्मुद्रण)

अंतरिक्ष में विस्फोट
ले. जयंत विष्णु नार्लीकर
अनु. सुरेश पानंडिकर
पृ. 92; ₹ 75/-
ISBN: 978-81-7201-423-0 (पुनर्मुद्रण)

अनूप शर्मा (विनिबंध)
ले. सुधांशु चतुर्वेदी
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-03-0

अपभ्रंश
(हिंदी की सहभाषा पर विनिबंध)
ले. योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'
पृ. 116; ₹ 80/-
ISBN: 978-93-86771-18-6 (पुनर्मुद्रण)

बाबरनामा (टर्की)
ले. युगजीत नवलपुरी
पृ. 468; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-87567-13-9 (पुनर्मुद्रण)

बच्चों ने दबोचा चोर
ले. गंगाधर गाडगीळ
अनु. एच.एस. साने
पृ. 56; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-522-0 (पुनर्मुद्रण)

बालकृष्ण भट्ट रचना-संचयन
सं. गंगा सहाय मीणा
पृ. 391; ₹300/-
ISBN: 978-93-87989-98-6

बीसवीं सदी की पंजाबी कहानी
सं. रघवीर सिंह
अनु. जसविंदर कौर बिंद्रा
पृ. 787; ₹ 800/-
ISBN: 978-93-88468-54-1

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड-1)
(भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि कहानियाँ)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 96; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2676-0 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड-2)
(भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि कहानियाँ)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 104; ₹ 40/-
ISBN: 978-81-260-2677-7 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड-3)
(भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि कहानियाँ)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 90; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2678-4 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड-4)
(भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि कहानियाँ)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 104; ₹ 40/-
ISBN: 978-81-260-2646-8 (पुनर्मुद्रण)

भिखारी ठाकुर (विनिबंध)
ले. सैयद हुसैन पीड़ित
पृ. 102; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2630-2(पुनर्मुद्रण)

भीलों का भारत
सं. भगवान दास पटेल
अनु. मृदुला पारिख
पृ. 596; ₹ 400/-
ISBN: 978-81-260-1000-4 (पुनर्मुद्रण)

भूली यादें मधुपुर की (पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. शीलभद्र
अनु. नीता बनर्जी
पृ. 112; ₹ 75/-
ISBN: 978-81-260-2046-1 (पुनर्मुद्रण)

भूषण (विनिबंध)
ले. राजमल बेरा
पृ. 124; ₹50/-
ISBN: 978-81-260-1900-7 (पुनर्मुद्रण)

बुल्ले शाह (विनिबंध)
ले. सुरेंद्र सिंह कोहली
अनु. कुमुद माथुर
पृ. 104; ₹50/-
ISBN: 978-81-7201-343-1 (पुनर्मुद्रण)

चंद्र पहाड़
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 120; ₹ 100/-
ISBN: 81-7201-575-6 (पुनर्मुद्रण)

दादा और पोता
ले. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ
अनु. दिनकर कुमार
पृ. 148; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2043-0 (पुनर्मुद्रण)

दादू दयाल (विनिबंध)
ले. रामबख्श
पृ. 88; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2602-9 (पुनर्मुद्रण)

दक्षिण कामरूप की गाथा
(असमिया कहानी-संग्रह)
ले. इंदिरा गोस्वामी
अनु. श्रवण कुमार
पृ. 272; ₹150/-
ISBN: 978-93-86771-80-3 (पुनर्मुद्रण)

देवनागरी लिपि आंदोलन का इतिहास
ले. रामनिरंजन परिमलेंदु
पृ. 756; ₹ 650/-
ISBN: 978-81-260-5289-9 (पुनर्मुद्रण)

गढ़वाली लोकगीत
सं. एवं अनु. गोविंद चातक
पृ. 456; ₹ 200/-
ISBN: 81-260-1001-0 (पुनर्मुद्रण)

गवाड़ (पुरस्कृत राजस्थानी उपन्यास)
ले. मधु आचार्य 'आशावादी'
अनु. नीरज दईया
पृ. 95; ₹ 110/-
ISBN: 978-93-87989-87-0

ग़ालिब़ (उर्दू विनिबंध)
ले. मुहम्मद मुजीब
अनु. रमेश गौड़
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0424-9 (पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब़ और उनका युग
ले. पवन कुमार वर्मा
अनु. निशात ज़ैदी
पृ. 240; ₹ 200/-
ISBN: 81-260-2554-1 (पुनर्मुद्रण)

गिरिजा कुमार माथुर
ले. कृष्णदत्त पालीवाल
पृ. 232; ₹ 50/-;
ISBN: 81-260-1819-4 (पुनर्मुद्रण)

गोसाईं बगान का भूत
ले. शीर्षेंदु उपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0226-9 (पुनर्मुद्रण)

गोस्वामी तुलसीदास (विनिबंध)
ले. रामजी तिवारी
पृ. 140; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0517-3 (पुनर्मुद्रण)

गोटया
ले. एन.डी. तामहंकर
अनु. सुरेखा पानंदिकर
पृ. 110; ₹ 75/-
ISBN: 978-81-7201-244-1 (पुनर्मुद्रण)

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ (भाग-1)
ले. जैकब लुडबिग कार्ल ग्रिम एवं विल्हेम कार्ल ग्रिम
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 218; ₹ 125/-
ISBN: 81-260-0870-9 (पुनर्मुद्रण)

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ (भाग-2)
ले. जैकब लुडबिग कार्ल ग्रिम एवं विल्हेम कार्ल ग्रिम
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 218; ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-2041-6 (पुनर्मुद्रण)

हेंस एंडरसन की कहानियाँ (भाग-1)
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 248; ₹ 125/-
ISBN: 81-260-0505-X (पुनर्मुद्रण)

हेंस एंडरसन की कहानियाँ (भाग-2)
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 248; ₹ 125/-;
ISBN: 81-260-0505-X (पुनर्मुद्रण)

हरिमोहन झा की श्रेष्ठ कथाएँ (मैथिली कहानी-संग्रह 'बीछल कथा')
सं. राजमोहन झा एवं सुभाषचंद्र यादव
अनु. लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
पृ. 312; ₹ 220/-
ISBN: 978-93-87989-88-7

हरिवंश राय बच्चन
ले. बिशन टंडन
पृ. 191; ₹ 90/-
ISBN: 978-81-260-2743-9(पुनर्मुद्रण)

हरिवंश राय बच्चन रचना-संचयन
चयन एवं स. अजीत कुमार
पृ. 544; ₹ 400/-
ISBN: 978-81-260-4767-3 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी दलित साहित्य
ले. मोहनदास
पृ. 358; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-86771-79-7 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी कहानी-संग्रह
सं. भीष्म साहनी
पृ. 400; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-7201-657-3 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी साहित्य का इतिहास
ले. विजयेंद्र स्नातक
पृ. 464; ₹ 125/-
ISBN: 81-260-0144-5 (पुनर्मुद्रण)

होनहार बच्चे (मराठी बाल कहानियाँ)
ले. गंगाधर गाडगीळ
अनु. माधवी देशपांडे
पृ. 40; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2594-7 (पुनर्मुद्रण)

जलपरी का मायाजाल
ले. वेबस्टार डेविस जीर्वा
अनु. प्रीति पंत
पृ. 60; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1817-8 (पुनर्मुद्रण)

जम्भोजी (विनिबंध)
ले. हरिलाल माहेश्वरी
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2434-6 (पुनर्मुद्रण)

जापान की कथाएँ
ले. सैजी मकिनो
पृ. 68; ₹ 75/-
ISBN: 978-81-260-1218-3 (पुनर्मुद्रण)

जवाहरलाल नेहरू : एक जीवनी
ले. सर्वपल्ली गोपाल
अनु. प्रभाकर माचवे
पृ. 472; ₹ 230/-
ISBN: 978-93-87567-12-2 (पुनर्मुद्रण)

जिगर मुरादाबादी (विनिबंध)
ले. जिगर ज़ियाउद्दीन
अनु. परमानंद पांचाल
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-0147-5 (पुनर्मुद्रण)

जंगल टापू
ले. जसबीर भुल्लर
अनु. शांता ग्रोवर
पृ. 64; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-7201-482-7 (पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
पृ. 56; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2426-1 (पुनर्मुद्रण)

कबूतरों की उड़ान
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. सौमित्र मोहन
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-806-1 (पुनर्मुद्रण)

कालाहांडी के वाचिक महाकाव्य
ले. महेंद्र कु. मिश्र
अनु. दिनेश मालवीय
पृ. 466; ₹ 500/-
ISBN: 978-81-260-5176-2 (पुनर्मुद्रण)

कर्बी कथाएँ
सं. एवं अनु. उदयभानू पांडेय
पृ. 136; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-5354-4 (पुनर्मुद्रण)

कविवर देव (विनिबंध)
ले. जयप्रकाश
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-53-4

ख़ज़ाने वाली चिड़िया (बाल उपन्यास)
ले. प्रकाश मनु
पृ. 144; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-4763-5 (पुनर्मुद्रण)

किशोर कहानियाँ
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 156; ₹ 100/-
ISBN: 81-260-0747-8 (पुनर्मुद्रण)

कोरियाई कविता यात्रा (कोरिया)
चयन एवं अनु. दिविक रमेश
पृ. 222; ₹ 130/-
ISBN: 978-81-260-0698-4 (पुनर्मुद्रण)

लघु कथा संग्रह (भाग-1)
ले. जयमंत मिश्र, अनु. रेखा व्यास
पृ. 128; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-1219-6 (पुनर्मुद्रण)

लघु कथा संग्रह (भाग-2)
ले. जयमंत मिश्र, अनु. रेखा व्यास
पृ. 152; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-1219-0 (पुनर्मुद्रण)

लोकरत्न गुमानी (विनिबंध)
ले. उमा भट्ट
पृ. 111; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-95-5

मछुआरे (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास, 'चेम्मीन')
ले. तकषी शिवशंकर पिल्लै
अनु. भारती विद्यार्थी
पृ. 176; ₹100/-
ISBN: 978-81-260-2609-8 (पुनर्मुद्रण)

महादेवी रचना संचयन
सं. वी.पी. तिवारी
पृ. 296; ₹ 200/-
ISBN: 81-260-0437-1 (पुनर्मुद्रण)

मैथिलीशरण गुप्त (विनिबंध)
ले. रेवती रमण
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0013-5 (पुनर्मुद्रण)

मीराबाई (विनिबंध)
ले. ब्रजेन्द्रकुमार सिंघल
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-5179-3 (पुनर्मुद्रण)

मोहनलाल महतो वियोगी
ले. रामनिरंजन परिमलेंदु
पृ. 186; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-2550-3 (पुनर्मुद्रण)

मोहना! ओ मोहना! (पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह)
ले. के. शिवा रेड्डी
अनु. आर. शांता सुंदरी
पृ. 118; ₹ 120/-
ISBN: 978-93-87989-53-5

मोतीलाल जोतवाणी (विनिबंध)
ले. कमला गोकलानी
पृ. 88; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-46-7

मुक्तिबोध की कविताएँ
सं. त्रिलोचन शास्त्री
पृ. 192; ₹ 125/-
ISBN: 81-260-0674-9 (पुनर्मुद्रण)

नंददास (विनिबंध)
ले. व्यासमणि त्रिपाठी
पृ. 134; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-97-5

निराला (विनिबंध)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2738-5 (पुनर्मुद्रण)

निर्बुद्धि का राजकाज
ले. गोपाल दास, अनु. प्रीति पंत
पृ. 96; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-7201-996-9 (पुनर्मुद्रण)

निर्वाण (पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
ले. मनमोहन, अनु. जितेंद्र कुमार सोनी
पृ. 316; ₹ 250/-
ISBN: 978-81-260-5378-0 (पुनर्मुद्रण)

पहाड़गाथा
सुदर्शन वशिष्ठ
पृ. 480; ₹ 350/-
ISBN: 978-81-260-4994-3 (पुनर्मुद्रण)

पाकिस्तानी कहानियाँ
चयन एवं भूमिका इंतिज़ार हुसैन एवं आसिफ़ फारूख़ी
अनु. अब्दुल बिस्मिल्लाह
पृ. 314; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-1199-5 (पुनर्मुद्रण)

पक्या और उसका गैंग
ले. गंगाधर गाडगीळ
अनु. माधवी देशपांडे
पृ. 40; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-4560-4 (पुनर्मुद्रण)

परशुराम की चुनी हुई कहानियाँ
(बाङ्ला कहानी-संग्रह)
ले. राजशेखर बसु
अनु. प्रबोध कुमार मजुमदार
पृ. 202; ₹100/-
ISBN: 978-81-7201-673-4 (पुनर्मुद्रण)

पतझड़ की आवाज़
(पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
ले. कुर्रतुल ऐन हैदर
अनु. माज़दा असद
पृ.244; ₹ 125/-
ISBN: 978-93-86771-63-6 (पुनर्मुद्रण)

पीतांबर दत्त बड़थ्वाल रचना-संचयन
सं. विष्णुदत्त राकेश
पृ. 424; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1217-X (पुनर्मुद्रण)

प्रतिनिधि हिंदी बाल नाटक
पृ. 287; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-4305-7 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद (विनिबंध)
ले. कमल किशोर गोयनका
पृ. 124; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-4023-0 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद : चुनिंदा कहानियाँ
(बाल कहानियाँ, खंड-1)
चयन अमृत राय
पृ. 96; ₹ 100/-
ISBN: 81-7201-975-0 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद : चुनिंदा कहानियाँ
(बाल कहानियाँ, खंड-2)
चयन अमृत राय
पृ. 98; ₹ 100/-
ISBN: 81-7201-993-9 (पुनर्मुद्रण)

राँडी माई लेखा पोर्टा
(हल्बी, छत्तीसगढ़ी, हिंदी)
चयन, सं. एवं अनु. शकुंतला तरार
पृ. 66; ₹ 210/-
ISBN: 978-93-87989-30-6

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य (भाग-1)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
सं. लीला मजुमदार एवं क्षीतिस राय
अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 160; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-0009-8 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य (भाग-2)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
सं. लीला मजुमदार एवं क्षीतिस राय
अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 176; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-0008-1 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ ठाकुर (विनिबंध)
ले. शिशिर कुमार घोष
अनु. अनामिका
पृ.92; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-0133-X (पुनर्मुद्रण)

राधाकृष्ण रचना-संचयन
चयन एवं सं. भारत यायावर
पृ. 272; ₹ 285/-
ISBN: 978-93-87989-36-8

रघुवीर सिंह (विनिबंध)
ले. अशोक कुमार सिंह
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1025-7 (पुनर्मुद्रण)

रहीम (विनिबंध)
ले. विजेंद्र स्नातक
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0171-2 (पुनर्मुद्रण)

रैदास (विनिबंध)
ले. धरमपाल मैनी
पृ. 64; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-7201-631-9 (पुनर्मुद्रण)

रज्जब (विनिबंध)
ले. नंदकिशोर पांडेय
पृ.112; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-5392-6 (पुनर्मुद्रण)

रामचंद्र शुक्ल संचयन
सं. नामवर सिंह
पृ. 172; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-260-2604-3 (पुनर्मुद्रण)

रामधारी सिंह दिनकर रचना-संचयन
सं. कुमार विमल
पृ. 560; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-86771-78-0 (पुनर्मुद्रण)

रामजियावन दास बावला (विनिबंध)
ले. अशोक द्विवेदी
पृ. 92; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-06-0

रवींद्रनाथ टैगोर की कहानियाँ
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. रामसिंह तोमर
पृ. 364; ₹ 175/-
ISBN: 978-93-87567-06-1 (पुनर्मुद्रण)

सादत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0134-7 (पुनर्मुद्रण)

साहित्य और चेतना (व्याख्यान)
ले. गोपीचंद्र पांडेय
पृ. 32; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1897-6 (पुनर्मुद्रण)

साहित्य के कुछ अंतर्विषयक संदर्भ (व्याख्यान)
सं. कुँवर नारायण
पृ. 44; ₹ 60/-
ISBN: 978-81-260-1693-0 (पुनर्मुद्रण)

समकालीन हिंदी आलोचना
सं. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 492; ₹ 260/-
ISBN: 978-93-86771-77-3 (पुनर्मुद्रण)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना रचना-संचयन
सं. कृष्णदत्त पालीवाल
पृ. 396 ; ₹ 400/-
ISBN: 978-81-260-5291-2 (पुनर्मुद्रण)

शैलेश मटियानी (विनिबंध)
ले. देव सिंह पोखरिया
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-32-0

शानी (विनिबंध)
ले. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 110; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2591-6 (पुनर्मुद्रण)

सोने की चिड़िया
ले. एवं अनु. ओम गोस्वामी
पृ. 184; ₹ 120/-
ISBN: 978-81-260-2734-7 (पुनर्मुद्रण)

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
अनु. प्रेम शंकर शर्मा
पृ. 56; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-99-3

सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबंध)
ले. सुधा चौहान
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2737-8 (पुनर्मुद्रण)

सुभाषित संग्रह (खंड-1)
(साहित्य रत्नाकोश : उपनिषद, रामायण एवं पुराणों से संकलन)
चयन. के.ए.एस. अय्यर
सं. वी. राघवन
अनु. राममूर्ति त्रिपाठी
पृ. 192; ₹ 100/-
ISBN: 978-81-7201-348-6 (पुनर्मुद्रण)

सुगम हिंदी ज्ञानेश्वरी
ले. संत ज्ञानेश्वर ज्ञानेश्वरी
अनु. मोरेश्वर गणेश
पृ. 852; ₹ 300/-
ISBN: 978-81-7201-756-9 (पुनर्मुद्रण)

सुमित्रानंदन पंत रचना-संचयन
संपा. कुमार विमल
पृ. 484; ₹ 230/-
ISBN: 978-93-87562-15-3 (पुनर्मुद्रण)

सुनो अफ्रीका (अंग्रेज़ी कविता)
ले. टिमोथी वंगुशा
अनु. दिविक रमेश
पृ.80; ₹ 80/-
ISBN: 81-260-2048-2 (पुनर्मुद्रण)

सुनो कहानी (बाल कहानियाँ)
ले. विष्णु प्रभाकर
पृ. 60; ₹ 25/-
ISBN: 978-81-7201-092-3 (पुनर्मुद्रण)

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती (विनिबंध)
ले. विष्णु प्रभाकर एवं विष्णुदत्त राकेश
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-443-8 (पुनर्मुद्रण)

ताश का देश (बाङ्ला बाल उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. रणजीत साहा
पृ. 64; ₹ 100/-
ISBN: 81-260-0317-0 (पुनर्मुद्रण)

त्रिलोचन (विनिबंध)
ले. रेवती रमण
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-3188-8 (पुनर्मुद्रण)

वैदिक संस्कृति का विकास
ले. तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री
अनु. मोरेश्वर दिनकर प्रदकर
पृ. 360; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-2170-3 (पुनर्मुद्रण)

विष्णु प्रभाकर (विनिबंध)
ले. प्रकाश मनु
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-5393-3 (पुनर्मुद्रण)

कन्नड

अंतर्यामी
(पुरस्कृत कोंकणी कहानी-संग्रह)
ले. गोकलदास प्रभु
अनु. गीता शिनॉय
पृ. 152; ₹ 140/-
ISBN: 978-93-87989-23-8

भूमि गीतेगलु (अंग्रेज़ी में पूर्वोत्तर भारत की कहानियाँ)
सं. कैलाश सी. बराल
अनु. एच.एस.एम. प्रकाश
पृ. 160; ₹ 85/-
ISBN: 81-260-3073-9

चक्रवर्ती बाबराने प्रार्थने मट्टु इटरा कवितेगलु (पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह)
ले. शंख घोष, अनु. ज.न. तेजश्री
पृ. 120; ₹ 115/-
ISBN: 978-93-87567-78-X

गौरी (पुरस्कृत मलयाळम् कहानी-संग्रह)
ले. टी. पद्मनाभन
अनु. प्रमीला माधव
पृ. 108; ₹ 115/-
ISBN: 978-93-88468-66-4

हरिदासा अपाचकवि (विनिबंध)
ले. अदांदा सी. करिअप्पा
पृ. 152; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-93-7

एच.वी. सवित्रम्मा (विनिबंध)
ले. एन. गायत्री
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-94-X

जेदारा दासीमाया (विनिबंध)
ले. अमरेश नुगादोनी
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-20-7

कन्नडाडा मुवत्तु सन्ना कथेगलु
(तीस कन्नड कहानी-संग्रह)
सं. कृष्णमूर्ति हानूर एवं फकीर मोहम्मद कटपदी
पृ. 300; ₹ 150/-
ISBN: 81-260-4471-3

कोच्चेरेट्टी
(मलयाळम् की कालजयी कृति)
ले. नारायण
अनु. ना. दामोदर शेट्टी
पृ. 208; ₹ 100/-
ISBN: 81-260-3076-3

कोंकणी कथावली
(कोंकणी कहानी-संग्रह)
सं. एस.एम. कृष्णराव
पृ. 328; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-87989-27-6

एम.के. इंदिरा : बदुकु बारहा
(जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी के आलेख)
सं. जयप्रकाश मविनाकुली
पृ. 68; ₹ 85/-
ISBN: 978-93-87567-99-3

पा.वेम. आचार्य : बदुकु बारहा
(जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी के आलेख)
सं. जयप्रकाश मविनाकुली
पृ. 88; ₹ 95/-
ISBN: 978-93-87989-00-9

प्रतिबिंब (पुरस्कृत कश्मीरी निबंध-संग्रह)
ले. मो. ज़मां आज़ुर्दा
अनु. आनंदराम उपाध्याय
पृ. 120; ₹ 115/-
ISBN: 978-93-87567-77-X

एस.एस. बसवानल (विनिबंध)
ले. चंद्रशेखर वस्त्रदा
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-22-1

शिवराम कारंत (विनिबंध)
ले. एवं अनु. सी.एन. रामचंद्रन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-83-2 (पुनर्मुद्रण)

कश्मीरी

ग़ुलाम मोहम्मद ग़मगीन (विनिबंध)
ले. शाहिद देलनवी
पृ. 79; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-88-7

हमकाल सिंधी अफसाना सोंब्रन
(समकालीन सिंधी कहानी-संगह 1980-2005)
सं. प्रेम प्रकाश
अनु. के.के. लिड्डू
पृ. 304; ₹ 570/-
ISBN: 978-93-87989-10-8

जोमे सुवास मंज़ काशूर ज़बान ओ आधुनिक तवारीख़
ले. मंसूर बनिहाली
पृ. 448; ₹ 420/-
ISBN: 978-93-87567-32-0 (पुनर्मुद्रण)

कोंकणी

अस्तव्यस्त बयालो
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. मालती राव, अनु. सुनेत्र जोग
पृ. 282; ₹ 225/-
ISBN: 978-93-87989-04-7

फकीर मोहन सेनापति (विनिबंध)
ले. मायाधर मनसिंहा
अनु. नित्यानंद नाईक
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-09-2

हेन पुरातन किन्नरम (कविता-संग्रह)
ले. ओएनवी कुरूप
अनु. एल. सुनीता बाई
पृ. 280; ₹ 225/-
ISBN: 978-93-87989-17-7

लघु कथा संग्रह (भाग-1)
सं. जयमंत मिश्र, अनु. रजनी भेंब्रे
पृ. 120; ₹ 125/-
ISBN: 978-93-87989-05-4

लघु कथा संग्रह (भाग-2)
सं. जयमंत मिश्र, अनु. रजनी भेंब्रे
पृ. 152; ₹ 130/-
ISBN: 978-93-87989-06-1

समकालीन कोंकणी एकांकी नाटक
सं. पुंडलीक नायक एवं पांडुरंग गवाडे
पृ. 220; ₹ 120/-
ISBN: 978-81-260-4574-7 (पुनर्मुद्रण)

उगतेडार (पुरस्कृत कन्नड कविता-संग्रह)
ले. के.एस. नरसिम्हास्वामी
अनु. मेल्विन रोड्रिग्स्
पृ. 76; ₹ 135/-
ISBN: 978-93-87989-52-8

मैथिली

आधुनिक भारतीय कविता संचयन
(राजस्थानी)
ले. नंद भारद्वाज
अनु. अमलेंदु शेखर पाठक
पृ. 164; ₹ 280/-
ISBN: 978-93-88468-18-3

अग्नि कलश
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. गुरुबचन सिंह भुल्लर
अनु. वैद्यनाथ झा
पृ. 172; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-86771-07-0

बलवंत सिंह के बेहतरीन अफ़साने
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. मुरलीधर झा
पृ. 316; ₹ 450/-
ISBN: 978-93-88468-39-8

देहरा में आइयो उगत हमार गछीन
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह)
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. कमलानंद झा
पृ. 124; ₹ 230/-
ISBN: 978-93-88468-21-3

दो गज ज़मीन (पुरस्कृत उर्दू उपन्यास)
ले. अब्दुस्समद
अनु. मंजर सुलेमान
पृ. 224; ₹ 330/-
ISBN: 978-93-88468-343-3

गौरीकांत चौधरीकांत मुखिया जी
(विनिबंध)
ले. छात्रानंद सिंह झा
पृ. 76; ₹50/-
ISBN: 978-93-88468-32-9

ग्रियर्सन की मैथिली संबंधी रचनाओं का संकलन
सं. वीणा ठाकुर एवं पंचानन मिश्र
पृ. 172; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-88468-22-0

इनार
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास 'कुवो')
ले. अशोकपुरी गोस्वामी
अनु. देवकांत झा
पृ. 248; ₹365/-
ISBN: 978-93-88468-19-8

मैथिली गीत काव्यक ओ परंपरा
(संगोष्ठी आलेख)
सं. वीणा ठाकुर
पृ. 168; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-88468-37-4

मैथिली कथा संग्रह
सं. जयधारी सिंह
पृ. 104; ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-2385-1 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली कथा शताब्दी संचय
सं. रामदेव झा एवं इंद्रकांत झा
पृ. 400; ₹ 260/-
ISBN: 978-81-260-2898-6 (पुनर्मुद्रण)

मैथिली लोकोक्ति संचय
सं. कमलकांत झा
पृ. 352; ₹ 225/-
ISBN: 978-81-260-2558-9 (पुनर्मुद्रण)

मणिपद्म : मैथिली साहित्यक अक्षरवत (संगोष्ठी आलेख)
सं. वीणा ठाकुर
पृ. 120; ₹ 230/-
ISBN: 978-93-88468-16-9

निशि कुटुम्ब (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास 'निशिकुटुम्ब')
ले. मनोज बसु
अनु. रामानंद झा
पृ. 576; ₹ 700/-
ISBN: 978-93-88468-17-6

पराती जकान (नवोदय योजना के अंतर्गत मैथिली कविता-संग्रह)
ले. विद्यानाथ झा
पृ. 168; ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-1816-1 (पुनर्मुद्रण)

रवीन्द्रनाथ टैगोर (विनिबंध)
ले. शिशिर कुमार घोष
अनु. नीलम कुमारी
पृ. 124; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-86771-75-9

राजेश्वर झा (विनिबंध)
ले. महेन्द्र झा
पृ. 192; ₹250/-
ISBN: 978-93-86771-70-4

समकालीन मैथिली कविता
सं. भीमनाथ झा एवं मोहन भारद्वाज
पृ. 116; ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-2732-3 (पुनर्मुद्रण)

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
अनु. प्रेम मोहन मिश्र
पृ. 56; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-13-8

तृष्णा (पंजाबी उपन्यास)
ले. कर्तार सिंह दुग्गल
अनु. पंकज पराशर
पृ. 248; ₹ 300/-
ISBN: 978-81-260-5116-8

उमेश मिश्र रचना-संचयन
सं. पंचानन मिश्र
पृ. 800; ₹ 600/-
ISBN: 978-93-86771-54-4

विद्यापति गीत सती
सं. रामदेव झा
पृ. 372; ₹ 220/-
ISBN: 978-81-260-0497-3 (पुनर्मुद्रण)

मलयाळम्

एषुथाचन (विनिबंध)
ले. के. राघवन पिल्लै
अनु. देशमंगलम रामकृष्णन
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 81-7201-572-0 (पुनर्मुद्रण)

गाथाविचारम : श्रुतिभेदंगल (संगोष्ठी)
सं. एम. आर. राघव बैरियर
पृ. 264; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-87989-24-5

कदाम्मानित्ता रामकृष्णन (विनिबंध)
ले. पी. सुरेश
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-95-8

कलमारम
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. जी. तिलकावती
अनु. शफी चेरूमाविलयी
पृ. 144; ₹ 185/-
ISBN: 978-93-87567-65-8

कट्टीयेरीयुन्ना पुन्थोराम
(पुरस्कृत तेलुगु उपन्यास)
ले. सैयद सलीम
अनु. एल.आर. स्वामी
पृ. 216; ₹ 245/-
ISBN: 978-93-87567-63-4

एन. कृष्णपिल्लै : व्यक्तियुम साहित्य करुनुम (संगोष्ठी आलेख)
सं. एषुमाथुर राजराजा वर्मा
पृ. 120; ₹ 120/-
ISBN: 978-93-87989-28-3

पाला नारायणन नायर (विनिबंध)
ले. देशमंगलम रामकृष्णन
पृ. 64; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-21-4

रामधारी सिंह दिनकर (विनिबंध)
ले. विजेंद्र नारायण सिंह
अनु. पी.के.पी. कर्ता
पृ. 132; ₹ 50/-;
ISBN: 978-93-87567-64-1

मणिपुरी

अंगोबा चिट्तीखाओ
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास 'सादा खाम')
ले. मोती नंदी
अनु. एन. विद्यासागर सिंघा
पृ. 132; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-87567-11-5 (पुनर्मुद्रण)

मणिपुरी अंगका अमागी लीला
(मणिपुरी एकांकी-संग्रह)
चयन एवं सं. एम. प्रियब्रत सिंह
पृ. 268; ₹ 335/-
ISBN: 978-93-86771-12-4 (पुनर्मुद्रण)

फुंगवाड़ी सिंगबुल
(लोक कथाएँ एवं दंतकथा)
चयन एवं सं. बी. जयंत कुमार शर्मा
पृ. 304; ₹ 170/-
ISBN: 978-81-260-2911-2 (पुनर्मुद्रण)

मराठी

आरण्यक (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. शंकर शास्त्री
पृ. 320; ₹ 285/-
ISBN: 978-81-260-1051-7 (पुनर्मुद्रण)

अथंग (पुरस्कृत नेपाली उपन्यास)
ले. बिंदया सुब्बा
अनु. असावारी काकडे
पृ. 132; ₹ 125/-
ISBN: 978-93-87567-02-3

बाल सीताराम मर्धेकर (निबंध-संग्रह)
ले. यशवंत मनोहर
पृ. 120; ₹ 160/-
ISBN: 81-7201-304-3 (पुनर्मुद्रण)

ब्रह्मर्षि श्रीनारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. सुनंदा अमरापुरकर
पृ. 140; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-72-6

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर : जीवन व कार्य
सं. लक्ष्मण गायकवाड़
पृ. 408; ₹ 300/-
ISBN: 978-81-260-3247-1 (पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब (विनिबंध)
ले. एम. मुजीब
अनु. वी.आर. कांत
पृ. 84; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-2681-2 (पुनर्मुद्रण)

घर अक्षाच्या शेजारी
(पुरस्कृत तमिळ कविता-संग्रह)
ले. मु. मेता
अनु. श्रीप्रकाश अधिकारी
पृ. 100; ₹ 150/-
ISBN: 978-93-87567-76-4

हरिनारायण आप्टे (विनिबंध)
ले. आर.बी. जोशी, शैलजा वाडेकर
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-59-7

जटायु- आणि इतर कविता
(पुरस्कृत गुजराती कविता-संग्रह)
ले. सिताशुं यशश्चंद्र
अनु. सुषमा करोगल
पृ. 160; ₹ 190/-
ISBN: 978-93-88468-11-4

कवाले आणि काला पानी
(पुरस्कृत हिंदी कहानी-संग्रह)
ले. निर्मल वर्मा
अनु. आनंद थट्टे
पृ. 168; ₹ 175/-
ISBN: 978-93-87567-44-3

कोंकणी कथा मराठित (कहानी-संग्रह)
सं. किरण बडकुले
पृ. 204; ₹ 250/-
ISBN: 81-260-2034-2 (पुनर्मुद्रण)

मराठी लघु कथा-संग्रह
सं. ए.के. भागवत
पृ. 340; ₹ 350/-
ISBN: 81-260-2571-9 (पुनर्मुद्रण)

मौखिकता आणि लोकसाहित्य
(लघु कथा-संग्रह)
सं. मधुकर वाकोडे, सुषमा कारोगल
पृ. 164; ₹ 200/-
ISBN: 81-260-1037-1 (पुनर्मुद्रण)

नाट्यचार्य खादिलकर (विनिबंध)
ले. नारायण कृष्ण साँवरे
पृ. 88; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2715-6 (पुनर्मुद्रण)

निवादक बी. रघुनाथ
(कहानी-संग्रह)
ले. नागनाथ कोटपल्ले
पृ. 314; ₹ 325/-
ISBN: 81-7201-872-X (पुनर्मुद्रण)

पंडिता रमाबाई (विनिबंध)
ले. अनुपमा उज़गरे
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2968-6 (पुनर्मुद्रण)

प्रतिनिधिक कन्नड कथा
(कहानी-संग्रह)
ले. अमृत यार्दी
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 384; ₹ 450/-
ISBN: 978-81-260-3261-7

सार्थवाह (निबंध-संग्रह)
ले. मोती चंद्र
अनु. एम.के. पार्धी
पृ. 320; ₹ 340/-
ISBN: 81-260-2680-4 (पुनर्मुद्रण)

स्वातंत्र्योत्तर मराठी कविता (1945-60)
(कविता-संग्रह)
ले. वसंत पतंकर
पृ. 264; ₹ 250/-
ISBN: 978-81-260-1453-9 (पुनर्मुद्रण)

तुकाराम गाथा
सं. भालचंद्र नेमाडे
पृ. 264; ₹ 220/-
ISBN: 81-250-1925-5 (पुनर्मुद्रण)

वी.एस. खांडेकर (विनिबंध)
ले. एम.डी. हतकाणंगलेकर
अनु. राजा होलकुंडे
पृ. 68; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-29-0

विभावरी शिरूरकर (विनिबंध)
ले. अरुणा दुभाषी
पृ. 76; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-2964-1 (पुनर्मुद्रण)

विवेकानंदनचे चरित्र (जीवनी)
ले. रोमा रोलां
अनु. विमलाबाई देशपांडे
पृ. 140; ₹ 160/-
ISBN: 81-250-1567-5 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली

अनंत वर्तमान विवेकानंद (संचयन)
ले. स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. मोनिका मुखिया
पृ. 264; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-87567-52-8

भाईचंद प्रधान (विनिबंध)
ले. ज्ञान सुतार
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-46-6

भारतीय नेपाली नाटक संचयन
सं. लक्ष्मण श्रीमल
पृ. 458; ₹ 400/-
ISBN: 978-81-260-5036-9 (पुनर्मुद्रण)

विष्णुलाल उपाध्याय (विनिबंध)
ले. गायत्री नेवाड़
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-94-8

चंद्रेश्वर दुबे (विनिबंध)
ले. राजेंद्र ढकाल
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-03-9

काग रा काला पानी
(पुरस्कृत हिंदी कहानी-संग्रह)
ले. निर्मल वर्मा
अनु. सुकराज दियाली
पृ. 136; ₹ 160/-
ISBN: 978-93-88468-20-6

कुमार प्रधान (विनिबंध)
ले. मोहन ठकुरी
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-74-0

मणि महेश
(पुरस्कृत बाङ्ला यात्रा-वृत्तांत)
ले. उमाप्रसाद मुखोपाध्याय
अनु. मुक्ति प्रसाद उपाध्याय
पृ. 145; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-88468-04-6

पछिका दिनका स्तोत्रहारू
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कविता-संग्रह)
ले. निस्सिम एज़ेकिएल
अनु. मोनिका मुखिया
पृ. 88; ₹ 130/-
ISBN: 978-93-88468-61-9

आर.पी. लामा (विनिबंध)
ले. एम. पथिक
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-28-2

राजनारायण प्रधान (विनिबंध)
ले. गोपीचंद्र प्रधान
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-27-5

सर्वपल्ली राधाकृष्णन (विनिबंध)
ले. प्रेमा नंदकुमार, अनु. जीवन लबार
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-75-7

विकास गोतमे (विनिबंध)
ले. जया केक्टस
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-4949-3 (पुनर्मुद्रण)

ओड़िया

बामाचरण मित्र चयनिका
चयन एवं सं. प्रकाश के. परिदा
पृ. 290; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-87567-87-0

बिश्वजीत दास (विनिबंध)
ले. उपेंद्र प्रसाद नायक
पृ. 114; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-54-2

फतुरानंद साहित्य समिख्या
(संगोष्ठी आलेख)
चयन एवं सं. बिजयानंद सिंह
पृ. 168; ₹ 180/-
ISBN: 978-93-87989-82-5

गाँधी कथामृत
चयन एवं सं. कृष्ण कृपलानी
अनु. नंदिनी सतपथी
पृ. 226; ₹ 260/-
ISBN: 978-93-88468-73-2 (पुनर्मुद्रण)

गोपाल छोटराय चयनिका
चयन एवं सं. हेमंत कु. दास
पृ. 408; ₹ 380/-
ISBN: 978-81-260-5366-7 (पुनर्मुद्रण)

गोपीनाथ चयनिका
चयन एवं सं. मनोरंजन प्रधान
पृ. 336; ₹ 265/-
ISBN: 978-81-260-2656-2 (पुनर्मुद्रण)

हंसुली बंकर उपकथा
(बाङ्ला उपन्यास)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
अनु. ब्रजनाथ रथ
पृ. 320; ₹ 230/-
ISBN: 978-81-260-4723-9 (पुनर्मुद्रण)

जगदीश चयनिका
चयन एवं सं. सरोजिनी साहू
पृ. 256; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-4893-9 (पुनर्मुद्रण)

कैंडिड (फ्रेंच क्लासिक)
ले. वोल्टेयर
अनु. शकुंतला बलियारसिंह
पृ. 129; ₹ 190/-
ISBN: 978-93-86771-69-8 (पुनर्मुद्रण)

नीलमस्तारनी ओ अन्यान्य गल्प
(गोदावरीश महापात्र लघु कथा-संग्रह)
चयन एवं सं. विभूति पटनायक
पृ. 168; ₹ 90/-
ISBN: 978-81-260-4433-7 (पुनर्मुद्रण)

ओक्टोवियो पाजंका कविता
ले. ओक्टोवियो पाज़
अनु. संग्राम जेना
पृ. 128; ₹ 160/-
ISBN: 978-93-87989-92-4

ओड़िया शिशु किशोर कहानी
(बाल ओड़िया कहानी-संग्रह)
चयन एवं सं. बीरेंद्र मोहंति
पृ. 288; ₹ 190/-
ISBN: 978-81-260-4424-5 (पुनर्मुद्रण)

ओड़िया शिशु किशोर कविता
(बाल ओड़िया कविता-संग्रह)
चयन एवं सं. महेश्वर मोहंती
पृ. 280; ₹ 190/-
ISBN: 978-81-260-4726-0 (पुनर्मुद्रण)

पद्मानादीरा माझी (बाङ्ला उपन्यास)
ले. माणिक बंद्योपाध्याय
अनु. गोविंदचंद्र साहु
पृ. 110; ₹ 130/-
ISBN: 978-81-260-1534-4 (पुनर्मुद्रण)

पाकिस्तानी कहानीमाला
(चयनित कहानी-संग्रह)
चयन एवं सं. इंतिज़ार हुसैन एवं
आसिफ़ फारूख़ी
अनु. आशीष कुमार राय
पृ. 320; ₹ 240/-
ISBN: 978-81-260-4903-5 (पुनर्मुद्रण)

पत्थर फींगुची मन
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
ले. चंद्रकांत देवताले
अनु. सुरेंद्र पाणिग्रही
पृ. 176; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-87567-19-1

संशयात्मा
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
ले. ज्ञानेंद्रपति
अनु. स्वप्ना मिश्र
पृ. 326; ₹ 380/-
ISBN: 978-93-86771-43-8

सुरेंद्र चयनिका
चयन एवं सं. गौरहरि दास
पृ. 474; ₹ 450/-
ISBN: 978-93-87989-85-6

युगांत (पुरस्कृत मराठी पुस्तक 'स्टडी ऑफ द महाभारत')
ले. इरावती कर्वे
अनु. सूर्यमणि खुंटिया
पृ. 180; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-4806-9 (पुनर्मुद्रण)

राजस्थानी

अवतार चरित्र-1
ले. बारहठ नरहरिदास
पृ. 742; ₹ 700/-
ISBN: 978-81-260-4885-4 (पुनर्मुद्रण)

अवतार चरित्र-2
ले. बारहठ नरहरिदास
पृ. 818; ₹ 765/-
ISBN: 978-81-260-4886-1 (पुनर्मुद्रण)

हेली रा माइया
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. रमा मेहता
अनु. संजय पुरोहित
पृ. 168; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-88468-35-0

हिया तनाव हेत
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. मृदुला गर्ग
अनु. ज़ेबा राशिद
पृ. 278; ₹ 275/-
ISBN: 978-93-88468-38-1

राजस्थानी वरात कथावाँ
ले. अर्जुन सिंह शेखावत
पृ. 424; ₹ 225/-
ISBN: 978-81-260-0623-6 (पुनर्मुद्रण)

सिलाम
(पुरस्कृत मराठी कविता-संग्रह)
ले. मंगेश के. पडगाँवकर
अनु. मोनिका गौड़
पृ. 88; ₹ 135/-
ISBN: 978-93-88468-36-7

संस्कृत

कल्पवल्ली
सं. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ. 628; ₹ 300/-
ISBN: 978-81-260-4275-3 (पुनर्मुद्रण)

प्रबंध मंजरी
सं. राधावल्लभ त्रिपाठी
पृ. 136; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-88468-47-3

सर्वज्ञसिंह भूपाल (विनिबंध)
ले. पी. शशिरेखा
पृ. 132; ₹ 50/-;
ISBN: 978-93-87989-08-5

शिशुपालवध
सं. एवं अनु. सी. राजेंद्रन
पृ. 391; ₹ 270/-
ISBN: 978-93-87567-30-6

श्रीरामानुजाचार्य
(विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
अनु. धूलिपाला रामकृष्ण
पृ. 50; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-14-5

विद्यानाथ (विनिबंध)
ले. बी. नरसिम्हाचार्युलु
पृ. 164; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-90-0

संताली

अबेला (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. बिमल कर अनु. वैद्यनाथ मांडी
पृ. 400; ₹ 660/-
ISBN: 978-93-87567-97-9

बिरबुरू रेयाक ऐदारी
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. महाश्वेता देवी
अनु. चंद्रमोहन किस्कू
पृ. 312; ₹ 480/-
ISBN: 978-93-87567-98-6

होरांग चिन्हा शकुंतला
(संस्कृत क्लासिक)
ले. कालिदास, अनु. सुनील मुर्मु
पृ. 120; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-88468-23-7

संताली कहानी माला
सं. महादेव हांसदा
पृ. 356; ₹ 420/-
ISBN: 978-93-87567-32-0 (पुनर्मुद्रण)

श्रीगीतगोविंद (संस्कृत क्लासिक)
ले. जयदेव, अनु. दमयंती बेसरा
पृ. 80; ₹ 125/-
ISBN: 978-93-87567-91-7

उमाशंकर जोशी (विनिबंध)
ले. भोलाभाई पटेल
अनु. रमापद किस्कू
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-92-4

सिंधी

आजु-सुभां-परहीं
(पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह)
ले. राजमोहन झा, अनु. मीना रूपचंदानी
पृ. 172; ₹ 185/-
ISBN: 978-93-87989-57-3

अकुस (पुरस्कृत कश्मीरी निबंध)
ले. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
अनु. सुरेश बबलानी
पृ. 150; ₹ 175/-
ISBN: 978-93-87989-19-1

अज़ादिया खांपोय सिंधी नाटक
सं. प्रेम प्रकाश
पृ. 260; ₹ 250/-
ISBN: 978-81-260-5307-0

छोतीं दिशा
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. वरयाम सिंह संधू
अनु. देवी नागरानी
पृ. 160; ₹ 180/-
ISBN: 978-93-87989-44-3

पाकिस्तानी कहानियूं (उर्दू कहानी-संग्रह)
ले. इंतेज़ार हुसैन एवं आसिफ़ फारूख़ी
अनु. जेठो लालवाणी
पृ. 400; ₹ 350/-
ISBN: 978-93-87567-55-9

पेहिंजी डफली पेहिंजो राग
(पुरस्कृत डोगरी नाटक)
ले. मोहन सिंह
अनु. सुनिता मोहनानी
पृ. 128; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-87989-49-8

सादो लिफ़ाफ़ो
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. मोती नंदी, अनु. भगवान बबानी
पृ. 160; ₹ 180/-
ISBN: 978-93-87989-50-4

सिंधी लोकगीतां जो गुलदस्तो-लाडा
(लोकगीत)
सं. जेठो लालवाणी
पृ. 220; ₹ 125/-
ISBN: 978-81-260-4706-2 (पुनर्मुद्रण)

सुगन आहूजा जूण चुंड रचनावूं
(कविता-संग्रह)
सं. साहिब बिजाणी
पृ. 180; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-5305-6

उहा लंबी खामोशी
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. शशि देशपांडे, अनु. संध्या कुंदनानी
पृ. 244; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-87989-58-0

तमिळ

ए. चिदंबरनाथ छेत्तियार (विनिबंध)
ले. एन. वेलुसामी
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1722-8 (पुनर्मुद्रण)

ए.के. छेत्तियार (विनिबंध)
ले. सा. कंदासामी
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-0898-9 (पुनर्मुद्रण)

आशीर्वादातिन वन्नम
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. अरुण शर्मा, अनु. एम. सुशीला
पृ. 368; ₹ 225/-
ISBN: 978-81-260-5339-1(पुनर्मुद्रण)

अकिलन (विनिबंध)
ले. सू. वेंकटरमण
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-0830-X (पुनर्मुद्रण)

अमैप्पुमैयावदम, पिन अमैप्पियल मटरूम कीझई काबिया ईयल
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. एच. बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 584; ₹ 415/-
ISBN: 978-81-260-1909-3 (पुनर्मुद्रण)

अप्पार (विनिबंध)
ले. को. वनमीगानाततनन
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-4458-0 (पुनर्मुद्रण)

अयालगा तमिष़ इलक्कियम
सं. सा. कंदासामी
पृ. 320; ₹ 150/-
ISBN: 978-81-260-1717-1 (पुनर्मुद्रण)

बाबासाहेब अंबेडकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
अनु. अरु. मारुतादुरई
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0828-8 (पुनर्मुद्रण)

भद्राचलम रामादासर (विनिबंध)
ले. बी. रजनीकांत राव
अनु. इरा अलालासुंदरम
पृ. 94; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0826-1 (पुनर्मुद्रण)

भारतीदासन (विनिबंध)
ले. मरुगु सुंदरम
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-2363-5 (पुनर्मुद्रण)

भरतियार (विनिबंध)
ले. प्रेमा नंदकुमार
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-2472-0 (पुनर्मुद्रण)

सी. इलाक्कुवानार (विनिबंध)
ले. मरयमलय इलाक्कुवानार
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2371-4 (पुनर्मुद्रण)

कल्डवेल्लिन तमिष़ कोडई
(संगोष्ठी आलेख)
सं. आर. कामरासु
पृ. 240; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-4832-8 (पुनर्मुद्रण)

चा. सो. विन तेर्नतेडुता सिरुकथाइगल
ले. चागंटि सोम्याजुलु
अनु. गौरी किरुबानंदन
पृ. 208; ₹ 195/-
ISBN: 978-93-87989-86-3

देवानेया पावानर (विनिबंध)
ले. ईरा इलमकुमारन
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1499-7 (पुनर्मुद्रण)

द्रौपदी (पुरस्कृत तेलुगु उपन्यास)
ले. यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद
अनु. इलमभारती
पृ. 368; ₹ 285/-
ISBN: 978-81-260-4459-7 (पुनर्मुद्रण)

एम्मुम पेरिया हुमम
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. जेरी पिंटो, अनु. के. दक्षिणामूर्ति
पृ. 288; ₹ 240/-
ISBN: 978-93-87989-02-3

एन थलाइमत्तिल
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह)
ले. तेमसुला आवो
अनु. जी. तिलकावती
पृ. 160; ₹ 170/-;
ISBN: 978-93-87567-85-6

ज्ञानदेवर (विनिबंध)
ले. पुरुषोत्तम यशवंत देशपांडे
अनु. टी.एन. सेनापति
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-80-1 (पुनर्मुद्रण)

गोपालकृष्ण भारती (विनिबंध)
ले. प्रमिला गुरुमूर्ति
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1637-X (पुनर्मुद्रण)

हंपियिन पारायगल (रॉक्स ऑफ़ हंपी)
ले. चंद्रशेखर कंबार
अनु. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 112; ₹ 135/-
ISBN: 978-93-88468-50-3

इनैन्दा मनम (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. मृदुला गर्ग, अनु. कृष्णगिनि
पृ. 512; ₹ 395/-
ISBN: 978-93-87989-78-8

इनि नान उरंगात्तुम (मलयाळम् उपन्यास)
ले. पी.के. बालकृष्णनन्
अनु. ए. माधवन
पृ. 273; ₹ 260/-
ISBN: 978-81-260-1084-3 (पुनर्मुद्रण)

का. ना. सु. विन तेर्नतेडुता सिरुकथाइगल
सं. सा. कंदासामी
पृ.; 240; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-4119-0 (पुनर्मुद्रण)

का. ना. सुब्रह्मण्यम (विनिबंध)
ले. तंजाई प्रकाश
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1125-4 (पुनर्मुद्रण)

कबिलार (विनिबंध)
ले. के. अरंगासामी
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-3343-0 (पुनर्मुद्रण)

कदिता इलक्कियम
सं. आर. कामरासु
पृ. 320; ₹ 200/-
ISBN: 978-81-260-5333-9 (पुनर्मुद्रण)

कानावुम विदियुम (तमिळ कवयित्रियों की कविताओं का संचयन)
सं. ए. वेन्निला
पृ. 224; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-87989-34-4

कन्नड दलित इलक्कियम
सं. एस. कार्लोस
पृ. 280; ₹ 260/-
ISBN: 81-260-1443-1 (पुनर्मुद्रण)

कथाई इल्लातावनिन कथाई (पुरस्कृत मलयाळम् आत्मकथा)
ले. एम.एन. पलूर
अनु. टी. विष्णुकुमारन
पृ. 543; ₹ 400/-
ISBN: 978-93-87567-86-3

कायिरू (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. तकषी शिवशंकर पिल्लै
अनु. सी.ए. बालन
पृ. 1504; ₹ 1150/-
ISBN: 978-93-88468-05-3

की.वा. जगन्नाथन (विनिबंध)
ले. निर्मला मोहन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-0585-8 (पुनर्मुद्रण)

कुंदराक्कुडी अडिगलर (विनिबंध)
ले. सी. सेतुपति
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2985-3 (पुनर्मुद्रण)

महांगल कूरिया माराबुवाषी कथाइगल
ले. मनोज दास
अनु. मेहर. पी. अय्यूब
पृ. 352; ₹ 255/-
ISBN: 978-81-260-2094-6 (पुनर्मुद्रण)

मलाई मेल नेरुप्पू
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अनीता देसाई
अनु. अशोक मित्रन
पृ. 154; ₹ 170/-
ISBN: 978-81-260-0835-0 (पुनर्मुद्रण)

मू. वरदरासन (विनिबंध)
ले. पोन. शौरिराजन
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1126-1 (पुनर्मुद्रण)

मिलाई सीनी वेंकडासामी (विनिबंध)
ले. वी. आरसू
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1720-1 (पुनर्मुद्रण)

ना. पार्थसारथी (विनिबंध)
ले. तिरुप्पुर कृष्णन
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1435-0 (पुनर्मुद्रण)

नवीन तमिष़ चिरुकथाइगळ
सं. सा. कंदासामी
पृ. 320; ₹ 175/-
ISBN: 978-81-260-0891-1 (पुनर्मुद्रण)

ओडई (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. श्रीनिवास बी. वैद्य
अनु. के. नल्लाथंबी
पृ. 320; ₹ 260/-
ISBN: 93-87567-85-6

पल्लु इलक्किया तिरत्तु (पल्लु गीतों का संग्रह)
सं. टी. ज्ञानाशेखरन
पृ. 192; ₹ 170/-
ISBN: 978-81-260-4193-0 (पुनर्मुद्रण)

पत्तरैईल मलारंता मलयाला चिरुकथाइगळ
(मलयाळम् अनुवाद कार्यशाला के आलेख)
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 448; ₹ 340/-
ISBN: 978-81-260-1710-4

पावलारेरु पेरुंचितिरानर (विनिबंध)
ले. जे. जगतरातछगन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-26-9

पेन्न एषुथु : वालियम ओलियम
(संगोष्ठी आलेख)
चयन एवं सं. आर. कामरासु
पृ. 208; ₹ 190/-
ISBN: 978-93-87989-68-9

पेरियार ई. वे. रा. (विनिबंध)
ले. अरु. अषगप्पन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2204-4 (पुनर्मुद्रण)

पेरियासामी थूरन निनैवु कुरिप्पुगल
चयन एवं सं. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 288; ₹ 260/-
ISBN: 978-93-88468-92-3

प्रेमचंद (विनिबंध)
ले. प्रकाशचंद्र गुप्त
अनु. सरस्वती रामनाथ
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN: 81-7201-635-2 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंदिन सिरांधा सिरुकथाइगल (भाग-1)
सं. अमृत राय
अनु. एन. श्रीधरन
पृ. 142; ₹ 160/-
ISBN: 978-81-260-2980-8 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंदिन सिरांधा सिरुकथाइगल (भाग- 2)
सं. अमृत राय
अनु. कामाक्षी धरणीशंकर
पृ. 112; ₹ 140/-
ISBN: 978-81-260-2980-8 (पुनर्मुद्रण)

पुरंदरादासर (विनिबंध)
ले. जी. वरदराजा राव
अनु. एन. दास
पृ. 64; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-3156-5 (पुनर्मुद्रण)

आर. चूड़ामणि (विनिबंध)
ले. के. भारती
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-5261-5 (पुनर्मुद्रण)

आर. पी. सेतुपिल्लै (विनिबंध)
ले. एस. गणपति रमन
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-3350-8 (पुनर्मुद्रण)

रामकृष्ण परमहंसार (विनिबंध)
ले. स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. इला विन्सेंट
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-69-6

एस.डी.एस. योगीयार (विनिबंध)
ले. एस.आर. अशोक कुमार
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0779-6 (पुनर्मुद्रण)

सेईगुथंबी पावालर (विनिबंध)
ले. एम. अब्दुल करीम
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1248-X (पुनर्मुद्रण)

सिंगारवेलर (विनिबंध)
ले. पा. वीरामणि
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-86771-27-8 (पुनर्मुद्रण)

सिरूपनमई समूगा कथाईगल
सं. किरानूर ज़ाकिर राजा
पृ. 224; ₹ 200/-
ISBN: 978-93-87989-72-6

सोमेल (विनिबंध)
ले. निर्मला मोहन
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1242-0 (पुनर्मुद्रण)

श्री अरविंदर (विनिबंध)
ले. मनोज दास
अनु. पी. कोतांदा रमन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2200-0 (पुनर्मुद्रण)

श्री रामानुसर (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
अनु. पी. सुंदरा मुरुगन
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-09-1

सु. समुथिरम (विनिबंध)
ले. आर. कामरासु
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-4130-5 (पुनर्मुद्रण)

सुंदरा रामासामयिन तेर्नतेडुता कट्टुराइगल
सं. एस. तिल्लैनायगम
पृ. 304; ₹ 240/-
ISBN: 978-81-260-4128-2 (पुनर्मुद्रण)

सुंदरमूर्ति स्वामीगल (विनिबंध)
ले. ए.वी. शांतिकुमार स्वामीगल
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-3351-5 (पुनर्मुद्रण)

तमिळ-मलयाळम् इलक्किया ओप्पैवु
(संगोष्ठी आलेख)
सं. आर. संबथ
पृ. 108; ₹ 180/-
ISBN: 978-93-87567-89-4

तमिष़ चेम्मल वा. सूपा. मणिक्कानारिन तमिष़ियल पंगालिप्पु (परिसंवाद आलेख)
सं. आर. कामारासु
पृ. 175; ₹ 170/-
ISBN: 978-93-88468-52-7

तमिष़ इलक्किया तिरानैवु कोटपदुगल : माराबम पुधुमायुम (संगोष्ठी आलेख)
सं. आर. कामरासु
पृ. 320; ₹ 255/-
ISBN: 978-93-87989-55-9

तमिष़ागा यप्पु माराबु पावालरगलिन पा थोगुप्पु
सं. आर. संबाथ
पृ. 304; ₹ 215/-
ISBN: 978-93-86771-25-4 (पुनर्मुद्रण)

थिरुगनानासांबंडर (विनिबंध)
ले. एस. वेंकटरामन
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2368-6 (पुनर्मुद्रण)

त्यागरासर (विनिबंध)
ले. वी. राघवन, अनु. पोन. शौरिराजन
पृ. 91; ₹ 50/-;
ISBN: 978-81-260-0899-7 (पुनर्मुद्रण)

उमारू पुलावर (विनिबंध)
ले. नयनार मोहम्मद
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-2200-0 (पुनर्मुद्रण)

वी.ओ. चिदंबरानार (विनिबंध)
ले. मा. रा. आरसु
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-1713-9 (पुनर्मुद्रण)

वा. सुपा. मणिक्कम (विनिबंध)
ले. आर. मोहन
पृ. 159; ₹ 50/-
ISBN: 978-81-260-0289-1 (पुनर्मुद्रण)

वष़ीकट्टी (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास 'द गाइड')
ले. आर.के. नारायण
अनु. श्रीधर भरनीथरन
पृ. 319; ₹ 175/-
ISBN: 978-81-260-5007-9 (पुनर्मुद्रण)

वेमानार (विनिबंध)
ले. वी.आर. नार्ला
अनु. एन. सुब्बु रेड्डीयार
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-88468-77-0 (पुनर्मुद्रण)

तेलुगु

अभिनवगुप्तुडु
ले. जी.टी. देशपांडे
अनु. धुलियापाला रामकृष्ण
पृ. 208; ₹ 160/-
ISBN: 978-93-87567-80-X

अमृत संतानम्
(पुरस्कृत ओड़िया उपन्यास)
ले. गोपीनाथ मोहंति
अनु. पुरीपंडा अप्पालास्वामी
पृ. 544; ₹ 425/-
ISBN: 978-93-87567-56-6 (पुनर्मुद्रण)

बट्टकु (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. गीता नागभूषण
अनु. के. आशाज्योति
पृ. 480; ₹ 360/-
ISBN: 978-93-87989-48-1

बुज्जी पत्तेदारू (ओड़िया बाल साहित्य)
ले. पुण्य प्रभादेवी, अनु. चागंटि तुलसी
पृ. 64; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-73-3

चेरमानूनी प्रेयसी
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. कन्नदासन, अनु. ए. सुवर्णा
पृ. 480; ₹ 360/-
ISBN: 978-93-87989-40-5

गडियाराम रामकृष्ण शर्मा (विनिबंध)
ले. के. रुक्नुद्दीन
पृ. 140; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-25-2

क्रौंच पक्षिगळु
(पुरस्कृत कन्नड कहानी संग्रह)
ले. वैदेही, अनु. जी.एस. मोहन
पृ. 108; ₹ 120/-
ISBN: 978-93-87567-96-2

ओम नमो (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शांतिनाथ देसाई
अनु. रंगनाथ रामचंद्र राव
पृ. 304; ₹ 250/-
ISBN: 978-93-87567-62-7

ओरू वदा (कन्नड जीवनी)
ले. सिद्धालिंगय्या
अनु. राजेश्वरी दिवाकरला
पृ. 120; ₹ 120/-
ISBN: 978-93-88468-26-8

समता (संगोष्ठी के आलेख)
सं. वोल्गा
पृ. 256; ₹ 295/-
ISBN: 978-93-87989-81-8

ययाति (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. वी.एस. खांडेकर
अनु. यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद
पृ. 352; ₹ 250/-
ISBN: 978-81-260-0924-1

उर्दू

फरहांग-ए-अमसल
ले. मसूद हसन रिज़वी अदीप
भूमिका-अनीस अशफाक़
पृ. 212; ₹ 300/-
ISBN: 978-93-87989-38-2

ग़ालिब़ : मानी-आफ़रीनी
ले. गोपीचंद नारंग
पृ. 679; ₹ 450/-
ISBN: 978-81-260-4171-8 (पुनर्मुद्रण)

कैफ़ी आज़मी (विनिबंध)
ले. अली अहमद फ़ातमी
पृ. 103; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-83-2

मज़रूह सुल्तानपुरी (विनिबंध)
ले. वहाब अशरफ़ी
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN: 81-260-1591-8 (पुनर्मुद्रण)

सादत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN: 81-7201-786-3 (पुनर्मुद्रण)

सब इंसान भाई-भाई हैं
सं. के. आर. कृपलानी
भूमिका—एस. राधाकृष्णन
पृ. 244; ₹ 270/-
ISBN: 978-93-88468-75-6

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
अनु. भूपिंदर अज़ीज़ परिहार
पृ. 72; ₹50/-
ISBN: 978-93-88468-07-7

मौलवी महेश प्रसाद (विनिबंध)
ले. अब्दुस सामी
पृ. 140; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87567-82-5

निदा फ़ाज़ली (विनिबंध)
ले. असीम काव्यानी
पृ. 83; ₹ 50/-
ISBN: 978-93-87989-90-0